श्री जैन सिद्धान्त भास्कर

THE JAINA ANTIQUARY

VOL - 52 December 1999 No. 1-2

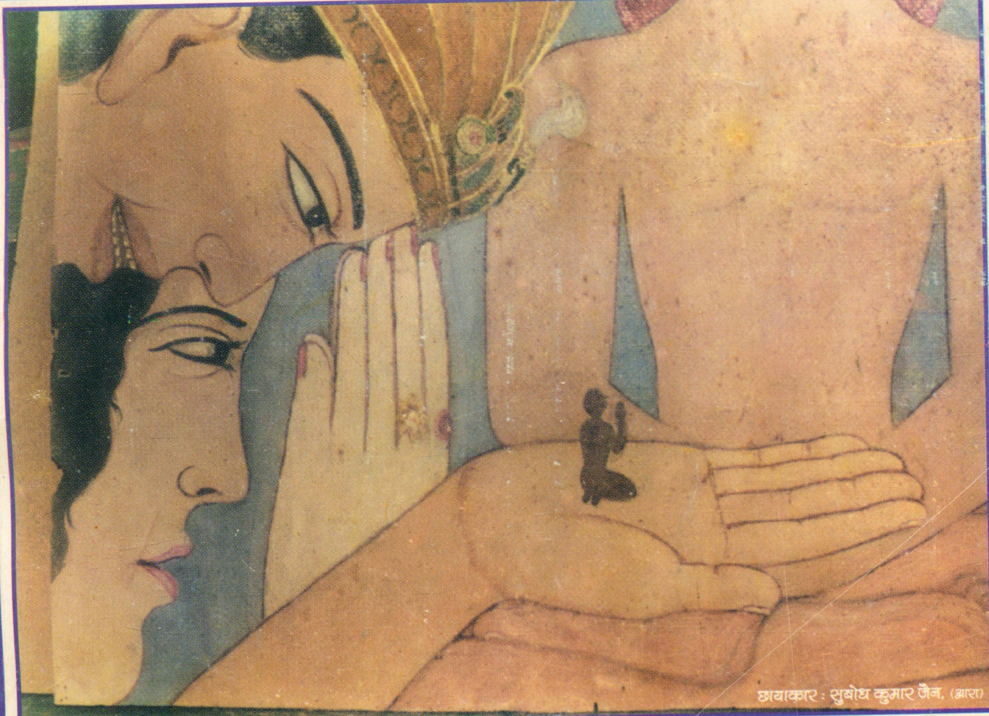

श्री जैन बाला विश्राम अमृत महोत्सव विशेषांक

SRI DEV KUMAR JAIN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
SRI JAIN SIDDHANT BHAWAN,
ARRAH (BIHAR) INDIA-802301

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर

जैन पुरातत्व संबंधी वार्षिक शोध-पत्र

वी० नि० सं०- २५२६ वि० सं०- २०५६	वर्ष- १९९९	भाग- ५२ अंक- १

श्री जैन बाला विश्राम अमृत महोत्सव विशेषांक

विशेषांक सम्पादक- डॉ. गोकुलचन्द्र जैन (आरा)

प्रधान सम्पादक

डॉ. राजाराम जैन

सम्पादक मण्डल

डॉ. गोकुल चन्द्र जैन (आरा) डॉ. लालचन्द जैन (वैशाली)
डॉ. शशिकान्त (लखनऊ) डॉ. ऋषभचन्द फौजदार (वैशाली)

प्रकाशक
अजय कुमार जैन, मंत्री
श्री देव कुमार जैन ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट
श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा (बिहार)

शुल्क : भारत में - 250/- विदेश में - 450/-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

THE JAINA ANTIQUARY

YEARLY JAINOLOGICAL RESEARCH JOURNAL

V.N.S. -- 2526 V.S. --2056	YEAR -- 1999	VOL -- 52 NO. -- 1

C. Editor

Dr. Raja Ram Jain

Editorial Board

Dr. Gokulchandra Jain (Arrah)
Dr. Lalchand Jain (Vaishali)
Dr. Shashi Kant (Lucknow)
Dr. Rishabh chand Fauzdar (Vaishali)

Sri Jain Bala Vishram Platinum Jubilee Special Issue

Special Issue Editor - ***Dr. Gokulchandra Jain, Arrah***

Published By
Ajay Kumar Jain, Secretary
Sri Dev Kumar Jain Oriental Research Institute
Sri Jain Siddhant Bhawan, Arrah (Bihar) India

Inland Rs. 250/- Foreign Rs. 450/-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं.

★ श्री जैन बाला विश्राम, आरा के ऐतिहासिक अतिथि
★ जीवन्त मातृशक्ति का निर्माण केन्द्र - 1
– आचार्य कनकनंदी जी महाराज
★ जैन बाला विश्राम और मैं - 3
– श्री 105 गणिनी आर्यिका विजयमती माताजी
★ जैन बाला विश्राम में मेरा अध्ययन एवं अध्यापन काल - 5
– आर्यिका विमलप्रभा माता जी
★ माँश्री चंदाबाईजी - 7
– ब्र. विद्युल्लता शहा
★ आदर्श नारी की अद्वितीय कृति - 9
– डॉ. नेमिचंद्र जैन
★ तीन पीढ़ियों की शुभकामनाएँ - 11
– डॉ. शशिकान्त जैन
★ माँश्री के अनुपम आदर्श - 13
– श्रीमती श्रीप्रभा जैन
★ नारी-जागरण की प्रतीक- माँश्री चंदाबाई - 16
– डॉ. श्रीमती विद्यावती जैन
★ मातेश्वरी जी के जीवन का परम आदर्श - 20
– वासवदत्ता
★ माँश्री बुन्देलखण्ड में - 22
– डॉ. रमा जैन
★ आरा नगर का स्वर्णिम अतीत एवं मातुश्री चंदाबाईजी - 24
– प्रो० (डॉ.) राजाराम जैन
★ सांस्कृतिक जागरण की दीपशिखा माँश्री चंदाबाई - 26
– श्याम मोहन अस्थाना
★ ज्ञान-वत्सला माँश्री चंदाबाई - 28
– नीरज जैन
★ कर्मठ नारी का आदर्श स्मारक- जैन बाला विश्राम - 30
– निर्मल जैन
★ बीबी पढ़े चलो - 32
– डॉ. श्रीमती सूरजमुखी जैन
★ किस मोड़ पर है, नारी मुक्ति आंदोलन - 33
– आशा गोधा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

★ महिलारत्न माँश्री - 34
- चंद्रमुखी जैन

★ **माँश्री के सम्पर्क में पूरा एक युग** - 36
- डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री (स्व०)

★ **वह तो मैदान छोड़कर भागना होता** - 37
- पं. फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री (स्व०)

★ **आपकी क्या राय है 'विधवा विवाह के बारे में'** - 39
- महात्मा भगवान दीन (स्व०)

★ **धर्मशीला श्राविका-रत्न** - 40
- सुमेरुचन्द्र दिवाकर (स्व०)

★ अनुभव की बात - 41
- कैलाशवती जैन

★ रोज-रोज अनुभूतता एक सत्य - 42
- सुरेश सरल

★ श्रद्धा सुमन - 43
- प्रभा जैन

★ नारी की सम्यक् शिक्षा - 44
- डॉ. विश्वनाथ चौधरी

★ **मातृरूपिणी चन्दाबाई** - 45
- लक्ष्मी नारायण सिंह

★ श्री जैन बाला विश्राम महिला विश्वविद्यालय बनें - 48
- सावित्री अस्थाना

★ ब्र0 पंडिता विदुषी-रत्न श्रद्धेया चन्दाबाई जी - 49
- श्रीमती सितारा देवी जैन

★ **चंदत्थवणं** - 50
- डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव

★ **यावद् वाति नभस्वान्** - 51
- अमृतलालो जैनः

★ **त्यागमूर्ति चन्दाबाई** - 52
- वीरेन्द्र प्रसाद जैन

★ **आलोक बिखेरा धरती पर** - 53
- शशिप्रभा जैन 'शशांक'

★ मुखरित हो संवाद - 55
- डॉ. अलका प्रचंडिया

★ माँ चंदा का नाम - 56
- रामायण चौधरी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

★ माँश्री का साहित्यिक अवदान - 57

- डॉ. गोकुलचन्द्र जैन

★ माँश्री का अद्वितीय साहित्य - 61

- शशिप्रभा जैन 'शशांक'

★ माँश्री का साहित्यिक सृजन - 63

- डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

★ माँश्री की साहित्यिक साधना - 65

- श्री माधवराम जैन 'न्यायतीर्थ'

★ जैन महिलादर्श का सम्पादन - 71

- डॉ. गोकुलचन्द्र जैन

★ जैन महिलादर्श का पुनः प्रकाशन संदर्भ - 81

- सुबोध कुमार जैन

★ सफल सम्पादन - 82

- राम बालक प्रसाद 'साहित्यरत्न'

★ जैन बाला विश्राम की विशिष्ट स्नातिकाएँ - 87

★ महिलारत्न, वैदुष्यता की प्रतिमूर्ति माँश्री ब्रजबाला देवी - 90

- सुश्री शशिप्रभा 'शशांक'

★ जय जयवन्ती - 94

- डॉ. गोकुलचन्द्र जैन

★ श्री जैन बाला विश्राम और उसकी आदर्श क्रियाएँ - 96

- जयवन्ती देवी जैन

★ एक समर्पित जीवन स्मृतिशेष सुश्री शशिप्रभा 'शशांक' - 99

- डॉ. गोकुलचन्द्र जैन

★ श्री जैन बाला विश्राम में भगवान बाहुबली स्वामी - 102

- सुबोध कुमार जैन

★ चारित्र चक्रवर्ती १०८ शान्तिसागरजी महाराज
संस्मरण और श्रद्धांजलि - 106

- आर्यिकारत्न विदुषी माँश्री

★ पं० चन्दाबाई जी के विद्यागुरू
चारूकीर्ति भट्टारक नेमिसागर जी वर्णी - 108

- सुबोध कुमार जैन

★ श्री जैन महिला विद्यापीठ का उदय - 109

- सुबोध कुमार जैन

★ श्री जैन बाला विश्राम एवं श्री जैन महिला विद्यापीठ
आपसी सम्बन्ध - 111

- सुबोध कुमार जैन

★ श्री जैन बाला विश्राम मध्य विद्यालय - 112

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

★ आरा मूक वधिर विद्यालय प्रारंभिक कथा - 113
- सुबोध कुमार जैन
★ श्री आदिनाथ नेत्रविहीन विद्यालय स्थापना का संक्षिप्त इतिहास - 116
- सुबोध कुमार जैन
★ माँश्री की डायरी से . . . - 119
★ श्रीमती अनूपमालाजी एवं ब्र. चंदाबाई जी के नाम क्षु. गणेश प्रसाद वर्णी का ऐतिहासिक पत्र - 123
★ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् - 125
- डॉ. सुनीता जैन
★ कानपुर अधिवेशन का उद्घोष - 131
★ अमृत महोत्सव पर प्रतिवेदन - अ
- सुबोध कुमार जैन, मंत्री
★ विशिष्ट व्यक्तियों के संदेश - ऊ
★ नारी गुणवती धत्ते स्त्रीसृष्टेरग्रिमं पदम् - अः
- आचार्य विद्यानन्द जी महाराज
★ उत्कर्ष और कीर्ति की शुभाशंसा - अः
- आचार्य मुनि आर्यनंदी जी महाराज
★ नये कीर्तिमान स्थापित करें - अः
- आचार्य कनकनन्दी जी महाराज
★ आशीर्वाद - क
- उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज
★ जैसा सुना था, वैसा पाया - क
- ऐलक गोसल सागर जी महाराज
★ जीवन्त कीर्ति स्तम्भ - क
- स्वस्ति भट्टारक श्री चारूकीर्ति जी महाराज
★ शुभकामनाएँ - ख
- भट्टारक भुवनकीर्ति जी महाराज
★ कीर्ति दिगदिगन्त में प्रसारित हो - ख
- गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माता जी
★ दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो - ग
- आर्यिका चन्दनामती माता जी
★ आशीष विचार - ग
- आर्यिका पवित्रश्री माता जी
★ अमर कृति - घ
- आचार्य चन्दना जी महाराज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

* **पूज्या सुमतिबाई जी का आशीर्वाद** - ड.
  - ब्र. विद्युल्लता शहा
* **चिरस्मरणीय सेवाएँ** - ड.
  - ब्र. कमलाबाई
* **DEDICATED SERVICES** - ड.
  - D. Veerendra Heggande
* **निष्कंप दीपशिखा** - च
  - रीना जैन
* **महिला संस्थाओं में अग्रणी** - च
  - नाथूलाल जैन शास्त्री
* **शुभ एवं प्रेरणाप्रद** - छ
  - डॉ. ताराचन्द्र जैन बक्शी (स्वतंत्रता सेनानी)
* **शताब्दी महोत्सव मनायें** - छ
  - निर्मल चन्द्र जैन
* **शताब्दी वर्ष द्विगुणित उत्साह से मनायें** - छ
  - एस. पी. देशमुख-माधुरी देशमुख
* **मारीशस में बाला विश्राम** - ज
  - लीलावती-रामनारायण बोंबास
* **आदर्श विद्यालय** - ज
  - डालचन्द्र जैन (पूर्व सांसद)
* **विनम्र श्रद्धा के दो शब्द** - ज
  - नागेन्द्र कृष्ण गुप्ता
* **" Our Bari Bua- Dadi Ji "** - झ
  - Pradeep K. Gupta
* **ज्योर्तिमयी अमर दीपशिखा** - ञ
  - **डॉ. नीलम जैन**
* **प्रातः स्मरणीय माँश्री** - ञ
  - श्रीमती पद्माचन्द्रा
* **अटूट प्रयत्नों का फल** - ट
  - डॉ. दरबारीलाल कोठिया
* **महिला संस्थाओं में सर्वश्रेष्ठ** - ठ
  - डॉ. पन्नालाल साहित्याचार्य
* **निरवद्य मातृत्व की प्रतिष्ठापक माताजी** - ड
  - प्रो. खुशालचन्द्र गोरावाला
* **अप्रतिम संस्था** - ड
  - प्रो. (डॉ.) लालचन्द जैन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

★ **धर्म के संस्कार सिंचित करे** - ढ
- पं. अभय कुमार जैन
★ **दिगम्बर जैन समाज का गौरव** - ढ
- निर्मल कुमार जैन (सेठी)
★ **स्तुत्य एवं अभिनन्दनीय** - ढ
- कैलाशचन्द्र चौधरी
★ **बाला विश्राम विश्वविद्यालय बने** - ढ
- उम्मेदमल जैन पाण्ड्या
★ **स्मरणीय कार्य** - ण
- रा. ब. हरकचन्द जैन पाण्ड्या
★ **जन-कल्याणकारी संस्था** - ण
- साहु शरदकुमार जैन
★ **समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ** - त
- साहु रमेशचन्द्र जैन
★ **सतत् प्रयत्नशील** - त
- स्वरूप चन्द जैन 'सोगानी'
★ **दिव्य अवदान** - त
- नीरज जैन
★ **कीर्त्ति स्तंभ** - थ
- डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया
★ **हार्दिक शुभकामनाएँ** - थ
- डॉ. ऋषभचन्द्र जैन 'फौजदार'
★ **नया चिन्तन आवश्यक** - थ
- हिम्मत सिंह जैन
★ **सम्पूर्ण जैन समाज के लिए गौरव एवं प्रेरणास्पद** - द
- भागचंद पहाड़िया
★ **महिला जागरण का प्रतीक** - द
- भूरमल जैन
★ **अद्भुत संस्था** - ध
- डॉ. कस्तूरचन्द कासलीवाल
★ **सन् १९२१ से सन् १९९७ के बीच आश्रम में पधारे आचार्य महाराज, मुनिगण, आर्यिकाएँ एवं साधुगण** - न
★ **श्री जैन बाला विश्राम, धर्मकुंज, आरा के लब्धप्रतिष्ठित यात्री और उनके अनमोल विचार** - प

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम, आरा के ऐतिहासिक अतिथि

पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी (माता कस्तूरबा भी साथ थीं)

इस वनिता विश्राम को देखकर मुझे जितना आनन्द हुआ उतना ही दुःख हुआ। दाता के लिये मन में आदर पैदा हुआ और मकान की शान्ति देखकर आनन्द हुआ। परन्तु सात वर्ष की विधवा को देखकर मुझे दुःख हुआ। संचालकों से मेरी प्रार्थना है कि ऐसी बालिकाओं को वे विधवा न समझें। ऐसा समझने में धर्म नहीं परन्तु अधर्म है ऐसी बालिका को कुमारिका मानी जाय।

पौ० कृ० 10 स० 1983

राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

बहुत दिनों के बाद आज श्री जैनबाला विश्राम विद्यालय फिर देखने का सुअवसर मिला। इस बीच में बहुत उन्नति विद्यालय की हुई, विद्यार्थी-संख्या भी बढ़ी है और इमारतें भी नई बन गई हैं। यह उन संस्थाओं में है जिन पर देश को गर्व होता है! हम इसकी दिनोंदिन उन्नति चाहते हैं। 12-9-37

आज एक बार और बाला विश्राम देखने का सुअवसर मिला। इस बार मानस्तंभ और श्री बाहुबलि स्वामी की मूर्ति के दर्शन पहले मरतवे हुआ। बड़ा आनन्द हुआ। लड़कियां इस समय गर्मियों की छुट्टी के कारण नहीं हैं। पर और सब काम वैसे ही सुप्रबन्ध में चल रहा है।

संस्था की दिनोंदिन उन्नति और वृद्धि हो, यही प्रार्थना है। 16-6-42

पंडित जवाहर लाल नेहरू

इस विद्यालय में मैं थोड़ी देर ठहरा और जो मेरा यहाँ स्वागत हुआ उसके लिए धन्यवाद।

मैं आशा करता हूँ कि यह विद्यालय खूब तरक्की करेगा।

5-1-37

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

आज श्री जैन बाला विश्राम को देखकर प्रसन्नता हुई । संस्था स्त्री शिक्षा के लिए बहुत उपयोगी है। इसके द्वारा गत 18 वर्षों में बहुत उत्तम कार्य हुआ है! यह संस्था बिहार में स्त्री शिक्षा का कार्य कर रही है। मैं इसकी सब तरह से सफलता की आशा करता हूँ । 1-4-82

(लोकनायक जी 7-11-51, 16-4-56 व 28-8-69 को तीसरी व अन्तिम बार आश्रम में पधारे) ।

अमर शहीद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

आरा जाने के सिलसिले में आज प्रात:काल इस आश्रम की देखभाल की । इस आश्रम ने जो उपयोगी कार्य किये हैं, उनको देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई! मेरी कामना है कि भविष्य में आश्रम की संस्था उज्ज्वल उत्थान करे ।

28-8-39

आचार्य विनोबा भावे

आचार्य विनोबा भावे अपनी सुप्रसिद्ध पद-यात्रा के दौरान आरा आए थे, तथा सभी उनके साथ के पदयात्री आश्रम में ही ठहरे थे । सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता शंकर राव देव भी उनके साथ थे । उस समय विनोवा जी ने आश्रम का निरीक्षण किया और लिखा--

आश्रम देखकर प्रसन्नता हुई ।

विनोबा के आशीर्वाद

1967

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जीवन्त मातृशक्ति का निर्माण केन्द्र

❑ आचार्य कनकनंदी जी महाराज

मैं ऐसी संस्था को आशीर्वाद देने जा रहा हूँ जहाँ ईंट, पत्थर जोड़ा नहीं जाता है, जहाँ भौतिक वस्तु निर्माण की जाती है परन्तु जहाँ एकत्रित होती है जीवन्त शक्ति, निर्माण होती है जीवन्त मातृ-शक्ति, जोड़-तोड़, संग्रह-विग्रह से रहित जन-कोलाहल, रंग रूप, भौतिक प्रतिस्पर्द्धा से विरहित धर्मकुञ्ज, धनुपुरा का श्री जैन बाला विश्राम एक ऐसी संस्था है, जिसकी अधिष्ठात्री शांत, सरल स्वभावी विनम्रता की प्रतिमूर्ति विदुषीरत्न पं० ब्र० चन्दाबाई जैन (स्व० आर्यिका श्री चन्द्रमती) थीं। इस संस्था के प्रेरणा स्रोत जैन जगत् के विवेकानन्द बाबू देवकुमार जैन रईस थे। दोनों के जीवन धर्म के लिए, ज्ञान के लिए, माँ जिनवाणी के लिए समर्पित थे। इन दोनों महापुरुषों के कारण 'श्री जैन बाला विश्राम', 'जैन सिद्धान्त भवन' बने, 'महिलादर्श' एवं 'जैन सिद्धान्त भास्कर' पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। आरा में और भी बहुत महापुरुष हुये हैं जो धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर भी हैं। इनके ज्वलन्त उदाहरण आरा के विशाल-विशाल शिखर-बद्ध 40-50 जिन मंदिर, जैन-विद्यालय, महाविद्यालय, अन्ध-बधिर विद्यालय, धर्मशालायें, मानस्तम्भ, चैत्य-वृक्षादि हैं। यहाँ के श्रावक भी बहुत गुरुभक्त, सरलस्वभावी हैं। बिहार की परिस्थिति को देखते हुए कहना पड़ेगा कि आरा के श्रावक कमल/पंकज हैं।

'जैन बाला विश्राम' एक प्राचीन स्त्री-शिक्षा केन्द्र है। यहाँ की पढ़ने वाली अनेक स्त्री रत्नों ने आर्यिका दीक्षा लेकर (आर्यिका विजयमति, आर्यिका आदिमती आदि) त्याग-तपस्या-ज्ञान का आदर्श प्रस्तुत किया है। इस युग के आदि में राजा ऋषभ (तीर्थंकर ऋषभदेव) ने पुरुष-शिक्षा के पहले स्त्री-शिक्षा का प्रारम्भ कर यह सिद्ध कर दिया कि समाज में पुरुष शिक्षा से भी महत्वपूर्ण स्त्री-शिक्षा है। उन्होंने अपनी पुत्री ब्राह्मी सुन्दरी को सम्बोधित करते हुए कहा था-

विद्यावान् पुरुषो लोके सम्मतिं याति कोविदैः।
नारी च तद्वती धत्ते स्त्री सृष्टेरग्रिमं पदम्॥

विद्या से सुसंस्कृत पुरुष विश्व में विद्वानों के द्वारा सम्मान को प्राप्त करता है और विद्यावती नारी स्त्री-सृष्टि में अग्रगण्य पद प्राप्त करती हैं। मनुस्मृति में भी कहा गया है-

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृधन् माता गौरवेणतिरिच्यते॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दस उपाध्यायों से एक आचार्य उत्कृष्ट है। सौ आचार्यों से एक पिता उत्कृष्ट है, सौ पिता से एक माता उत्कृष्ट है। इससे सिद्ध होता है कि बच्चों को संस्कारित करने में माता का स्थान सर्वोपरि है। इसलिए माताओं को सुसंस्कृत, सभ्य, धर्मात्मा, विदुषी होना चाहिए।

भारत के महान् क्रान्तिकारी नेता सुभाषचन्द्र बोस श्रेष्ठ राष्ट्र के लिये उत्कृष्ट माता की आवश्यकता सर्वोपरि मानते थे। राष्ट्र के लिये वे बोलते थे A good mother is better than hundred teachers. अर्थात् एक अच्छी माता सौ शिक्षकों से भी उत्कृष्टतम है।

आप मुझे सौ उत्तम माता दें, मैं एक उत्तम राष्ट्र दूँगा। उत्तम व्यक्तियों का निर्माण, सुसंस्कृत-उत्तम माताओं से होता है। जैसे शुद्ध स्वर्ण से जो अलंकार बनता है वह अलंकार भी शुद्ध होता है। बीज के अनुसार वृक्ष एवं वृक्ष के अनुसार फल आता है। मूल को सींचने से जैसे वृक्ष पुष्पित पल्लवित होता है, उसी प्रकार नारी समाज को सुसंस्कृत उन्नत करने से मानव समाज भी पल्लवित, पुष्पित, सुसंस्कृत होता है। इसीलिये प्राचीन नीतिकारों ने कहा है-

स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

जननी एवं जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है।

उपर्युक्त स्वस्थ आदर्श परम्परा को जीवन्त, पुष्पित, पल्लवित फलीभूत करने के लिए स्थापित 'श्री जैन-बाला विश्राम' ने अपने गौरवपूर्ण 75 वर्ष पूर्ण किये। इसकी मधुर-स्मृति के उपलक्ष्य में 'अमृत महोत्सव' उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। यह महोत्सव केवल औपचारिकता न होकर वास्तव में संस्थान के लिए अमृत बने, चिरस्थायी बने, ऐसा मेरा शुभाशीर्वाद है।

मात्र शताब्दी पूर्व मनाने के लिये नहीं परन्तु सहस्राब्दि मनाने हेतु आत्मशक्ति साहस ओर संकल्प शक्ति लेकर प्रगतिशील बने, ऐसी मेरी शुभकामना है।

हमारे भी दो चातुर्मास आरा में हुये हैं- 1 ब्रंह्मचारी अवस्था में 2. उपाध्याय अवस्था में। (गणधराचार्य कुन्थुसागर जी गुरुदेव के साथ) दोनों चातुर्मास में मुझे यहाँ के जैन सिद्धान्त भवन एवं बाला विश्राम के ग्रन्थों के अध्ययन का सुअवसर मिला। मेरे लिये वहाँ की संस्थायें खुली रहती थीं। बहुत कुछ अध्ययन मेरा आरा के शास्त्रों से हुआ। मेरे जो अभी तक 80-85 ग्रन्थ प्रकाशित हुये हैं उसका भी शुभारंभ आरा में श्रुतपंचमी को हुआ था। वहाँ की बच्चियों ने लेखन कार्य में बहुत सहायता की थी। मैंने भी वहाँ के बच्चों को एवं आश्रम की छात्राओं को पढ़ाया था। इसी प्रकार आरा मेरी साधनास्थली रही है। मेरे लिये आरा का भी योगदान उल्लेखनीय है। ७३ ६०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन बाला विश्राम और मैं

❑ श्री 105 गणिनी आर्यिका विजयमती माताजी

आ० विजयमती माता जी

आपका जन्म विक्रम सम्वत् 1965 की वैशाख शुक्ल 12 मंगलवार को कामा, राजस्थान में हुआ । 15 वर्ष की उम्र में विवाह हुआ और मात्र 20 दिन में ही पति का वियोग हो गया। उसके बाद ही 1943 ई. में वे जैन बाला विश्राम में आ गयी । उस समय आपका नाम शरबती देवी था। यहाँ पाँचवी कक्षा से बी.ए. तक आपने संस्था में अध्ययन किया और अध्यापन कार्य भी संभाला । सन् 1962 में यहां से आचार्य विमलसागर जी के पास जाकर आर्यिका दीक्षा ले ली। माँश्री चंदाबाई जी को जीवन के अंतिम समय में आपके ही पावन सान्निध्य में आर्यिका दीक्षा दी गयी और निर्विघ्न सल्लेखना-समाधि सम्पन्न हुई ।

-सं.

सुदक्ष कुशल कलाकार शिल्पी अपनी आन्तरिक प्रतिभा और तीक्ष्ण छेनी के सहारे उबड़-खाबड़, रूखड़ी चट्टान को त्रैलोक्य पूज्य भगवान् बना देता है। उसी प्रकार धार्मिक संस्थाएँ मनुष्य के अनादि कालीन मोह मिथ्यात्व रूपी दलदल को स्वच्छ कर सम्यक् ज्ञान की ज्योति से उसे विश्ववन्द्य बना देती हैं। पंडिता ब्र० श्री चंदाबाई जी द्वारा स्थापित "जैन बाला विश्राम, आरा" आश्रम ऐसी ही अप्रतिम संस्था है जिसने अपने जीवनकाल के लंबे अरसे में न केवल विदुषी महिलारत्न ही निर्मित की हैं, अपितु अनेकों सद्गृहिणी पाठिका व्रती,सम्यक्त्व शिरोमणि आर्यिकाएँ भी तैयार की हैं। नारी जीवन का सर्वांगीण विकास इस संस्था से निकली नारियों में स्पष्ट दिखाई देता है। धार्मिक क्षेत्र के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सैनिक, शैक्षणिक क्षेत्र में भी निष्णात बनाना इसका ध्येय रहा है । नारी के शील, संयम, त्याग और सदाचार की रक्षा और विकास करना इसका उद्देश्य रहा है ।

इस संस्था की सर्वोत्तम विशेषता है कि यह अपने क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्र रही है । सामाजिक, धार्मिक या राजनैतिक आदि किन्ही भी विवादग्रस्त विषयों को प्रोत्साहन नहीं दिया। यही कारण है कि सम्पूर्ण भारत की यह वात्सल्यमयी माँ के समान प्रिय रही है । इस संस्था से निकली हुयी अध्यापिकाएँ भारतवर्ष के प्रत्येक भाग-प्रांत में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कार्य कर रही हैं । माँश्री द्वारा सम्पादित ''महिलादर्श'' भी अपने प्रकार का एक ही पत्र रहा और उसने अर्द्धमृतसम महिला जीवन में वास्तविक सुख शांति का अमृत प्रवाह कर उसे पुष्ट और बलिष्ट बनाया।

आज ही नहीं युगों से सारा संसार भोग विलास और ऐशो आराम का दास बना आ रहा है । विज्ञान के चमत्कारों की झूठी झलक में आत्मा की दमक धुंधली पड़ रही है। मानवता कराह रही है। चारों ओर विषय-कषायों का बोलबाला है। नारी रंगीन तितली बनकर यत्र तत्र उड़ने में ही अपना गौरव मान बैठी है। इस विषम संकटापन्न काल और परिस्थिति में भी यह संस्था अपना सर्वांगीण विकास करती हुयी विपत्तियों का सामना कर नारी जीवन के सत्य आध्यात्मिक विकास में पूर्णत: संलग्न है। इसका श्रेय पं० ब्र० महिलारत्न चंदाबाई जी को ही है। उन्हीं के जीवन से अनुप्राणित हो पनपा हुआ मेरा जीवन आज इस उत्थान की पराकाष्ठा पर आसीन हो सका, जिसके ऊपर स्त्रीपर्याय जा ही नहीं सकती। महाव्रत, आर्यिका व्रत ही नारी जीवन की अंतिम विकास सीमा है। मैं ही नहीं अन्य भी अनेकों नारियों ने इस पद को अलंकृत कर समाधिमरण सिद्ध किया और करने के प्रयत्न में लगी हैं । प० पू० श्री 105 आ० सिद्धमती जी, 105 आ० आदिमतीजी, 105 आर्यिका श्री द्वितीय आदिमती जी आदि हैं। सभी स्व पर कल्याण में लीन हैं । धर्मोपदेश कर भव्य जीवों का कल्याण कर रही हैं । विविध विषयों पर साहित्य रचना कर आध्यात्मिक जीवन का पोषण करने में रत हैं । कई बा० ब्रह्मचारिणियाँ हैं । मेरे साथ भी आर्यिका विमलप्रभा इसी संस्था की देन है, आध्यात्मिक जीवन निर्माण में लगी हैं । इस संस्था का अमृत महोत्सव शब्दत: और अर्थात: सार्थक है। इस प्रकार की संस्थाओं की आज महती आवश्यकता है। नारी जीवन की कुरीतियाँ, लिप्सा, फैशन परस्ती, नैतिक पतन को रोकने में ऐसी ही संस्थाएँ समर्थ हैं । इस संस्था को हमारा पूर्ण आशीर्वाद है कि '' यह अधिकाधिक समय तक सुगठित रह कर अनेकों महारानी सीता समान, अंजना, मनोरमा, राजुल, चंदना, अनंतमती आदि को जन्म देकर जैन धर्म का प्रचार, अभिवृद्धि और उत्थान करती रहे। मुझे गौरव है कि मेरे सान्निध्य में ही माँश्री पं० चंदाबाई जी ने आर्यिका व्रत धारण कर समाधिमरण सिद्ध किया। आर्यिका दीक्षा श्री 108 गणधर मुनि कुन्थुसागर जी ने प्रदान की। उनकी स्वर्गस्थ आत्मा को भी हमारा आशीर्वाद है कि शीघ्र पुरुष पर्याय धारण करके मुक्ति प्राप्त करें ।

❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन बाला विश्राम में
मेरा अध्ययन एवं अध्यापन काल

❑ आर्यिका विमलप्रभा माता जी

आ० विमलप्रभा माता जी

पूर्व नाम आदेश जैन, पौत्री बा० अनन्त कुमार जैन, आरा आपने श्री जैन बाला विश्राम में कक्षा 5 से कक्षा 11 तक की शिक्षा प्राप्त की। साथ ही साथ धर्म में जीव तक की परीक्षा दी है। आप आश्रम की उदाहरणीय छात्रा रहीं तथा आश्रम की एक सफल शिक्षिका भी रहीं हैं। आश्रम में आपने 5 वर्ष तक संस्कृत शिक्षिका के पद पर हाई स्कूल में योग्यतापूर्वक अध्यापन कार्य किया है। तत्पश्चात् आप आर्यिका विजयमती माता जी के संघ में दीक्षिता हुईं।

- सं.

आज विश्व में चतुर्दिक नित्य नयी संस्थायें खुल रही हैं। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में संस्थाओं का निर्माण हो रहा है। मानव जीवन को परिष्कृत, परिमार्जित एवं नियमित कर उसका सर्वांगीण सम्यक् विकास करना ही इन संस्थाओं का लक्ष्य है। किन्तु ड्राइवर यदि कुशल है तो गाड़ी पथिकों को यथायोग्य गन्तव्य स्थान पर पहुंचा देती है अन्यथा तत्काल फैक्ट्री से लाई गयी नई कार ही क्यों न हो, वह भी चालक यदि कुशल नहीं है, तो कब कहाँ सवारी को गिरा देगी, इसका कोई ठिकाना नहीं है।

यहाँ कहना यह है कि जिस विद्यालय का अमृत महोत्सव हम मना रहे हैं, वह आकार-प्रकार, सौन्दर्य, वातावरण आदि की अपेक्षा तो महान् है ही, किन्तु विशेषता तो उसकी संस्थापिका पू० ब्र० पं० चंदाबाई जी माँश्री की है जिन्होंने अपना सर्वस्व संस्था के विकास के लिये अर्पित कर दिया। आपके ज्ञान, गरिमा, त्याग और तपस्या से आपका निजी जीवन तो दीप्त और आलोकित रहा ही किन्तु उसका प्रभाव आश्रम की बालिकाओं पर बहुत ही गहरा पड़ता गया। आपके निस्पृह जीवन एवं तप से दीप्त मुखाकृति से वचन प्रयोग के बिना ही हम जैसी बालिकाओं को सतत् शिक्षा मिलती रहती थी। हम सब आपको देखकर प्रमुदित, हर्षित और गौरवान्वित होते थे। इस संस्था की महत्ता का श्रेय आपको ही है।

इस विद्यालय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ बालिकाओं को लौकिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिक्षा के साथ नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक शिक्षायें भी दी जाती हैं। जिस प्रकार फल पुष्पों से अभिव्याप्त वृक्ष, जड़ के सूख जाने से अल्पकाल में ही विनाश को प्राप्त हो जाता है उसी प्रकार धर्म शिक्षा विहीन (अर्थशास्त्र, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र और सब प्रकार के साहित्य आदि का ज्ञान) मानव का सम्यक् विकास करने में सर्वथा अशक्य सिद्ध होता है। ऐसा ही भाव गुणभद्राचार्य ने आत्मानुशासन में अभिव्यक्त किया है:-

''कृत्वाधर्मविघातं विषमसुखान्यनुभवन्ति ये मूढा: ।
आच्छिद्य तरून् मूलात् फलानि गृह्णन्ति ते पापा: ।।''

इस संस्था में धार्मिक शिक्षण सबके लिये अनिवार्य था और अभी तक है। यहाँ की छात्राएँ साहित्यरत्न, विशारद्, न्यायतीर्थ की परीक्षाओं में भी सबसे अधिक अंक प्राप्त करती रही हैं । परम पूज्या प्रात: स्मरणीया श्री 105 सिद्धांत विशारदा गणिनी श्री विजयमती माता जी का बाल्यकाल बाला विश्राम के प्रांगण में ही पल्लवित हुआ था। आज आपके प्रवचन के द्वारा धार्मिक क्षेत्र में अभूतपूर्व जन जागृति हो रही है। कठिन से कठिन, सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय को सरल सुगम बना कर जनता के बीच प्रस्तुत करने में आप विशेष निपुण हैं। ऐसी आर्यिकाओं को जन्म देने वाली संस्था भी वस्तुत: उतनी ही महान् है। इस संस्था की गरिमा महिमा को कहने की आवश्यकता नहीं है। सूर्य के तेज और प्रकाश को कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता उसी प्रकार इस संस्था का यश सतत भूमंडल को व्याप्त करता रहा है और करता रहेगा यदि शिक्षकवृन्द स्वयं सावधान रहें तो ।

मैंने भी इस विद्यालय में कक्षा 5 से कक्षा 11 तक शिक्षण प्राप्त किया है और धर्म में जीवकाण्ड तक की परीक्षा दी है। पुन: 5 वर्ष तक संस्कृत शिक्षिका के पद पर हाई स्कूल में अध्यापन कार्य भी किया। अब मैं आर्यिका रत्न श्री 105 सि० वि० गणिनी विजयमती माता जी के पास हूँ । मेरा ऐसा अनुभव है कि इस संस्था की उज्ज्वलता का मूल, छात्राओं पर डाले गये धार्मिक संस्कार हैं । ब्र० पू० पं० चंदाबाई जी माँश्री एवं पू० ब्र० पं० ब्रजबाला देवी जी माँश्री का त्यागमय जीवन, श्री सचिव महोदय की विशेष धर्माभिरुचि, शिक्षकों की सात्विक प्रवृत्ति एवं सदाचार ही इस संस्था के उत्कर्ष का कारण है । यहां सतत स्मरणीय यह है कि समर्थ कारण के बिना कार्य की सिद्धि नहीं होती है। अत: संस्था की उज्ज्वलता को भविष्य में कायम रखने के लिये गुरुजन (शिक्षकगण) भी पूर्वजों के आदर्श को बनाये रखें, ऐसी हमारी आकांक्षा है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री चंदाबाईजी

❑ ब्र० विद्युल्लता शहा, सोलापुर

संस्कृत को अगर सरिता की उपमा दी जाय तो वह सरिता विचार और आचार इन दो तटों के बीच से बहती है। नारी का स्थान संस्कृति रक्षण में क्या हो सकता है, यह तो हम भ० ऋषभनाथ के काल से जो इस युग का आदिकाल है, ज्ञात कर सकते हैं। भ० ऋषभनाथ ने ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान और सुन्दरी को अंक ज्ञान दिया। नारी महिमा का यह मंगलाचरण है, उसका ही स्वस्तिवाचन हम आज तक करते आ रहे हैं। उस स्वस्तिवाचन का ही एक शब्द हैं, "माँश्री चंदाबाई"।

पुराणकथाओं से तथा ऐतिहासिक पन्नों से हम यह भी जान सकते हैं कि समाज पर नानाविध विपत्तियां आईं। उन विपत्तियों के परिहार के लिये महान् विभूतियों का अवतरण हुआ तथा पुनश्च शान्ति-समृद्धि की स्थापना हुई, ऐसी कथाएँ हम पढ़ते और सुनते आये हैं।

संस्कृति का रथ पुरुष और महिला इन दो चक्रों के होते हुए भी सामाजिक व्यवस्था पुरुष प्रधान ही रही है। स्त्री की उपासना, भू देवी, भू माता, शक्ति देवता आदि रूपों में करते हुए भी विशेष रूप से समाज में अच्छी प्रतिष्ठा नहीं रही। बाल विवाह जैसी अनिष्टकारी रूढ़ियों ने नारी को अनुचित कठोर शिक्षा दी। यह एक ऐसी अवस्था है जिससे किसी भी स्त्री का सामाजिक स्थान जीवधारी शव से बढ़कर नहीं हो सकता। इस अवस्था से जैन समाज भी अलग नहीं था। असमानता, बाल विवाह समस्या तथा पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था की हर तरह की विचित्र समस्याओं की शिकार जैन नारी भी थीं।

इससे बचने के लिए, निष्पाप बाल विधवाओं एवं परित्यक्ता महिलाओं को अपने समाज समर्पित व्यक्तित्व की अभय छाया में एवं जैन बाला विश्राम, आरा के माध्यम से आश्रय देनेवाली महान् शक्ति, चैतन्य स्वरूपी महामना पंडिता बाल ब्रह्मचारिणी माँ चंदाबाई जी ने समाज के इस उपेक्षित पात्र चित्र को पूर्णत: बदल देने का प्रयास किया और इसी मार्ग पर अर्थात् नारी उद्धार के मार्ग पर प्रवास किया। इस प्रवास का प्रयास भी शुभ फलदायी हुआ। माँ चंदाबाई जी ने कहा, "पतिव्रता धर्म ही नारी के लिए श्रेष्ठ धर्म है और उसके लिए अमूल्य निधि है।" इसी के संदर्भ में चारित्र पालन का महत्त्व समझाकर आत्म कल्याण का सम्यक् मार्ग दिखाया। महिला जागरण की बड़ी क्रान्ति के माध्यम से उचित एवं प्रभावी मार्गदर्शन किया। किसी सहृदय कवि ने माँ के संबंध में कहा है -

"सीमाहीन मिला दुखियों को , स्नेहसिक्त मातृत्व तुम्हारा।
सदा बहाई तुमने जब थी, सरल सरस करुणा की धारा॥"

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संस्कृति को लेकर परंपरायें आती हैं, परंपराओं के रूप में ही संस्कृति जीवित रहती है, उसको जीवित रखने में महिलाओं की जो अहम् भूमिका है, उसका दृश्य स्वरूप जैन बाला विश्राम, आरा है तो वह नगर से दूर, परंतु विशुद्ध संस्कृति के अत्यंत निकट है। इसे मैं संक्षेप में "आश्रम" कहती हूँ।

यह आश्रम पुराण कालीन ऋषि मुनियों के आश्रमों की याद दिलाता है। प्रसन्न और आदर्श वातावरण के कारण यह आश्रम जैन धर्मीय महिलाओं एवं श्राविकाओं के लिए आश्रयधाम, ज्ञानधाम तथा अभयधाम के रूप में उभर आया तथा नारकीय जीवन से मुक्त करानेवाला, "मंगलधाम" भी बना। कन्याओं को आदर्श गृहिणी तथा विधवा परित्यक्ता बहनों को लौकिक एवं धार्मिक शिक्षा इस प्रकार दी जाती थी कि जिससे वे अपनी जीवन यात्रा में पूर्णत: सफल हों।

"नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न च पुनर्भवम्।
कामये दु:खतप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम्॥"

इस प्रकार की पवित्र भावनाओं से प्रेरित माँश्री चंदाबाई जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, सफल लेखिका, संपादिका, कहानीकार एवं कवयित्री भी थीं। जैन महिलादर्श मासिक पत्रिका के द्वारा माँ जी ने अपने संपादकीय लेखों और टिप्पणियों द्वारा भारतीय नारी वर्ग के लिये एक सशक्त पथ प्रदर्शन का कार्य किया। इसी पत्र के विधायक कार्य के फलस्वरूप जैन नारी को न्याय से जीने का साहस मिला। आज कई अच्छी लेखिकाएँ तथा साहित्यकार महिलाएँ अपना विशिष्ट योगदान समाज को दे रही हैं।

माँ चंदाबाई जी की छत्रछाया में कुछ समय तक रहने का सौभाग्य मुझे भी मिला। ''सत्संग'' को वृक्ष की उपमा दी जाती है, और वृक्ष परोपकाराय का प्रतीक है। यही वृक्ष विपत्ति आने पर कल्पवृक्ष बन जाता है। उनका सत्संग ही हमारे सोलापुर में सुस्थित 'श्राविकाश्रम' की प्रगति के लिए प्रेरणास्रोत बन गया। स्त्री शिक्षा, परित्यक्ता तथा विधवा महिलाओं के लिए अभय जीवन का प्रबंध करने के भाव तो हमारे मन में थे ही, मात्र इन्हीं भावों का दृढ़ीकरण माँ के सत्संग में हुआ।

कालचक्र सदा गतिमान रहता है, रहना भी चाहिए। उससे परिवर्त्तन है, परिवर्त्तन नाम ही जीवन है, किन्तु इस परिवर्त्तन में सही दिशा का होना आवश्यक होता है, वही सही दिशा का ज्ञान 'माँ' जैसी परम विदुषी ही कर सकती है।

संक्षेप में इतना ही कहूंगी कि माँ पं० चंदाबाईजी जैन नारी जागरण की अग्रदूत थीं, परम विदुषी थीं। अपनी विद्वत्ता चारित्र्य संपन्नता एवं सेवा परायणता के कारण भारत की महान् नारियों की पंक्तियों में शोभायमान हो गयी हैं। आज माँ जी हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनके सान्निध्य का लाभ उठाकर कितनी स्नातिकाएँ समाज, साहित्य एवं धर्म की जी-जान से सेवा कर रही हैं। जैन बाला विश्राम माँश्री का तपोभूमि स्वरूप ही था। परमसंत स्वामी रामकृष्ण परमहंस की परिभाषा के अनुसार साधु की वाणी एवं आचरण एक-सा होना चाहिए। "माँ" जी सही माने में इस उक्ति को सार्थक करती हैं।

♦

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आदर्श नारी की अद्वितीय कृति

❑ डॉ० नेमिचंद्र जैन, प्राचार्य, खुरई

आरा नगर से लगभग 2½ कि० मी० दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में, उत्तुंग दिगम्बर जैन मंदिरों के बीच स्थित जैन बाला विश्राम अपने में अतीत के गौरवमय इतिहास को छिपाये हुए पचहत्तर वर्ष पूर्ण कर चुका है । किसी भी संस्था के लिये अमृत महोत्सव मनाने का सौभाग्य सुख की अनुभूति देता है ।

एक समय था जब भारत में ही क्या विश्व में नारियों को शिक्षित बनाना आवश्यक नहीं समझा जाता था । पुरुष भी अधिकांशत: अशिक्षित अर्द्धशिक्षित रहते थे । नारियों के विधवा हो जाने पर, अनाथ या परित्यक्ता हो जाने पर उनको सहारा देने वाला कोई दृष्टिगोचर नहीं होता था । नारियों का जीवन अंधकारमय हो जाता था। ऐसी विषम परिस्थितियों के समाधानार्थ एवं नारियों को स्वावलम्बी, शिक्षित और एक श्रेष्ठ सामाजिक व्यक्ति बनाने की भावना से आरा के रईस, दानी, ज्ञानी, धर्मज्ञ, उदारमना देवर्षी बाबू देवकुमार जी ने नगर के बाहर स्थित अपने ही पैतृक सुरम्य उद्यान में अपनी अनुजबधु, श्रीमती चंदाबई जी को शिक्षित कर, स्व० अनुज श्री धर्मकुमार जी की स्मृति को बनाये रखने के लिए, 18 मई 1921 को जैन बाला विश्राम नामक संस्था की स्थापना की थी । पवित्र उद्देश्य से स्थापित इस संस्था ने अपने गौरवमय कार्यों से भारत में अद्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया था । श्रीमती चन्दाबाई जी ने विद्वानों के सहयोग से अनाथ, विधवा, परित्यक्ता नारियों एवं बालिकाओं को मातृवत् संरक्षण देकर धार्मिक एवं लौकिक शिक्षा दिलवाकर जैन धर्म विशारद्, न्यायतीर्थ एवं साहित्य विशारद, साहित्यरत्न आदि की परीक्षाएँ दिलवाकर वैदुष्य प्रदान किया तथा सिलाई, बुनाई, कढ़ाई की शिक्षा दिलवाकर, जीविकोपार्जन योग्य बनाया था।

पूज्या माँश्री चन्दाबाई जी का जीवन साधनामय था । नित्य पूजन, स्वाध्याय अतिथिदान आदि देकर आश्रमवासिनी महिलाओं एवं बालिकाओं पर मूक प्रभाव छोड़ती थीं । वे अनुशासित एवं अनुशासन प्रिय थीं । उनके अनुशासन में सम्पूर्ण आश्रम का वातावरण कसा रहता था । फलस्वरूप आश्रम से शिक्षित होकर निकलीं विदुषी नारियों ने समाज सेवा करते हुए साधना के मार्ग पर चलकर क्षुल्लिका आर्यिका आदि की दीक्षा लेकर अपना मानव जीवन सफल बनाया और समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया ।

ऐसे पवित्र वातावरण सम्पन्न संस्था में स्व० पं० के० भुजबली शास्त्री मूडबिद्री,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्व० डॉ० नेमिचंद्र जी ज्योतिषाचार्य आदि विद्वानों ने अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं। सौभाग्य से मुझे भी अक्टूबर 1962 से 1971 तक हाई स्कूल में हिन्दी, संस्कृत शिक्षक एवं जैन धर्म अध्यापन करने का अवसर प्राप्त हुआ था। अत: आश्रम की मधुर स्मृतियाँ आज भी स्मृतिपटल पर अंकित हैं।

पूज्या स्व० माँश्री चन्दाबाई जी के वात्सल्य पूर्ण व्यवहार एवं आदर्श जीवन ने मेरे जीवन में विशिष्ट परिवर्त्तन किया। मेरे परिवार के सदस्यों को वही स्नेह दिया जो एक परिवार के वृद्धजनों से पुत्र और पुत्रवधु को प्राप्त होता है। नौ वर्ष का सेवाकाल तनाव विहीन व्यतीत हुआ। मेरा शैक्षणिक विकास आरा में ही हुआ। माँश्री विद्वानों को सम्मान एवं स्नेह देना जानती थीं। धार्मिक शिक्षण के लिए अधिकाधिक खर्च करना उनके जीवन का उद्देश्य था। वे धार्मिक शिक्षण प्राप्त करने वाली बालिकाओं एवं महिलाओं को नि:शुल्क धार्मिक पुस्तकें वितरित करती थीं। एक बार मैंने उनसे कहा माँजी हमलोग हजारों की पुस्तकें बांटते हैं जो संस्था के हित में नहीं है। छात्राओं से मूल्य लेना चाहिए। माँश्री ने उत्तर दिया – " पंडितजी! ईसाई मिशनरियाँ अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये अरबों रुपयों की पुस्तकें एवं धार्मिक सामग्री नि:शुल्क वितरित करती हैं क्या हमलोग हजारों की भी नहीं बांट सकते?

पूज्या माँश्री के ज्येष्ठ के परिवार में प्रसिद्ध उद्योगपति रईस श्री स्व० निर्मलकुमार जी चक्रेश्वर कुमार जी हुए। उन दोनों के 9 पुत्रों में बाबू सुबोध कुमार जी हैं जो आज करीब 80 वर्ष की आयु में भी संस्था की प्रगति के लिये चिन्तित रहते हैं। बाबू सुबोध कुमार जी के द्वितीय पुत्र श्री अजय कुमार जी अपने पूर्वजों की तरह धार्मिक एवं सामाजिक कार्यो में अग्रणी हैं। पूरा परिवार धार्मिक संस्कार सम्पन्न है।

श्री जैन बाला विश्राम आरा के अमृत महोत्सव पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के माध्यम से स्व० पूज्या माँश्री और संस्था से सम्बन्धित सभी दिवंगत संचालकों, विद्वानों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ। भगवान से प्रार्थना है कि जैन बाला विश्राम को ऐसी संचालिका प्राप्त हो जो समर्पित होकर संस्था की प्रगति एवं अतीत गौरव को पुन: स्थापित करने में सफल हो सके।

❁

माँश्री चन्दाबाई ने अपनी डायरी में 3 फरवरी 1972 को लिखा – "*पं० नेमिचन्द जैन काम छोड़कर खुरई (मध्य प्रदेश) चले गये हैं। यहाँ अध्ययन पूरा कर लिया। वहाँ स्कूल के प्रिन्सिपल हुए हैं।" श्री नेमिचन्द जैन 'जैन बाला विश्राम' में अध्यापक होकर आये और यहाँ रहते हुए एम० ए०, बी० एड० तक की उपाधि प्राप्त करके पी-एच० डी० के लिए मगध विश्वविद्यालय से पंजियन कराकर अनुसन्धान कार्य आरंभ किया जिसे उन्होंनें खुरई पहुँचने के बाद सम्पन्न किया। डॉ० नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य की तरह इन्हें भी जैन बाला विश्राम में कार्य करते हुए उच्च अध्ययन का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ।* -सम्पादक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तीन पीढ़ियों की शुभ कामनाएँ

❑ डॉ० शशिकान्त जैन, लखनऊ

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि श्री जैन बाला विश्राम की स्थापना के 75 वर्ष पूरे हो गये और महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक जीवन्त संस्था के रूप में यह आज भी अग्रसर है। अत: इसका अमृत महोत्सव मनाया जाना और उस अवसर की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए 'स्मारिका' के प्रकाशन का अभिप्राय सर्वथा उचित एवं सराहनीय है। इस संस्था की स्थापना 1921 ई० में स्व० चन्दाबाई जी द्वारा उस समय की गई थी जब जैन समाज में स्त्रियों की शिक्षा के प्रति भारी उदासीनता थी। चन्दाबाई जी स्वयं भी उस उदासीनता से प्रभावित हुई थीं। यद्यपि उनका पैतृक परिवार मथुरा का एक सुशिक्षित अग्रवाल (वैष्णव धर्मानुयायी) परिवार था। परन्तु विचारों में प्रगतिशील होते हुए भी उनके पिता उस समय की सामाजिक रूढ़ियों से अपने को मुक्त नहीं कर पाये थे और मात्र 12 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह हो गया तथा उनकी शिक्षा घर पर ही प्राथमिक स्तर तक हो सकी थी। दैवयोग से 13 वर्ष की आयु में ही उन्हें वैधव्य का दु:ख झेलना पड़ा। तब उनमें अपने अध्यवसाय से और अपने श्वसुर-गृह में अपने ज्येष्ठ बा० देवकुमार और भ्रातृज बा० निर्मलकुमार व बा० चक्रेश्वर कुमार के स्नेह, सहयोग एवं सत्प्रेरणा से शिक्षा के प्रति अभिरुचि जागृत हुई। जैनधर्म का स्वयं अध्ययन-कर उन्होंने उसे अंगीकार किया और आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर जैन समाज में स्त्रियों की शिक्षा के प्रति जागृति पैदा करने का संकल्प लिया। वह संकल्प 1921 ई० में 'श्री जैनबाला विश्राम' के रूप में प्रतिफलित हुआ और इसकी प्रतिष्ठा पूरे देश में एक आदर्श अन्तेवासी महिला शिक्षण संस्था के रूप में हो गयी। मैनपुरी, जसवन्तनगर तथा विभिन्न स्थानों से प्रतिष्ठित और समृद्ध जैन अपनी पुत्रियों-पौत्रियों को इस संस्था में अध्ययन हेतु भेजते रहे। मैनपुरी की चित्रगुप्त महाविद्यालय में हिन्दी की विभागाध्यक्षा डॉ० मालती जैन की प्रारंभिक शिक्षा इस संस्था में हुई थी। स्व० शशिप्रभा 'शशांक' भी बाहर से आरा आई थीं।

साथ ही आरा की अधिकांश बालिकाओं की शिक्षा यहाँ हुई। स्व० बा० अमृतचन्द्र की पौत्री और स्व० बा० रत्नचन्द्र जैन की पुत्री मेरी पत्नी मंजरी ने 1953

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ई० में 'साहित्य विशारद्' की परीक्षा यहीं से उत्तीर्ण की थी। बड़ौत के जैन महिला महाविद्यालय की (अवकाश-प्राप्त) प्राचार्या डॉ० सुरजमुखी जैन (मुजफ्फरनगर) भी इस संस्था की छात्रा रहीं थीं। सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में अग्रणी आरा-वासी परिवारों और आरा के बाहर के परिवारों की काफी महिलायें अपनी शिक्षा के प्रारंभिक काल मे इस संस्था से सम्बद्ध रही हैं।

हमारे पिताजी, इतिहास-मनीषी डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन विदुषीरत्न चन्दाबाई जी के प्रशंसक थे और उनके उद्गार 'चन्दाबाई' अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित हैं। हमारे परिवार में शिक्षा के प्रति विशेष आग्रह रहा है। हमारे पितामह (बा० पारसदास जैन) और मातामह (मा० उग्रसैन कन्सल) आधुनिक शिक्षा पद्धति से शिक्षित थे। मातामह व्यवसाय से शिक्षक भी थे, अतः हमारी माताजी (श्रीमति अनन्तवाला) को उस समय के अनुरूप संस्कृत की प्रथमा और वर्नाक्यूलर मिडिल परीक्षा उन्होंने उत्तीर्ण कराई थीं। पुत्र-वधू और तत्पश्चात् पौत्रियों एवं पौत्र-बधुओं के लिए उच्च शिक्षा की परम्परा हमारे पिताजी ने सम्पुष्ट की तथा विद्यालय खोलने और चलाने के लिए भी उन्होंने प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया।

1920 से 40 के दशकों में यद्यपि शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रही थी, जैन समाज में बालिकाओं को स्कूल-कॉलेजों में भेजने का चलन बहुत कम था। उन दिनों कहीं-कहीं मंदिरों में ही बालिकाओं की शिक्षा की कुछ व्यवस्था थी। मेरठ में हमारे बचपन में दिगम्बर जैन मंदिर में सोना बीबीजी अपनी पाठशाला चलाती थीं। सोना बीबी जी संयोगवशात् बाल विधवा थीं और एक समृद्ध खण्डेलवाल जैन परिवार की पुत्र-वधू थीं। उन्होंने अपने जीवन का ध्येय बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करना बना लिया था तथा महिलाओं में सामान्य जागृति के लिए वह शास्त्र प्रवचन भी नियमित रूप से करती थीं।

हमारे सम्पूर्ण परिवार का आरा के इस सारस्वत सत्प्रयास से भावनात्मक संबंध है। अमृत महोत्सव के अवसर पर चाचाजी श्री अजित प्रसाद जैन, भाई रमाकांत और पत्नी मंजरी के साथ हम इन सभी संस्थाओं की निरन्तर प्रगति तथा आपके परिवार में इस परम्परा के अक्षुण्ण बनाये रहने के लिए अपनी हार्दिक शुभकामना प्रेषित करते हैं।

⌘

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री के अनुपम आदर्श

❑ श्रीमती श्रीप्रभा जैन, दिल्ली

आकाश की ऊँचाई, सागर की गहराई और धरती, सी सहनशीलता, प्यार और ममता की अजस्र धारा । इन्हें शब्दों में कहाँ बाँधा जा सकता है । कभी लिखने के शब्द नहीं मिलते । कभी इतना लिखना होता है कि शब्द ही पूरे नहीं हो पाते ।

परिस्थितियों के तूफानी झोंके बड़े से बड़े वृक्षों को तिनके की तरह उड़ा देते हैं, लेकिन ऐसे में एक छोटी-सी कोमल कली हर संघर्ष को हँस कर झेल लेती है । लगता है एक झांसी की रानी अपने शौर्य और तेज से दुखी और दलित नारी को समाज के अत्याचारों से बचा लेती है, एक सावित्री नारी के दुखद भाग्य के लिए संजीवनी मांग लेती है, एक सीता सहज वनवास लेकर कठोर साधना का जीवन अपना लेती है । आदर्श ऊँचे हैं तो संकल्प भी दृढ़, कार्य महान् है तो श्रम भी अटूट इन सबका समन्वय थीं हमारी दादी चन्दाबाई जी । अतिशयोक्ति नहीं, यदि इसे प्रत्यक्ष देखना हो तो हम 100 वर्ष पूर्व के उस समाज को देखें जहाँ अगर मूक नारी केवल विलासिता का साधन, और दासता की श्रृंखला में आबद्ध थी ।

एक विधवा कि नियति थी जलती चिता । पतिविहीना सीताएँ परिवार द्वारा यातना की लक्ष्मण रेखा में बांध दी जाती थीं । दादी जी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन वस्त्र, वाणी, विद्या और विभूति से नहीं किया जा सकता, बल्कि प्रतिदिन की चर्या हर क्षण के कार्य ही उनके व्यक्तित्व का परिचायक हैं और उनके महान् जीवन का प्रतिबिम्ब हैं ।

पुण्य सलिला वृन्दावन की धरती पर सन् 1889 में चन्दाबाई जी का जन्म हुआ । पिता देश भक्ति के लिए समर्पित कांग्रेस के एक कर्मठ अधिकारी थे । अगाध-स्नेह व लाड़-प्यार में पली उनकी यह बारह वर्षीया बालिका आरा के बाबू धर्मकुमार जी की पत्नी बनी । एक साल बाद ही विधि ने उनके माथे का सिंदूर पोंछ दिया । छोटी-सी वय और दुखों का इतना बड़ा पहाड़ । शायद विधि की कुछ और योजना थी । चिन्तन और ज्ञान के सागर नन्हीं बाला ने अपना जीवन गहन और विशद अध्ययन की ओर मोड़ दिया तथा बड़े धैर्य के साथ एक नया मार्ग खोजा अपने लिए ही नहीं बल्कि समस्त दुखी महिलाओं के लिए भी । संस्कृत के गहन अध्ययन के पश्चात् 907 में एक कन्या पाठशाला खोली और शहर की सभी बालिकाओं को शिक्षित किया । विधवा बहनों को आजीविका में लगाया, रोगियों की तन-मन-धन से सेवा की । आपने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय सहयोग किया और कितने भाई बहनों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को इसकी प्रेरणा दी। सन् 1920 में चर्खा चलाना शुरु किया और स्वतंत्रता मिलने तक यह अनुष्ठान करती रहीं। स्वयं खद्दर पहनती और इसका प्रचार भी करती रहीं। देशभक्ति के लिए चन्दा मांगना आदि अनेक कार्य करती रहीं। लेकिन इन सारी व्यस्तताओं में उनका एक ही व्रत और एक ही लक्ष्य, एक ही मार्ग रहा, बालिकाओं को अपने तन-मन-धन और सर्वस्व को लगाना। रात-भर जागकर भी छात्राओं की सेवा की जो उनकी सत्यप्रिय निष्ठा का ज्वलंत उदाहरण है।

महात्मा गाँधी, राजेन्द्र बाबू के अतिरिक्त राजनीति के बड़े-बड़े धुरन्धर व्यक्ति उनके आश्रम में आए और राजनीति में आने का प्रस्ताव भी रखा। अगर वे चाहतीं तो राजनीति में उन्हें धन, नाम और यश सब मिलता पर वे तो जल में कमल की भाँति निःसंग थीं, उन्हें तो बस त्याग और सेवा की लगन थी। धर्म के मंत्र से उनका जीवन आलोकित था, पथ प्रशस्त था। अतः निर्णय लेने में और न्याय के पथ पर चलने में उन्हें कठिनाई न थी।

बाला विश्राम धर्मकुंज दादी जी की अमर कृति है। इसमें उन्हें वैधव्य के दुःख से दुःखी अबला नारियों के उत्थान की पूरी संभावनाएँ दिखी। इसीलिए सारे प्रयत्न इसी पर केन्द्रित कर उन्होंने समाज को जीती जागती अनेक कृतियाँ दीं जो उनकी आस्थाओं को, कार्यो को साकार कर सकीं। यहाँ पर देश के कोने-कोने से छात्राएँ तथा दुःखी नारियाँ आती रहीं और यहाँ से सबल निर्भय और विदुषी बन कर देश के कोने-कोने में विद्या का प्रसार करती रहीं।

पाँच महाव्रत का वर्णन बचपन से शास्त्रों में सुनती आई हूँ। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ऋषि मुनि इन्हें यतन से पालते भी हैं। लेकिन इसका सहज प्रतिपादन, और पालन एक निर्मल धारा की तरह दादी जी में प्रवाहित लगता है। लगता है पाँच महाव्रतों ने एक सागर रूप ले लिया हो। त्याग का क्षेत्र लेकर साधना करना सरल है क्योंकि वहाँ सभी कार्य स्वयं के लिए हैं परहित का समावेश कम है। लेकिन सेवा के क्षेत्र में सभी का संतुलन रखते हुए धर्म, संयम, सेवा और चरित्र की उज्ज्वलता एक महान् साधना है। ऐसी सूक्ष्म अहिंसा की भोजन की हर वस्तु का शोधन स्वयं करती थीं। ठंढे पानी में गर्म जल नहीं मिलाया जाता था। ईंधन की लकड़ी शोध कर प्रयोग में लाई जाती थी। मर्यादा के अनुसार घी घर में निकाला जाता था। चीनी बनाने के लिए हर गन्ने का शोधन होता था। इसलिए कि व्रतों का निरतिचार पालन हो सके। इस तरह उनके जीवन में सेवा और संयम का अपूर्व सामंजस्य था।

आज से 45 वर्ष पूर्व जब एक छोटी-सी बालिका के रूप में मैं उनके संरक्षण में आई थी तब से उनकी एक सी-दिनचर्या, एक से नियम रहे। उनके हाथ से रखी जाने वाली सभी वस्तुएँ यथा स्थान रहती थीं, लगता था काल ने यहाँ अपनी सीमा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छोड़ दी हो । सब कुछ वैसा ही वही सूई वही धागा, वही कलम दावात, वही पुस्तकें, वही आसन, साधन बहुत सीमित और व्यवस्थित, कुछ भी तो नहीं बदला । यहाँ तक कि 35 वर्ष पुरानी उनकी वही लेखनी अब तक उनके कार्य की सहभागिन है । हाँ स्याही की टिकिया मर्यादानुसार थोड़ी ही भिगोयी जाती थी । जब भी मैं वहाँ जाती हूँ मुझे लगता है मैं फिर से उसी बचपन में लौट आई हूँ । वही आम्रकुंज, पेड़ की वही डालें जिन पर कभी हम झूलते थे, जिनके नीचे घूम-घूम कर पाठ याद करते थे। वही विद्यालय भवन, वही छात्रावास की भव्य दीवारें । उनकी स्थिर बुद्धि, कार्यकुशलता और सौम्यता की जहाँ आज के खंडित वातावरण से अलग उनका अस्तित्व आज भी साकार लगता है । मैं मन में सोचती थी मैं भी कुछ लिखूं अपनी दादी जी के विषय में, जिनके महान् कुल में उत्पन्न होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है । इन पूर्वलिखित अंशों को मैंने दादीजी को सुनाया और पूज्या दादी जी से कहा कि दादीजी आपके बारे में मेरी बहुत कुछ लिखने की इच्छा है । दादीजी मुस्कुरा देती हैं कहती हैं कि क्या करना है और लिख कर, मरने के बाद कौन किसे याद करता है और जानता है । आज गाँधी जी नहीं, पंडित जवाहरलाल नहीं तो उनकी प्रशंसा का उनके लिए क्या अस्तित्व ! मेरा तो यही लक्ष्य है जीवन में, न किसी का बुरा सोचूं न करूं और जहाँ तक हो सके सबके काम आ सकूं । धवल वसन, शुभ्र केश, तेजदीप्त मुख उस समय 87 वर्षीय दादीजी के संकल्प और निस्पृहता के प्रति आदर जागा, यही तो है सच्चे रास्ते की पहचान । मैंने उनके जीवन का हर पहलू देखा बारीकी से समझने का प्रयत्न किया और उनकी महानता, उनकी ममता और विद्वत्ता के सामने अभिभूत हुई । अपने आश्रम में आयीं छात्राओं को अनुशासन में बांधना, प्यार और ममता से उनकी देखभाल करना, उनका सर्वांगीण विकास करना, उनका सहज स्वभाव था । अंग्रेजी राज्य में हिन्दी का समर्थन, संस्कृत की शिक्षा, आक्रामकों से आश्रम वासियों की सुरक्षा और उनकी निडरता अभी भी आँखों के सामने स्पष्ट है ।

वह 28 जुलाई 1977 का दिन था । जब भीष्म-सी-शरशय्या पर लेटी दादी जी ने पूरी सजगता से आत्मा साधना की और पूर्ण रूप से चेतन अवस्था में सिद्ध रूप पंचपरमेष्ठी का स्मरण करती हुई समाधिस्थ हो गईं । ज्ञान की ज्योति से जगमग ज्योर्तिमयी दृष्टि से ओझल हो गईं ।

वाणी अवरुद्ध हो गई और सृष्टि की लीला से नमित आँखे अभी भी खोजती हैं कि कहाँ है वह ज्योतिपुंज स्नेह का अगाध सागर जो उर्द्धमुखी होकर निःसीम हो गया, इस धरती का निष्कलुष चांद एक अनुपम आदर्श हमारे सामने रख कर आकाश का चन्द्र बन गया ।

●

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नारी-जागरण की प्रतीक
माँश्री चंदाबाई

❑ डॉ0 श्रीमती विद्यावती जैन, आरा

दुग्ध स्नाता, शुभ्र वसना, उन्नत भव्य ललाट, आभा से दीप्त मुख-मंडल, वाणी में माधुर्य, अपार स्नेहसिक्त हृदय एवं त्याग, तपस्या और ज्ञान की त्रिपथगा, ऐसा था मांश्री चंदाबाई जी का व्यक्तित्व उनका साक्षात्कार करने पर सहसा ही उनकी सरलता, निश्छलता, सादगी, गरिमा, ज्ञान और भक्ति से अभिभूत हुए बिना नहीं रहा जा सकता था। उनके स्वतः स्फूर्त गुण दर्शक के अन्तःस्तल में प्रवेश कर जाते थे । दिव्य-रस्मियों की आलोक केन्द्र थीं वे, जो निरीह और अबला नारियों के जीवन को ज्ञानालोक से प्रकाशित करने हेतु इस धरा पर अवतरित हुई थीं।

उनका जन्म वृन्दावन नगरी के सुप्रसिद्ध, समृद्ध और प्रतिष्ठित समाज सेवी बाबू नारायण दास अग्रवाल के यहाँ सन् 1889 ई0 में हुआ था। वहाँ की भूमि में एक ओर राधा कृष्ण का असीम प्यार समाहित है, तो दूसरी ओर राधा का अपूर्व त्याग भी। उसी की पावन मिट्टी ने मांश्री चंदाबाई का सृजन इन दोनों प्रवृत्तियों के साथ किया। उन्हें विरासत में मिला अपूर्व स्नेह, प्रेम वात्सल्य एवं वियोग का अगाध विषाद।

उनका विवाह मात्र 12 वर्ष की अल्प आयु में आरा जनपद के सुप्रसिद्ध रईस राजर्षि देवकुमार के सुन्दर, सुशिक्षित अनुज श्रीमान् धर्मकुमार के साथ हुआ था, किन्तु निष्ठुर विधाता से उनकी यह प्रसन्नता न देखी गई और मात्र एक वर्ष के भीतर ही उनपर वैधव्य की मुहर लग गई । असह्य दुःख के इन थपेड़ों से भी वे विचलित नहीं हुईं और अपने जीवन की दिशा को एक नया मोड़ देने के लिए वे विशेष अध्ययन में जुट गईं । अपनी प्रखर प्रतिभा के कारण उन्होंने दर्शन, न्याय और साहित्य के साथ-साथ समाज सेवा आदि विषयों का अध्ययन थोड़े ही समय में कर लिया और राजकीय संस्कृत कॉलेज, काशी की पंडिता परीक्षा पास कर लीं। ज्ञानदीप ने प्रज्ज्वलित होकर उनके अंतस को पूर्णरूप से ज्योतिर्मय बना दिया।

मांश्री ने विद्याध्ययन के पश्चात् अपने भावी कार्यक्रमों की पूर्व पीठिका हेतु सम्पूर्ण भारत की यात्रा की । इससे उन्होंने अपने गुलाम देश के दैन्य दुःख का अनुभव किया । विशेष रूप से उनकी दृष्टि नारियों की दुरावस्था पर गई, उन्होंने देखा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कि समाज में उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं है । उनके लिए शिक्षा के द्वार बंद हैं । उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार और शोषण किए जा रहे हैं और वे मूक दर्शक बनी हुई हैं। अपनी इस अवस्था पर आँशु बहाने का अधिकार भी उनसे छीन लिया गया है। इस विवश दैन्य पीड़ा से उनकी आत्मा में हाहाकार मचा हुआ है । उनकी इस शोचनीय स्थिति से माँश्री की आत्मा तिलमिला उठी और उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया कि मैं अवश्य ही सेवा के क्षेत्र में प्रवेश कर नारियों को शिक्षित करने का प्रयत्न करूँगी, जिससे कि वे समाज के अत्याचारों से मुक्त होकर अपने पैरों पर खड़ा होकर समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा का जीवन जी सकें।

उन्होंने नारी सेवा का प्रारम्भ अपने नगर आरा से ही किया । इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने एक-एक कर तीन संस्थाओं की स्थापना की । जिसमें आरा से 3 किलोमीटर दूर धनुपुरा स्थित "श्री जैन बाला विश्राम" नामक संस्था बालिकाओं और महिलाओं के लिए भारत विख्यात सिद्ध हुई। इसका विशाल द्वार बिना किसी धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक या गरीब अमीर, ऊँच-नीच, जात-पात, विधवा-सधवा, और बालिका के भेदभाव के सभी के लिए उन्मुक्त रखा । उन्होनें पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण के सुदूर प्रान्तों की नारियों को अध्ययनार्थ आमंत्रित किया और उनके आवास, भोजन एवं सुरक्षा की व्यवस्था की । आज न जाने कितनी बालिकाएँ, विधवा परित्यक्ता बहनें यहाँ से शिक्षित होकर जैन बाला विश्राम का नाम रौशन कर रहा हैं । नारी शिक्षा जगत् में माँश्री का यह सबसे उपयोगी और अभूतपूर्व कदम था ।

माँश्री ने अनुभव किया कि साहित्य लेखन एवं पत्रकारिता जीवन को गतिशीलता प्रदान कर सकता है । वह ऐसा सशक्त माध्यम हो सकता था, जिससे नारियों की दु:खद स्थिति से समाज को अवगत कराया जा सके । इसलिए उन्होंने ऐसे सत् साहित्य की रचना की, जो यथार्थ-पूर्ण, दार्शनिक, चिंतनपरक और उपदेशात्मक था । जिसने नारियों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया तथा रूढ़ी ग्रस्त समाज को नई दिशा प्रदान की । उन्होंने शिक्षा प्रसार के साथ-साथ नियमित साहित्य लेखन तथा "जैन महिलादर्श" नामक सचित्र मासिक पत्रिका का सम्पादन, प्रकाशन प्रारम्भ किया । मांश्री एक साहित्यकार के साथ-साथ कुशल पत्रकार भी थीं ।

असहयोग आन्दोलन में उन्होंने अपने सम्पादकीय लेखों के माध्यम से नारीजागरण की सक्रिय भूमिका अदा की। उनके लेखों ने नारी जागृति का ऐसा बिगुल बजाया कि उनसे प्रभावित प्रेरित होकर अनेक नारियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया ।

माँश्री का जीवन राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत था। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में स्वतंत्रता आन्दोलन की लहर से सारा देश आन्दोलित था। गाँधी जी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सदल-बल बिहार दौरे के क्रम में आरा नगर पधारे । तब श्री जैन बाला विश्राम में उनके आगमन पर माँश्री ने उनका भव्य स्वागत किया । आश्रम की शांति-प्रियता सुचारू व्यवस्था और नारी विकाश के अनेक कार्यक्रमों को देखकर गाँधी जी प्रभावित हुए बिना न रह सके। उन्होंने कहा कि हमारा यह आन्दोलन नारियों की सहभागिता के बिना सफल नहीं हो सकेगा और उसी दिन से माँश्री ने देश भक्ति एवं देश-सेवा का व्रत ले लिया। उन्होंने चरखा कातना, आजीवन खादी पहनना, कांग्रेस के कार्यो के लिए चंदा करना, अपने सामाजिक भाषणों द्वारा पुरुष और नारियों को जागृत करना, देश भक्ति से समन्वित अन्यान्य विषयों पर लेख लिखना, सत्साहित्य की सर्जना कर उसे प्रकाशित और वितरित करना, प्रभृति कार्यो के द्वारा देश की मौन सेवा की। उनके ये कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक अनवरत रूप से चलते रहे।

राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया । हिन्दी भाषा में मासिक पत्रिका निकाली। अन्यान्य कहानियाँ लेख और समीक्षाएँ लिखीं तथा अपने प्रवचनों द्वारा स्कूली छात्राओं को लेख, कहानी, कविता लिखने की प्रेरणा तथा वक्तृत्व कला का प्रशिक्षण दिया, जिससे कि वे अपने-अपने गाँवों में जाकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करें । उनके हिन्दी प्रचार का यह अर्थ नहीं था, कि छात्राएं और महिलाएं अंग्रेजी पढ़े ही नहीं । वे एक ओर उसके गुणात्मक लाभों से लाभान्वित होने के लिए एक विषय के रूप में अंग्रेजी पढ़ने के लिए प्रेरित करती थीं तो दूसरी ओर यूरोपीय भौतिक चकाचौंध से अपनी संस्कृति की सुरक्षा के प्रति आगाह भी करती थीं। यही कारण है कि उन्होंने अपनी शिक्षा संस्था में प्रख्यात हिन्दी मनीषियों, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की जयन्तियाँ भी मनाई और मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, डॉ रामकुमार वर्मा, डॉ रामाधारी सिंह दिनकर, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि मूर्धन्य कवियों और लेखकों को अपने यहाँ सम्मानित कर उनसे छात्राओं को संबोधित भी कराया । इतना ही नहीं उन्होंने स्कूल के ग्रंथागार में उच्च कोटि का विविध प्रकार का हिन्दी साहित्य मंगाकर उसे समृद्ध बनाया और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं की व्यवस्था भी की । छात्राओं को निरंतर प्रेरित करती रहीं कि वे उसका अध्ययन अवश्य करें ।

इन विशेषताओं के साथ माँश्री में एक विशेषता और भी थी । वे कुशल कलाविद् भी थीं । सभी कलाओं में उनकी अभिरुचि थी और उनके गुण, दोष का भी उन्हें विशेष ज्ञान था। उन्होंने अपनी छात्राओं के कला-अध्ययन के लिए समुचित व्यवस्था भी की । समय मिलने पर स्वयं भी उनका अभ्यास कराती थीं और छात्राओं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को प्रोत्साहित भी करती रहती थीं ।

देश की हृदय स्थली, दिल्ली में देश के महान् दार्शनिक राष्ट्रपति महामहिम डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के करकमालों द्वारा सन् 1954 ई0 में जिस समय माँश्री को अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित किया जा रहा था, उस समय डॉ0 राधाकृष्णन ने कहा था कि नारी जागरण एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में जो योगदान पंडिता चंदाबाई जी ने किया, आने वाली पीढ़ियाँ युगों-युगों तक उन्हें याद करती रहेंगी ।

मुझे उनके दर्शनों का सौभाग्य उस समय प्राप्त हुआ, जब मेरे पति डॉ० राजाराम जी सन् 1961 ई0 में हरप्रसाद जैन महाविद्यालय में संस्कृत-प्राकृत विभाग में प्राध्यापक होकर आये थे । अभी तक माँश्री के त्याग और महिलाओं के प्रति किए गये महत् कार्यो के विषय में सुनती आ रही थी और विविध कल्पनाएँ उनके विषय में अपने हृदय में सँजोंए हुई थीं । अब वह अवसर आ गया था जब मेरी कल्पनाओं को माँश्री का साक्षात दर्शन करना था। मैंने अपनी कल्पनाओं से बढ़-चढ़ कर ही उन्हें पाया । उनकी सौम्य, शांत और तेजोदीप्त मुखाकृति को देखकर मैं विस्मय विमुग्ध सी रह गई। कुछ क्षणों के लिए मेरे नेत्र निर्निमेष हो कर उन्हीं के मुख मंडल पर स्थिर होकर रह गये। तभी उन्होंने अपनी मधु- निःसृत वाणी से मेरी पारिवारिक कुशलता के संबंध में प्रश्न किया, तब मुझे अपनी अवस्था का ज्ञान हुआ। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे मातृत्व का अथाह सागर मेरे चारों ओर हिलोरें ले रहा हो। जिन माँश्री ने अपनी ज्ञान रूपी जल- धारा से सुदूर प्रांतों की बालिकाओं और महिलाओं की अज्ञान रूपी उसर जमीन को सींचकर ज्ञान रूपी सरसता प्रदान कीं, मैं उनके प्रति श्रद्धा से अभिभूत हो उठी और शीघ्र ही उनकी चरण रज को अपने माथे से लगाया ।

इस प्रकार माँश्री ने सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक अंग का स्पर्श किया और अपने त्याग, दृढ़संकल्प, आत्मानुशासन और सम्यकज्ञान से उसे सार्थक नवीन, मौलिक और समय सापेक्ष बनाने का अथक प्रयत्न किया । उनकी निरन्तर यही भावना रही ।

नारियाँ जब जगेंगी देश तब जग जायेगा ।
कष्ट भारतवर्ष का एक क्षण में मिट जायेगा ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मातेश्वरी जी के जीवन का परम आदर्श

❑ वासवदत्ता, मद्रास (भूतपूर्व स्नातिका, जैन बाला विश्राम)

महिला समाज रुग्ण शय्या पर पड़ा हुआ कराह रहा था। वह असीम वेदना से आहें भर रहा था। उसकी करुणाजनक चीख को सुनकर मानव हृदय ही नहीं बल्कि सारी प्रकृति शोक सागर में निमग्न हो रही थी। उस समय महिला समाज पददलित नजर आता था। उसकी रीढ़ टूट चुकी थी। उसकी असीम वेदना से वह आहें भर-भर कर सिसक रहा था। उसको किसी का भी अवलंब न था। वह निराश होकर सोचने लगा-हाय अब मैं क्या करूं । आज संसार में मेरे प्राणों की रक्षा करने वाला कोई नहीं । क्या वास्तव में मेरी यही दशा रहेगी। क्या मैं घोर संकट से पार न हो सकूंगा । उस अंधकूप से निकलने का मार्ग मुझे न मिलेगा ? नही ऐसा नहीं होगा। यदि मेरे अंदर कुछ श्रद्धा और विश्वास होगा तो मैं अवश्य ही इस व्यथित दशा से मुक्त हो सकूँगा। यही सोचते हुए अचानक उसके मुँह से निकल पड़ा हो, एक नया अवतार हो, एक नया अवतार ।

यह अचानक निकली हुई वाणी शायद देववाणी ही थी, महिला समाज की इस आंतरिक आवाज ने अपना प्रभाव दिखलाया। फलत: उसी दिन कराहती हुई महिला समाज का अवलंब हमारी पूज्य मातेश्वरी जी पं० ब्र० चंदाबाई जी का जन्म हुआ। मानों प्रकृति ने फूट-फूट कर रोती हुई महिला समाज की अश्रुधारा को रोकने के लिए ही यह देवावतार कराया है।

छोटेपन से ही आपकी मुख की आभा कोई बड़ी सती साध्वी एक महान् तथा ब्रह्मचारिणी की-सी झलकती थी भविष्यत् गौरव के अंकुर आपके शैशव जीवन के समय से प्रस्फुटित होने लगे थे । आपने बाल्यकाल से ही खेल-कूद गपसप का परित्याग कर केवल विद्या, शिक्षा एवं ज्ञानोपार्जन में मन लगाया था। जैसे- जैसे आप बड़ी होती गई वैसे-वैसे आपका स्वभाव भी सीधा- साधा सहनशील होता गया। आपके बढ़ने की स्पृहा, परिश्रम करने की शक्ति एकांतप्रियता आग्रहपूर्ण चेष्टा, प्रयत्न आदि प्रशंसनीय थे। आप निरंतर स्वाध्याय में मग्न रहा करतीं । आपने बहुत कठिनाइयों को झेलते हुए विद्योपार्जन किया।

आप जब स्वाध्याय करने बैठतीं तब एक-एक श्लोक का अर्थ समझ कर उसके भाव को ग्रहण करती थीं। आप प्रारम्भ से ही संयमी रही है । सांसारिक ऐश्वर्य बहुलपरिवार के होते हुए भी आप मोह ममता से रहित थीं। समाज सेवा की लगन आपको छोटी अवस्था से ही थी । अपने केवल जैन धर्म का अध्ययन ही नहीं किया बल्कि उसे अपने जीवन में उतारने का भी प्रयत्न किया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आप बाल्यावस्था में ही विधवा हो गईं उस समय स्त्रियों को विद्योपार्जन करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, फिर भी आपने इन कठिनाइयों को झेलते हुए विद्योपार्जन किया। आप जब भगवद्भक्ति करती थीं तब आपके मुख से प्रत्येक शब्द स्पष्ट सुरीली माधुर्य गुण को लिए हुए होता था। वे शब्द श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे और वे कुछ समय के लिए अपना मन उसी ओर लगाने के लिए तैयार हो जाते थे ।

व्रत, उपवास, जप, तप आदि को देखने से प्रकट होता था कि आप सातवीं प्रतिमाधारी हैं । आप सर्वथा त्रिकाल सामयिक, नित्यप्रति भगवद् पूजन तथा चतुर्दशी तथा अष्टमी को उपवास करती थीं तथा रसादि का नित्य परित्याग करती थीं बीमार अवस्था में भी आप धर्मकार्यों को नही छोड़तीं थीं । व्रतादि में किसी प्रकार का दोष लग जाने पर कठिन-से-कठिन प्रायश्चित् लेती थीं। आप परिग्रह भी बहुत थोड़ा रखती थीं । दरअसल में देखा जाय कि ओढ़ने बिछाने तथा पहनने के कपड़े को लेकर अधिक से अधिक कुल 20 होंगे। जाड़े के दिन में भी उतनी ही परिग्रह रखतीं । आपको ज्यादा परिग्रह रखना अच्छा नहीं मालूम देता था । आपके मुख पर सदा एक अपूर्व हर्ष महानता तथा तेज रहता था । आप केवल विदुषी एवं भद्र महिला ही नहीं बल्कि एक अच्छी सुलेखिका भी रही हैं । समय-समय पर आप कुछ न कुछ लिखती ही रहतीं । यही नहीं बल्कि आपने अनेक पुस्तकों की रचनायें भी की हैं जैसे- उपदेश रत्नमाला, सौभाग्य रत्नमाला, निबंध रत्नमाला,आदर्श कहानियाँ, आदर्श निबंध, बालिका विनय आदि। उनकी भाषा बड़ी ही सरल और रोचक है । ये स्त्री समाज के लिये बहुत ही उपयोगी हैं।

स्त्रियों की अज्ञानावस्था से होनेवाले बुरे परिणामों को देखकर आपके हृदय को बहुत बड़ी चोट लगी। आपने सोचा कि महिला समाज का कोई आधार नहीं रहा है। समाज में विधवा बहनें अधिकतर दु:खी हैं । आपने यह अनुभव किया कि स्त्री समाज के पतन का मुख्य कारण अशिक्षा है। इसी भावना से प्रेरित होकर आपने बाला विश्राम नाम की संस्था की स्थापना की । आपने महिला समाज में वह कार्य करके दिखलाया कि जिसके लिये वह सदा ऋणी रहेगा। यही नहीं बल्कि आपने शहर में तथा और कई स्थानों में शालायें व आश्रम खुलवाये । विद्या प्रचार के सिवाय जिनेन्द्र भक्ति में भी आपका विशेष अनुराग रहा है । आपने राजगृह क्षेत्र की पुण्यभूमि में एक जिनमंदिर का निर्माण करवाया व प्रतिष्ठा की। आपने आश्रम में एक बहुत मनोज्ञा मानस्तंभ बनवाया है जिसमें 12 जिन बिम्ब हैं । आप जब दक्षिण में गईं तब आपको "विदुषी जी" तथा "साहित्यसूरी" की पदवी मिली। वहां विद्याशालायें खुलवाई । इस तरह हम देखते हैं कि आपके जितने भी गुणों का वर्णन करें उतना ही थोड़ा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री बुन्देलखण्ड में

❑ डॉ० रमा जैन, छतरपुर (म० प्र०)

सन् 1955 में बुंदेलखंड की रमणीय, पावन भूमि सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के बाद बहुत समय से टूटी गजरथ की परम्परा पुनः प्रारंभ हुई। कई दशाब्दियों बाद मनाया जाने वाला यह महान उत्सव मात्र धार्मिक उत्सव न रहकर एक सांस्कृतिक शैक्षणिक सामाजिक उत्सव बन गया था। गजरथ सिंहावलोकन शीर्षक से इस गजराज महोत्सव की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। देश विदेश के अनेक विद्वानों ने यहां आकर विविध अधिवेशनों में भाग लिया था।

अखिल विश्व जैन मिशन अधिवेशन : यह अपने आप में अनोखा अधिवेशन था । इसमें भाग लेने देश के दिग्गज विद्वानों के साथ ही फ्रांस, जर्मनी, जापान के भी विद्वान् आए, इन विद्वानों ने जैन धर्म के उदार मानवतावादी सिद्धातों की मार्मिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए जैन धर्म की भूरि-भूरि प्रशंसा की। विदेशी विद्वानों में प्रमुख थे :-

1. डॉ० श्री नाकामुरा, जापान
2. श्री असतुषी ऊनू , जापान
3. प्रो० लान बेन्जमिन, फ्रांस
4. डॉ० रूथ , जर्मनी
5. डॉ० क्लाउस फिशर, जर्मनी
6. प्रो० बेन्डल लोथर, जर्मनी

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् :- बुंदेलखंड की भूमि पर पहली बार हो रहा यह अधिवेशन अत्यंत महत्वपूर्ण विशाल और गौरवशाली था । उस समय यह अधिवेशन महिला समाज में जागृति का मंत्र फूंकने वाला क्रांतिकारी "अद्वितीय महिला सम्मेलन" सिद्ध हुआ था । उसका एक मात्र श्रेय समाज की अग्रगण्य आर्यिकारत्न माँश्री चंदाबाई, छोटी माँ जी, श्री पंडिता सुमति बाई शाह, सोलापुर, ब्र0 पंडिता कृष्णाबाई, महावीर जी जैसी विदुषी यशस्वी महिलायें थीं । इस सम्मेलन में मैंने भी" अतिथि वक्ता के रूप में भाग लिया। माँश्री ने उस समय महिला मंच से जो महत्वपूर्ण प्रभावशाली प्रस्ताव समाज के समक्ष रखे थे, मुझे उनकी शब्दावली आज भी ज्यों की त्यों स्मरण है:-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

1. **स्त्री शिक्षा:-** अविद्याग्रस्त इस पिछड़े बुंदेलखंड में आज यहां का प्रतिष्ठित जैन समाज इतने विशाल आकर्षक गजरथ महोत्सव का आयोजन कर अपनी उदारता एवं धार्मिक निष्ठा को अभिव्यक्त कर रहा है यह बड़े हर्ष की बात है। मैं चाहती हूं कि आप इस पावन पुनीत सिद्ध क्षेत्र के सम्मेलन में इस विषय पर विचार करें कि पुरुषों और बालकों की अपेक्षा स्त्रियों एवं बालिकाओं की शिक्षा अनिवार्य होना चाहिये या नहीं। स्त्री की बदौलत ही सृष्टि का अस्तित्व कायम है। बड़ी होकर बलिकाओं को देहरी पर रखे दीपक की भांति दोनों कुलों के नाम को यशस्वी बनाना है, रोशन करना है। अतः उसे बचपन से ही सुशिक्षित, सुसंस्कृत करना चाहिए। शिक्षा ही नारी को कर्त्तव्य और दायित्व का बोध कराती है। अतः उन्हें पढ़ाना नितांत जरूरी है।

2. **पर्दाप्रथा आभूषण प्रियता:-** अशिक्षित होने के कारण यहां पर नारियाँ लम्बा घूंघट डाले और हाथ पैरों में बंधन के प्रतीक, ये भारी-भारी आभूषण पहने हुये हैं। इन सबका कारण "अविद्या राक्षसी" का प्रकोप है। महिलाओं की सुन्दरता और शोभा उसकी सादगी सच्चरित्रता और सुशिक्षा पर निर्भर है। उसके सच्चे आभूषण आन्तरिक गुण हैं। अतः घर-घर में शिक्षा का प्रसार-प्रचार करें यही गुण परिवार में सुख शांति स्थापित कर सकते हैं। कर्म से बढ़कर कर्त्तव्य का स्मारक दूसरा कोई नही है।"

3. **बाल विवाह एवं दहेज प्रथा:-** यहां के गणमान व्यक्तियों एवं युवकों को आगे आकर इन दोनों कुप्रथाओं का घोर विरोध करना चाहिये। तभी समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों और अंध विश्वासों को दूर किया जा सकता है। आज हमारे घरों में विरोध और कलह की भट्ठी सुलग रही है, उसे भी विवेक और बुद्धिमता से दूर करना है, जो शिक्षा द्वारा ही संभव है।

इस प्रकार माँश्री ने अपने ओजस्वी भाषण द्वारा उक्त तीन प्रस्तावों को पास कर जैन समाज के विभिन्न वर्गों में जागृति का अपूर्व शंखनाद फूंका। युगों से अज्ञान अंधकार में सुसुप्त नारियों के हृदय में माँश्री के एक-एक शब्द ने तहलका मचा दिया। समाज का प्रबुद्ध वर्ग भी जाग्रत होकर महिला समाज को आगे बढ़ाने में सहयोग करने लगा। अनेक गांवों में कन्या पाठशालाओं का शुभारंभ हुआ। बालिकाएं पढ़ने को आतुर हो उठीं जन-जन की समझ में आने लगा कि जो समय की धार की गति मोड़ दे वास्तव में बस वही इंसान है।

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

आरा नगर का स्वर्णिम अतीत एवं मातुश्री चंदाबाईजी

❑ प्रो० (डॉ०) राजाराम जैन, आरा

पूज्या मातुश्री चंदाबाईजी के तेजस्वी व्यक्तित्व का आरा नगर के प्राचीन गौरवशाली इतिहास के आलोक में तुलना करता हूँ तो आश्चर्यजनक निष्कर्ष निकलते हैं । आप आराम नगर के व्यक्तित्व को ही देखिए। प्राचीन काल में यह आराम नगर के नाम से विख्यात था। संस्कृत एवं प्राकृत में आराम का अर्थ ऐसा वन उपवन होता है, जो प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर हो ।

आराम नगर के सुशांत एवं सुशीतल वातावरण ने महर्षि विश्वामित्र को भी आकर्षित किया था तथा आराम नगर से कुछ ही दूरी पर उन्होंने एक गुरुकुलीय विश्वविद्यालय की स्थापना की थी, जहाँ ज्ञान विज्ञान की सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। जहाँ रण-विद्या एवं आयुधास्त्रों का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। इसलिए अयोध्यापति दशरथ ने अपने प्रियपुत्रों-राम एवं लक्ष्मण को वहाँ शिक्षा ग्रहण करने हेतु प्रेषित किया था । आरामनगर होते हुए ही राम एवं लक्ष्मण स्वयंवर में भाग लेने हेतु वैशाली के मार्ग से मिथिला भी पहुँचे थे ।

ईसा पूर्व चतुर्थ सदी के आस-पास सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य (प्रथम) के राज्यकाल में मगध में 12 वर्षों का भीषण दुष्काल पड़ा था। भीषणता ऐसी थी कि उसमें दिगम्बर साधुओं की चर्या का पालन तथा कंठ-परम्परा से निःसृत श्रुतज्ञान की सुरक्षा के लिए कठिनाई उत्पन्न होने लगी थी। तब अंतिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु अपने 12000 साधुसंघ के साथ दक्षिण की ओर प्रस्थान करने लगे। उनके साथ उनके प्रियभक्त मगध सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य (प्रथम) ने भी उनसे दीक्षा लेकर उनके साथ प्रस्थान किया था। उस समय सभी के विहार का मार्ग आरामनगर (वर्त्तमान आरा) से होता हुआ ही रहा था।

विदेशी पर्यटक मेगस्थनीज, फाहियान, हयून्सांग, अलबेरुनी आदि जो भी मगध आते थे, उनका मार्ग आरामनगर से होकर ही रहता था। चीनी यात्री हयूनत्सांग अपने यात्रावृतांत में आरामनगर के समीपस्थ एक ''महोशोलो'' का वर्णन कर उसे श्रमणसंस्कृति का प्रधान केन्द्र बतलाया था। बहुत संभव है कि वहाँ वाढवाड़

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(गुजरात) एवं तलकाट (कर्नाटक) के समान ही कोई ऐसा श्रमण-संस्कृति का विद्या केन्द्र रहा हो, जहाँ ऋषि-मुनि तपस्या भी करते रहे हों और जिनवाणी का लेखन कार्य भी करते रहे हों। वही "महोशोलो" वर्त्तमान में "मसाढ़" नाम से प्रसिद्ध है, जो आरा से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा वहाँ का प्राचीन विशाल जैन मंदिर आज भी वहाँ के स्वर्णिम अतीत की प्रशस्ति का गान कर रहा है।

ऐसे प्राचीन गौरवशाली महानगर आरामनगर में, जो कालान्तर में घिसता-पिटता आरा नगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहाँ एक विराट व्यक्तित्व की महती आवश्यकता थी, जो पिछले लगभग एक डेढ़ हजार वर्षो की खोई हुई गरिमा को वापस ला सके।

आरा नगर का यह सौभाग्य था कि उसे चंदाबाई जी की ससुराल बनने का सुअवसर मिला। वे उनके स्वर्णिम अतीत से अत्यधिक प्रभावित हुईं और उन्होंने अथक प्रयत्न कर उस नगरी को श्री जैन बाला विश्राम शिक्षण संस्थान की स्थापना कर, उसके माध्यम से आरा नगर की खोई हुई गरिमा को वापस ले आने का अथक सत्प्रयत्न किया।

मैं सन् 1975 में दक्षिण भारत में जहाँ-जहाँ भी गया वहाँ के जिन-जिन स्कूलों एवं पाठशालाओं की शिक्षिकाओं से भेंट हुई वे प्राय: आरा के जैन बाला विश्राम की प्रशिक्षित छात्राएँ थीं और उन्हें जब यह विदित हुआ कि मैं आरा से आया हूँ तो वे भावविभोर हो गईं और मातुश्री के प्रति नतमस्तक होकर अपने संस्मरण सुनाने लगीं।

वैधव्य को भारतीय समाज में कभी अच्छा नहीं माना गया। वह घोर दुर्भाग्य का सूचक माना जाता है। किन्तु कभी-कभी नारी जीवन का वह दुर्भाग्य भी समाज एवं राष्ट्र का श्रृंगार बन जाता है। पूज्या चंदाबाई जी (आरा), पूज्या मगनबाई जी (बम्बई) एवं पूज्या सुमतिबाई जी, (सोलापुर, महाराष्ट्र) उसके आदर्श अनुपम उदाहरण हैं। राष्ट्रसंत परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी उनके कार्यों की निरन्तर सराहना किया करते हैं।

धन्य है मांश्री चंदाबाई जी की वह दृढ़ इच्छा शक्ति, समाज के उद्धार के प्रति उनका वह दृढ संकल्प, कि उन्होंनं महिलाओं के पिछड़ेपन को दूर करने का अखंड व्रत धारण किया और आरा नगर में जैन बाला विश्राम (कन्या महापाठशाला) की स्थापना कर उसे किस प्रकार अन्तराप्रांतीय आदर्श शिक्षण संस्थान बना दिया, उसकी गौरव गाथा कौन नहीं जानता। उन्हें शत-शत नमन, कोटिश: प्रणाम, चरणस्पर्श।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सांस्कृतिक जागरण की दीपशिखा माँश्री चंदाबाई

❑ श्याम मोहन अस्थाना, आरा

जिसका ओर छोर पाना कठिन है,
इस गहन अंधकार में,
भटकने वाले भव्य जीवों के लिये
ज्ञान का प्रकाश देने वाले उपाध्याय
मुझे उत्तम गति प्रदान करें । - **समणसुत्तं**

माँश्री चंदाबाई ऐसी ही वीतराग साध्वी और समर्पित मार्गदर्शिका थीं । उन्होंने एक उदात्त जीवन का वरण किया था। उन्होंने एक उदात्त समाज की परिकल्पना की थीं । उनकी तपस्या का लक्ष्य था - समाज का उन्नयन।

कठोपनिषद में एक मार्मिक प्रसंग है। महर्षि उद्दालक के युवा पुत्र नचिकेता की साधना से प्रसन्न होकर यमराज ने उससे तीन वर मांगने को कहा । नचिकेता ने पहला वर मांगा कि उसके पिता के क्रोध का समन हो और वे उसे पुत्रवत पुन: स्वीकार करें। दूसरा वर अग्निविद्या की प्राप्ति के बारे में था। तीसरे वर के माध्यम से नचिकेता ने यमराज से आत्मज्ञान की मांग रखी । तीसरे वर की पूर्ति यमराज के लिये भी कठिन थी। उन्होंने नचिकेता को अनेक प्रलोभन दिये। पर वह ऋषि बालक टस से मस नहीं हुआ । अंत में यमराज ने नचिकेता को आत्मज्ञान ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया।

माँश्री चंदाबाई का संकल्प भी ऐसा ही था । सन् 1921 में सम्मेद शिखर की यात्रा के समय पार्श्वप्रभु के समक्ष परिवार के सभी सदस्यों ने एक-एक नियम लिया पर दान और साधना के उच्चत्तम शिखर पर पहुंच कर भी मांश्री ने अपने लिये नहीं, समाज के उन्नयन के लिये महिलाश्रम का संकल्प लिया।

श्री जैन बाला विश्राम की पूरी परिकल्पना अत्यंत क्रांतिकारी थी। उसमें एक समग्र समाज की संरचना का संकल्प था। श्री जैन बाला विश्राम सिर्फ एक विद्या-केन्द्र नहीं बना, वह उत्तर भारत में धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का नया शिखर बन गया। इस संस्था का प्रकाश पूरे देश में प्रसारित हुआ। बड़े से बड़े राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नेताओं के लिये यह एक पवित्र तीर्थ बन गया । महात्मा गांधी, पं० नेहरू या नेताजी सुभाष की टिप्पणियों को पढ़ कर सहज में अनुमान किया जा सकता है कि तत्कालीन राष्ट्रीय जीवन पर इस संस्था का कितना प्रभाव था।

माँश्री का जीवन भी एक पूरे महाकाव्य की अपेक्षा रखता है। तेरह साल की उम्र में वैधव्य एक ऐसी विपत्ति थी जो बड़े से बड़े व्यक्ति को क्षत-विक्षत कर देती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर इस महान दुर्घटना के सम्मुख भी मांश्री ने जिस धैर्य और जिजीविषा का परिचय दिया वह शायद देवताओं में भी दुर्लभ होगा। एक तेरह वर्षीय बालिका से बीस वर्षीया ज्ञान-पंडिता की ज्ञान यात्रा स्वयं में महान उपलब्धि थी । पर धीरे-धीरे एक धार्मिक एवं सामाजिक नेत्री का रूप उभरा। संस्था का क्षेत्र और क्षितिज का विस्तार होता गया। बीसवीं शताब्दी के छठे दशक तक मांश्री का व्यक्तित्व देश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के शिखर पर प्रतिष्ठित हो गया। बहुत से लोगों का निश्चित विचार है कि पिछले पचास वर्षों में सरकार ने जिन लोगों को सम्मानित किया है, उनसे माँश्री चंदाबाई का व्यक्तित्व अधिक समर्पित और समृद्ध था।

माँश्री की विकास यात्रा में परिवार के जिन सदस्यों का योगदान रहा उन्हें भी नहीं भुलाया जा सकता । राजर्षि देवकुमार जी ने एक भयानक विपत्ति के सम्मुख जिस धैर्य एवं नेतृत्व का प्रदर्शन किया वह हर तरह से प्रशंसनीय था। शायद राजर्षि देवकुमार की निर्णयात्मक बुद्धि, विद्वान् नेमिसागर जी एवं ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी के मार्गदर्शन के बिना मांश्री की विकास यात्रा अधूरी रह जाती । परिवार के अन्य सदस्य निर्मल कुमार जी, चक्रेश्वर कुमार जी एवं सुबोध कुमार जी के सहयोग के बिना भी संस्था में इतना निखार नहीं आ सकता था। पर माँश्री ने भी देवाश्रम को एक अभूतपूर्व आध्यात्मिक गरिमा प्रदान की। आरा का एक सुखी-संपन्न परिवार मांश्री के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो गया।

मेरी पत्नी अनेक वर्षों तक जैन बाला विश्राम परिसर में शिक्षिका एवं प्राचार्या रहीं। इस अवधि में मुझे भी माँश्री के संपर्क में रहने का अवसर मिला। अद्भुत व्यक्तित्व था उनका । जब वे मंदिर में पूजन के लिये जाती थीं तो परिसर में एक अजीब शांति छा जाती थीं । जब वे भाषण देती थी तो लगता था कि शास्त्रों में से कोई दैवी आत्मा सजीव होकर मंत्र पाठ कर रही हो।

अंत में एक कविता के माध्यम से मैं माँश्री को अपनी श्रद्धांजलि निवेदित कर रहा हूँ :-

अंधकार के अनंत आयाम होते हैं
असत्य के हजार मुख होते हैं
अनास्था एक नये नरक का नाम है !
शब्द भूल जाते हैं अपनी पहचान !
संबंधों के जहर से
बढ़ जाता है धरती का तापमान ।
पर सूरज की हरेक किरन
करती धरती का नमन
खोजती, असत्य, अंधकार, अनास्था का उत्तर
एक बुद्ध, एक गांधी, एक चंदाबाई
विकल्पों पर विचार कर,
परिभाषित करते हैं,
अपने-अपने समय का सच ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ज्ञान-वत्सला माँश्री चंदाबाई

❑ नीरज जैन, सतना

लोक-कल्याण के लिये सृष्टि ने अपने बहुत से रहस्य नारी के मन में छिपाकर रख दिये हैं। नारी को समझ पाना सरल नहीं है, और उसके भीतर की छिपी सम्भावनाओं का आकलन कर पाना तो असंभव ही है। नारी की महत्ता के स्तुतिगान के लिये इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि हमारे ज्ञात इतिहास में धर्म और संस्कृति का संवहन करने का मूर्धन्य कार्य प्रमुखतः नारी के योगदान से ही संभव हुआ है। परम्परा से प्राप्त अपनी पीढ़ी के संस्कार अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का दायित्व हमेशा नारी पर ही रहा है। अपना तन-मन और जीवन होम कर हर युग की नारी ने अपने उस पवित्र दायित्व का निर्वाह किया है।

जैन संस्कृति के संदर्भ में बीसवीं शताब्दी का इतिहास जब विधिवत् लिखा जायेगा, तब ब्रह्मचारिणी पंडिता माँश्री चंदाबाई का पवित्र नाम उसमें बहुत आदर पूर्वक अंकित किया जायेगा। इस शताब्दी कि प्रारम्भिक वर्षो की बात है । आरा के एक सम्भ्रान्त जमींदार परिवार की बालिका वधू को वैधव्य का दारुण दुख झेलना पड़ा। बड़े घर की बेटी और बहुत बड़े घर की बहू चंदाबाई को जीवन-निर्वाह की चिंता या किसी प्रकार का भौतिक कष्ट नहीं था। बड़ी समस्या यह थी कि पति वियोग के बाद जीवन की कोई दिशा उनकी दृष्टि में नहीं थी। उन्हें संसार का सचमुच कुछ भी देखा जाना नहीं था। चारों ओर अंतहीन अंधकार ही उनके सामने था। किन्तु उनके पल्ले का पाप तो अपना फल देकर निर्जीण हो चुका था। उस गठरी में वे जो बहुत सा पुण्य बाँधकर लाई थीं, अब वही उनका सहारा बना और उनके जीवन में प्रकाश की एक नई किरण फूटने लगी ।

चंदाबाई राजर्षि बाबू देव कुमार जी की अनुज-वधू थीं । उन्होंने पिता बनकर इस बालिका बधू को संरक्षण देने का निर्णय कर लिया और जीवन भर उस दायित्व का निर्वाह किया। भट्टारक नेमिसागरजी वर्णी तथा ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी से आग्रह करके उनकी नियमित और परिणाम-मूलक धर्म-शिक्षा प्रारम्भ कराई ।

शताब्दी के पहले दशक का यह वह समय था जब जैन समाज ने अशिक्षा के अभिशाप को पहचान लिया था। उससे उपजती हानियों का अंदाजा लगाना शुरू कर लिया था। शिक्षा की मशाल जलाता हुआ वह एक संकल्पशील युवक गाँव-गाँव में शिक्षा की अलख जगाता घूम रहा था। उस युवक गणेश प्रसाद वर्णी ने सन् 1905

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की अक्षय तृतीया को काशी में ही स्याद्वाद विद्यालय की स्थापना करके अशिक्षा की राक्षसी के विरुद्ध अपने अभियान का बिगुल फूंक दिया था। सागर में विद्यालय की स्थापना की योजना बनने लगी थी जो तीन साल बाद सन् 1908 में साकार हुई।

चंदाबाई जी दस-बारह वर्ष से एक छोटी-सी कन्या पाठशाला चला ही रही थीं। सन् 1921 में अपने पारिवारिक बाग में 'जैन बाला विश्राम' की स्थापना की । उनके स्वर्गीय पति श्री धर्मकुमार जी की स्मृति में इस स्थान को "धर्मकुंज" कहा जाने लगा। इस प्रकार स्त्री-शिक्षा का वह संस्थान उदय में आया जो जैन शिक्षार्थी कन्याओं, विधवाओं और कई बार गृहिणी महिलाओं के लिये देश का एक मात्र आश्रय-स्थल था। इसके संचालन में बाबू देवकुमार जी की धर्मपत्नी अनूपमाला देवी, चंदाबाई जी की अनुजा केशर देवी और सबसे अधिक ब्रजबाला देवी का सहयोग मिला।

इस संस्था के उत्कर्ष के साथ चंदाबाई ने अपने आत्मोत्कर्ष पर भी बराबर ध्यान रखा। दस वर्ष के भीतर, 1931 में उन्होंने आजीवन एक बार भोजन का नियम लेकर शरीर के प्रति अपनी उदासीनता का प्रमाण दिया। ब्र. शीतल प्रसाद जी और पंडित के. भुजबली शास्त्री जी के सम्पर्क से उन्होंने जैन दर्शन का गहन अध्ययन किया तथा चारित्र की महिमा को समझा।

चंदाबाई जी को परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी का भी सक्षात् आशीर्वाद प्राप्त था । सन् 1934 में उन्हीं आचार्यश्री से उन्होंने सातवीं प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये । उनके तत्वावधान में बाला विश्राम से अनेक सत्पात्र देवियाँ शिक्षा प्राप्त करके निकलीं। आश्रम में उस समय के बड़े-बड़े लोग आये और मुक्तकंठ से संस्था की प्रशंसा करके माँश्री को प्रणाम करते रहे। "धर्मकुंज" में अनेक प्रासाद-मंदिर आदि बनते रहे। माँश्री के साधनामय व्यक्तित्व ने उन्हें बहुत उपर उठाया तथा उनके लोक हितकारी कृतित्व ने उन्हें दान चिंतामणि अत्तिमव्वे और पट्ट महादेवी शांतला के समकक्ष स्थापित कर दिया। उन्होंने वह सब कर दिखाया जो करना हर स्त्री के लिये सम्भव नहीं होता। वे जितनी बालिकाओं की मां बनी, उसके लिये तो किसी नारी को सैकड़ों भव धारण करने पड़ते । उन्होंने अपने भीतर छिपे प्राकृतिक मातृत्व को इतना विस्तार दिया, उसे ऐसा छलकाया-बाँटा कि मातृत्व की उस गागर के विस्तार के सामने सागर भी छोटा पड़ जाये । उनके संकल्प अडिग थे, लगन गहरी थी और आत्म-विश्वास गजब का था । यह वर्त्तमान जैन समाज का सौभाग्य था कि उसे माँश्री चन्दाबाई जैसी चौमुखी प्रतिभा वाली माँ मिली और यह माँश्री का सौभाग्य था कि पर्याय समापन के पूर्व उन्हें आर्यिका जैसा सर्वोत्कृष्ट पद प्राप्त हुआ । उनकी स्मृति को प्रणाम ।

◆

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर्मठ नारी का आदर्श स्मारक
जैन बाला विश्राम

❑ निर्मल जैन, सतना

श्री जैन बाला विश्राम के अमृत महोत्सव के अवसर पर कर्मठ विदुषी महिलारत्न माँश्री चंदाबाई की स्मृति को नमन करने का हमें अवसर मिला है। वे मात्र 13 वर्ष की उम्र में विधवा हो गई थीं। खेलने खाने की उम्र में वैधव्य के रूप में किया गया विधि का यह क्रूर खेल उनके अस्तित्व को ही समाप्त कर दे सकता था, परंतु पिता बाबू नारायण दास से मिले संस्कार धर्म-संस्कृति समाज सेवा के आदर्श पथ पर चलने वाले जेठ राजर्षि बाबू देवकुमारजी तथा उनके परिजनों के स्नेहपूर्ण सम्बल ने बालिका चंदाबाई को ऐसा साहस प्रदान किया कि उन्होंने वैधव्य को एक चुनौती मानकर अपना सारा ध्यान अध्ययन की ओर लगा दिया।

वह समय था जब जैन समाज में बालिकाओं को शिक्षा देने का रिवाज नहीं था और फिर विधवा बालिका को स्कूल पाठशाला भेजने की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी, परंतु परिजनों के सहयोग से उस समय चंदाबाई ने मात्र साधारण शिक्षा ही नहीं ली वरन जैन दर्शन के गूढ़ ग्रंथों का अध्ययन भी सुयोग्य गुरुओं के सानिध्य में लगन से किया। फलस्वरूप बीस वर्ष की होते होते चंदाबाई पंडिता चंदाबाई बन गईं। परीक्षायें पास करके भी और अध्ययन के अनुरूप अपने जीवन को ढ़ाल कर अपने व्यक्तित्व के कारण भी।

अपने पांडित्य का उपयोग उन्होंने स्व-पर काल्याण के लिये किया। बीस वर्ष की उम्र में ही वे सामाजिक-धार्मिक सभाओं में भाषण करके नारी जाति को स्वावलंबन की शिक्षा देने लगी थीं। नारी शिक्षा के महत्व को समझकर उनके लिये एक कन्या पाठशाला की स्थापना भी उन्होंने उसी उम्र में करा ली थी।

स्वाध्याय ने उन्हें जैन दर्शन की महानता से परिचित करा दिया था सो उन्होंने अपना आचरण भी धर्मानुकूल बनाया और अपनी दो बहनों को भी जैन बना लिया। उन दिनों धर्म के जो संस्कार चंदाबाई के जीवन में पड़े वे उम्र और पांडित्य के अनुरूप निरंतर बढ़ते ही रहे। स्वाध्याय, तीर्थवंदना और गुरु दर्शन उनकी चर्चा का प्रमुख अंग बन गया था। 30 वर्षों की उम्र से एक बार भोजन का नियम पालने वाली चंदाबाई जी ने आगे चलकर चारित्र चक्रवर्त्ती आचार्य शांति सागर जी महाराज से सातवीं प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये और 43 वर्ष तक उस व्रत का निरतिचार पालन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करते हुए जीवन के अंतिम चरण में पूज्य आर्यिका विजयमतीजी से आर्यिका व्रत ग्रहण करके अपनी पर्याय का विसर्जन समाधिमरण पूर्वक किया।

अपने जीवन में मां चंदाबाई ने नारी शिक्षा, धर्म प्रचार आदि के लिये इतने कार्य किये कि उन्हें पढ़-सुनकर विश्वास ही नहीं होता कि एक महिला अपने जीवन में इतने उत्कृष्ट और बहुविध कार्य कर सकती है।

माँश्री बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी थीं । कुशल वक्ता और कविता कहानी, निबंध लेखिका के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक थी। उन्होंने ''उपदेश रत्नमाला'' जैसी पुस्तकें भी लिखीं। ''जैन महिलादर्श'' का बावन वर्षों तक कुशलता पूर्वक सम्पादन किया। सामाजिक संदर्भों में उनके सम्पादकीय प्रकाश स्तम्भ की तरह होते थे।

उनका चिंतन राष्ट्रव्यापी था, अपनी राष्ट्रीय विचार धारा के कारण महात्मा गांधी तथा तत्कालीन विशिष्ट राजनेताओं के सम्पर्क में भी वे रहीं। राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी से उनके परिवार के घनिष्ट संबंध थे। सन् 1954 में उपराष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन ने उन्हें अभिनन्दन-ग्रंथ समर्पित किया। माँश्री के द्वारा स्थापित बाला विश्राम की ख्याति भी चतुर्दिक थी। प्राय: सभी प्रमुख राजनेताओं ने समय-समय पर उस संस्था को देखा और सराहा। बाला विश्राम से शिक्षा प्राप्त अनेक महिलाओं ने धार्मिक सामाजिक क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त किया है।

मुझे माँश्री के दर्शन करने का सौभाग्य मात्र एक बार सन् 1970 में अपनी प्रथम आरा यात्रा के समय मिला था। तब उनकी ख्याति शिखर पर थी। उनसे जो स्नेह पाया उससे ऐसा लगा कि जैसे वे मुझे निकट से जानती हैं । बहन शशिप्रभा शशांक ने माँश्री को बताया कि मैं पूज्य आर्यिका विशुद्धमती माता जी का गृहस्थावस्था का भाई हूँ तो उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। आचार्य शिव सागर जी के संध में विशुद्धमतीजी को दीक्षा लिये 6 वर्ष ही हुए थे, परंतु उनकी स्वाध्याय प्रियता और साधना की जानकारी सोलापुर की ब्र. विद्युल्लताजी के माध्यम से माँ चंदाबाई तक पहुंच गई थी। ब्र. विद्युल्लताजी की मां भी उन्हीं आचार्य शिव सागर जी महाराज के संघ की एक वरिष्ठ आर्यिका थीं।

पुन: पहुँचने का अवसर मिला। इस यात्रा में मुझे बाला विश्राम को देखने और उसकी गतिविधियां जानने का पर्याप्त अवसर मिला। वहां के भव्य मंदिर, उन्नत मानस्तंभ, 18 फुट ऊँची भगवान बाहुबली की मनोहारी मूर्त्ति दर्शनीय महावीर स्मृति स्तम्भ और चारित्र चक्रवर्त्ती आचार्य शांति सागर जी की वह प्रभावक मूर्त्ति जिसमें उनकी कृशकाय परंतु वीतरागता से सराबोर मुद्रा अंकित है, आज भी स्मृति पटल पर उभर आती है। पूज्य मांश्री की मूर्त्ति और उनके उपयोग में आनेवाली कुछ सामग्री

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देखकर उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि देकर उनका स्मरण किया। बहन शशिप्रभा का पुन: 4-6 दिन वहां रहने का स्नेहपूर्ण न्यौता पाकर वहां से लौटा था। मुझे क्या पता था कि जिस प्रकार पिछली यात्रा माँश्री के दर्शन की अंतिम यात्रा थी उसी प्रकार यह यात्रा बहन शशिप्रभा के सान्निध्य की अंतिम यात्रा होगी।

बाला विश्राम के अमृत महोत्सव के पुण्य अवसर पर उसे स्थापित करके महिलाओं विशेषकर विधवा एवं परित्यक्त महिलाओं को शिक्षित, स्वावलम्बी बनाने का उत्कृष्ट कार्य करने वाली, धर्म और संस्कृति की रक्षार्थ जीवन भर लिखने-बोलने वाली कर्मठ साधिका माँश्री चंदाबाई को स्मरण करते हुए मैं पुन: अपने भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ ।

❁

बीबी पढ़े चलो

❑ डॉ० श्रीमती सूरजमुखी जैन, मुजफ्फरनगर

सन् 1939 प्रात: साढ़े नौ बजे की बात है । जैन बाला विश्राम स्कूल, धनुपुरा के लिए आरा शहर से छात्राओं को ले जानेवाली बस (गाड़ी) अकस्मात् मेरे घर के पास रुकी और गाड़ी के साथ चलने वाली चपरासिन मुरली ने घर के द्वार पर आकर आवाज लगाई "बीबी पढ़ने चलो" घर के सभी लोग चौंक पड़े । मेरे घर से जैन बाला विश्राम में मेरे प्रवेश का कोई प्रस्ताव भी नहीं गया था, फिर भी मेरे घर के बाहर जैन बाला विश्राम की गाड़ी का रुकना और चपरासिन का पढ़ने के लिए आवाज लगाना वास्तव में आश्चर्य का विषय था । मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न था । झटपट अपनी पू० माँ की स्वीकृति प्राप्त कर गाड़ी में बैठकर धनुपुरा पहुँच गई । बिना शिक्षा-शुल्क परिवहन शुल्क आदि दिए ही जैन बाला विश्राम की छठी कक्षा में मेरा दाखिला हो गया और मैं अध्ययनरत हो गई । सप्तम् कक्षा तक अध्ययन चला । उसके बाद बोर्डिंग में ही रहकर अध्ययन करने के लिए आश्रम भेजने से पिताजी ने मना कर दिया ।

एक दिन जैन बाला विश्राम का बूढ़ा चपरासी मेरे पू० पिताजी के नाम पू० माँश्री का पत्र लेकर मेरे घर आया । पत्र में माँश्री ने दो-तीन पंक्तियों में मेरी कुछ प्रशंसा करते हुए मेरे उज्ज्वल भविष्य के लिए मुझे आश्रम भेजने का अनुरोध किया था । पत्र पढ़ने के बाद पू० पिताजी सहमत हो गए और तब से जीवन पर्यन्त वे हम दोनों बहनों को उच्चतम शिक्षा दिलाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे । यह था पूज्या माँश्री के हृदय में सतत उद्वेलित, नारी जाति के उद्धार और उत्थान की भावमन्दाकिनी का अद्भुत एवं ओजस्वी प्रभाव ।

❁

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किस मोड़ पर है, नारी मुक्ति आंदोलन

❑ आशा गोधा, खजुराहो

समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को मद्दे नजर रखते हुए उनको स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से आज से 75 वर्ष पूर्व परम आदरणीया पूज्या आर्यिका रत्न चंदाबाई माँश्री ने ''जैन बाला विश्राम, आरा'' की स्थापना की थी ।

माँश्री के द्वारा स्त्री शिक्षा का पुरजोर प्रचार और प्रसार किया गया था । उन्होंने स्त्री शिक्षा के द्वारा महसूस करवाने की कोशिश की कि अपने धर्म और कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपने आत्म सम्मान की रक्षा करना भी आवश्यक है। समाज में स्त्रियों की क्या स्थिति है इससे माँश्री अनभिज्ञ नहीं थीं । लेकिन सदियों से पीड़ित पुरुष प्रधान समाज में माँश्री जिस मुकाम पर महिलाओं को देखना चाहती थीं वह स्थिति आज भी नहीं है।

प्रश्न यह है कि सभ्यता की इस लंबी दौड़ में अपना सर्वस्व दे चुकने के बाद भी वह हमेशा पार्श्व में क्यों रही । सत्ता का केन्द्र स्त्री कभी नहीं रही, जाहिर है कि सारे कानून और विधान पुरुष की ओर झुके हुए हैं । इन्ही तर्को की बदौलत बलात्कार करने वाला बहसी पुरुष बेदाग छूट जाता है, तो वहीं अपनी भयावह यातना और जुल्मों की फरियाद लेकर कानून का दरवाजा खटखटाने वाली औरत से चरित्र का प्रमाण-पत्र मांगा जाता है। कोई दोष न होते हुए भी समाज में नारी ही तिरष्कृत की जाती हैं ।

दुनिया के सारे धर्मों ने उसमें आत्म हीनता का बोध बहुत गहरे तक भर दिया है। उसकी हर अवस्था में उसके लिए बंदिशों और हिदायतों की एक लंबी सूची है। शिक्षा और आत्मविश्वास का अभाव ही नारी को ''अबला'' सर्वनाम देता है।

ऐसा भी नहीं है कि बदलते परिवेश में स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक परिस्थितियों में बदलाव नहीं आया है । कुछ हद तक परिवर्तन के बावजूद समाज अभी भी स्त्री को उसकी वास्तविक जगह नहीं दे पाया है। आज के इस वैज्ञानिक युग में उन परिवारों का समाज ने कोई दंड निश्चित नहीं किया जो एक माँ को उसके गर्भस्थ शिशु का खून करने पर मजबूर कर देते हैं सिर्फ इसलिए की वह ''कन्या'' है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिक्षित परिवारों में भी दहेज रूपी दानव के लिए कोई पुरुष नहीं वरन् स्त्री ही जलायी जाती है। इसका सबसे बड़ा कारण है एक स्त्री ही दूसरी स्त्री की दुश्मन हो जाती है। जब तक "हम एक हैं" की भावना स्त्रियों में नहीं आएगी तब तक महिलाओं को आगे आने में सदियां लग जायेंगी ।

समाज की विभिन्न कुरीतियों को ध्यान में रखते हुए ही माँश्री ने स्त्री शिक्षा पर जोर दिया । वे सोचती थीं कि स्त्री अगर शिक्षिता है तो कुछ हद तक अपने लिए निर्णय ले सकती है । स्वावलंबी है तो शोषित होने से बच सकती है ।

अब यह स्पष्ट करने का वक्त आ गया है कि स्त्री को परिवार समाज और धर्म की जितनी आवश्यकता है, उतनी उन्हें भी स्त्री की आवश्यकता है।

पूज्या माँश्री का अभिनन्दन करते हुए, उनकी पुण्य-स्मृति में इस वर्ष उनका श्रद्धांजलि वर्ष मनाया जा रहा है। आइये हम भी यह प्रण उठाएँ कि परिवार की तरफ से कितना भी दबाव क्यों न डाला जाए हम हमारे गर्भस्थ शिशु (कन्या) का खून नहीं होने देंगे। हम दुल्हन के साथ दहेज की मांग नहीं करेंगे। महिला समाज की तरफ से पूज्या माँश्री को यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जब तक महिलाएँ स्वयं दृढ़ नहीं होंगी तब तक दुनिया भर में चलाए जा रहे नारी मुक्ति आंदोलन के जोशीले नारों का कोई औचित्य नहीं रह जाता ।

O

महिलारत्न माँश्री

❑ चंद्रमुखी जैन, डिब्रूगढ़, असम

महिलारत्न माँश्री पंडिता चंदाबाई जी जैन समाज की जाग्रत महिलाओं में अग्रगण्य थीं। युग विभूति एवं युगसंस्थापिका की गरिमा से गौरवान्वित आपका व्यक्तित्व असाधारण था। आपने बाल वैधाव्य से अभिशप्त अपने जीवन को असीम लगन, परिश्रम और साधना द्वारा सौभाग्यशाली, आत्मिक उन्नति, सामाजिक आदर्श, पारिवारिक मर्यादा और नारी जीवन के बहुमुखी विकास का साधन बनाया। अंध विश्वास, मूढ़ता और संकीर्ण मानसिकता के युग में स्वयं अग्नि-परीक्षा में उतर कर आपने नारी के अज्ञानान्धकारमय जीवन में शिक्षा का प्रसार किया, ज्ञान का प्रकाश भरा, जागरूकता की प्रेरणा दी एवं उनमें आत्मबल का संचार किया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"श्री जैन बाला विश्राम" आश्रम की स्थापना, विषम परिस्थितियों के बीच उसका कुशल संचालन धर्म के अनुकूल वहाँ के भव्य वातावरण का निर्माण और वहां की प्रत्येक छात्रा में धर्मबुद्धि एवं कर्त्तव्यभान जाग्रत करने जैसे महत् कार्य आपके अद्‌भुत साहस, अटूट मनोबल और जागृत जीवन का परिचय देते हैं । बाला विश्राम के माध्यम से आपने देश के विभिन्न भागों की कितनी अबलाओं को सबला बनाया। वेदना और अभावजन्य उनके ब्रणों पर शिक्षा का शीतल प्रलेप लगा कर उनके जीवन को संस्कारित और प्रोत्साहित किया।

माँश्री का सुरुचि सम्पन्न जीवन आत्मज्ञान और पांडित्य, कला और साहित्य तथा पूत विचारों और आचारों से अलंकृत था। उनके जीवन में सादगी, संयम, नियम, शालीनता, माधुर्य और सौन्दर्य का विलक्षण सामंजस्य था।

माँश्री बहुमुखी प्रतिमा की धनी थीं । वे एक सफल सम्पादिका, आदर्श लेखिका, प्रभावक वक्ता, स्पष्ट व्याख्याता और कुशल उपदेष्टा थीं। उनकी वाणी में माधुर्य था और आंखों में करुणा, समाज सुधार और आत्म-कल्याण की भाव-तरंगे प्रवाहित रहती थीं। उन्होंने अपने दोनों कुलों के जीवन को सेवा-साधना और परोपकार के महत् कार्यो में लगा दिया। महिला जीवन में नवीन क्रांति का सूत्रपात किया तथा अशिक्षा शोषण और धार्मान्धता की विवशता को दूर किया। इससे नारी की दशा में आमूल परिवर्तन आया। घूंघट की ओट से बाहर आकर महिलाएं प्रबुद्ध हुईं, उनकी जो प्रतिभा और शक्ति अब तक अव्यक्त थी, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर मिला।

मैं आश्रम की स्नातिका रही हूँ । कई वर्षो तक मुझे अत्यंत निकट से माँश्री के सम्पर्क में रहने और सीखने का सौभाग्य मिला है। उनके समीप जाने पर अनायास ही मन संयत, चित्त निर्मल और कुछ समय के लिए हृदय निर्विकार हो जाता था। सौन्दर्य और शिष्टता के प्रति उनका आकर्षण, पूजन-अर्चन में उनकी तन्मयता एवं आतिथ्य सत्कार में उनकी तत्परता अविस्मरणीय है। यही कारण हैं कि शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत भी मेरे मन में आश्रम का मोह सदा बना रहा है। मैं जब भी आरा गई मांश्री के दर्शन का लाभ अवश्य लिया। मिलने पर माँश्री ने मुझसे हमेशा जानना चाहा कि उस समय मैं किन शास्त्रों का स्वाध्याय कर रही थी । स्वाध्याय मन को एकाग्र एवं आत्म-ज्ञान की अभिवृद्धि के साथ-साथ जीवन को संयमित, अनुशासित, नियमित और संशोधित करता है । अत: स्वाध्याय जीवन का व्रत होना चाहिए ।

'अमृत महोत्सव' के पावन अवसर पर मैं महिलारत्न माँश्री के चरणों में अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पण करती हूँ और अपने चिरस्मरणीय गुरुवरों को सादर प्रणाम करती हूँ । ⌘

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री के सम्पर्क में पूरा एक युग

❑ पं. नेमिचन्द्र शास्त्री (स्व०)

मुझे आज भी वह दिन स्मृत है, जिस दिन मैंने सकुचाते हुए, भय खाते हुए अमल-धवल खद्दर की साड़ी पहने, दिव्य तेजस्विनी, तपस्विनी, सादगी से ओत-प्रोत, मधुर भाषिणी माँश्री के दर्शन किए थे। उस समय मैंने श्रद्धा और भक्ति से उन्हें प्रणाम किया तथा जो चर्चा हुई थी, वह आज भी मेरे मन को कुरेदती रहती है। माँश्री के सम्पर्क में पूरा एक युग बीत गया, न मालूम कितनी प्रिय, अप्रिय घटनाएँ गुजरती रही हैं।

माँश्री का व्यक्तित्व, वस्त्र, वपु, वाक्, विद्या और विभूति रूप पंच वकार से नहीं आँका जा सकता है, बल्कि उनके अहर्निश की प्रत्येक कार्यवाही उनके व्यक्तित्व की महत्ता-सूचक हैं। जीवन के प्रतिफल की प्रत्येक घटना दीपावली की विद्युत्- बल्लरी के समान अपने आलोक की स्निग्ध किरणों को विकीर्ण करती है। यदि चाहे तो सुज्ञ नेत्रयुक्त व्यक्ति उन देदीप्यमान भासुर-रश्मियों से जीवन में स्निग्ध आलोक पा सकता है।

सन् 1940 का जुलाई मास। मेरी नियुक्ति जैन बाला विश्राम में धर्माध्यापक के स्थान पर हो चुकी थी। मैं घर से अपनी पत्नी को लेकर, यदि मेरी स्मृति धोखा नहीं देती है तो 10-11 जुलाई को विश्राम के अन्तर्गत अध्यापक के क्वार्टर में आ गया था। अगले दिन से मुझे अध्यापन करना था, कार्यक्रम पहले ही निर्धारित हो चुका था, जिसके अनुसार प्रात: दो घन्टे और मध्याह्न में चार घन्टे मुझे अध्यापन करना था। अतएव प्रात:काल 6 बजे ही स्नान आदि नित्यक्रियाओं से निश्चिन्त होकर बाहुबली स्वामी के दर्शन कर मैं विद्यालय गया और अपना कार्य आरम्भ किया। 8 बजे कक्षा समाप्त कर आया तो माँश्री ने कहा- "इतनी जल्दी क्या है, आप नाश्ता आदि करके 7 बजे से पढ़ाया करें। हाँ, एक बात का ख्याल रखें-दासत्व की श्रृंखला में जकड़ी, घूँघट में छुपी, अज्ञान और कुरीतियों से प्रताड़ित नारी को आत्मबोध कराने की चेष्टा अवश्य करें। इस वर्ष गोम्मटसार जीवकाण्ड तक ही धर्मशास्त्र रखें; पर सप्ताह में एक दिन छात्राओं को उनके अधिकार और कर्त्तव्यों को अवश्य बतलाया करें। हमारी कामना है कि प्रत्येक छात्रा अग्नि की चिनगारी निकले जिससे पर्दाप्रथा, अन्धविश्वास और कुरीतियों को भस्म कर सके। समाज का ढाँचा बदल रहा है, बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। अतएव प्राचीन संस्कृति के साथ छात्राएँ अपने दायित्व

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को समझ सकें, इसकी चेष्टा सदा करें। यहाँ प्रत्येक महीने की प्रतिपदा को बालाहितकारिणी सभा का अधिवेशन होता है, इसमें बड़ी कक्षा की छात्राएँ भाषण देती हैं, आप इस सभा की उन्नति का भी ध्यान रखें। शास्त्रसभा के लिए आध्यात्मिक और आचारात्मक दो शास्त्र निश्चित कर दें, जिससे छात्राएँ आत्मोन्नति के साथ अपने ज्ञान का भी विकास कर सकें। ●

पं० नेमिचन्द्र शास्त्री स्याद्वाद महाविद्यालय, काशी से ज्योतिषाचार्य के स्नातक बनने के बाद सन् 1940 में आरा आये और यहीं के हो गये। जैन बाला विश्राम तथा जैन सिद्धान्त भवन उनके लिए 'कल्पवृक्ष' और 'कामधेनु' सिद्ध हुए। माँश्री चन्दाबाई का सान्निध्य उनके लिए 'चिंतामणि' था। यहीं रहकर उन्होंने एम०ए०, पी०एच०डी०, डी०लिट् की उपाधियाँ अर्जित की और मगध विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर महाविद्यालय - ह० प्र० द० जैन कॉलेज, आरा में प्राकृत-संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित हुए। अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। विद्वान् और विदुषी तैयार किये। यशस्वी जीवन के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचे और यहीं से 1974 में अचानक चले गये। माँश्री के अभिनन्दन-ग्रन्थ में उनका यह संस्मरण विस्तृत रूप में प्रकाशित है । - सम्पादक

वह तो मैदान छोड़कर भागना होता

❑ पं. फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री (स्व०)

बाला विश्राम को देखने का अवसर मुझे सन् 1944 में मिला। उसी समय मैंने माता चन्दाबाई के दर्शन किये। माताजी ने अपने जीवन का बहुभाग बाला विश्राम को अर्पित कर दिया, यह सब कोई जानता है। वह उनके जीवन की तपश्चर्या है। प्रसंग देख मैंने इसी का प्रश्न छेड़ा। मैंने कहा- "माताजी ! यह सब आपने क्या बला पाल रखी है। एक परिग्रह कम किया और दूसरा बढ़ा लिया। छोड़िये इस प्रपंच को। सब इन पण्डितों को सम्भालने दीजिए। आप तो अपने स्वाध्याय और सामयिक में चित्त लगाइये। आज इसकी पढ़ाई का प्रबन्ध करो, कल उसका। यह सब क्या है।"

मैं यह सब कहने के लिए तो एक साँस में कह गया, किन्तु मुझे भय था कि मेरे इस कथन से माताजी की आत्मा न उबल पड़े। फिर भी वे शान्त रहीं और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किंचित् स्मितवदना हो बोलीं- "शास्त्रीजी ! कहने को आप बहुत बड़ी बात कह गए हैं । मैं उसकी गहराई को जानती हूँ और यह भी जानती हूँ कि आपने यह बात किस अभिप्राय से कही है । पर मुझे उससे क्या करना है । मुझे तो अपना देखना है । कुछ दिन पहले मेरे मन में भी ये विचार उठे थे । उस समय मैं अशान्त थी, भाराक्रान्त थी । मैं इस प्रपञ्च से दूर भागना चाहती थी- बहुत दूर ।"

मेरे मतलब की पुष्टि होता देख बीच में ही टोकते हुए मैंने कहा- "यही तो मेरा मतलब है ।"

यह सुनकर वे कुछ सकुचाईं पर तत्काल सम्हल कर बोलीं- "नहीं, वास्तव में वह मेरा मैदान छोड़कर भागना था । भला, ऐसे क्षुल्लक विचार को मैं अपने मन में स्थाई आश्रय दे सकती थी ? आप मुझसे ऐसी आशा न करें । इस घर को मैंने बनाया है । यह इसलिए नहीं कि इसके पीछे मेरी कोई ऐहिक कामना है । बल्कि इसलिए कि इसके द्वारा मुझे अपनी सार-सम्हाल करनी है । ये बहनें और बालिकाएँ मुझसे जुदा नहीं हैं । इनकी उन्नति ही मेरी उन्नति है और इनका पतन ही मेरा पतन है । मैंने यह व्रत कुछ सोच समझ कर लिया है । मैं सब कुछ भूल सकती हूँ पर इसे नहीं भूल सकती ।"

"सामायिक और स्वाध्याय को भी ।" मैंने कहा ।

"हाँ-हाँ सामायिक और स्वाध्याय को भी ।" कहने को तो वे यह कह गईं पर पीछे सम्हल कर बोलीं- "शायद मेरा मलतब आप नहीं समझे । मेरा मतलब यह है कि सामायिक और स्वाध्याय में चित्त न लगे तब इन्द्रियों के विषयों से चित्त को हटाकर वीतराग भाव की पुष्टि के लिए मेरी परिस्थिति के अनुरूप इससे पुनीत दूसरा कार्य और क्या हो सकता है, आप ही बतलावें ।" मैं निरुत्तर था । कहता ही क्या ? किन्तु यह उत्तर सुन मन प्रसन्न था । ●

पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री जैन सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान् थे । जीवन में कभी सिद्धान्तहीनता से समझौता नहीं किया । सिद्धान्त की सच्चाई को पूरी दृढ़ता से प्रस्तुत करने का उनमें अद्भुत साहस था । इसी सच्चाई ने उन्हें प्राकृत के परमागम कषायपाहुडसुत्त तथा छक्खंडागमसुत्त का, जयधवला और धवला जैसी विशालकाय टीकाओं के साथ उद्धार का सामर्थ्य प्रदान किया । ग्रन्थराज 39 भागों में प्रकाशित हैं । अभिनन्दन ग्रन्थ में समाहित उनका वह अविस्मरणीय संस्मरण माँश्री के चिन्तन के चरमोत्कर्ष को अभिव्यक्त करता है । - सम्पादक

◎

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपकी क्या राय है 'विधवा विवाह के बारे में'

❑ महात्मा भगवान दीन (स्व०)

हमने उनका फूल-सा चेहरा देखा था, और तब यह भी देखा था कि उनमें कितना तेज था, और उसी तेज से हमने अन्दाज लगाया था कि इस तेजोमय चेहरे के नीचे जो दिल है, उसमें उन दुखित बहनों के लिए कितनी तड़प है, जो तरह-तरह की दासताओं और बेबसी की रस्सियों से बंधी पड़ी हैं। चन्दाबाई ने और बाइयों की तरह से समाज में नाम हासिल करने के लिए दासता की जंजीरों को तोड़ने और बेबसी की रस्सी काटने की बात कभी नहीं सोची, उन्होंने बहुत जोर से दासता की जंजीर और बेबसी की रस्सी को अपने चारों तरफ लपेट लिया और तपस्या करने का एक नया ही ढंग सोच निकाला, और यह ढंग सचमुच वैसा ही था जिस तरह बैट्री अन्धेरी कोठरी में अपने आपको बन्द कर किसी भी एक कोने में बैठ जाती है, तिल-तिल कर अपने को गलाकर बल्ब को चमकाती रहती है।

हम उनकी जीवनगाथा नहीं लिख रहे, यह काम तो अनेकों आदमी कर सकते हैं, हम तो चन्दाबाई के मुँह से निकली एक सीधी-सादी बात दोहरा कर ही अपनी लेखनी को एक ओर रख देंगे। इसी बात को एक बार हमने देहात के महान् लेखक राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह जी से भी कहा था और जिसको सुनकर उनके मुँह से एक हल्की 'आह' निकली थी।

वह बात यह है कि चालीस वर्ष हुए, अम्बाला नगर में कहीं जलसा था। उस जलसे के मौके पर श्रीमती चन्दाबाई, मगन बहन और ललिताबाई भी मौजूद थीं। सेठी अर्जुनलालजी और भाई अजित प्रसादजी की हाजिरी में हमने उस समय इन तीनों बहनों से और खासकर चन्दाबाई से यह सवाल पूछा था कि विधवा-विवाह के बारे में आप सबकी क्या राय है ? इसके जवाब में मगन बहन और ललिताबाई तो चुप रहीं पर चन्दाबाई ने वह शब्द कहे, जो आज तक हमारे हृदय पर ज्यों-के-त्यों अंकित हैं और जो यह बताते रहते हैं कि चन्दाबाई को अपने दिल पर कितना काबू है। जिस काबू को पाने के लिए बड़े-बड़े ऋषि और मुनि तरसते हैं।

"क्या आपने हमें इस योग्य रखा है कि इस विषय पर अपना मुँह खोल सकें ?"

महात्मा भगवानदीन इस युग के उन सारस्वत मनीषियों में थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण की अलख जगायी। उनकी लेखनी और वाणी में जादुई तिलस्म था और उस तिलस्म को तोड़ने का सामर्थ्य माँश्री चन्दाबाई में तब भी था जब उन्होंने जीवन के यथार्थ से संघर्ष करने की डगर पर अपना पहला डग भरा था। इस तथ्य को उजागर किया है स्वयं महात्मा भगवानदीन ने माँश्री के अभिनन्दन ग्रन्थ में। -सम्पादक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धर्मशीला श्राविका-रत्न

❑ सुमेरुचन्द्र दिवाकर (स्व०)

ऐसे सौभाग्यशाली नर या नारी बिरले हैं, जिनका लक्ष्य समीचीन श्रद्धामूलक ज्ञान और सदाचार का पालन हो, जो अपने अध्यात्मवाद के प्रदीप को प्रदीप्त रखते हुए मार्ग-भ्रष्ट लोगों का पथ प्रदर्शन करते हैं। ऐसी विशिष्ट आत्माओं में पं० चन्दाबाई जी का नाम आदरपूर्वक लिया जा सकता है। अपने पतिदेव बाबू धर्मकुमारजी को छोटी अवस्था में ही निधन होने के उपरान्त इन्होंने 'धर्म' को ही अपना जीवनाधार मानकर उसके लिए अपने आपको उत्सर्ग कर दिया। इसी से आर्तध्यान को बढ़ाने वाली सामग्री को उन्होंने कुशलतापूर्वक आत्मकल्याणकारी और धर्मध्यान का केन्द्र बना लिया। वैष्णव परिवार में जन्म धारण करने वाली इस महिला के हृदय में जिनवाणी माता की उज्ज्वल और आदर्श भक्ति का अद्‌भुत विकास हुआ। स्वाध्याय के द्वारा ग्रन्थों का धार्मिक बोध प्राप्त किया और सप्तम प्रतिमा का व्रत धारण कर इस दुर्लभ मनुष्य-जन्म की विशिष्ट निधि से अपनी आत्मा को समलंकृत किया। देव, गुरु, शास्त्र में इनकी प्रगाढ़ भक्ति रही। 108 चारित्र-चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज के समीप इन्होंने अनेक व्रत धारण किए और उनको अनेक बार आहार-दान देने का अपूर्व लाभ लिया।

सन् 1948 के अगस्त माह में आचार्य शांतिसागर महाराज ने बम्बई सरकार द्वारा हरिजन-मंदिर प्रवेश कानून को जैनियों पर लागू करने के प्रतिकार निमित्त लगभग 80 वर्ष की अवस्था में अन्न त्याग कर दिया। आचार्यश्री का अभिप्राय यह है कि हरिजन-वर्ग हिन्दू समाज के अंग है। जैनधर्म एक स्वतंत्र धर्म है, अत: जैन मंदिर के संबंध में अन्य लोगों को अधिकार देने से भविष्य में अनिष्ट की आशंका है। आगम भी इसका विरोधी है। इस सम्बन्ध में स्वच्छंदता के भक्तों द्वारा विविध बाधाओं के उपस्थित किये जाने पर भी पंडिताजी ने गुरु और धर्म की भक्तिवश अधिक श्रम और उद्योग किया, ताकि आचार्य महाराज की प्रतिज्ञा पूर्ण हो जाय। ●

पं० सुमेरुचन्द्र दिवाकर जैन धर्म के मूर्धन्य विद्वान् थे और आचार्य शांतिसागर महाराज के अनन्य भक्तों में अग्रणी थे। आचार्यश्री से ब्र० चन्दाबाई ने सप्तम् प्रतिमा की दीक्षा ली थी। दिवाकर जी ने अपने संस्मरण में जिस ऐतिहासिक प्रसंग को निबद्ध किया है, उससे माँश्री की सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए समर्पण और संघर्ष की क्षमता और दृढ़ता उजागर होती है। माँश्री ने इस विषय पर जैन महिलादर्श के कई अंकों में विस्तार से लिखा है। -सम्पादक ○

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनुभव की बात

❑ कैलाशवती जैन, सरधना

सन् 1949 या 50 की बात है, वैसे तो भारत के राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद यदा-कदा अपने गाँव आते-जाते ही रहते थे और हम सब आश्रम की छात्राएँ उनके आने से पाँच मिनट पहले सड़क के आसपास तिरंगा झंडा लेकर खड़ी हो जाती थीं, पर एक बार ऐसा हुआ कि 'हिन्दू कोड बिल' हमारी भारतीय संस्कृति के लिए लाभदायक होगा या हानिकारक, इस विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ रखी गईं। उसी रोज राष्ट्रपति भी आने वाले थे। समय पर छात्राओं की सभा प्रारम्भ हुई और राष्ट्रपति जी भी उपस्थित हुए।

कुछ छात्राओं ने 'हिन्दू कोड बिल' को अपनी कोरी दलीलों के द्वारा अच्छा बतलाया और कुछ ने उसके दोषों को लेकर ठोस प्रमाण देकर उसकी धज्जियाँ उड़ाईं। मेरी बारी आई, मैंने भाई-बहन का वास्तविक प्रेम, दाम्पत्य-जीवन की सुख-सुविधाओं पर प्रकाश डालते हुए 'हिन्दू कोड बिल' रद्द करने का सुझाव रखा। बाद में माँश्री ने भी 'हिन्दू कोड बिल' की बुराइयों की ओर राष्ट्रपतिजी का ध्यान आकर्षित किया। तत्पश्चात् डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 'हिन्दू कोड बिल' पास नहीं होना चाहिए, इस पर बोलते-बोलते कहने लगे, 'अरे भई क्या बताएँ 'हिन्दू कोड बिल' को हमारे पण्डित जवाहरलाल पास करा के ही छोड़ेंगे। उनको नहीं मालूम कि भारतीय नारी अपने भाई से हिस्सा बँटाएगी। पत्नी अपने पति और पति अपनी पत्नी को तालाक देंगे। तब इनके कितने भयंकर परिणाम होंगे। मेरी बूढ़ी पत्नी मुझसे कहती हैं कि यदि अब तुम मुझे बुढ़ापे में तलाक देने लगे तो मैं कहाँ जाऊँगी। उनका इतना कहना था कि एक हँसी की लहर फैल गई।

जैन बाला विश्राम संस्था देश की सर्वांगीण संस्था है। अपने अनुभवों से मैंने यही जाना है कि इससे हजारों-हजार विधवा-सधवा, कुमारिका बहनों का जीवन प्रशस्त तो हुआ ही है साथ ही धर्म का वास्तविक प्रचार-प्रसार इससे हुआ है, वह अवर्णनीय है।

पूज्य त्यागीवृतियों, महापुरुषों के चरण-रज पड़ने और पूज्या माँश्री चन्दाबाई जी की पावन साधना से त्यागवृत्तियों इसका अभूतपूर्व विकास हुआ है।

मैं जैन बाला विश्रान संस्था को अपना शत्-शत् नमन करती हूँ एवं कामना करती हूँ कि यह संस्था दिन-दूनी रात चौगुनी तरक्की करे।

❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रोज-रोज अनुभूतता एक सत्य

❑ सुरेश सरल, जबलपुर

अहो माँ ! चन्दाबाई जी !! नमन !!

मैं देख रहा हूँ- आपके भीतर कभी दर्शन, ज्ञान, चारित्र के पौधे पनपे थे जो धीरे- धीरे बढ़कर वटवृक्ष की तरह विशाल हो गये हैं।

आपके भीतर से तप और त्याग की एक नन्ही निर्झरणी कभी नि:सृत हुई थी जो अब विशाल गंगा की तरह देशभर में फैल गई है।

आपने जीवन में अनेक कार्य जनहित में सम्पन्न किये हैं उनमें जैन बाला विश्राम, आरा की स्थापना और जैन महिलादर्श का शुभारंभ देश में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं !

आपके हाथों में प्रकाश की एक अदृश्य मशाल थी जो आपकी तरह ही श्रेष्ठ नारियां आगे ले जा सकती थीं।

आपने मशाल प्रज्ज्वलित भर नहीं कीं, उसे लेकर अंधेरे से संघर्ष किया और एक नये आयाम तक अपने विचार और कार्य ले गईं।

आप जब जाने लगीं इस धरती से, तो आप सशंकित नहीं थीं कि मशाल का क्या होगा।

आपके पवित्र हाथों की वह मशाल आज भी है और उसके अस्तित्व का कारण है, आपकी तरह ही समर्पित और सेवाभाव से भरी हुई देश की कतिपय महान् सन्नारियाँ।

आपकी मशाल को थामने जो कर्मठ हाथ आगे बढ़े सबसे पहले-वे उल्लेखनीय हैं।

पद्मश्री ब्र० पं० न्याय-काव्यतीर्थ सुमतिबाई शाह, सुश्री शशिप्रभा "शशांक", श्री पं० विद्युल्लता शाह, डॉ० श्रीमती विद्यावती जैन, श्रीमती शैलबाला जैसे अनेक नाम और हाथ जुड़ते गये उस मशाल से। कालान्तर में एक नाम और सामने आया डॉ० नीलम जैन का।

आपके कार्यों और विचारों को अभी देश की और अनेक महिला-रत्नों को अपने भीतर तक उतारना है और अपने नव बोध से सम्पूर्ण देश के गली-कूचों में आपकी मशाल का उजास फैलाना है।

हम लाखों श्रावक-श्राविकाएँ आपको बहुत पास से कभी नहीं देख पाये, किन्तु आप मशाल लिए स्वत: ही हमारे अंतस् में उतर आयीं हैं। अत: हम आपसे तनिक भी अपरिचित नहीं हैं। यों हमारी चेतना में हमारी जन्मदात्री माँ का रूप ही भरा है और उसी प्रिय माँ ने सायास हमारे भीतर बचपन में ही आपको उतार दिया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अदेखे ही आप एक नन्हा दिया जला गई थीं- अंतस् के किसी कक्ष में। फिर मेरी माँ उसमें तेल भरती रहीं समय-समय पर।

सुनो चंदा माँ! सुनो! मेरी जन्मदात्री माँ की तरह एक ज्ञानमयी-नारी-रत्न सदा अंतस् के उस कक्ष में उपस्थित रहती है। मैं जानता हूँ, मेरी माँ के साथ वह, जो उपस्थित मिलती है, भीतर ही भीतर, सच वह आप ही तो हैं।

आप हम से दूर नहीं हैं। हम आपको कैसे भूल सकते हैं! आप कहीं गयी ही नहीं हैं। आप तो यहीं हैं, मेरी माँ के साथ। मेरे भीतर।

श्रद्धा सुमन

❑ प्रभा जैन, प्रधानाध्यापिका
श्री जै.बा.वि. (अल्पसंख्यक) म.वि.,धनुपुरा, आरा

मुझे सन् 1953 से ही श्री जैन बाला विश्राम के साथ जुड़े रहने का सौभाग्य प्राप्त है। जब यहाँ की छात्रा के रूप में मुझे छात्रावास में रहकर धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने का सुअवसर मिला था, साथ ही इस संस्था की संस्थापिका प्रातःस्मरणीया पूज्या चन्दाबाई माँश्री के निकट सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन् 1962 में मध्य विद्यालय में कार्य करने का अवसर मिला। यह मेरा सौभाग्य ही है कि सन् 1964 से मैं उसी मध्य विद्यालय में प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्य करती आ रही हूँ।

यह संस्था इस जनपद के लिए एक वरदान है। यह एक सामान्य बालिका विद्यालय नहीं अपितु स्त्री-शिक्षा की अवश्यकता को महसूस करते हुए उसे जन सुलभ बनाने की दिशा में किये गये प्रयासों का गौरवशाली स्मारक है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य छात्राओं की सामान्य शिक्षा के साथ-साथ नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देना और उनमें सुसंस्कार उत्पन्न करना है। इस संस्था की यह मान्यता रही है कि महिलाओं को सुशिक्षित किये बिना संसार सुखी नहीं हो सकता। इस संस्था से सम्बद्ध सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ भी उच्च नैतिक मूल्यों और श्रेष्ठ मानवीय गुणों की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। छात्राओं की दिनोंदिन बढ़ती संख्या इस संस्था के सर्वांगीण विकास के प्रमाण हैं। मैं 1008 भगवान् बाहुबलि से करबद्ध प्रार्थना करती हूँ कि तपोभूमि के समान पवित्र मध्य विद्यालय आने वाले दिनों में भी जनपद की प्रतिभा-सम्पन्न सदाचारिणी छात्राओं के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहे। अन्त में इस अमृतोत्सव के शुभ अवसर पर पुनः एक बार मैं आश्रम और इससे किसी भी रूप में जुड़े सभी लोगों के मंगलमय भविष्य की कामना करती हूँ।

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

नारी की सम्यक् शिक्षा

❑ डॉ० विश्वनाथ चौधरी

आर्यिका रत्न माँश्री चन्दाबाई समस्त नारी उत्थान की प्रेरणा दायिनी वात्सल्यमयी माँ हैं। उन्होंने नारी जाति का उद्धार कर अपने जीवन को सार्थक कर अमरत्व को प्राप्त किया। आज उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है, फिर भी उनकी कर्मठता और सेवा समर्पण की भावना जीवंत है, जिसके कारण वे आज भी चिरस्मणीय एवम् स्तुत्य हैं।

नारी जागरण की प्रतीक, बहुआयामी प्रतिभा की धनी माँश्री चन्दाबाई का तप-त्याग-जीवन नारी उत्थान का ज्ञानदर्पण है। उनका दर्शन नारी जाति के सम्मान एवम् आत्म उत्थान का दिव्यदर्शन है। उनका दिव्य आत्मज्ञान समस्त नारी जाति का ज्ञानवर्द्धन है। उनका वात्सल्यमयी विराट हृदय नारियों का दिल एवम् धड़कन है। *इसलिए नारी जाति के सर्वांगीण विकास के लिए उनके दिल में तड़पन थी। उनकी यह दृढ़ अवधारणा थी कि नारी जाति के समुचित उत्थान के बिना सृष्टिरथ का सफल* संचालन संभव नहीं है। इसलिए नारी-उत्थान का सक्रिय अभियान परमावश्यक है। उनकी यह भी मान्यता थी कि नारी का उत्थान नारी के नव जागरण से ही संभव है और नारी नव जागरण का मूल स्रोत उसकी सम्यक् शिक्षा है।

सम्यक् शिक्षा से उनका तात्पर्य लौकिक और धार्मिक शिक्षा दोनों है। उनकी यह धारणा थी कि लौकिक शिक्षा अक्षर ज्ञान और इन्द्रियजन्य ज्ञान के लिए उपयोगी है। मगर आत्मिक ज्ञान धार्मिक शिक्षा के बिना असंभव है। जबकि सच्चा-ज्ञान आत्मज्ञान ही है। अतः माँश्री की दृष्टि में नारी जाति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, धार्मिक एवम् चारित्रिक उत्थान के लिए सम्यक् शिक्षा आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य है। इस प्रकार माँश्री के हृदय में नारी उत्थान संबंधी चिंतन का मंथन होता रहा। अन्ततः इसे मूर्त्त रूप देने के लिए वात्सल्यमयी माँ ने स्वयं अपने परमपवित्र कर कमलों से धर्मनगरी आरा में सन् 1921 ई० में एक शिक्षण संस्था "जैन बाला विश्राम" की स्थापना कर नवीन कीर्तिमान का श्री गणेश किया। उन्होंने न केवल इसे स्थापित ही किया बल्कि उन्होंने अपने अदम्य साहस, कर्मठता, त्याग एवम् समर्पण की भावना से सिंचित कर, पुष्पित एवं पल्लवित कर, जन-जन के बीच अमर ख्याति को प्राप्त किया।

माँश्री द्वारा संस्थापित "जैन बाला विश्राम" का उद्देश्य छात्राओं को मात्र उपाधि प्राप्त कराना नहीं रहा है, अपितु उनके सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर उन्हें कला, धर्म, संस्कृति, आचार और व्यवहार की समुचित शिक्षा प्रदान करना रहा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यहाँ शिक्षा का ध्येय नारी जीवन को स्वावलम्बी, सुयोग्य कर्मठ और धार्मिक बनाकर उन्हें सम्यक् दृष्टि सम्पन्न कराना है।

इस संस्था में आज भी करुणामयी माँश्री चन्दाबाई जी की नारी-उत्थान संबंधी अक्षुण्ण धारा प्रवाहित हो रही है जिसके कारण यह संस्था अपने सार्थक लक्ष्य की ओर अग्रसर सतत जागरूक एवम् प्रयत्नशील है। इस संस्था ने समस्त भारत में विशेषकर नारी शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान देकर माँश्री के सपनों को साकार किया है।

संस्था का यह अमृतमहोत्सव सभी के जीवन में ज्ञान अमृत प्रदान करे तथा श्री जैन बाला विश्राम का नाम सार्थक होकर दिगदिगन्त में उसकी कीर्ति स्थापित हो, इस पुनीत "अमृत महोत्सव" के सुअवसर पर, यही मेरी मंगल कामना है।

⊙

मातृरूपिणी चन्दाबाई

❑ लक्ष्मी नारायण सिंह, शिक्षक
श्री जैन बाला विश्राम उच्च विद्यालय

इस धरा-धाम पर जितनी आदर्श महिलाएँ हुई हैं, उनमें मातृरूपिणी चन्दाबाई एक हैं। वे एक ऐसी विधायक विभूषित विभा हैं, जो ज्ञान और विज्ञान के निधान, शील एवं सौन्दर्य के तूर्य, वीरता एवं धीरता की मूर्ति हैं और हैं- अक्षुण्ण-अमर-उदात्त मांगलिक मानवीय मूल्यों की मंगल मूर्त्ति। उनका नाम लेते ही हमारे मानस में जो बिम्ब उभरता है, वह धीर-वीर-गम्भीर ललित व्यक्तित्व लौह चुम्बक की भाँति हमें बरबस आकृष्ट कर लेता हैं।

सूर्य-चन्द्र तारों के बिना जैसे गगन-मंडल का मुखड़ा उदास हो जाता है, ठीक उसी प्रकार मातृरूपिणी चन्दाबाई के बिना नर-नारी कंकालय का सलोना-सलोना चेहरा सूना-सूना-सा हो जाता है, झीना-झीना-सा हो जाता है। चंदाबाई मांगलिक-माहात्मिक मानवीय मूल्यों का मेरुदण्ड बनकर आरा के तृण-तृण से विश्व के कण-कण तक यों छाती-छहरती आ रही हैं, जैसे शरीर में रक्त-प्रसरण। उनके करुणामय आँचल की छाँह में मानवता ने असंख्य स्त्री-पुरुषों, विधवा-परित्यक्ताओं और उदीयमान बालिकाओं ने अपने दु:खों को सहन करने की शक्ति पायी, अपनी दैहिक-दैविक और भौतिक समस्याओं का समाधान प्राप्त किया। उत्तर-प्रदेश के वृन्दावन में श्री नारायणदास अग्रवाल के घर वि० संवत् 1887 में इस करुणा की देवी ने जन्म लिया था।

जग जाहिर है, 12 वर्ष की उम्र में चंदाबाई संस्कृत एवं प्राकृत के प्रकांड विद्वान्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बाबू धर्म कुमार जी जैन के साथ दाम्पत्य-सूत्र में बंधकर आरा आयीं थीं। 13 वर्ष में विधवा का चोला धारण करना पड़ा। किन्तु धन्य हैं- चंदाबाई जिसने अबला होकर भी जग-मंगलार्थ भव-रोग एवं वैभव-रोग को तिलांजलि देकर विमल-विशद्, विवेक-विराग का फाग खेला। चंदाबाई अबला होकर भी वायु-सी प्रबल बन गयीं और फलतः इसी आरा में सन् 1921 ई० में स्वजनों-परिजनों की सहायता से पहले आश्रम खोला तदुपरान्त मध्य-उच्च विद्यालय भी। इसमें दो राय नहीं कि श्री जैन बाला विश्राम, आरा से पहले वे माँश्री और बाद में आर्यिका बनीं। इस करुणामयी व्यक्तित्व को उनके कार्य और भूमिका के लिए देश-विदेश में समुचित समादर मिला। मगर सर्वोच्च राष्ट्रीय नेताओं, आचार्य रत्नों, आर्यिका रत्नों आदि के साथ सान्निध्य होने के बावजूद इस महिला ने अपना मानसिक संतुलन कभी नहीं खोया। वह फलदार वृक्ष की भाँति सदा नम्र और सहज दिल बनी रहीं। मातृरूपिणी चन्दाबाई का वह विलक्षण गुण ही उनकी सबसे बड़ी पहचान थी, जो आज के इस भौतिकवादी समाज में विरले है।

तत्कालीन समय में भारत पराधीन था। यहां के आमलोगों का जीवन बड़ा रहस्यमय और गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ कठोर परम्परावादी था। ऐसी विषम परिस्थिति में अपनी कार्यस्थली शहर से तीन किलोमीटर दूर धनुपुरा को चुनकर माँश्री चंदाबाई ने सचमुच अदम्य साहस और दृढ़ता का परिचय दिया था। उस समय जनता अपनी अस्मिता और आजादी के लिए प्राणप्रण से लड़ाई लड़ रही थी। एक ओर राजनीतिक लड़ाई थी तो दूसरी ओर सामाजिक बंधनों और कुरीतियों के विरुद्ध अनवरत संघर्ष। जनता अगर त्रासदी झेल रही थी, तो माँश्री चंदाबाई ने भी वे सब कष्ट झेलकर दीन-दुखियों को कष्ट सहने और ईश्वर में अनन्त आस्था बनाये रखने का संदेश दिया था। उन्होंने सेवा और समर्पण का जो रास्ता अपने लिए चुना था, उसकी कठिनाइयाँ, रुकावटों और सामाजिक वर्जनाओं से अच्छी तरह परिचित थीं। इसलिए यह कहना कि आश्रम में विधवा-परित्यक्ता-बालाओं के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने अनेक कष्ट झेले, आलोचनाएँ सहीं और समर्पण का कंटकाकीर्ण रास्ता उन्होंने स्वयं चुना था और तदनुरूप उन्होंने जीवन पर्यन्त झेला भी। स्पष्ट है कि आर्यिकारत्न माँश्री के मन में इसके लिए शायद ही मलाल आया हो।

विश्व प्राणियों: जब व्यक्तित्व किसी का क्यों न हो, मांसल से सांस्थनिक हो जाता है, तो उसका सेवा-प्रसार देश के क्लेश को दूर करते हुए विदेश में संदेश देने लगता है। तभी तो मारीशस की एक विधवा, माँश्री चंदाबाई के आश्रम में रहकर दीक्षित होकर चली गयी, मारीशस तमस्-कांड को दूर करने। माँश्री ने राष्ट्रीय चेतना जगाने एवं राष्ट्रीयता को सुरक्षित तथा संवर्धित करने में अपनी अहम् भूमिका निभायी है। उस समय श्री जैन बाला विश्राम में राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से पढ़ाई करवाना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनकी देशभक्ति का अनूठा नमूना है । अहा ! चंदाबाई तुम्हारी मातृ कोख में ऐसा रत्न कब से पड़ा था ?

यह दुनियाँ जो 21 वीं सदी में प्रवेश करने जा रही है; कान खोलकर सबलोग सुन लें, हमारी मातृरूपिणी चंदाबाई नारी के उत्थान-उन्नयन के लिए 81 साल पहले से कल्याण-गान गाती आ रही हैं और बधिर मनुष्यों के कान में बुलबुल की तरह तान भरती आ रही हैं । पुनश्च् वह तन से तपस्विनी थीं, मन से मनस्विनी थीं, और निर्विकार-निष्कपट सेवा की चांदनी थीं और थीं जग के मार्ग में पवित्र प्रेम की पात्रा ।

वह सरलता की मूर्ति थीं- वस्त्र एवं विद्या में, विचार एवं विवेक में, विष्फुटन एवं स्पन्दन में, मुस्कान एवं युग-चिन्तन में और नृतत्व निकेतन एवं कल्याण-प्रणोदन में । वह न केवल जैन समाज की, बल्कि विश्व मनुष्यता की ऐसी देवी रही हैं, जो 'सर्वभूत हितेरता की राह पर चलकर उदरम्भरि लोगों को चेतावनी देती आयी हैं -

सेवा करो, तो सत्वर देश फलेगा,
चंदाबाई का सपना घर - घर आयेगा ।
सेवा करो, तो द्वैत का अन्त ही होगा,
चंदाबाई का सुप्रभात छाता ही रहेगा ।।

माँश्री चंदाबाई ने अपने जीवन-काल में जो कुछ यश-कीर्ति अर्जित की, उसका सहभागी अपने ज्येष्ठ बाबू देवकुमार जी, शिक्षक-शिक्षिकाओं और अनुजा श्रीमती ब्रजबाला देवी को बनाया । उनकी अनुजा ने भी संयम, तप और त्याग को अंगीकार कर उनके आदर्शों के अनुरूप श्री जैन बाला विश्राम की सेवा की जिससे आरा तीर्थ-तपोभूमि बन गया है ।

वस्तुतः आर्यिका मातेश्वरी चंदाबाई की स्मृति मात्र से हम अपने अंतःकरण में नव आलोक आलोकित कर फूले नहीं समाते हैं । उनके विचार समस्त मानवता के लिए एक ऐसा आलोक स्तम्भ है, जहाँ हम उस दिव्य-ज्योति के अनुरूप ढालने का प्रयास करें, तो निःसंकोच हमारा जीवन सार्थक हो जायेगा और उनके सपनों का जैन बाला विश्राम रवीन्द्रनाथ टैगोर के विश्व भारती शांतिनिकेतन की तरह विश्वविद्यालय में परिणत हो जायेगा ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम महिला विश्वविद्यालय बनें

❑ सावित्री अस्थाना, आरा

परम विदुषी पंडिता स्व० चन्दाबाई, जैन स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में एक मूर्धन्य हस्ती थीं। बाल विधवा माँश्री महिलाओं की प्रताड़ना, पराधीनता एवं अशिक्षा के कारण शोषण को गहराई से महसूस करती थीं। समाज में उन्हें सम्मान पूर्वक जीवन प्रदान कराने के लिए वे कृतसंकल्प थीं। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होंने 1921 में धनुपुरा, आरा में एक विधवा आश्रम की स्थापना के साथ ही इस आश्रम में रहने वाली विधवाओं को शिक्षित करने के लिए श्री जैन बाला विश्राम मध्य विद्यालय स्थापित किया।

श्री जैन बाला विश्राम मध्य विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करता गया और 1934 में इसे शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा मान्यता प्रदान की गयी। इस विद्यालय के माध्यम से उन्होंने बालिका शिक्षा के प्रति आस-पास के ग्रामों एवं नगरों में जागरूकता उत्पन्न की। इस प्रकार पड़ोसी ग्राम एवं नगर भी लाभान्वित होने लगे। मूल्य परक शिक्षा, अनुशासन, कर्त्तव्यपरायणता क्रियात्मकता इस विद्यालय का पर्याय बन गई। अभिभावकों में यहाँ अपने पाल्यों को शिक्षित कराने की होड़ लग गयी।

इस विद्यालय की बढ़ती प्रसिद्धि एवं बढ़ती छात्र संख्या के साथ ऊपर की शिक्षा की जरूरत को देखते हुए पूज्या माँश्री ने 1954 में आश्रम के ही प्रांगण में श्री जैन बाला विश्राम उच्च विद्यालय की स्थापना की जिसे 1957 में शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त हुई। अबतक आश्रम स्थित विद्यालयों की प्रसिद्धि राष्ट्रस्तर तक पहुँच गयी थी।

कालान्तर में विद्यालय की दूरी एबं निजी वाहन व्यवस्था के अभाव ने विद्यालय को ग्रामों तक ही सीमित कर दिया। फिर भी मध्य विद्यालय की ठोस शिक्षण व्यवस्था आज कुकुरमुत्ते से उगे असंख्य संस्थानों के बीच इसकी विशिष्टता को झलकाता है। इसके पीछे 70 वर्षों की इसकी निःस्वार्थ सेवा एवं शिक्षक/शिक्षिकाओं की निष्ठापूर्ण सेवा है।

आज शिक्षा के बिगड़े स्वरूप में सबसे भिन्न यह संस्था अभी भी शिक्षार्थियों के चरित्र निर्माण, उनके चतुर्दिक विकास एवं शिक्षण में मनोयोग से संलग्न है।

इस संस्था का परिवेश एवं संस्कार में प्रगति की महान् संभावनाएँ छुपी हैं। एक समय माँश्री ने कहा था कि इस संस्था को बम्बई के 'महिला विश्वविद्यालय' की ऊँचाई तक ले जाना है। माँश्री की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए यहाँ एक महिला कॉलेज की स्थापना यथाशीघ्र करना चाहिए। इसके लिए यहाँ उपयुक्त वातावरण एवं साधन हैं। इस विद्यालय में छुपी संभावनाओं को धरातल पर लाने की जरूरत है।❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ब्र० पंडिता विदुषी-रत्न श्रद्धेया चन्दाबाई जी

❑ श्रीमती सितारा देवी जैन,

पू० चन्दाबाई जी से मेरा परिचय तब हुआ जब मैं कॉलेज की शिक्षा प्राप्त कर रही थी । वे गजरथ महोत्सव में अपनी सहयोगियों के साथ जबलपुर आयी थीं । मैं उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थी। प्रारम्भ से ही धर्म के प्रति मेरी बहुत आस्था थी तथा मैं समाज के लिए भी कुछ करना चाहती थी। बी० ए० में पढ़ते हुए भी मैं अनेक जैन संस्थाओं से जुड़ी हुई थी और कांग्रेस की भी सक्रिय सदस्या थी। 1958 से 1969 तक पू० चन्दाबाई जी से मेरा सम्पर्क बना रहा । मैं उनको पत्र लिखती थी। उनके पत्र मेरे पास आते थे और मैं **जैन महिलादर्श** में अपने लेख प्रकाशनार्थ भेजती थी । हमेशा मेरे मानस पटल पर पू० चन्दाबाई जी छाई रहीं, मैं सदा उनकी प्रशंसिका रही और आज भी हूँ । उनके पत्र मैंने अमूल्य निधि के रूप में संजोकर रखे हैं ।

1921 ई० में महात्मा गाँधी जी का असहयोग आन्दोलन चल रहा था जिसमें चंदाबाई ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया । आश्रम की शिक्षा गांधी जी द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रीय शिक्षा के आधार पर दी जाती थी। जैन धर्म और संस्कृत की शिक्षा तथा सभी विषयों का माध्यम हिन्दी था । आश्रम में स्वदेशी वस्त्रों को पहनने की प्रेरणा दी जाती थी तथा आश्रम की शिक्षिकायें एवं छात्रायें चरखा चलाती थीं और कपड़े बुनती थीं।

पं० चन्दाबाई उच्चकोटि की लेखिका थीं। बाल विवाह के कारण छोटी-छोटी बालिकाओं का जीवन नष्ट हो रहा था। स्त्रियाँ पर्दा एवं दासता का जीवन जीने के लिए विवश थीं । पति की मृत्यु के बाद वैधव्य का घोर दु:ख एवं परिवार तथा समाज की यातनायें सहती थीं । उनके ऊपर अपार प्रतिबन्ध थे। बालिकायें वृद्धों के हाथों बेची जाती थीं । वृद्ध विवाह के द्वारा माता-पिता धन के लालच में यह कुकृत्य करते थे। स्त्री शिक्षा पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। इन सब दु:खद विभीषिकाओं से मुक्त करने के लिए उन्होंने समाज में जागृति उत्पन्न करने के लिए कई पुस्तकें लिखीं, यथा- **उपदेश रत्नमाला, सौभाग्य रत्नमाला, आदर्श कहानियाँ, आर्दश निबन्ध,** और **निबन्ध दर्पण** ।

आपको देश भक्ति, समाज सुधार, लेखन, धर्म-ज्ञान एवं सांस्कृतिक निष्ठा से विभूषित होने के कारण उपराष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कर कमलों द्वारा 1954 ई० में एक सार्वजनिक समारोह में **अभिनन्दन ग्रन्थ** भेंट किया गया था । जीवन के अन्तिम दिनों में वे साध्वी के सर्वोच्च पद 'आर्यिका' की दीक्षा लेकर 'आर्यिका चन्दाबाई' बन गयी थीं । 28 जुलाई, 1977 को समाधिमरण पूर्वक उन्होंने देह त्याग किया । देश के इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चंदत्थवणं

❑ डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, पटना

समणीवरस्स चलणं तव-णाण-दित्ति-रंजिअ-रमणीअं ।
थुणासिद्धा-सहिअं कम्मरय-कसाअ-पाव-घण-मुक्कं ।।

णाणुज्जोए णिरयं संजम-विणय-णीदि उवएसगरं ।
वंदे बोहि-सरूवं सिक्खासत्थस्स पारगं देविं ।।

सावअ-साविअ-णमिअं सील-सुरही-संत-णिम्मलोद्देस्सं ।
भत्तिअ णमामि चंदं सिरिमाइं बंभचारिणिं णिच्चं ।।

णव्वुइ-पहस्स णेइं जिणंदवरसासणे सआ लीणं ।
गुणगण-भवणं चंदं वंदमि सिरिसाहुणं विमलमइं ।।

माणवकल्लाणरअं सज्झाय-पुण्ण-विसुद्ध-देसणयं ।
रमणी-रयणं चंदं वंदे भाव-भरिएण हियएणं ।।

सययं लोगाब्भुदयो आसि खलु जीवणदंसणं जीए ।
तं णं माउं चंदं पइदियसं संमरामि हियएणं ।।

जिणबाला-विस्सामे जा णिच्चं बालाणमुण्णदिं झासि ।
अज्जवि तं संठाणं जअइ सिक्खादाणप्पभावेणं ।।

चंदेसु उज्जलयरा आइच्चेसु वि अहियपयासयरा ।
सिद्धिं देउ हि मज्झं चंदा लोअग्गपूइया सिद्धा ।।

❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यावद् वाति नभस्वान्

❑ अमृतलालो जैनः, काशी

प्रान्ते यस्मिन्नभूद्वीर आरा पूस्तत्र राजते ।
बालाविश्रामतो यस्या नाम को नावगच्छति ।।

संस्थाया जननी चन्दाबाई नारी शिरोमणिः ।
विदुषी महिलादर्श-पत्र-सम्पादिका तथा ।।

शीलं रत्नं परं रक्ष्यं रत्नमायाति याति च ।
आद्यन्तु नित्यसौख्याय परन्तादृङ् न कर्हिचित् ।।

एवं विचार्य या बाल्याच्छीलसंरक्षणोद्यता ।
यथाविधि व्रतव्रातं यत्नतः परिरक्षति ।।

आज्ञानगर्तगा बाला मोहमूर्च्छाऽस्तचेतनाः ।
लेखमन्त्रैर्यया दिव्यैः शश्वत्प्रीत्या प्रबोधिताः ।।

महिलानां मनोनामदरीसंस्था तमस्ततिः ।
यद्ग्रन्थरत्नसद्दीपैः समूलं विनिवारता ।।

शास्त्रमानसकासारं यन्मनोहंस आश्रितः ।
क्षणमात्रं बहिर्यात्रां मनुते मृत्युसन्निभाम् ।

यावद्वाति नभस्वान् भाति विवस्वान् विभासते हिमगुः ।
तावच्चन्दाबाई भारतवर्षं विभूषयतु ।।

♦

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

त्यागमूर्ति चन्दाबाई

❑ वीरेन्द्र प्रसाद जैन, अलीगंज

माँ त्याग - मूर्ति चन्दाबाई ।

वैधव्य विकट विपदा आयी,
सेवा वृत ने ली अंगड़ायी ।
महिलाश्रम मिस जो दिखलाई,
माँ त्याग -मूर्ति चन्दाबाई ।।

अगणित अभिशप्त दुखी नारी,
पढ़ धर्म बनीं सु सदाचारी ।
अध्यात्म प्रगति ने गति पाई,
माँ त्याग - मूर्ति चन्दाबाई ।।

नारी जीवन आदर्श जिया,
जिन महिलादर्श प्रकाश किया ।
कुण्ठा - अँधियारी विनशायी,
माँ त्याग - मूर्ति चन्दाबाई ।।

नश्वर तन अविनश्वर चेतन,
लख किया साधना पन्थ-गमन ।
शुचि दीक्षा आर्या अपनाई,
माँ त्याग - मूर्ति चन्दाबाई ।।

जब तक रवि-शशि-तारे चमकें,
तब तक यश-आभा भी दमके ।।
चिर कीर्ति-कौमुदी छिटकाई,
माँ त्याग - मूर्ति चन्दाबाई ।।

कृतकृत्य धन्य चन्दाबाई ।।

⌘

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आलोक बिखेरा धरती पर

❑ शशिप्रभा जैन 'शशांक', आरा

नारी शिक्षा का नाम न था,
बेबसी नारी में छायी थी।
अबला बनकर जीवन जीना,
हा मौन रुदन तड़फायी थी।
निज स्वार्थ सुखों का त्याग किया,
नारी वेदन को समझा था।।
माँश्री ने तब स्थापन कर,
नारी शिक्षा हित लक्ष्या था।
वैभव सुख को ठुकराया था,
बाधाओं की परवाह न की।
तड़फन बेचैनी दूर किया,
जो महिलाओं में व्यापक थी।।
ओ धर्मगगन के धर्मकुंज,
जो सेवाव्रत है अपनाया।
बाला विश्राम है तुझे नमन,
अज्ञान तिमिर है विनशाया।।
वसुधा के भाग्य विधाता हो,
तेरा जीवन है धन्य चमन।
परदुख कातरता हरने,
करते रहते हो नित चिन्तन।।
शान्ति समता के अग्रदूत,
शीतलता की अविरल गंगा।
बहती रहती मन मंदिर में,
रोगी निरोग होता चंगा।।
नारी जाति की कल्याणी,
तुझमें अनन्य देखी शक्ति।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसलिए सदा से नर नारी,
जैनी, जैनेत्तर में है भक्ति ।।
प्राकृति सम्पति को;
तूने कैसे अपने में है रक्खा ।
पक्षी गण कलरव करते हैं,
अभिवन्दन में देखा सच्चा ।।
अनुराग, शिखा लेकर तुमको,
पूजा बापू, राजेन्द्र ने ।
नेहरु, सुभाष ने गायी है,
महिमा तेरी लख भावे ने ।।
जयप्रकाश, जगजीवन ने,
मिल जीवन तव है महकाया ।
विजया, वा कस्तुरवा ने,
आदर्श तेरा है दिखलाया ।।
शत-शत वर्षो तक,
चमको तुम नारी जाति के उद्धारक ।
माँश्री चन्दा के वरदपुत्र,
हे मातृभूमि के सुत लायक ।।
अमृत महोत्सव पर हम माँ,
तेरा करते है अभिनन्दन ।
श्रद्धा के पुष्प चढ़ा तेरे,
चरणों में चर्चित कर चन्दन ।।
धन्य-धन्य माँश्री चन्दा,
सबलत्व शक्ति को दिखा दिया ।
विषपान किया खुद तुने माँ,
सबको माँ अमृत पिला दिया ।।
आलोक बिखेरा धरती पर,
नारी शिक्षा का नाद किया ।
माँश्री ने स्थापित कर,
जग में अपना यश नाम किया ।।

❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुखरित हो संवाद

❑ डा० अलका प्रचंडिया, अलीगढ़

दशाब्दियों पहिले
आध्यात्मिक आँगन में
खिला था एक सुमन।
संयम का सौरभ
तप का तेज
दर्शन की दृष्टि
ज्ञान और श्रद्धा से सम्पृक्त संस्कारक
नारी उद्धारक
बोलता है आज भी
आपकी कीर्ति का स्मारक।
घर-घर में व्याप्त है
आज की ड्राइंग रूम की संस्कृति
उसके प्रतिरूप
श्रमशील और समता के अनुरूप
नारी शोभा हो समाहृत।
रोपी हैं आपने
संस्कारित बेलियाँ विवेक की
अनेक में एक की।
घर-बाहर
आज कर रहा है आपको याद,
मुखरित हो आपका संवाद।

♦

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँ चंदा का नाम

❑ रामायण चौधरी, संगीत शिक्षक
श्री जैन बाला विश्राम, आरा

जहाँ डाल-डाल से चिड़िया बोले माँ चंदा का नाम,
यही है श्री जैन बाला विश्राम ।।

चंदा नाम चमक चेहरे पर, महा मानवी आई,
तेरह साल की उम्र मगर थी, ज्ञान पुंज सुखदाई,
कर्म योगिनी नारी वह, बंजर को बना दी धाम,
यही है श्री जैन बाला विश्राम ।।

अबला दीन-हीन नारी को, प्यार दिया अपनाई,
विद्या बुद्धि ज्ञान दिया और सच्ची राह बताई,
विधवा आश्रम, विद्यालय कितना नयना अभिराम,
यही है श्री जैन बाला विश्राम ।।

संगमरमर की मूर्त्ति मन्दिर बाहुबली की सोहे,
आम्रकुंज में चह-चह चिड़ियों की बोली मनमोहे,
गाँधी सुभाष सरीखे नेता किए यहाँ आराम,
यही है श्री जैन बाला विश्राम ।।

तीन पच्चीसी बीत गई, अमृत उत्सव गुलजार करें,
माँ चंदा के सपनों को, हम मिल-जुलकर साकार करें,
'रामायण' माँ चरण कमल को, कोटि-कोटि प्रणाम ,
यही है जैन बाला विश्राम ।।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री का साहित्यिक अवदान

❑ डॉ० गोकुलचन्द्र जैन

माँश्री चन्दाबाई का साहित्यिक अवदान सन् 1917 से सन् 1977 के सुदीर्घ कालखण्ड में व्याप्त है। पत्र-पत्रिकाओं से आरम्भ करके स्वतंत्र ग्रन्थों के प्रणयन और प्रकाशन द्वारा साहित्य को महिमामंडित करने का उनका अध्यवसाय स्पृहणीय है। उनकी लेखनी उस कलाकार की तूलिका के समान है, जिसके समक्ष निरभ्र नील गगन की तरह विराट केनवास उपलब्ध है जिस पर कलाकार को अबाध गति से निबन्ध रेखांकन करने का अवकाश अवसर प्राप्त है। जैन बाला विश्राम के 'अमृत महोत्सव' पर उनके चार निबन्ध संग्रह पुनः प्रकाशित किये गये हैं। इनमें जितनी सामग्री समाहित है, उससे कम-से-कम पाँच गुनी 'जैन महिलादर्श' के 52 वर्षों के लगभग 624 अंकों के सम्पादकीय, सम-सामयिक टिप्पणियाँ, शंका-समाधान आदि के रूप में प्रकाशित हैं। परिवार, समाज और राष्ट्र से सम्बद्ध विभिन्न बिन्दुओं से लेकर अध्यात्म के चरमोत्कर्ष तक माँश्री की लेखनी अजस्र रूप से चली है। उनकी दैनन्दिनी और पत्राचार सहित्य, संस्कृति और समाज के अनेक पक्षों को उजागर करते हैं। इस सबका संकलन, सम्पादन, प्रकाशन और मूल्यांकन हो, ऐसी कामना की जा सकती है। माँश्री ने अपने प्रकाशनों के विषय में जो कुछ स्वयं लिखा तथा विद्वानों ने जो कहा उसके सम्पादित अंश 'माँश्री के साहित्यिक अवदान' के मूल्यांकन की बानगी के रूप में यहाँ प्रस्तुत हैं।

ये निबन्ध संग्रह

लेखिका का आत्मकथ्य

निबन्ध-रत्नमाला- यह पुस्तक उन निबन्धों का संग्रह है जो कि भिन्न-भिन्न सामयिक जैन, अजैन पत्रों में प्रकाशित हुए हैं। कई मित्रात्माओं के अनुरोध से तथा स्त्री- समाज में ऐसी पुस्तकों की कमी देखकर ही इनका संग्रह किया गया है। ये प्रत्येक लेख यद्यपि अपने- अपने विषय में स्वतंत्र हैं तो भी 'स्त्रियों में सद्विद्योन्नति हो' यही सबों का अंतिम परिणाम निकलता है।

इस पुस्तक के पढ़ने से छात्राओं को निबन्धों की रचना करने में तथा व्याख्यान शैली के जानने में भी सुविधा होगी, ऐसी आशा की जाती है। इसमें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्वदेश संबंधि कई लेख ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध किसी खास धर्म से नहीं है, बल्कि समस्त जनता के हितार्थ लिखे गए हैं।

कई लेख आत्म पदार्थादि ऐसे भी हैं जो धार्मिक दृष्टि से लिखे गए हैं तो भी पुस्तक को अध्ययन करने वाले व्यक्ति को चाहे वह किसी मत का क्यों न हो, कुछ न कुछ श्रध्येय पदार्थ अवश्य मिल जाएगा।

साहित्य- संसार में नाना प्रकार के अगणित पुष्प खिल रहे हैं और उनका सौरभ भी विविध प्रकार का ही अनुभूत होता है।

जिस प्रकार अलंकार शास्त्र रसास्वाद कराता है तथा पद्यावलि हृदय में तरंग उत्पन्न कर देती है, उसी प्रकार नैतिक-शास्त्र मनुष्य में नीति उत्पन्न कर देता है।

इस माला के नैतिक निबंधों से भी हमारी बहनों को अवश्य कर्त्तव्य ज्ञान की शिक्षा मिलेगी एवं उच्चादर्श हृदय में स्थान पाएगा।

इन लेखों की भाषा एवं भाव में बहुत-सा अन्तर प्रतीत होगा, बहुत सम्भव है कि एक बात एवं एक भाव कई बार कई तरह से कहा गया हो और सब लेखों का सम्बन्ध भी नियमबद्ध न हो क्योंकि यह लेख भिन्न-भिन्न समयों में लिखे गए हैं; इनमें कोई-कोई बहुत पुराने भी है। समय के साथ-साथ मनुष्य की भाषा और विज्ञान में हेर-फेर होना स्वाभाविक नियम है, अतएव सज्जन पाठक एवं पाठिका-वृन्द इन त्रुटियों को क्षमा करेंगी तथा पुस्तक को अपना कर मुझे उत्साहित करेंगी।

इस पुस्तक के अध्ययन से कितनी ही विद्यार्थिनियों को उपदेश देना, लेख लिखना आ गया है व हर कन्या पाठशालाओं में और महिलाश्रमों में पढ़ायी जाती हैं।

आदर्श निबन्ध- महिलादर्श के निबन्धों की सर्वप्रियता ने ही इस पुस्तक को जन्म दिया है। प्रति मास प्रकाशित होने वाले लेखों में से कुछ लेखों का संग्रह इस पुस्तिका में किया गया है, ये छोटे-छोटे लेख अपने विषय में स्वतन्त्र हैं, तो भी मुख्यतया जाति सुधार और स्त्री-शिक्षा का प्रचार सब लेखों का सारांश हो जाता है। वर्त्तमान समय में इन्हीं दो बातों की परमावश्यकता भी है इसीलिए इनको विविध शब्दों में वर्णन किया गया है। आशा है वाचक वृन्द प्रसंगानुसार हो जाने वाली पुनरुक्तियों से उकताएंगे नहीं। क्योंकि सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाले प्रस्ताव बार-बार किए जाते हैं और इसी विषय के लेख भी बार-बार लिखे जाते हैं। इसके मनन से महिलाएँ अपने कर्त्तव्य में दृढ़ होंगी व बुरे अभ्यास सुधारेंगी, पुत्रियाँ मन लगाकर विद्याभ्यास करेंगी तथा पुरुष समाज कुरीतियों को हटाने और स्त्री-शिक्षा का प्रचार करने में उत्साहित होगा, ऐसी पूर्ण सम्भावना है। अतएव यह आदर्श निबन्ध सब लोगों के पढ़ने योग्य हैं, आशा है जिस प्रकार पूर्व प्रकाशित निबन्धरत्नमाला आदि पुस्तक से बहनों ने लाभ उठाया है और निबन्ध रचना आदि सीख कर ज्ञान बढ़ाया है, उसी प्रकार इससे भी लाभ प्राप्त करेंगी तथा अपने सत्कृत्यों से हमारे प्रयास को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भी सफल करेंगी।

उपदेश रत्नमाला - परम हर्ष के साथ यह पञ्चम संस्करण भी आपकी सेवा में समर्पित किया जाता है। इस पुस्तक के विषय में विशेष विवेचन करने की आवश्यकता नहीं दिखती; क्योंकि पहले चार संस्करणों की अत्युत्सुक माँग ने ही इसकी सर्वप्रियता को स्पष्ट कर दिया है।

प्राय: यह पुस्तक कन्याशालाओं की तृतीय कक्षा में पढ़ाई जाती है तदनुकूल विद्यार्थिनी कन्याओं के लाभार्थ इस संस्करण में भी कुछ शब्दों का हेर-फेर कर दिया गया है।

आशा है कि स्वामी अनन्तवीर्य के "चेतोहरं भृतं यद्वन्नद्या नव घटं जलम्" इस वाक्यानुसार नए आकार-प्रकार में यह उपदेशरत्नमाला सबको अधिक रुचिकर होगी।

मुझे विश्वास है कि सुलभलभ्य इस माला को बहनें अवश्य ही अपनाएंगी तथा केवल मँगाकर ही संतुष्ट न होंगी वरन् स्वयं पढ़कर अपनी प्रिय पुत्रियों को भी पढ़ाएंगी और इसके उपदेशों को कार्य रूप में परिणत करके स्त्री-शिक्षा की असली कार्रवाई कर दिखाएँगी।

सौभाग्य रत्न माला - यह बात **विदित ही है** कि **भारतवर्ष** मे स्त्री शिक्षा संबंधी पुस्तकों की अत्यंत कमी है। उसमें भी हिन्दी-भाषा में तो अभाव-सा ही प्रतीत होता है।

ऐसी अवस्था में प्रत्येक विदुषी बहन का एवं विद्वान् बंधु का कर्त्तव्य है कि प्रत्येक विषय की पुस्तकें लिख कर स्त्री शिक्षा के भंडार को भरें।

इसी अभाव के किसी सूक्ष्मांस की पूर्त्ति में किंचित सहाय स्वरूप यह "सौभाग्य रत्नमाला" पुस्तक बहनों के हितार्थ प्रकाशित की जाती हैं।

इस पुस्तक में उन बातों का वर्णन किया गया है जो कि मनुष्य के अभ्यासों पर निर्भर है और जिनकी ओर ध्यान देने से बहुत कुछ जीवन का सुधार हो सकता है। प्रथम "उपदेश रत्नमाला" में बाला पुत्रियों के लिए उपदेश लिखे गए हैं। उन पुत्रियों से अधिक वयसवाली बहनों के सुधारार्थ इस पुस्तक में सत्संगति, पवित्रता इत्यादि विषय लिखे हैं।

आशा है कि कन्याशालाओं में क्रमश: ये दोनों पुस्तकें पढ़ाई जावेंगी तो हिन्दी भाषा का ज्ञान तथा उच्च उद्देश्य की भावना पुत्रियों के हृदय में अवश्य हो जायेगी।

यह पुस्तक बहुत सरल होने पर भी इसमें कठिन शब्द तथा जहां-तहां संस्कृत के कुछ वाक्य इस हेतु लिख दिए गए हैं कि जिससे कन्याओं की गति शब्दार्थ समझने में प्रशवर हो जावे। पाटिका महाशयों को उचित है कि इसके शब्द का अर्थ बालिकाओं को भली प्रकार समझावें और लिखाकर सज्ञान कण्ठस्थ करावें, जिसमें अन्य ग्रंथों के पढ़ने में फिर पुत्रियों को शब्दार्थ समझने में कष्ट न करना पड़े।

इस पुस्तक के विषयों का भावार्थ याद कराकर संक्षेप में लिखाना चाहिए,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिससे पुत्रियों को लेख रचना का अभ्यास हो जावे। मैंने अपनी छोटी अवस्था में प्राप्त हुए अनुभव के अनुसार इस पुस्तक में स्त्रियोपयोगी विषय लिखे हैं । आशा है कि मेरी बहनें इस पुस्तक को पढ़कर अवश्य कुछ कुछ लाभ उठायेंगी तथा पुन: इस सेवा के लिए मुझे उत्साहित करती रहेंगी जिससे मैं मातृभाषा की कुछ सेवा करती हुई बहनों के लिए नवीन-नवीन भेंट तैयार कर सकूँ।

दूसरा संस्करण :

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी यह छोटी सी भेंट बहनों को अवश्य रूचिकर हुई होगी । पाठिका महाशयों की प्रबल रूचि ने ही मुझे द्वितीय संस्करण निकालने के लिए उत्प्रेरित किया है। इसी वर्ष के गत आषाढ़ मास में प्रथम संस्करण निकला था और अब यह दूसरी पुन: छपकर बहनों की सेवा में उपस्थित है। प्रथम जिन 2 बहनों ने इस पुस्तक को अपनाया है एवं इसके विषय में अपनी सम्मति दी है, उनको मैं हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

मैं उन महानुभावों समालोचकों की विशेष कृतज्ञ हूँ जिन्होंने बड़े ललित एवं योग्य शब्दों में प्रथम संस्करण की समालोचना की है और अपनी-अपनी अमूल्य सम्मति देकर इसका गौरव बढ़ाया है।

समस्त समालोचकों महाशयों के वाक्यों पर बहुत ध्यान देने और खोज करने पर दो मिलीं एक श्रीयुत "सरस्वती" संपादक ने ब्रह्मचर्य के विषय में शब्द पुनरावृत्ति बतलाई थी उसको दूर करने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

दूसरे श्रीयुत पंडित जुगल किशोर जी ने पुस्तक के नाम में अर्थ का असमावेश बतलाया था । परंतु इस त्रुटि को दूर करने में मैं असमर्थ हुई। यहाँ पर "यथा नाम तथा गुण" इस लक्षण को गौण करके आशीर्वादात्मक नाम मान कर पाठक-पाठिका-गण क्षमा करें और पुन: नवीन सेवा के लिए मुझे प्रोत्साहित करें ।

तीसरा संस्करण :

सन् 1919 में इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण निकला था, उसके पश्चात् कई वर्षों से इसकी मांग थी। अतएव यह सौभाग्य रत्नमाला महिलाओं के कर कमलों में तीसरी बार छप कर उपस्थित हो रही है । आशा है, बहन विलम्ब के लिए क्षमा करेंगी व इसको पूर्ववत अपनाएंगी । जैन कन्या पाठशालाओं में व जैनेत्तर संस्थाओं में यह पुस्तक पढ़ाई जाती है । सभी लोग इसकी प्रतीक्षा में थे, संभवत: यह संस्करण सबको पसंद आयेगी।

यदि महिलाएँ पुस्तक के लेख सत्य-पातिव्रत आदि विषयों पर विचार कर अनुवर्तन करेंगी तो जीवन में बहुत सुख और शांति का लाभ उठायेंगी व सच्चरित्र बनकर गौरव की भाजन बनेंगी, यह हमारा पूरा अनुभव है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री का अद्वितीय साहित्य

❑ सुश्री शशि प्रभा जैन शशांक

माँश्री चंदाबाई जी द्वारा लिखित सौभाग्य रत्नमाला, आदर्श निबन्ध-माला, उपदेश-माला, पुस्तकें- अपने आप में अद्वितीय हैं। नारी जीवन की शोभा को द्विगुणित करने वाली हैं। उनका अपने कर्त्तव्य, अधिकार तथा उत्तर दायित्व से उद्बोधि करने वाली हैं ।

नारी मानवता का हृदय है तो पुरूष उसका मस्तिष्क । अत: नारी वर्ग की सर्वोन्नति के लिए सत्साहित्य की आज के संदर्भ में महती आवश्यकता है । सौम्य, मधुर, हृदय को छू लेने वाले सुसाहित्य के द्वारा नारी वर्ग का उत्थान संभव है । पूज्या माँश्री द्वारा लिखित पुस्तकों में उसके प्रत्यके लेख में चारित्रिक विकास का अच्छा दर्शन होता है, सात्विकता है, सरलता है, सुबोधन है, सुशिष्टता है । सेवा की कोई मर्यादा नहीं होती है । उसका क्षेत्र व्यापक होता है । स्वसेवा, परिवार सेवा तो सभी करते हैं, पर जो राष्ट्र, समाज सेवार्थ अपने तन-मन-धन के साथ जीवन को समर्पित कर देता है, वही धन्य महानात्मा होती हैं । उसके शुद्ध सरल साधनामयी जीवन से अन्य को प्रेरणा मिलती है ।

''सौभाग्य रत्नमाला'' नामक पुस्तक में माँश्री ने सौभाग्यवती महिलाओं के कर्त्तव्य दायित्वों का बड़ी सुगम सुबोध भाषा में वर्णन किया है कि किस प्रकार से वे वर्त्तमान और भविष्य को सुखी, सम्पन्न, फलीभूत बना सकती हैं । साहित्य समाज का दर्पण है, इसी उक्ति को ध्यान में रखकर इस पुस्तिका के अध्ययन से पता चलता है कि मनन चिन्तन करके अध्यवसाय के रस से सींचने पर साक्षात् कल्पवृक्ष के रूप में होकर नारी जीवन पल्लवित, पुष्पित, सौरभमय बन सकता है ।

''आदर्श निबन्ध रत्नमाला'' में सोने में सुहाग की झलक मिलती है । मानवीय जीवन को पवित्र, निर्मल,स्वच्छ बनाने की क्षमता रखता है ।

''आदर्श कहानियाँ'' नामक लघु पुस्तिका में विनोद प्रिय कहानियों का चित्रण है । ''माँश्री छोटे के साथ छोटा और बड़ों के साथ बड़ा'' - वास्तविकता की कसौटी पर कसे जाने वाले मनोविनोद करने में सक्षम थीं। स्पष्ट वक्ता सत्य का दर्शन करने-कराने वाला व्यावहारिक जीवन में कभी नहीं हारता है। आज की बाल्यावस्था की पीढ़ी किशोरावस्था से यौवनावस्था पर पहुँचेगी और इनका जीवन जब तक सम्यक् रूप से सुशिक्षित, सद्शिक्षित, आचार व्यवहार में समलकृत नहीं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होगा, तब तक उनसे आशा रखना बेकार सिद्ध होगा कि भावी भारत के कर्णधार ये होंगे, भारत को प्रगति की ओर ले जाने के लिए बागडोर मजबूत होगी। अत: बालिकाओं की पढ़ने की ओर कैसे रुचि दिलाई जाये, कैसे उच्चादर्शों के बीजों का यापन जीवन में कराया जाये, जीवन की प्रगति में बाधा आने वाली समस्याओं का कैसे निदान किया जाये, इन कहानियों के माध्यम से अच्छा चित्रण किया है।

''कर्त्तव्य सुशिक्षित बनना है, सम्यक् पथ पर बढ़ती जाओ।
माता बहनों को जागृत कर, बच्चों को सत्पथ दर्शाओ ॥
ज्ञानामृत रस को पीकर के, धर्म परायण बन जाना।
सदा सफलता उसे मिली है, राष्ट्र प्राणी हित मर जाना ॥

'' **उपदेश रत्नमाला**''- ''निबन्ध-दर्पण'' पुस्तिकाओं के दर्शन से ऐसा लगता है कि हिंदी साहित्य को आपने सर्वोत्कृष्ट पद अपनी लेखनी से प्रदान किया है। साहित्य शक्ति की इतनी प्रबलता दर्शायी है कि वह अंगहीन न बनकर सर्वग्राह्य सम्पन्न, सरस बन गयी है। ''लज्ला नारी का आभूषण है।'' अब लज्जा शब्द एवं इस उक्ति में नारी जीवन की नेत्रों की लज्जा से ही मतलब नहीं निकलता है उसका तात्पर्य यह है कि कपड़ों के द्वारा, चाल ढाल के द्वारा, पहनावे के द्वारा, बोलचाल, आचार-विचार, व्यवहार, रहन-सहन के द्वारा, पारिवारिक/सामाजिक कार्यों के द्वारा हम कितना, संयमित अपने को बना सकें। घर में सास ससुर ज्येष्ठादि की लज्जा करें और बाहर निकलें तो पर पुरुषों से गपशप नहीं करें। अनावश्यक ही उनसे अपने को अप टू डेट बनाने,स्मार्ट बनाने का दिगदर्शन करें बाल कटे हों पारदर्शक वस्त्र शरीर में, मुँह पाउडर लिपस्टिक क्रीमों से पुचाड़ा किया हो, हाथों में बड़ा-सा बैग लटकता हो, पैरों में ऊँचे हील की कीमती खटपट करती सैंडिल, जूती हो, तो वहाँ लज्जा की परिभाषा मिथ्या हो सकती है - यह सब चारित्रिक विशुद्धता को धब्बा लगाने वाले हैं' इस तरह की तितली बनी बहन/बेटियाँ आगे अपने जीवन की गरिमा बनाये रखें यह कभी संभव नहीं है। देवीभागवत में एक कथा आती है कि शशिकला नामक राजकन्या ने स्वयम्बर में इसलिए जाने से मना किया कि यहाँ अनेक राजाओं की कामासक्त दृष्टि उसके यौवन पर पड़ेगी इससे उसके चारित्रिक पातिव्रत पर बड़ा आघात होगा। अत: तात्पर्य यह है कि लज्जाशील चारित्र नारी के अपने चमकते हुए आत्मीय गुण हैं जिसके कारण नारी सबलाशक्ति बलवती, तेजस्विनी पूर्ण आत्म बल की अधिष्ठात्री कहलाती है। त्याग, संयम, अक्रोध, निरहंकार, निश्छलता, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास लज्जा में है, वर्तमान का खुला निर्लज्ज आचार व्यवहार, नैतिकता को पतित करने वाला है। इस प्रकार की सारगर्भित बातें उन पुस्तिकाओं में मिलेगी इसलिए कवि छेदीलाल ने लिखा था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

" सम्यता विहार, खानपान का विचार ठीक जीवन की उन्नति का मर्म कह डाला है। ब्रह्मचर्य-सत्संग, एकता पातिव्रत, शान्तिमय सच्चा सुख सांचे में ढाला है। विदुषी श्री चन्दाबाई महिला समाज हित, निगामागम शोधतत्व को निकाला है। गुणों में आला हर विषय को संभाला भरपूर प्रेम प्याला उपदेश रत्नमाला है।"

सरस्वती नामक प्राचीन पत्रिका के समीक्षा में कहा गया है कि -

सभी निबन्ध, जो स्त्रियों के व्यस्क बालिकाओं के पढ़ने और उपदेश ग्रहण करने लायक हैं, लेखिका की भाषा सर्वथा अनुकूल है।

बैरिस्टर चम्पत राय जी के शब्दों में।

" लेखिका के पवित्र विचारों तथा सरल सुबोध लेखन शैली पर मुझे विशेष आनन्द लाभ हुआ। इसमें लेखिका ने बड़े स्पष्ट रोचक और विशुद्ध रीति से अपने मनोभावों को प्रगट किया है। मेरी इच्छा है कि ऐसी पण्डिता चंदाबाई मेरे समाज में दर्जनों पैदा हों"

इस प्रकार हम देखें कि माँश्री का साहित्यिक अवदान अपूर्व है।

⊙

माँश्री का साहित्यिक सृजन

❑ डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री

माँश्री के साहित्यिक व्यक्तित्व को भावात्मक और विचारात्मक निबन्धकार, प्रभावोत्पादक कहानीकार, नारी समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधानस्वरूप सम्पादकीय विचार-लेखिका, कवियित्री संस्मरण और रेखाचित्र-लेखिका के रूप में अंकित किया जा सकता है। आपके साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ कविता-प्रणयन से हुआ, पर स्वतंत्र चिन्तनपूर्ण विचारात्मक निबन्धों ने आपकी इस भावमूलप्रज्ञा को गजभुक्त कपित्थ बना दिया। सन् 1917 से 1930 तक आप कविताएँ लिखती रहीं। 'खादी का पावन त्योहार' पर खण्ड काव्य लिखा, जिसके कुछ अंश 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए। सन् 1921 में जैन विजय पताका में "सदा मौन प्रवचन किसका" शीर्षक काव्य प्रकाशित हुआ। इस काव्य में नारी के स्वातन्त्रय आन्दोलन पर प्रकाश डाला गया था। फलत: इस काव्य ने नारी समाज में हलचल उत्पन्न की और अमृत कुँवर तथा लेखवती जैसी कई महिलायें राष्ट्रध्वज लेकर स्वतन्त्रय आन्दोलन संग्राम में जुट गयीं हिन्दी के साथ माँश्री ने संस्कृत भाषा में भी एक खण्डकाव्य लिखा था,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिसके 44 पद्य मथुरा से प्रकाशित होने वाली 'व्रज पत्रिका' में मुद्रित हुए थे।

सन् 1930 से साहित्यिक, धार्मिक, दार्शनिक, आलोचनात्मक एवं समाज सुधारात्मक निबन्ध लिखने में आप प्रवृत हुई। आपके महत्त्वपूर्ण गवेषणात्मक निबन्धों की संख्या चार-सौ हैं। ये निबन्ध विभिन्न अभिनन्दन-ग्रन्थों, स्मारक-ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं एवं स्वतंत्र संग्रहों के रूप में प्रकाशित हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आपकी रचना को सरस्वती में प्रकाशित करते हुए टिप्पणी में लिखा था- "इस महिला की लेखन कला को मैं हिन्दी के लिए वरदान मानता हूँ।" आचार्य शिवपूजन सहाय ने उपदेश रत्नमाला के प्रथम संस्करण की भूमिका में लिखा- "चिन्तन प्रधान इन निवन्धों में मानव जीवन के अनन्त कार्यों और व्यापारों की राशि खुली पड़ी है। विदुषी लेखिका ने अपने इन निबन्धों में नारी जागरण का जो शंखनाद किया है, उसकी ध्वनि प्रत्येक भारतीय के कर्णकुहर में प्रविष्ट हुए बिना न रहेगी। शैली और विषय इन दोनों दृष्टियों से इस संग्रह के निबन्ध उपादेय हैं।"

माँश्री के साहित्य की साधना अक्षुण्ण है। आपके द्वारा सम्पादित दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। प्रथम संग्रह में सन् 1947से 1957 तक की कहानियाँ और दूसरे में 1958 से 1965 ई० तक की कहानियाँ संकलित हैं। आदर्शवादी होने पर भी इन कथाओं में आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति निहित है।

निश्चयत: महिलोपयोगी साहित्य का सृजन कर- माँश्री ने हिन्दी में एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में उपदेश रत्नमाला (30 निबंध सौभाग्य रत्नमाला (9 निबंध), निबंध रत्नमाला (18 निबंध), आदर्श कहानियाँ, आदर्श निबंध, (30 निबंध) निबन्धदर्पण (30-35 निबंध) आलोचनात्मक साहित्यिक निबंध, जीवन अनुभूति एवं पतवार आदि प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

आप सन् 1922 से अ० भा० दि० जैन महिलापरिषद् द्वारा संचालित "जैन महिलादर्श" नामक मासिक पत्रिका का संपादकीय संपादन करती आ रही हैं जिसमें आपके द्वारा लिखी गई टिप्पणियाँ, सम्पादिका की डाक, प्रश्नोत्तर, शंका समाधान और सम्पादकीय निबन्ध अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

(सन् 1969 में 'शाहाबादी सारस्वत' पुस्तक में
डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री द्वारा लेख का सम्पादित अंश)

♦

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री की साहित्यिक साधना

❑ श्री माधवराम जैन 'न्यायतीर्थ'

जैसे भारतेन्दु का साहित्य हिन्दी-साहित्य के नवोत्थान का ज्वलन्त इतिहास है, वैसे ही माँश्री की अजस्र साहित्यकधारा में महिला साहित्य के सुनहले प्रभात का उद्भव और परिपुष्ट होना भी भारतेन्दु के सतत् साहित्यिक उद्योगों की हलचल की चेतनता की साकार परिणत हुई माँश्री के धरती के गीतों में, जो एक ज्वलन्त दीपशिखा है। अत: साहित्यिक पुरूषत्ववाद की अंतिम विजयश्री पर माँश्री ने महिला-साहित्य को अपने व्यक्तित्व का आत्म-निर्माण कर जगाया और संजोया है अपने व्यक्तित्व के अवदान से महिला-साहित्य को अभिसिंचित तथा अनुप्राणित किया है। यह समय के साथ पनपी है तथा महिला साहित्य को पनपाया है- यह साहित्य-महारथियों का आज का दावा है, कल का नहीं इनके द्वारा नारी को स्नेह मिला, चेतना मिली, उद्धार मिला और साहित्यिक प्रवृत्तियों का सम्बल भी। एक साथ इतनी चीजें और सब हृदय के धरातल पर। अतएव यह सुनिश्चित है कि नारी के दग्ध हृदय को इनकी साहित्य-सेवा सतत् छाया प्रदान करती रहेगी।

बीसवीं शताब्दी की उष्ण वास्तविकाताओं और अस्तव्यस्तताओं ने कतिपय महिला कलाकारों को साहित्यिक चेतना के धरातल पर जन्म दिया। इन महिला-कलाकारों में माँश्री भी एक हैं। जिन्होंने समाज की टंढी धमनियों में जागरण और जागृति की तीव्र प्रेरणा उड़ेलीं। इनकी विधायक प्रतिभा ने न केवल रूढ़िग्रस्त और अन्धकार में जड़ीभूत नारी को एक नयी दिशा देकर उसे प्रवहमान किया, बल्कि ह्रासोन्मुख समाज को ललकार कर नीति और आदर्श के मार्ग पर लगाया। माँश्री का साहित्य अन्य महिला लेखिकाओं जैसा नहीं है, उनका आदर्श नारी समाज को आगे बढ़ाना और पातिव्रत की भावना को पुष्ट करना है। जहाँ अन्य लेखिकाएँ नारी को उच्छृंखल बनाना चाहती हैं, वहाँ माँश्री का साहित्य नारी को संयत और कर्त्तव्य-परायण। माँश्री का साहित्य नारी को दब्बू या कायर नहीं बनाता, बल्कि सशक्त सामाजिक चेतना की जागृति कर जागरूकता की भावना उत्पन्न करता है।

युग की इस बेला में जब महिला साहित्य की स्वीकृत दीवारें गिर रही थीं, विश्वास के आधार काँप रहे थे और नई शक्तियाँ चुनौती देकर अपना सर उठा रही थीं, उस समय भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत साहित्यिक धारा ही नारी-समाज को जीवन दान दे सकती थी। माँश्री ने युग की पुकार को सुना और महिला-साहित्य की दिशा को दूसरी ओर मोड़ दिया। अत: आपकी साहित्यिक प्रवृति महिला-हिन्दी-साहित्य का वह प्रथम युग है, जहाँ साहित्य और जीवन विभ्रान्त हो अनिश्चित दिशा में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चक्कर मारनवाली रेखाओं के समान समानान्तर रूप में दौड़ लगा रहे थे। नारी-जीवन और साहित्य के दो अलग पृथक् यंत्रों को फिर से जुटाकर एक विराट केनवास का निर्माण किया और उस पर यथार्थवादी सामाजिक जीवन की ऐसी रेखाएँ अंकित की जो अपने स्वभाव में अकथनीय तो हैं ही, अपनी शक्ति में भी अनन्यतम हैं।

माँश्री के साहित्य में नारी-समाज के नवोत्थान की भावना पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित हैं। जहाँ उन्होंने गम्भीर विचारों का प्रतिपादन कर अपनी अनुभूति-शीलता का परिचय दिया है, वहाँ अपनी शैली को उपदेशात्मक बनाकर आवालवृद्ध के लिए आस्वाद्य बना दिया है। यही कारण है कि हम माँश्री को हिन्दी जैन महिला-साहित्य के नवोत्थान का इतिहास कह सकते हैं। साथ ही उन्हें एक सीमा रेखा पर जन्म लेनेवाले साहित्यकारों में परिगणित किया जा सकता है।

माँश्री के व्यक्तित्व की छाप इनके साहित्य पर अमिट रूप से पड़ी है। व्यक्ति की दृष्टि से आप अत्यन्त सरल, उदार और मधुर-भाषिणि हैं। जीवन में कृत्रिमता और आडम्बर का नाम नहीं हृदय बाल-हृदय की भाँति सरल और निश्छल है, पर इसके साथ ही वह एक विचारक की भाँति सरल और गंभीर भी है। कभी वह बालकों की-सी बातें करती हैं और कभी एक चिन्तनशील व्यक्ति की भाँति। यह इनके स्वभाव की विलक्षणता है। इनके व्यक्तित्व के इस पहलू ने इनको मधुर शैली और सरल अभिव्यञ्जना प्रदान की है। उन्होंने जो कुछ लिखा हृदय की स्वानुभूति चयन कर लिखा। इसीलिये इनके गम्भीर निबन्धों, कहानियों में उपदेश, मिठास और गम्भीर विचारों की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। उनके साहित्य में सहृदयता, सहानुभूति और करुणा की त्रिवेणी के साथ आदर्श के कगारों का समन्वय भी यथास्थान हैं। नारीसुलभ कोमल भावनाओं में चंचलता नहीं, सौम्यता और गम्भीरता है; फलतः इनके साहित्य का धरातल पर्याप्त उन्नत है।

सबसे बड़ी बात है कि माँश्री का जीवन, साधना का जीवन रहा। उन्होंने अपने आत्मिक आदर्शों के अनुकूल ही अपना जीवन बना लिया। सामाजिक रूप से संचालन का अनवरत परिश्रम तथा आत्मिक रूप से साधना का पथ अनुशरण करना ही उनके जीवन का ध्येय रहा। उनकी अपनी विचारधारा उनके जीवन पर शासन करती हैं और उनके साहित्य पर भी। इसलिए वह अपने जीवन में, अपने साहित्य में पर्वत की भाँति अचल हैं। वह ज़ीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शान्त हैं। उनकी दार्शनिक विचारधारा उनके चिन्तन का परिणाम है। वह जीवन में प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ सोचती रहती हैं। उनके चिन्तन की स्पष्ट छाप उनके साहित्य पर देखी जाती है। इन सब कारणों से महिला साहित्यकारों में इनका साहित्यिक-व्यक्तित्व अपना एक पृथक् महत्त्व रखता है।

माँश्री ने जो कुछ लिखा नारी उत्थान की प्रेरणा से। इस कारण उपदेशात्मक शैली का मन्थन उनकी रचनाओं में स्पष्ट परिलक्षित होता है। वे जो कुछ कहना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चाहती हैं नपे-तुले शब्दों में कह देती हैं। इनका अपना एक अलग शब्दकोष है, जिसमें ऐसे शब्दों का तलस्पर्शी सागर लहराता है, जो प्रत्येक भावयञ्जना के साथ मर्मस्थल को छूने की क्षमता रखते हैं। आचारात्मक और दार्शनिक निबंधों में गहन विचारों को जिस सरलता के साथ रखा गया है, वह प्रत्येक सहृदय को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है।

मेरे समक्ष पाँच निबंध-संग्रह हैं, अत: मैं उन्हीं पर चर्चा करूँगा।

माँश्री का पहला निबंध-संग्रह "उपदेशरत्नमाला" है। इसमें लगभग 30 निबंध हैं। यह दो भागों में विभक्त है :- प्रथम में शारीरिक, नैतिक और मानसिक विकास का आदर्श प्रस्तुत करनेवाले उपदेशात्मक निबंध और द्वितीय में दार्शनिक निबंध हैं। शारीरिक निबंधों में दिनचर्या, भोजनशुद्धि, प्रात:कालीन क्रियाएँ, व्यायाम, वस्त्राभूषणों की सादगी, भक्ष्याभक्ष्य विचार आदि विषयों पर लिखे गये निबंध ज्ञानवर्द्धक होने के साथ साथ सुन्दर और पुष्ट स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए अतीव उपयोगी हैं। कन्याओं को शिक्षा प्राप्त करने के ढंग को बतलाते हुए आपने लिति-सुधार विशेष पर जोर दिया है, लिखा है-

"जो बालिका पुष्ट और स्पष्ट अक्षर लिखने का अभ्यास रखती है, वह नि:सन्देह सब किसी को सहज ही प्रसन्न कर सकती है। लोग कहा करते हैं कि जिसका दिल साफ है, जिसके मन में प्रेम और शान्ति है, जिसके हृदय में छल या दुष्टता नहीं है, वही सुन्दर-साफ अक्षर लिख सकता है।" (पृ० 33)

व्यायाम विषय पर लिखते हुए बतलाया है- "कसरत दो तरह से हो सकती है- पहली घर का काम-काज करने से और दूसरी गेंद, मुद्गर आदि के खेल-कूद करने से। हमारी भारतीय पुत्रियों के लिए पहली ही कसरत अधिक गुणकारी है। यह अपने कुल में बहुत दिनों से होती आयी है। अत: इसी पर अधिक ध्यान देना उचित है इसमें एक पन्थ दो काज हैं। घर में माता-पिता का काम भी चलता रहेगा और परिश्रम करने से शरीर भी ठीक रहेगा। अमीर घरों की औरतें अधिक बीमार इसलिए पड़ती हैं कि वे दिन-रात बैठे-बैठे अपने शरीर के खून को ठंडा बनाती रहती हैं।" (पृ० 35-36)

द्वितीय भाग में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के साथ जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्त्वों पर भी सरल और आशुबोध ढंग से लिखा है। बन्ध तत्त्व के चार भेदों को एक रोचक उदाहरण द्वारा समझाते हुए लिखा है-

"जैसे किसी चीज के बने लड्डू में वातरोग नाश करने का स्वभाव है, तो किसी में पित्त को शमन करने का। इसी तरह कोई कर्मफल आत्मा की ज्ञानशक्ति को आच्छादित करता है, इसी तरह आत्मा के साथ लगे हुए कर्म कोई कुछ दिनों में, कोई वर्षो में और कोई कुछ युगों में जीव को अपने स्वभावानुसार फल पहुँचा कर नष्ट हो जाते हैं। यह स्थिति बन्ध का उदाहरण है। स्वाद में जैसे कोई लड्डू फीका,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोई मीठा, कोई कड़वा होता है तथा कोई आलस्य, कोई नशा, कोई ज्यादा और कोई कम असर करने वाला होता है, उसी प्रकार कर्मपिण्ड भी कोई मन्द, कोई तीव्र और कोई तीव्रतर शुभाशुभ फल देने वाला होता है। यह अनुभाग बन्ध हुआ। प्रदेश बन्ध को यों समझना कि कोई लड्डू एक तोले का, कोई एक छटाँक का और कोई पावभर का होता है, तद्वत् कोई कर्मपुञ्ज अल्प कोई अधिक और कोई अत्यधिक परमाणुओं का बना होता है।" (पृ० 111)

इससे स्पष्ट है कि आपके दार्शनिक निबंधों की रचना शैली बड़ी ही सरल और संयत है। पाठक मस्तिष्क पर बिना बोझ डाले ही भावों को सरलतापूर्वक हृदयंगम कर लेता है।

दूसरा निबंधसंग्रह *'सौभाग्यरत्नमाला'* यह प्रौढ़ मस्तिष्क वाली बहनों के लिए लिखा गया है। इसमें कुल नौ निबंध हैं। सभी निबंध विचारात्मक हैं तथा महिला कर्त्तव्य की शिक्षा देते हैं। पहला निबंध 'सत्य' विषय पर है। शैली रोचक, स्पष्ट और गम्भीर है। सत्य जैसे दुरूह विषय को अत्यन्त सरल ढंग से समझाया है।

"जिस प्रकार किसी एक अनेक पुष्पित वृक्षों से भरे वन में कोई बटोही जा पहुँचे तो गन्धरहित पुष्पवाले वृक्षों का परिचय करना उसके लिए कठिन होता है। प्रत्येक वृक्ष के समीप जाकर तथा एक-एक का निरीक्षण किये बिना पता नहीं लगा सकता, परन्तु उस बटोही को चमेली गुलाबादि, जो सुगन्धित पुष्प हैं, उनका परिचय बहुत दूर से ही हो जाता है, उनकी मधुर गन्ध उसको चिरपरिचित के समान अपना लेती है। उसी प्रकार सच्चे मनुष्य का विश्वास पृथ्वी पर इतने प्रभाव डाल देता है, कि गाँव वाले, गली-मोहल्ले वाले, शहर वाले तथा देशी विदेशी सभी जन उस मनुष्य को आदर की दृष्टि से देखने लगते हैं।" (पृ० 9-10)

दूसरे 'आहार-विहार' शीर्षक निबंध में भोजन और रहन-सहन के विविध नियमों पर प्रकाश डाला है। विविध भोज्य वस्तुओं की मर्यादा, उनके उपयोग की विधि तथा ऋतु, प्रकृति और धर्म की अनुकूलता के अनुसार भोजन तैयार करने का सविस्तार विवेचन किया है। तीसरे 'जीवनोद्देश्य' निबंध में जीवन के अन्तरंग और बहिरंग उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया है। प्रायः मनुष्य अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित नहीं करते, जिससे निरुद्देश्य होने के कारण जीवन यों ही नष्ट हो जाता है। लक्ष्य-विहीन मनुष्य किसी भी स्थान पर नहीं पहुँच सकता है। जीवन का प्रधान उद्देश्य स्वभाव रूप रत्नत्रय की प्राप्ति है और गौणरूप से अपने अपने स्वार्थ का त्याग कर परसेवा करना है। जो व्यक्ति परोपकार में अपने जीवन को लगा देता है, वह धन्य है। निष्काम कर्म करते हुए तन-मन-धन से समाज, परिवार, देश और राष्ट्र की सेवा करना जीवन का लक्ष्य होना चाहिये।

चौथा निबंध 'ब्रह्मचर्य' शीर्षक है। इसमें महिला-समाज की दृष्टि से ब्रह्मचर्य की व्यवस्था, सदुपयोग, स्वरूप विश्लेषण आदि निरूपित हैं। नारियों के लिए शीलव्रत का आदर्श प्रतिपादित करते हुए सुयोग्य गुणवान् सन्तान उत्पन्न करने के निमित्त एकदेश

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है। पाँचवें 'सत्संगति' नामक निबंध में सत्संगति के लाभ और कुसंगति की बुराइयों पर प्रकाश डाला गया है। कुसंगति नाना बुराइयों का घर है। यदि मनुष्य को अच्छा बनना हो तो उत्तम व्यक्तियों का साथ करना चाहिए। जीवन में अधिकांश कुसंस्कार कुसंगति से ही उत्पन्न होते हैं।

छठा 'पातिव्रत' नामक निबंध है। इसमें पातिव्रत के स्वरूप, उपयोग, विशेषता आदि के प्रतिपादन के साथ अनेक पतिव्रताओं के उदाहरण देकर भारतीय नारी के लिए सुन्दर आदर्श बतलाया गया है। पातिव्रत पालने के लिए पाँच सूत्र दिये हैं।

सातवाँ निबंध 'एकता' आठवाँ 'शान्ति' और नौवाँ 'सच्चा सुख' शीर्षक हैं। इन निबंधों में जीवन को सुख-शान्ति और आनन्दमय बनाने के नियमों का निरूपण किया गया है।

तीसरा निबंध संग्रह **"निबंध-रत्नमाला"** है इसमें 18 निबंध हैं। सभी महिलोपयोगी हैं; मानव-हृदय, पवित्रता, सद्ज्ञान, सद्व्यवहार, स्वावलम्बन निबंध तो स्त्री, पुरूष दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। इस संकलन में प्राचीन आदर्श महिलाएँ, कन्या महाविद्यालय, विधवाओं का कर्त्तव्य आदि निबंध नारी जीवन की दिशा बदलने में परम सहायक हैं। 'मानव-हृदय' शीर्षक निबंध में मानव-हृदय का विश्लेषण बड़ी कुशलता से किया गया है। मानव-शास्त्र के अनुसार हृदय की उन कमजोरियों का भी विवेचन किया गया है, जिनके कारण मानव व्यसनों का शिकार होता है; विषय-कषाय रूपी जाल में फँसकर सदा के लिए भक्त बन जाता है। सभी निबंध उपदेशात्मक शैली में लिखे गये हैं।

चौथा निबंध संग्रह *'आदर्श निबंध'* है। इसमें महिला प्रतिष्ठा, महिला सुधार, सन्तान-सुख, साहस और पर्दा, विधवाओं की रक्षा, उनका आदर आत्मोन्नति, संयम, सादगी आदि विभिन्न विषयों पर लिखे गये 30 निबंध हैं। ये सभी निबंध शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक हैं। शैली रोचक और संक्षिप्त हैं।

पाचवाँ निबंध संग्रह 'निबंध दर्पण' है इसमें 35 निबंध हैं। मितव्ययिता, नारी-जीवन, सन्तान-पालन, नारी-शिल्प, समय का सदुपयोग आदि निबंध बड़े उपयोगी हैं। ये जीवन को उन्नति की ओर ले जाते हैं। पराधीनता के बन्धन में जकड़ी भारतीय ललना को किस प्रकार अपने अज्ञान को दूर कर अपना अभ्युत्थान करना चाहिए, नारी का अपने परिवार के प्रति क्या दायित्व है, सास, देवर, जेठ, देवरानी, जिठानी के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि समस्याओं पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है। आये दिन जो बड़े परिवारों में गृह-कलह देखा जाता है, वही तो पारिवारिक सुख को भस्म करने वाला है। अत: नारी को सहिष्णु बनना तथा त्यागी और सेवाभावी होना अत्यावश्यक है। अत: नारी-जीवन की सफलता अपना छोटा-सा परिवार बसाकर पति के साथ रहने में नहीं है, बल्कि घर के बुजुर्गों के साथ आनन्द और प्रेमपूर्वक रहने में है। 'नारी-जीवन' शीर्षक निबंध में जवीन की अनेक समस्याओं को सुलझाने का प्रयास है। आज के युग में ये समस्याएँ सुशिक्षिता नारी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के समक्ष भी ज्यों की त्यों वर्त्तमान हैं। अत: 'निबंध दर्पण' विचार और आदर्श भावनाओं की दृष्टि से महिलाओं के लिए उपयोगी है।

'आदर्श कहानियाँ' यह माँश्री का कहानी-संग्रह है। इस संग्रह में हम उनके कलाविद्, कहानीकार के रूप के दर्शन करते हैं। इस संग्रह की कहानियों की कलामर्मज्ञता का आस्वादन करते ही बनता है। हिन्दी में उत्तम चरित्रमंडित एवं *शिक्षाप्रद कथाओं का सर्वथा अभाव है। इस संग्रह की सभी कथाएँ अपने में किसी* शिक्षाप्रद व्यक्तित्व चरित्र को लपेटे हुए है। इसमें समाज का सफेद चित्रण हुआ है। समाज की गन्दी परम्पराओं में सड़नेवाली नारी की बहुमुखी उत्प्रेक्षा की एक लहर दौड़ती नजर आती है। जैसा कि भूमिका में स्वयं लेखिका डंके की चोट से कहती हैं- "जैन और जैनेतर समाज में गद्य-पद्यमय कुछ रचनाएँ देवियों द्वारा प्रकाशित हुई हैं; तथापि कथानकों की बड़ी कमी है। वर्त्तमान युग चरितात्मक युग है। इस समय चरित्र-चित्रण का प्रभाव मनुष्य पर बड़ी गहराई से पड़ता है। प्रत्येक युवक और युवती का चित्त नाटकमय चरित्र को देखने, गायन सुनने और कथा-चरित्रों को पढ़ने में लगता है। परन्तु गन्दे और भद्दे उपन्यासों को पढ़कर लोग पथभ्रष्ट भी हो जाते हैं तथा लाभ के बदले हानि उठाते हैं। इसलिए समाज में उत्तम चरित्रों और शिक्षाप्रद कथाओं का अधिकाधिक प्रचार होना चाहिए। इसी दृष्टि से ये 'आदर्श कहानियाँ' प्रकाशित की जाती हैं। इसका प्रत्येक गल्प स्त्रियों की बुद्धिमत्ता, उनकी कार्यक्षमता और उनके धैर्य को प्रकट करता है तथा सतीत्व और सेवा के भावों को जाग्रत करता है। इस प्रकार इस संग्रह की कहानियों का उद्देश्य स्पष्ट है।

कहानियों के परिशीलन का विचार मन-मयूर को नचा डालता है। हाथ में पुस्तक आने पर समग्र पुस्तक पढ़े बिना मन नहीं मानता। प्रत्येक कहानी एक नये दृष्टिकोण से लिखी गयी हैं और प्रत्येक में एक नयी समस्या का समाधान है। नारी हृदय की करुणा, ममता, दृढ़ता, त्याग, सेवा, इन कहानियों में फूट पड़ी हैं। 'रोहिणी', 'वियोगिनी', 'पुनर्मिलन' आदि कहानियाँ समाज से एक नया समझौता करने को प्रस्तुत हैं। युग के सामने जो विषम परिस्थितियाँ हैं उन पर माँश्री ने रंग फेरने की चेष्टा नहीं की हैं, बल्कि कवि चारणों के समान कड़खों से उत्तेजित कर आदर्श द्वारा समाधान प्रस्तुत किया है। जीवन और चेतना को विषम खण्डों के बीच बिखेरा नहीं गया है, किन्तु सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए नयी प्रेरणा प्रदान की गयी है।

माँश्री की साहित्यिक प्रतिभा सर्वतोमुखी है। अपने निबंध लिखीं, कथाएँ लिखीं, कविताएँ रचीं और नवीन पीढ़ी को अपने उपदेश द्वारा पाथेय प्रदान किया। अपने भावित और अनुभूत सत्य की परिधि न लाँघी और न अर्ध-परीक्षित या अपरीक्षित सिद्धान्त ही बटोर कर एकत्रित किये; किन्तु अनेक मनीषियों, तपस्वियों और आचार्यो द्वारा निगदित तथ्यों को "नद्या: नव घटे नीरम्" के समान रखा।

(ब्र०पं० चन्दाबाई अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित निबंध का सम्पादित अंश) ⌘

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन महिलादर्श का सम्पादन

❑ डॉ० गोकुलचन्द्र जैन

सन् 1922 में 'जैन महिलादर्श' का प्रकाशन एक ऐतिहासिक घटना थी। जैन समाज की प्रबुद्ध सन्नारियों ने अथक परिश्रम करके सन् 1909 में 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर **'जैन महिला परिषद्'** नाम से एक राष्ट्रीय मंच निर्मित कर लिया था। परम पावन तीर्थराज सम्मेदशिखर की उपत्यका में लिया गया **'महिला परिषद्'** के गठन का निर्णय पर्वतराज के उत्तुंग शिखर से फूँका गया ऐसा शंखनाद था जो सम्पूर्ण भारतवर्ष में गूँज उठा। 'जैन महिलादर्श' परिषद के समुद्र मंथन से निःसृत **'अमृत कलश'** था। नारी के अभ्युत्थान के लिए उसकी अपनी अस्मिता और सामर्थ का वोध कराने का बीड़ा **'जैन महिलादर्श'** ने उठाया। विदुषीरत्न चन्दाबाई उसकी प्रधान सम्पादिका बनीं और 52 वर्षों की दीर्घकालावधि में पूरे मन-प्राण से 26,000 (छब्बीस हजार) पृष्ठों की बहुमूल्य सामग्री को जन सामान्य के समक्ष ज्योनार की तरह परोस दिया।

जैन महिलादर्श के 26 वें वर्ष का प्रथम अंक रजत जयन्ती अंक के रूप में 15.5.1947 को प्रकाशित हुआ। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारत ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम जीत लिया। अहिंसा में अपार शक्ति है, इसे सारा विश्व जान गया। 15 अगस्त, 1947 को राष्ट्र ने स्वतंत्रता का उत्सव मनाया 'महिलादर्श' ने इसी वर्ष में रजत जयन्ती मनायी। सम्पादिका लेखिकाओं एवं प्रकाशक ने अपने पच्चीस वर्षों के कृतित्व का मूल्यांकन एवं आत्मालोचन किया और आगे की डगर पर और अधिक सावधान होकर चल पड़े।

रजत जयन्ती पर आत्म मूल्यांकन

जैन महिलादर्श की रजत जयन्ती अंक में सम्पादकीय विचार के अन्तर्गत सम्पादिका विदुषीरत्न ब्र० पं० चन्दाबाई जी ने 'जैन महिलादर्श' के प्रारम्भ किये जाने के विषय में लिखा है-

सन् 1922 में अ० भा० जैन महिला परिषद् का 11वाँ अधिवेशन लखनऊ नगर में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ था। इसमें महिलाओं की उन्नति और प्रगति के प्रस्ताव पास हुए थे। इन प्रस्तावों में चार प्रस्ताव तो नारी शिक्षा और महिला सुधार के लिए थे और पांचवें प्रस्ताव द्वारा एक महिला मासिक की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया था। प्रस्ताव निम्नप्रकार हैं-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"धार्मिक शिक्षा एवं वास्तविक विवेक में वर्तमान जैन-महिला समाज भौतिक पदार्थों के चकाचौंध में आकर अस्त-व्यस्त हो रहा है। नारी को जननी बनाने का प्राकृति प्रदत सौभाग्य प्राप्त है। वह राष्ट्र, धर्म और समाज की विधायक शक्ति है। अपने त्याग और लगन द्वारा अक्षय शक्ति का प्रभूत पुञ्ज प्रस्तुत करती है। वह शिक्षा और संस्कार से अपनी गोद एवं जन्मभूमि को गौरवशाली बनाती है। लेकिन जैन नारियों में समय के प्रभाव से उपर्युक्त शक्ति लुप्तप्राय है। अतएव यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि एक मासिक पत्र निकालकर जैन नारियों में जैन संस्कृति की भावनाएँ प्रस्फुटित की जाय जिससे जैन समाज अपने खोये हुए गौरव को पुन: प्राप्त कर सके। जब तक जैन महिलाओं में कर्त्तव्य बुद्धि जागृत नहीं होगी, तबतक जैन समाज को वास्तविक मार्ग नहीं मिल सकेगा। अतएव कुरीति उच्छेदन और धार्मिक एवं लौकिक ज्ञान की उत्तेजना के लिए 'जैन महिलादर्श' नामक मासिक पत्र निकाला जाए।"

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो गया। क्योंकि महिलोपयोगी पत्र का अभाव चिरकाल से खटक रहा था, परिषद् की सभी सदस्याएँ इस प्रस्ताव से प्रसन्न हुईं।

सम्पादकीय दायित्व

प्रस्ताव तो पास हो गया, लेकिन अब सवाल संपादिका के निर्वाचन का आया। अजब परिस्थिति थी कि हिन्दी भाषा-भाषी किस महिला को सम्पादिका बनाया जाय। श्रीमती मगनबाईजी की मातृभाषा गुजराती होने के कारण वे उक्त पद लेने में अक्षम थीं तथा श्रीमती ललिताबाईजी के सामने भी यही कठिनाई थी। फलत: सर्वसम्मति से यह गुरुतर भार हमारे दुर्बल कन्धें पर डाला गया। अपनी योग्यता और कार्य क्षमता मर्यादित होने के कारण हमने बहुतेरा ना-नुकर किया, लेकिन अन्ततोगत्वा सब बहनों का आदेश स्वीकार करना पड़ा और 'दर्श' परिषद् का मुख्यपत्र होकर जैन महिला समाज की सेवा के लिए प्रकट होने लगा।

महिला परिषद् का मातृभक्त चिरंजीवी

अ० भा० महिला-परिषद् ने अपने नवजात शिशु के पालन-पोषण के लिए भरसक प्रयत्न किया। उसके इस आज्ञाकारी मातृभक्त चिरंजीवी ने अपने शैशव से ही अपनी जननी की भक्तिपूर्वक सेवा की और परिषद् के प्रचार में पूर्ण सहयोग दिया। परिषद् द्वारा पास हुए प्रस्तावों को प्रत्येक बहन के घर पहुँचाना इस पत्र का कर्त्तव्य था। परिषद् के जिस प्रचार कार्य को सैकड़ों प्रचारक नहीं कर सकते थे, उसे अकेले 'दर्श' ने करके दिखाया।

'महिलादर्श' ने तैयार की महिला लेखिकाएँ

जैन महिलादर्श का एक नियम था कि इस पत्र में जैन महिलाओं के ही लेख प्रकाशित किए जाएंगे, पुरुषों के नहीं। इस नियम से प्रारम्भ में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि जैन महिला समाज की आज जैसी स्थिति नहीं थी, उस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समय समाज में शिक्षित देवियाँ इनी गिनी ही दिखलाई पड़ती थीं। जो शिक्षिता भी थीं, वे या तो लिखने का साहस ही नहीं करती अथवा अशुद्ध और अस्पष्ट लिखकर भेज देती थीं। जिससे सारा का सारा निबंध बदलना पड़ता था और उसके स्थान पर एक नया ही ढाँचा खड़ा कर देना पड़ता था। प्रारम्भ के 10 वर्षों तक इस पत्र के सम्पादन में अनवरत परिश्रम करना पड़ा था, क्योंकि उस समय अधिकांश लेख स्वयं ही लिखने पड़ते थे। यद्यपि यह समय सम्पादिका की परीक्षा का था, लेकिन तो भी जैन धर्म के प्रसाद से आरम्भिक कठिनाइयां फूल बन गईं और 'दर्श' दिनोंदिन वृद्धिगत होने लगा।

प्रारम्भ से ही हमारा प्रयत्न यह था कि इसमें ऐसा सरल और सुबोध साहित्य रहे जिसे प्रत्येक शिक्षित, अर्धशिक्षित बहन आसानी से समझ जाँए और अपना सुधार कर सकें। आरम्भ में ही इसमें शिक्षा प्रचार और महिला सुधार सम्बन्धी निबन्ध निकलने लगे थे, जिनका समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा। हमें जहाँ तक मालूम है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि बहुत सी बहनें इसके द्वारा पढ़ना लिखना भी सीख गई हैं। अनेक बहनों के मन में समाज सुधार की लगन जागृत हुई है।

प्रारम्भ में यद्यपि महिलादर्श का साहित्य उच्च कोटि का नहीं रहता था, लेकिन बहनों ने उस सरल साहित्य की बड़ी इज्जत की और उसके द्वारा बहुत कुछ सीखा। यों तो दो-तीन वर्षों के जीवन में ही इस पत्र ने महिला समाज को मोहित कर लिया था, पर आगे जाकर इसने और अधिक उन्नति की। एक साप्ताहिक के सम्पादक को जितना श्रम आरम्भ में करना पड़ता था उससे भी अधिक श्रम 'दर्श' के प्रारम्भिक सम्पादन में करना पड़ता था! जिन लेखिका बहनों की रचनाएं अशुद्धियों एवं भावहीनता के कारण छप नहीं सकती थीं, या बिलम्ब से प्रकाशित की जाती थीं, उनके रोष और क्षोभ को भी बर्दाश्त करना पड़ा। कोई कोई बहन तो आवेश में आकर सारे सम्पादक वर्ग को ही कोश डालती थीं।

परिश्रम और लगन का फल मीठा होता है। जहाँ जैन समाज में दो-चार लेखिकाएं थीं वहाँ अब दर्जनों की संख्या में अच्छी लेखिकाएं तैयार हो गई हैं। 'जैन महिलादर्श' के प्रारम्भिक अंक महिला समाज का इतिहास व्यक्त करने में समर्थ हैं।

महिलादर्श का जैन समाज को अवदान

'महिलादर्श' ने जैन समाज की महिलाओं को क्या दिया, उसने अपना ऐसा कौन-सा असर किया जिससे जैन महिला समाज को कोई लाभ हुआ हो, विचार करने पर ज्ञात होगा कि **'महिलादर्श'** ने जैन महिलाओं में अपूर्व जागृति की है। आज उसका समस्त जैन महिलाओं पर प्रभाव है। शिक्षा प्रचार के साथ-साथ कुरीति निवारण में भी इस पत्र का पूरा हाथ रहा है। आज समाज में जो अनेक कन्या शिक्षालय दृष्टिगोचर हो रहे हैं, उनके निर्माण का बहुत कुछ श्रेय 'दर्श' को ही है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'दर्श' ने बुलंद आवाज से समाज में नारी शिक्षा का पूर्ण प्रचार किया है।

महिला जीवन में से खोखलापन निकाल कर ठोस और सारगर्भित बनाने का यत्न 'दर्श' का है। आज से कुछ ही वर्ष पहले जो महिला समाज साहित्य और शिक्षा से एकदम पिछड़ा था, अब वही **'दर्श'** के प्रचार की बदौलत इन विषयों में बहुत कुछ आगे बढ़ गया है। इसने देवियों को लिखना और पढ़ना दोनों ही सिखाया है, यह वह मातृभक्त बालक है जो अपनी जननी की हर तरह से सेवा कर अपने को कृतार्थ मानता है।

समाज में जो महिला कवियित्रियाँ दिखलाई दे रही हैं, उन्हें भी तो **'दर्श'** ने ही पैदा किया है। दर्श ने समाज के सम्मुख वह आदर्श रखा जिसे नवीन और प्राचीन दोनों विचारों के लोग सहनशीलता पूर्वक सुन सके। इसने सहस्रों देवियों के जीवन में आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है। आज समाज की प्रत्येक देवी इस पत्र की बाट जोहती रहती हैं।

मिथ्यात्व, अभक्ष्य भक्षण जैसे अनेकों दुर्गुणों को जैन महिलाओं में से दूर किया है। श्रीमती पं० ब्र० मातेश्वरी चन्दाबाई जी अपने सम्पादकीय में सदा सदाचार और नैतिक जीवन के ऊपर जोर देती रहती हैं। उनके जीवन की तपस्या और ब्रह्मचर्य का प्रभाव 'दर्श' द्वारा सारे महिला समाज पर पड़ रहा है। जनता घर बैठे ही माताजी के विचारों से अवगत हो जातीं। उनकी अमर लेखनी से प्रस्तूत रचनाएं समाज को सुसंस्कृत बनाने में सफल सिद्ध हुई हैं। जैसी आपकी मधुर वाणी है, वैसी ही प्रभावोत्पादक आपकी लेखनी भी। अतएव बहनों को सुसंस्कृत, शिक्षित और विवेकशील बनाने में 'दर्श' का पूर्ण सहयोग रहा है।

स्वास्थ्य स्तम्भ में जीवनोपयोगी निबंधों के सदा एवं कुछ अनुभूत नुख्शे भी रहते हैं, जिनसे बहनें अल्प खर्च में घर पर बिना वैद्य और डॉक्टरों के सहयोग के अपना और अपनी सन्तान का इलाज कर लेती हैं। महिला समाज में आज जो जागृति दिखलाई पड़ रही है, उसका प्रधान कारण इस पत्र का सहित्य ही है। इसने महिला समाज को नारी के वास्तविक रूप का साक्षात्कार कराया है।

पर्दा और कन्या विक्रय जैसी घृणित प्रथाओं को समाज से दूर भगाने का कार्य 'दर्श' ने बड़ी कुशलता से किया है। इसे केवल महिलाएं ही चाव से नहीं पढ़ती हैं किन्तु पुरुष समाज भी बड़े प्रेम और श्रद्धाभाव से पढ़ता है। जैन महिलाओं में स्वाभिमान की भावना का उदय इस पत्र से ही हुआ है। आज समाज में कई विदुषियाँ, लेखिकाएँ और कवियित्रियाँ जो दिखलाई पड़ रही हैं उसका सारा श्रेय इस पत्र को है। 'दर्श' उड़ता घोड़ा नहीं, यह तो समय के साथ चलने वाला है। देश, समाज और राजनीति का जैसा वातावरण रहता है, 'दर्श' भी वैसा ही बन जाता है। एक युग था जब 'दर्श' में राजनैतिक लेख नहीं निकलते थे, सरकार का प्रतिबंध भी था, लेकिन अब प्रतिबंध रहते हुए भी 'दर्श' में क्रांतिकारी लेख प्रकाशित होते हैं। समयोपयोगी साहित्य बहनों को यह बराबर प्रदान करता है। अतएव यह मानने के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिए बाध्य होना पड़ेगा कि 'दर्श' ने जैन महिला समाज को अनोखी थाती दी है।

नवीन पत्रों के प्रकाशन की प्रेरणा

पं० चन्द्रमुखी देवी न्यायतीर्थ ने महिलादर्श के इसी अंक में लिखा-सन् 1909-10 के लगभग सर्वप्रथम जैन महिला समाज को शिक्षिता तथा योग्य बनाने, उनमें नवीन जीवन लाने के लिए एवं रूढ़ियों और प्राचीन सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए 'महिलारत्न' पं मगनबाई तथा पू० माता चन्दाबाई जी ने सम्मेदशिखर में स्त्री - सुधार की आवाज उठाई। फलत: महिला-परिषद् का जन्म हुआ और महिला सुधार का श्रीगणेश हुआ। इसी समय एक उच्चकोटि की पत्रिका की आवश्यकता हुई और बड़ी दृढ़ता एवं लगन के साथ 'महिलादर्श' पत्र निकलना प्रारम्भ हुआ।

इसके बाद से जैन महिला समाज में प्रगति के कुछ चिह्न नजर आने लगे। आज तक जैन महिलाओं में जो प्रगति हुई है वह सन् 1921 से 1947 तक 25-26 वर्षों के अन्दर ही हुई है और इस प्रगति का बहुत कुछ श्रेय 'महिलादर्श' को ही है। इस पत्रिका ने ही जैन समाज में कई लेखिकाएँ और कवियित्रियाँ तैयार की है। इन्हीं 25 वर्षों के अंकों में कई जैन महिलाओं ने साहित्यिक रचनाएँ की हैं। उपदेश रत्नमाला, श्रावक वनिता बोधनी, महिलाओं का चक्रवर्तित्व, सौभाग्य रत्नमाला आदि कई स्त्रियोचित पुस्तकें लिखी गई हैं। मनोरमा देवी ने मराठी में एक पुस्तक लिखी हैं तथा श्रीमती ब्र० सुमतिबाई शाह, महाराष्ट्र महिला, नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन कर रही हैं।

इन्हीं 25 वर्षों के अन्दर सी० पी० की जैन महिलाओं ने भी साहित्यिक क्षेत्र की तरफ अपने कदम बढ़ाए तथा तेजाबाई रांघेलीय के सम्पादन में **'जैन महिला बोधक'** नामक पत्र प्रकाशित होने लगा।

अज्ञान का तिमिर मिटा

इस स्वल्प समय के अन्दर जैन महिला ने सिर्फ हिन्दी का ही नहीं बल्कि संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। सर्वप्रथम **श्रीमती सौ०** चिनम्मादेवी ने छहढाला का संस्कृत में 'षड्स्तवक' नाम से अनुवाद किया कई न्यायतीर्थ हुईं। इसके अतिरिक्त कई जैन कन्याओं ने "प्रभाकर" 'साहित्यरत्न' आदि की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की हैं। इस शिक्षावृद्धि में आरा, सागर, बंबई आदि संस्थाओं ने विशेष सहयोग दिया है। इन संस्थाओं से कई जैन बालिकाएँ और विधवाएँ ऐसी निकली हैं, जिन्होंने अनेक प्रकार से जैन समाज की सेवाएँ की हैं, और कर रही हैं। इस तरह हम देखते हैं कि जहाँ बीसवीं शताब्दी में जैन महिलाएँ बिल्कुल अशिक्षित और अज्ञानावस्था में थीं, वहाँ इन 25 वर्षों के अन्दर ही कितनी ही महिलाएँ विदुषी हो गयीं।

शिक्षा विकास की जननी है। अत: जब जैन महिला समाज में शिक्षा केन्द्र स्थापित हुए और उनका उचित परिचालन भी होता रहा तथा अनेक महिलायें शिक्षित भी हो गई तो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन महिला समाज की सर्वतोमुखी प्रगति होना अनिवार्य है। किन्तु वह प्रगति भी तभी हो सकती है, जब जीवन में शिक्षा का उपयोग हो, उसे व्यवहार में लाया जाय तथा दूसरों को भी शिक्षित किया जाए। आज तक जैन महिला समाज की शिक्षा का प्रभाव उसके जीवन में प्राय: नहीं के बराबर हुआ है। यों तो सभी शिक्षित नहीं हैं किन्तु वर्तमान युग में जिन्हें शिक्षित कहा जा सकता है उनमें दो चार को छोड़ सभी साक्षर कहलाने की अधिकारी हैं।

शिक्षा और साक्षरता के अंतर को समझें

साक्षर और शिक्षित होना एक नहीं है, साक्षरता शिक्षा का साधन है, साक्षरता हमें शिक्षित करने में, हमारी ज्ञान साधना में सहायक होती है। हम देखते हैं कि शिक्षा का प्रचार होते हुए भी हमारी कितनी ही जैन बहनें बिलकुल अपढ़ हैं तथा कितनी पढ़ी लिखी बहनों का सामाजिक और धार्मिक जीवन अपढ़ के समान ही गुजरता है, शारीरिक रोगों से पीड़ित हैं; इसलिए ऐसी बहनों को हम साक्षर ही कहेंगी, शिक्षित नहीं; क्योंकि शिक्षा मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक विकास की कुन्जी है।

यही कारण है कि आज जैन महिलाओं की समाजिक प्रगति रुकी हुई है। यद्यपि बाल-विवाह की प्रथा मिट सी चली है; वृद्ध विवाह और पुर्नविवाह जोर पकड़ते जा रहे हैं। पर्दा प्रथा नष्टप्राय हो चली है, किन्तु लज्जा और विनय की कमी होती जा रही है। हाँ, अन्धविश्वासों और रूढ़ियों का नाश अवश्य हुआ है, किन्तु अब भी गाँवों तथा शहरों में भी कई स्थानों पर प्रचलित है। कलह, फूट से सर्वनाश होता है, किन्तु इसे दूर नहीं कर सकीं हैं। कहने का मतलब यह है कि इन 25 वर्षों के अन्दर हम अपनी बुराईयों को सिर्फ पहचान सकी हैं; किन्तु अभी सर्वथा छोड़ने में असमर्थ हैं। आज जैन बालिकाओं, विधवाओं को विद्यालयों में एकता की शिक्षा दी जाती है चारों ओर महिला सभा के द्वारा उन्हें दाम्पत्य जीवन को, समाज को उन्नत करने की शिक्षा दी जाती है, किन्तु उसका प्रभाव हम जैन महिलाओं पर स्वल्प मात्रा में ही हुआ।

धार्मिक प्रगति भी जैन महिलाओं की 25 वर्षों में जैसी होनी चाहिए नहीं हुई है। आज जैन महिलाओं की जैन धर्म से श्रद्धा प्राय: लुप्त सी हो रही है, यद्यपि धर्मग्रन्थों का पठन-पाठन जैन विद्यालयों में होता है, जैन महिलाएँ ही इससे लाभ उठाती हैं। इतना अवश्य है कि जहाँ 25 वर्षों के पहले सूत्र और भक्तामर पढ़ना दो चार ही जानती थीं वहाँ आज ऐसी महिलाएँ जैनधर्म क्या है ? इसे भी सम्यक् तरह से नहीं जानती हैं, आज भी कुदेवों की पूजा की जाती है, कुगुरुओं को पूजा जाता है, मिथ्यात्व की जड़ विद्यमान है।

इसके अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा को आज की कितनी ही जैन महिलाएँ व्यर्थ मानती हैं। मुश्किल से 20 प्रतिशत जैन बालिकाओं को धार्मिक शिक्षा दी जाती है, शेष 80 प्रतिशत में कुछ तो बिल्कुल अशिक्षित हैं और कुछ विदेशी शिक्षा के फंदे में पड़ी हुई हैं। वे बी० ए०, एम० ए० भले ही हो जाएँ किन्तु जिस महान् धर्म में, जिस जाति में उनका जन्म हुआ है, उसके महत्त्व को नाम मात्र भी नहीं जान पातीं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फलत: उनकी शिक्षा का उनके आन्तरिक जीवन पर सफल प्रभाव नहीं पड़ता। इन बुराईयों की मूल में हमारी जैन महिलाएँ ही हैं। यदि वे जैन धर्म पर श्रद्धा रखतीं तो अपनी बालिकाओं को अप-टू-डेट बनाने की अपेक्षा धार्मिक शिक्षा को अत्यधिक आवश्यक समझतीं, मेरा अभिप्राय यह नहीं कि विदेशी शिक्षा निरर्थक है, किन्तु जीवन में धार्मिक शिक्षा की जितनी उपयोगिता है उतनी विदेशी शिक्षा की नहीं। यह सोंचने की बात है कि यदि बालिकाओं को धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाएगी तो उनकी धर्म पर श्रद्धा कहाँ तक रह सकती है ? धर्म की उन्नति जैन धर्म का विकास जैन महिलाओं पर ही निर्भर है। अत: जब तक वे इस पर ध्यान नहीं देंगी तब तक धार्मिक प्रगति असम्भव है। 25 वर्षों के अन्दर कितनी ही जैन बालिकाओं ने जैन विद्यालयों के द्वारा उच्च कोटि की धार्मिक शिक्षा पाई है। उनकी शिक्षाएँ भी तभी सार्थक होंगी जब वे धर्म की वृद्धि करें तथा उसे व्यवहार में लावें।

शारीरिक दशा जैन महिलाओं की कैसी ? नित्य सिरदर्द और ज्वर सताया करता है, आँखों की ज्योति छोटी अवस्था में ही कम हो जाती है, शरीर निर्बल बना रहता है। कारण स्पष्ट है, आज आभूषण की चिन्ता, कपड़े की ईर्ष्या, चिन्ता, द्वेष महिला समाज में कूट-कूट कर भरा हुआ है। दूसरी बात यह है शुद्ध भोजन नहीं, मन में प्रसन्नता नहीं। इन्हीं सब कारणों से उनका शारीरिक ह्रास हो रहा है । हम जैन महिला समाज के लिए सौभाग्य की बात है कि 25-26 वर्षो से हमारी आदर्श माताओं ने बहुत कठिनाइयों को झेल कर साधन एकत्र किए हैं। महिलादर्श प्रतिमास हमें स्वास्थ्य विज्ञान की शिक्षा देता रहता है । किन्तु जबतक महिला समाज अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान नहीं देती तबतक राजनैतिक सामाजिक व धार्मिक किसी प्रकार की उन्नति असंभव है।

जैन महिलादर्श तीन प्रान्तों के समन्वयक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण भारत में पहुँचता था। परिषद् का कार्यालय बम्बई में था। ब्र० कंकुबाई अध्यक्षा और मगनबेन मंत्राणी थीं। दोनों की मातृभाषा गुजराती थी। ब्र० चन्दाबाई, आरा को सम्पादन का दायित्व सौंपा गया। अब प्रश्न मुद्रण प्रकाशन का आया। सूरत (काठियाबाड़) से श्री मूलचन्द किशनदास कापड़िया "जैनमित्र" साप्ताहिक निकालते थे। चन्दाबाई जी और कापड़िया जी एक धार्मिक महोत्सव में मिले। चन्दाबाई जी ने जैन महिलादर्श के प्रकाशन की चर्चा की। कापड़िया जी ने जैन बाला विश्राम की हीरक जयन्ती स्मारिका में लिखा है - "हमनें उन्हें वचन दिया कि प्रकाशन हम अपने प्रेस से नियमित करेंगे। आप हमारी ओर से वेफिक्र रहें। पं० चन्दाबाई जी को हमारा सुझाव पसन्द आया और अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् की ओर से जैन महिलादर्श नाम का मासिक पत्र हमारे प्रकाशकत्व में प्रतिमास 52 वर्षों तक अविरल गति पूर्वक प्रकाशित होता रहा। " **-मूलचन्द किसनदास कापड़िया**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विराम

जैन महिलादर्श की सम्पादिका विदुषीरत्न पंडिता चन्दाबाई जी ने अपने दैनन्दिनी में दि० 27.5.74 को लिखा- "**महिलादर्श का 12वाँ अंक 52वें वर्ष का प्रकाशित हो** गया। अब महिलादर्श का सम्पादन आगे से बन्द कर दिया है और मूलचन्द किशनदास कापड़िया सूरत (गुजरात) को 3803.90 (तीन हजार आठ सौ तीन रुपया नब्बे पैसे) का ड्राफ्ट भेज दिया है। हिसाब अब उनका साफ हो गया है।" -चन्दाबाई

माँश्री चन्दाबाई ने 52वें वर्ष के अन्तिम अंक का सम्पादकीय 'जैन महिलादर्श' अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् तथा जैन समाज में नारी जागरण के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में लिखा वह यथावत् प्रस्तुत है।

जैन महिलादर्श के ५२वें वर्ष की समाप्ति

महिलादर्श के 52वें वर्ष का यह 12वाँ अन्तिम अंक है। देखते-देखते बावन वर्ष का इतना लम्बा समय कैसे निकल गया पता तक नहीं ? समय अपने अबाधगति पूर्वक सतत गतिमान रहता है, यही समय है और यही समय का काम है। सैकड़ों हजारों लाखों वर्ष काल के गर्त में समा गये, पर समय आज भी पूर्ववत् गतिशील है। जैन महिलादर्श भारतीय जैन नारी समाज का इकलौता प्रमुख पत्र है जो विगत 52 वर्षों से नियमित समय पर प्रगट होकर अविरल गतिपूर्वक नारी समाज की सेवा करता आ रहा है।

एक ही सम्पादक के सम्पादकत्व में और एक ही प्रकाशक के प्रकाशकत्व में पाँच दशकों तक अबाध गतिपूर्वक निकलते रहना, यह जैन समाज के लिए सौभाग्य का विषय है, आनन्द की बात है।

आज से 50-60 वर्ष पूर्व नारी समाज की क्या गति थी, क्या रूपरेखा थी, क्या प्रणाली थी, कैसा घोर अज्ञान था, किस प्रकार कुरूढ़ियों की श्रृंखला में जकड़ी हुई थी ? इन सब प्रश्नों का विगत लेखा-जोखा लगाया जाय तो एक बड़ा पोथा तैयार हो सकता है।

ऐसी ही परिस्थिति में महिलादर्श का जन्म हुआ था। आदर्श द्वारा नारी समाज से संबंधित सभी क्षेत्रों में अनवरत सेवाएँ की गई हैं।

महिलादर्श ने समय-समय पर शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त आन्दोलन चलाए। स्त्री शिक्षा के प्रचार में लेख पुस्तकें छपवाईं। जैन बाला विश्राम संस्था की स्थापना कर उसके माध्यम से रचनात्मक कार्य किया, जिसका धीमे-धीमे सुखद परिणाम यह आया कि नारी शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढनें लगीं और आज जैन नारी समाज अधिकांश रूप में शिक्षिता हैं।

यह श्रेय जैन बाला विश्राम नामक प्रतिष्ठान (संस्था) को ही प्राप्त है कि इस आश्रम के द्वारा शिक्षित महिलाएँ जैन समाज में सर्वत्र और शासन क्षेत्र में भी कार्य कर रही हैं। इस आश्रम द्वारा अनेक महिलाएँ अनेक उपाधियों से सम्पन्न हैं।

नारी समाज में व्याप्त पाखण्ड मिथ्यात्व ढोंग एवं आडम्बरों को मिटाने में महिलादर्श ने एक सुधारक एवं मीमांसक की तरह कार्य किया है। इस पत्र में महिलाओं के विभिन्न प्रकार के लेख (धार्मिक, ऐतिहासिक, समाज सुधारक,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पौराणिक कहानियाँ एवं कविताएँ आदि) प्रकाशित होते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप आज समाज़ में सुयोग्य विदुषी लेखिकाएँ एवं कवियित्रियाँ मौजूद हैं।

वर्ष के प्रारम्भ में महिलोत्थान सम्बन्धी कई एक महत्त्वपूर्ण विशिष्ट विशेषांक महिलादर्श अपनी पाठिकाओं को देता रहा है। आज से 52 वर्ष पूर्व अर्थात् विक्रम सं० 1978 वैशाख शुक्ल 3 अक्षय तृतीया (ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक) पर्व के दिन तदनुसार 15 मई सन् 1922 को महिलादर्श का प्रथमांक (वर्ष 1 अंक 1) प्रकाशित हुआ था।

इन 52 वर्षों के बीच विविध नामों से दर्श के विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित हुए हैं। समय-समय पर दर्श के ग्राहकों को धार्मिक ऐतिहासिक या समाज सुधार सम्बन्धी उपहार ग्रन्थ भी भेंटस्वरुप देता रहा है। पत्र में प्रतिमास सम्पादकीय एवं अनुभवपूर्ण लेख सामाजिक परिस्थिति का चित्रण, धार्मिक ऐतिहासिक या पौराणिक कहानियाँ सुधारात्मक लेख, स्वास्थ्य-सौन्दर्य, थोड़ा हँस लीजिए, विधे हुए मोती, अनमोल मोती, राष्ट्रीय हलचल, कविता मन्दिर, विविध समाचार, जानने योग्य बातें आदि विविध स्तम्भों पर थोड़ा बहुत प्रकाश डाला ही जाता है। जिनके द्वारा महिला समाज को सभी विषयों की जानकारी घर बैठे ही मिलती रहती है।

महिलादर्श की विगत 51-52 वर्षों की फाइलों का अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होगा कि महिलादर्श ने नारी समाज को क्या दिया ? और उसने नारी के विकास एवं उत्थान में क्या किया ? जो महिलाएँ प्रारम्भ से ही दर्श की ग्राहिका हैं उनके यहाँ तो महिलादर्श की फाइलों और उपहार ग्रन्थों से एक छोटी सी लाईब्रेरी ही कायम हो गई है। महिलादर्श अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् का प्रमुख पत्र है। इसी परिषद् द्वारा आज से 52 वर्षों पूर्व प्रगट किया गया था, महिलादर्श के समक्ष 52 वर्षों के बीच अनेक समस्याएँ एवं संघर्ष भी आए। फिर भी उन सबको पारकर आगे ही बढ़ता रहा। यही कारण है कि अपने उद्देश्य एवं लक्ष्य की पूर्ति में आगे बढ़ रहा है और नारी समाज की सेवा में दत्तचित्त संलग्न रहा है।

महिलादर्श विगत 52 वर्षों का स्वयं इतिहास एवं उसकी कहानी, नारी-उत्थान की कहानी है। महिलादर्श स्वयं समाज है। इस वर्ष अनेक महिलाओं ने लेख, कहानी, कविताएँ भेजकर महिलादर्श की प्रगति में सहयोग दिया है, हाथ बँटाया है। अतएव महिलादर्श-परिवार उनका हार्दिक आभार प्रगट करता है।

कविता मन्दिर की संचालिका आ० सौ० रूपवती 'किरण', जबलपुर नियमित रूप से कविता मन्दिर का संचालन कर रही हैं और विगत 52 वर्षों से श्रीमान् सेठ मूलचन्द किसनदासजी कापड़िया मालिक दिगम्बर जैन पुस्तकालय एवं 'जैन विजय' प्रिंटिंग प्रेस, सूरत महिलादर्श के प्रकाशक रह कर प्रतिमास नियमित प्रकाशित कर रहे हैं। अतएव हम श्रीमती सौ० रूपवती किरण, सुश्री शशिप्रभा जैन एवं श्री कापड़िया जी के विशेष आभारी हैं।

यद्यपि जैन महिलादर्श को प्रकाशित होते हुए 52 वर्ष हो गए हैं। यह पुराना पत्र अब आपके हाथों में नहीं पहुँच सकेगा। क्योंकि हमारी वय 85 वर्ष में चल रही है। अब धर्म साधन करते हुए शांत मन से भागवान् भजन स्तवन मनन में समय लगाने का अवसर है।

इस 52 वर्षों के अन्दर महिला समाज में अपूर्व ज्ञानवृद्धि हुई है, अनेक विदुषी हो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गई हैं, कुछ पुरानी सदस्याएँ तो बिना शुल्क के महिलादर्श को पा रही हैं। इस वर्ष तो कितनी ही महिलाओं ने सदस्या बनने हेतु डेढ़ सौ रुपयों के मनीऑर्डर भेजे थे पर वे सब वापिस भेज दिये गये हैं। बहनें क्षमाभाव रखेंगी। 52 वर्षों की सम्पादकीय में जो गलती हुई हो उसे क्षमा करेंगी। महिलादर्श के गत वर्ष का 'ध्यानाग्नि' विशेषांक महिलाएँ सुरक्षित रखकर उसका पुन: अध्ययन स्वाध्याय मनन करेंगी।

पुनश्च: अन्त में सबसे करबद्ध होकर निवेदन है कि इस 52 वर्षों की सेवा में जो कुछ त्रुटियाँ हुई हों, क्योंकि सम्पादक को समाज में फैली हुई कुरीतियों के लिए कटु लेख लिखने ही पड़ते हैं तभी उनका उन्मूलन होना संभव होता है। जैसा कि हुआ भी है मिथ्यात्व पूजन, कन्याओं को नहीं पढ़ाना, परस्पर घर में कलह विसम्बाद करना इत्यादि, पुन: याचना है कि क्षमाभाव बनाए रखें।

माँश्री का यह मर्मस्पर्शी हार्दिक अभिलेख तथा इसमें 'ध्यानाग्नि' विशेषांक का उल्लेख माँश्री चन्दाबाई के आध्यात्मिक चरमोत्कर्ष की ओर तीव्रगति से अग्रसर होने को अभिव्यक्त करते हैं। हमें लगता है कि यह सम्पादकीय लेख के साथ ही उन्होंने मनसा सल्लेखना व्रत धारण कर लिया था, जिसकी सम्पूर्ति 26 जुलाई, 1977 को हुई और 27 जुलाई को उन्होंने अन्तिम बार नित्य पूजा का यह वाक्य मन ही मन दोहराया होगा :-

"दुक्खखओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य।
मम होइ जगद्बंधु तव जिनवरचरण सरणेण ।।"

जैन महिलादर्श' का पुन: प्रकाशन आरम्भ

'जैन महिलादर्श' के प्रकाशन में विराम आया तो समाज में एक गहरी रिक्तता महसूस की गयी। लगा कि कहीं कुछ छूट गया है। ऐसा तो नहीं हो सकता कि 'काफिला गुजर गया, गुबार देखते रहे।' हम इतने गाफिल नहीं हैं। गुबार छुटने तक समाज ने सब्र किया। अन्तत: 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' ने "जैन महिलादर्श" के प्रकाशन का दायित्व संभाल लिया और पत्र नियमित प्रकाशित होने लगा। प्रधान सम्पादिका के पूर्व शीर्ष भाग में लिखा गया-

संस्थापिका - विदुषी पं० ब्र० स्व० चन्दाबाई जी, आरा।

फरवरी, 1997 का 'जैन महिलादर्श' श्री जैन बाला विश्राम, आरा के अमृत महोत्सव के आयोजनों की श्रृंखला में प्रकाशित हुआ,

"स्व० परम विदुषी पूज्या आर्यिकारत्न चंदा माँश्री स्मृति विशेषांक"

एक बार पुन: जैन महिलादर्श ने आचार्य समन्तभद्र के बोध वाक्य को प्रकाशित किया-

"स्वदोषशान्त्या विहितात्मशान्तिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानां।
भूयाद् भवक्लेशभयोपाशान्त्यै शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः ।।"

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन महिलादर्श का पुनः प्रकाशन संदर्भ

❑ सुबोध कुमार जैन

पूज्या दादी जी ने जिस समय महिलादर्श के 52वें वर्ष के बारहवें अंतिम अंक का अंतिम संपादकीय लिख कर भेजा, उस समय उन्होंने इसकी पूर्व सूचना मुझे दे दी थी। जब मैंने उनसे पूछा कि क्यों बंद कर रही हैं, तो उन्होंने स्पष्ट कहा था कि मैं नहीं चाहती कि श्री जैन महिलादर्श, जिसका संपादन मैंने शुरु किया था और 52 वर्षों तक मैंने जिसे समय पर प्रकाशित कराया और जिसमें कभी भी कोई बात आगम विरूद्ध नहीं लिखी गई, या कोई भी ऐसी बात कभी किसी के लेख में भी नहीं छपी, जो कि नीति विरूद्ध हो। मैं चाहती हूँ कि भविष्य में महिलादर्श ऐसे हाथों में न जाये जो कि 52 वर्षों में हमनें जिन विचारों को महिलाओं के मन में आरोपित करने के लिये जी जान से प्रयत्न किया, एक-एक लेख या कविता कहानी को ध्यान पूर्वक पढ़ा और संपादित किया, ताकि बालिकाएँ और महिलाएँ धर्म और कर्म के मर्म को समझें और उनके जीवन में कभी कोई चूक न हो।

इसलिये जब हमारे पास भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के सुयोग्य अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने मुझे पत्र लिखा और टेलीफोन से भी बातें की कि महासभा के तत्वावधान में वे श्री जैन महिलादर्श का नियमित प्रकाशन करने की अनुमति चाहते हैं; तो मैने उन्हे विनयपूर्वक पूज्या तपस्विनी दादी माँश्री के इस विषय में कही हुई बातों को दोहरा दिया।

सेठी जी तदुपरांत स्वयं हमारे पास कोठी में आये और इस विषय पर उनसे जो चर्चा हुई उससे जब मैं पूर्णरूप से संतुष्ट हो गया तो मैंने उन्हें प्रसन्नता पूर्वक अनुमति प्रदान कर दी।

मुझे इस बात का पूर्ण संतोष है, कि प्रारम्भ में उन्होंने पूज्य माँश्री की अनन्य शिष्या और महिलादर्श के संपादन में बराबर सहायता करने में उद्यत, शशिप्रभा जैन 'शशांक' को जो उस समय जैन बाला विश्राम की प्राचार्या थीं, उन्हें संपादक मंडल में स्थान दिया। मुझे और भी प्रसन्नता है कि इस समय इसकी प्रधान संपादिका डॉ० नीलम जैन अत्यंत योग्यता पूर्वक इस पत्रिका का संपादन कर रही हैं, और उन्होंने श्री जैन बाला विश्राम अमृत-महोत्सव के उपलक्ष्य में "पूज्या आर्यिका चंदा माँश्री विशेषांक" का प्रभावशाली संपादन किया है। मै भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा तथा उसके प्रतिभा सम्पन्न अध्यक्ष श्री सेठी जी को साधुवाद देता हूँ कि इसका प्रकाशन नियमित समय पर बराबर होता आ रहा है। अब तो इलाहाबाद से श्री जैन बालादर्श का प्रकाशन भी डॉ0 प्रेमचंद जैन के सुयोग्य हाथों में देकर बाल साहित्य के क्षेत्र में अनुपम योगदान दिया है। इस बाल सचित्र मासिक पत्रिका का संपादन भी बराबर योग्य हाथों में रहा है। जिससे कि निश्चित रूप से बालक बालिकाओं में जैन आगम, जैन इतिहास, जैन तीर्थ आदि सभी विषयों का भली भाँति अभिसिंचन हो रहा है।

❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सफल सम्पादन

❑ राम बालक प्रसाद 'साहित्यरत्न'

सन् 1921-1922 का समय एक तूफान का समय था। महात्मा गाँधी, असहयोग आन्दोलन की रणभेरी बजा चुके थे। समाज में, देश में चारों ओर क्रान्ति की लहर उमड़ रही थी। विदेशी सरकार के पाँव उखड़ने लगे थे, देश का प्रत्येक समझदार व्यक्ति असहयोग के लिए तैयार था। बड़े-बड़े समाज-सुधारक अपना सिंह गर्जन कर रहे थे। जान पड़ता था कि राजनैतिक और सामाजिक - परबशता की सभी श्रृंखलाएँ अभी तुरंत टूटना चाहती हैं। एक ऐसा ही झंझावातीपूर्ण मुहूर्त में 'जैन महिलादर्श' का जन्म हुआ। 'जैन महिलादर्श' भारतीय नवजागरण के उषाकाल से ही लोकोपकारी आन्दोलनों से कंधे-से-कंधा मिला कर नारियों के नवोन्मेष के लिए सतत् प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया। उन दिनों कोई महिला पत्र निकालना हँसी-खेल नहीं था; 'कुआँ खोदना और तब प्यास बुझाने' जैसा काम था। 'जैन महिलादर्श' में केवल स्त्रियों के ही लेख प्रकाशित करने का नियम था। उन दिनों हिन्दी के स्वल्प प्रचार के कारण लेख तो मिलते ही नहीं थे, लेखिकाओं का मिलना तो और भी दुर्लभ था। इन विषम परिस्थितियों में सम्पादक की कठिनाइयों का सहज ही अनुमान किया जा सकता है। स्व० पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी 'सरस्वती' का सम्पादन लगभग इसी समय और इन्हीं परिस्थितियों में आरम्भ किया था। उनके संबंध में कहा जाता है कि उनके संशोधन के पाश्चात् लेख का कलेवर इतना परिवर्तित हो जाता था कि अपना कहने योग्य लेखक के नाम के अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रह जाता था। ठीक यही स्थिति पं० चन्दाबाई की भी थी। उन्हीं के शब्दों में आपने अपने संपादकीय लेखों द्वारा नारियों में नव-चेतना फूँकने के लिए शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया। "महिला सुधार के तीन मंत्र" शीर्षक एक सम्पादकीय में आप लिखती हैं- "महिला समाज के सुधार के तीन मूलमंत्र हैं : शिक्षा, सदाचार और आत्मविश्वास।" वर्तमान शिक्षा-पद्धति महिलोपयोगी तो होने से रही, उनका सामान्य स्तर जरा भी ऊपर नहीं उठा सकतीं। आप पूर्वोक्त सम्पादकीय में आगे लिखती हैं- "आज की शिक्षिता युवतियों की अवस्था देखकर तरस आता है, वे कम उम्र में ही बड़ी बूढ़ी जैसी मालूम पड़ने लगती हैं। आज की शिक्षा में संयम का नामोनिशान भी नहीं है। असंयम और कुवासनाओं के झंझावात ने देश के युवक-युवतियों को खोखला बना दिया है।" वर्त्तमान पद्धति की कटु निन्दा करते हुए आप उसी सम्पादकीय में पुनः लिखती हैं - "आज की शिक्षा में पूत भावनाओं को उत्पन्न करने की उतनी शक्ति भी नहीं। फिर यह शिक्षा किस प्रकार उपयोगी कही जा सकती है।" अपना सुझाव पेश करती हुई आप लिखती हैं- "समाज में जितनी नई पाठशालाएँ खुल रही हैं उनमें नारी-शिक्षा का ऐसा प्रचार किया जाय जिससे नारी की सर्वांगीण उन्नति हो सके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घरेलू उद्योग धंधे, गृह - सन्तान - पालन, गृहशिल्प आदि की शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक विकास के लिए समुचित शिक्षा का मिलना नितान्त आवश्यक है।"

शिक्षा के अतिरिक्त आपने भारतीय संस्कृति के आधार पर नारी-चरित्र के विकास पर अत्यधिक जोर दिया। स्त्री-समाज में अपने सम्पादकीय लेखों द्वारा इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए एक नया आन्दोलन ही खड़ा कर दिया। आपके द्वारा लिखे गए सम्पादकीय लेखों का पृथक संग्रह कर दिया जाय तो वह अलग से दया, क्षमा, निरभिमानता, सत्य, ब्रह्मचर्य, अहिंसा, शील, पातिव्रत, ज्ञान-प्राप्ति, भ्रम-त्याग, सामाजिक कुरीतियाँ आदि विषयों पर गवेषणापूर्ण निबन्धों की सुन्दर निबन्धावली हो सकती है।

आज भारतीय संयुक्त-परिवार-पद्धति नरक की भयानक झाँकी बन रही है। आर्थिक कारणों के अतिरिक्त इसका एक प्रधान कारण है क्षमा का लोप और क्रोध और द्वेष का प्रसार।

"आज हमारे घरों में जो विरोध की भट्ठी सुलग रही है, इसका कारण भी तनिक-सी बात पर उत्तेजित हो उठना ही है। क्योंकि आज हमारी बहनें अहंभाव के कारण किसी के कटु वचन नहीं सह सकतीं। वे एक कहने वाली सास, ननद को दस सुनाने को तैयार रहती हैं। भला सोचिए, यह विद्वेष सिर्फ क्रोध के ही कारण तो हैं, यदि क्षमा-भाव परिमाणों में रहे तो फिर कुटुम्ब के कल्याण में जरा भी कमी नहीं रहे।"

यद्यपि जैन-सम्प्रदाय ने अहिंसा को अपने धर्म का प्राण माना है तथापि अहिंसा एक ऐसा सत्य है जिसको कोई देश और काल क्षण भर के लिए भी ठुकरा नहीं सकता। महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के बीच कोई भेदक रेखा खींची ही नहीं। अहिंसा के सम्बन्ध में अपनी विराट् भावनाओं को व्यंजित करती हुई आप लिखती हैं "केवल किसी को मारना ही हिंसा नहीं है, अपितु कुविचार भी हिंसा है, झूठ बोलना, उतावली करना, किसी से द्वेष करना, किसी का बुरा चाहना और संसार की आवश्यक वस्तुओं के ऊपर अपना कब्जा करना हिंसा है। हम देखते हैं कि हमारी बहनें दूसरों की निन्दा अधिक किया करती हैं, क्या यह निन्दा हिंसा नहीं है ? अवश्य हिंसा है। जिन कार्यों से परिणाम विशुद्ध रहते हैं वे सब कार्य अहिंसामय हैं और जिन कार्यों से परिणाम अशुद्ध रहते हैं वे सब कार्य हिंसामय होते हैं।"

आचरण की पवित्रता

व्रत, देव-दर्शन आदि जैसे धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा अपनी वासनाओं पर विजय प्राप्त करने के बदले हमने इन्हें अपने सामाजिक पद-मर्यादा के प्रदर्शन का साधन बना लिया है। इस ओर बहनों का ध्यान आकृष्ट करते हुए आप लिखती हैं, "प्रायः देखा जाता है कि बहनें सुन्दर से सुन्दर रेशमी साड़ियाँ पहनकर मन्दिरों में जाती हैं और वहाँ नाना प्रकार की घरेलू चर्चाएँ किया करती हैं। शास्त्र सुनने के बहाने वे भोजन और घरेलू व्यवस्था सम्बन्धी बातें ही किया करती हैं तथा दिखावे के लिए रोगवर्धक वस्त्राभूषणों को धारण कर अपना महत्त्व प्रकट करती हैं। आजकल दिखावे की प्रवृत्ति अधिक चल गई है, महिलाएँ दिखावे के लिए व्रत उपवास अधिक करती हैं, वे अपनी भावनाओं के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ऊपर विचार नहीं करती हैं। व्रत के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन करना तो अत्यावश्यक है। जब तक वासनाओं को नहीं जीता जायगा, आत्मा का विकास नहीं हो सकता।"

नारी शक्ति - जागरण का उद्घोष

स्त्रियाँ अबला के नाम से प्रसिद्ध हैं। ऐसा माना जाता है कि वे अपनी रक्षा करने के निमित सर्वथा अनुपयुक्त हैं तथा उनकी रक्षा का भार पुरुष-वर्ग के कन्धों पर रहता है। यह विचार-परम्परा स्त्री-समाज की अधोगति के लिए कम जिम्मेवार नहीं है। देश-विभाजन का प्रश्न लेकर पाकिस्तान में स्त्रियों पर जो अमानुषिक अत्याचार हुए उससे इस विचार-परम्परा की जड़ हिल गई। माँश्री ने लिखा : "पाकिस्तान में होनेवाले अत्याचारों को सुनकर आँखों में खून उतर आता है; प्रतिशोध की भावना जागृत हो जाती है, किन्तु विवेक और संयम आकर शांत रहने की प्रेरणा करते हैं। हमें इस सम्बन्ध में विशेष नहीं कहना है, हम सिर्फ महिलाओं को जागृत करना चाहती हैं। हमारा लक्ष्य यह है कि पाकिस्तान में नारी जाति के ऊपर जो अमानुषिक अत्याचार हुए हैं, उनसे भारत की नारियाँ कुछ सीखें। अब तक हम नारी को अपनी रक्षा के लिए पति, कुटुम्ब, पुत्र, सरकार आदि का भरोसा था, पर आज इस युग में नारी की रक्षा कोई नहीं कर सकता है, नारी को अपनी रक्षा स्वयं करनी होगी। इसके लिए महिलाओं में निर्भयता की भावना आनी आवश्यक है। शीलव्रत पर दृढ़ आस्था भी होनी चाहिए। भीरुता और कायरता को छोड़ना होगा।"

दायित्व का अवबोध

पुरुषार्थ चतुष्टय (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) की सिद्धि के लिए वैवाहिक जीवन एक आवश्यक वस्तु है। पर आज वैवाहिक प्रश्न जटिल से जटिलतर हुए जाते हैं। भिन्न आदर्श भिन्न दृष्टिकोण और भिन्न स्वार्थ वैवाहिक जीवन को निरानन्द बनाते चले जा रहे हैं। विवाह जिस पुनीत आदर्श पर आधारित होकर सुख को देनेवाला था वह आज दुरादर्श पर आधारित हो दु:ख का कारण बन रहा है। इन प्रश्नों पर आपके विचार विशद और सुलझे हुए हैं।

"यद्यपि हमारी भारतीय संस्कृति में विवाह प्रथा को अत्यन्त आवश्यक माना गया है। इसे केवल दो शरीरों का बन्धन नहीं माना है, किन्तु जीवन भर के लिए दो आत्माओं का सम्मिलन माना है।" वर्तमान व्यवस्था की आलोचना करते हुए आप लिखती हैं, "पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति के प्रभाव से अब नारियाँ भी अपना जीवन-साथी स्वयं ढूँढती हैं तथा कॉलेज में अध्ययन के साथ ही उनका प्रणय-बन्धन आरम्भ हो जाता है। कहीं-कहीं तो इन प्रणय- बन्धनों के बड़े भयंकर परिणाम देखे गए हैं।" अपने कथन की पुष्टि में आपने सन् 1947 की रिपोर्ट का हवाला दिया है। जिसके अनुसार उस वर्ष विलायत में 4 लाख विवाह तथा पचास हजार तलाक हुए अर्थात् विवाह करनेवालों में आठवाँ भाग उनलोगों का था जिनके विवाह के मधुर स्वप्न टूट चुके थे।

हिन्दू कोड बिल के सिलसिले में आप लिखतीं हैं :- "विदेशी महिलाओं में तलाक के जितने केस हैं उनमें प्राय: सभी में या तो नारी को दुराचारिणी होने से पुरुष तलाक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देता है या पुरुष के दुराचारी होने से नारी तलाक देती है। जहाँ सदाचार, नैतिकता है वहाँ तलाक का सवाल ही नहीं उठता। भले ही कुछ नारियाँ बहकावे में आकर तलाक का समर्थन करें, किन्तु उन्हें इसके द्वारा सुख नहीं हो सकता।"

समाज निर्माण में नारी की भूमिका

स्त्री-जगत् में समानाधिकार की माँग का आन्दोलन दिनोंदिन जोर पकड़ रहा है। कतिपय स्वयंभू महिला नेताओं ने यह आवाज बुलन्द की है कि पुरुषों की भाँति महिलाओं को भी समान रूप से सामाजिक अधिकार प्राप्त होने चाहिये। प्राचीन लोकोपयोगी आदर्शों की अनुयायिनी होने के नाते आपको समानाधिकार की माँग समीचीन नहीं जान पड़ती।

"समाज-निर्माण में स्त्री और पुरुष इन दोनों की पृथक्-पृथक् सत्ता नहीं है, दोनों की शक्तियाँ संगठित और समन्वित होकर प्रगतिशील समाज का निर्माण करती हैं। महिला वर्ग की ओर से समानाधिकार की माँग न होकर यह होनी चाहिए कि उनके समान पुरुष भी जीवनव्यापी बन्धन के प्रति वफादार बनें, संयुक्त जीवन-यापन करें, विवाहित जीवन के दायित्व को कुशलतापूर्वक अपनाएँ। एक स्त्री की मृत्यु के बाद दूसरी शादी न करें और आजन्म उसी के प्रेम में तल्लीन रहें, अन्य को प्रेमार्पण न करें।

बहनें समानाधिकार प्राप्त भी कर लें तो भी वे अपने जीवन को सत्य और अहिंसामय नहीं बना सकतीं, क्योंकि अधिकार और शक्ति शरीर से सम्बद्ध है, आत्मा या हृदय से नहीं। पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रेममय, निष्कपट, सदाचारयुक्त जीवन की आवश्यकता है। इसी से जीवन का नैतिक विकास होता है और समाज शक्तिशाली बनता है। अतएव बहनों को सर्वप्रथम अपने जीवन को सत्य और अहिंसा की कसौटी पर कसने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे उनको समस्त अधिकार उन्हें प्राप्त हो जायेंगे।"

अन्धविश्वास और भ्रम से उबरें

भ्रम अन्धविश्वास और कुरीतियों पर अपने अनेक सम्पादकीय लेखों में मूलोच्छेद के लिए आपने प्रहार किया है।

" हम प्राय: देखती हैं कि बहनें बच्चों के पालन एवं अन्य दु:ख विपत्ति के समय में भिन्न-भिन्न प्रकार की मनौतियाँ मानती हैं; वे कहा करती हैं कि इस बार बबुआ अच्छा हो गया तो भगवान् महावीर को छत्र चढ़ायेंगे। क्या यह सम्यक्त्व है?

कुछ बहनें बच्चों को इस मिथ्या कल्पना के वश बाहर नहीं निकालती हैं कि उसे नजर लग जायगी या भूत-प्रेत की बाधा सतायेगी। यह कल्पना भी सम्यकत्व का बाध क है। क्योंकि जो कर्मों का फल मिलने वाला है, उसे कोई नहीं रोक सकता। इसके लिए मिथ्या कल्पना को मान बैठना सिवाय मूर्खता के और क्या हो सकता है?"

"आज नारी की अनेक समस्याओं में फैशन की भी एक समस्या है। आज नई-नई डिजाइन के फैशनेबुल गहने वस्त्र एवं अन्य भोगोपभोग की सामग्री की मांग नारी समाज की रहती है। यदि पति महाशय की आमदनी कम हो या और किसी कारण से वह उनकी फरमायशों को पूरा न कर सके तो गृहस्थी का सारा आनन्द किरकिरा हो जाता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है।"

सौन्दर्य को हम बुरा नहीं मानतीं। किन्तु सौन्दर्य की प्राप्ति फैशन से नहीं हो सकती। अधिकांश रोग भी इसी फैशन से जन्म ग्रहण करते हैं। अतएव नारियों को फैशन का व्यामोह अवश्य छोड़ देना चाहिए, इससे धन और स्वास्थ्य दोनों की रक्षा होगी।"

"सुन्दरता बाह्य साधनों से प्राप्त नहीं की जा सकती है इसके लिए तो पहले हृदय को स्वच्छ करना होता है। यद्यपि सुन्दर आकृति, गौर वर्ण, स्वस्थ शरीर, प्रभावशाली मुखकमल और सुडौल अंग-प्रत्यंग बाह्य सुन्दरता के सूचक माने गए हैं, किन्तु यह बाह्य सुन्दरता अन्तरंग सुन्दरता के बिना कभी भी शोभा नहीं प्राप्त कर सकती है। नारी का बहिरंग जितना सुन्दर हो अन्तरंग भी उतना ही सुन्दर होना चाहिए। प्राकृतिक साधनों का सदुपयोग करने से सौन्दर्य की वृद्धि होती है। ब्रह्मचर्य एक ऐसी साधना है जिसके द्वारा सौन्दर्य की बड़ी भारी वृद्धि की जा सकती है।

नारी-जगत् की समस्याओं तथा उनके समाधान के लिए वे कितना सचेष्ट हैं। स्त्रियों से सम्बन्ध रखनेवाला शायद ही कोई प्रश्न होगा जिस पर आपकी लेखनी मौन हो। सम्पादकीय के अतिक्ति इस आदर्श पत्रिका में ज्ञान-संवर्धन तथा रुचिकारक पाठ्य सामग्री की बहुलता रहती है। सद्भावनाओं के उद्रेक के लिए इसमें सुन्दर कहानी और कविताएँ प्रकाशित होती हैं। समूची पत्रिका में कहीं भी वासना का पुट नहीं मिलेगा। सम्पादिका ने स्वयं स्त्रीरत्न राजुल की कहानी लिखकर एक सुन्दर आदर्श उपस्थित किया है। इस पत्रिका की एक यह भी विशेषता है कि स्त्री-संबंधी किसी विवादग्रस्त विषय पर लेखों को आमंत्रित करती है और सर्वश्रेष्ठ रचना पर पुरस्कार देती है। फलत: लेखिकाओं में परिश्रम करके लिखने की भावना जाग्रत होती है और पाठिकाओं को भी ठोस सामग्री मिल जाती है। सम्पादिका इन विवादग्रस्त विषयों पर उभय पक्ष के गुण दोषों पर प्रकाश डालती हैं एवं पक्षों के सारभूत गुणों को सामने रखकर कल्याण का मार्ग दिखाती हैं। 'नारी तितली बने या मधुमक्खी' इन्हीं विषयों में से एक है। कुछ लेखिकाएँ तितली के और कुछ मधुमक्खी के पक्ष में थीं। उभय पक्ष के विवादों को पढ़ चुकने पर आप अपना निम्नलिखित निर्णय देती हैं- "केवल भौतिक उन्नति का नाम उन्नति नहीं है, किन्तु आत्मिक गुणों की उन्नति का नाम उन्नति है। अत: जिन बहनों ने भौतिकवाद को मद्देनजर रखकर नारी को तितली बनने के लिए जोर दिया है, ठीक नहीं है क्योंकि तितली नारी से समाज का विकास नहीं हो सकता है तथा जो बहनें मधुमक्खी रूपी नारी को समाज की सहायिका समझती हैं, वह सोलह आना सत्य नहीं हैं, क्योंकि मधुमक्खी के समान गन्दी नारी समाजोत्थान कदापि नहीं कर सकती तथा उसका जहरीली होना भी समाज को हितकर नहीं होता। अतएव नारी को दोनों से कुछ गुण संचित कर एक तृतीय रूप बनाने की आवश्यकता है।

(ब्र० पं० चन्दाबाई अभिनन्दन ग्रंथ में प्रकाशित लेख का सम्पादित अंश)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन बाला विश्राम की विशिष्ट स्नातिकाएँ

जैन बाला विश्राम जागृति का एक अद्वितीय प्रतीक है । इसकी स्थापना 1921 में उस विषम परिस्थिति में हुई जब देश में हिन्दु और अंग्रजों की अपनी सत्ता कायम करने हेतु संघर्ष छिड़ा था । महिलाएँ अशिक्षित थीं । वह अपनी नारीत्व गुणों, कर्त्तव्यों से शून्य थीं । नारी जाति को उन्मुक्त वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने का कर्त्तव्यभान माँश्री चन्दाबाई द्वारा हुआ ।

जैन बाला विश्राम शहर के चहल पहलमयी कोलाहल से दूर है । प्रकृति का इतना सुखद वातावरण यहाँ देखने में आता है, वह अन्यत्र नहीं । सुन्दर-सुन्दर तरह-तरह के पक्षियों का कलरव: वैर विरोधी जीवों का स्वतंत्र विचरण तरह-तरह के फल फूलों के वृक्ष इस बात के साक्षी हैं कि माँश्री को अध्यात्म से तो प्रेम था ही साथ ही साथ जीवजन्तु प्रकृति सब उनकी साधना की अनुगामिनि थी । सत्यं शिवं सुन्दरं का सहज रूप हमें यहाँ दिव्यदर्शन के रूप में प्राप्त होता है । जैन बाला विश्राम और माँश्री की साधुता, आध्यात्मिकता, सौजन्यता वैराग्यता के कारण यह आरा नगर आज तपों तीर्थभूमि बन गया है । इस संस्था से हजारों बहनें सुयोग्यता प्राप्त करके देश के कोने-कोने में यहाँ तक कि मारिशस और कैनाडा में भी अपनी सेवाएँ प्रदान करके संस्था के नाम को रोशन कर रही हैं । इस संस्था में सर्व प्रथम शिक्षादान माँश्री चन्दाबाई जी द्वारा दिया गया । वे ही इसकी आदिगुरू के रूप में पूज्य हैं । इस संस्था से कितनी स्नातिकाएँ आर्यिक के पदों पर सुशोभित हैं, कितनी ऊँची ऊँची सरकारी नौकरियों में प्रतिष्ठित पद पर सुशोभित हैं । यहाँ कतिपय विशिष्ट स्नातिकाओं का परिचय प्रस्तुत है ।

महातपस्विनी विदुषी आर्यिका विजयमती जी

अल्पवय में बालिका सरस्वती देवी बाला विश्राम में राजस्थान की गौरवमयी भूमि कामां से आयीं । यहाँ साहित्यरत्न बी0 ए0 में उच्च योग्यता प्राप्त की । अध्यात्म मार्ग की ओर बचपन से ही विशेष झुकाव था । रत्नत्रय की सजीव प्रतिमा ने पूज्य माँश्री की छत्र छाया में पढ़ा और फिर यही विशेष योग्यता के साथ 18 वर्षों तक अध्यापन कार्य भी किया। आपने संस्था की सेवा की । जैन महिलादर्श की उपसम्पादिका का कार्य भी वर्षों संभाला । पूज्य माँश्री चन्दाबाई जी को आपने आचार्यश्री कुन्थुसागर जी महाराज के साथ आर्यिक व्रत देकर पीछी कमण्डल दिया तथा समाधिमरण सम्पन्न कराया ऐसे दुर्लभ सौभाग्य दोनों के लिए अमूल्य निधि है । आप इतनी कोमल नारी आज इतनी कठोर पथ की पथिक बनीं, सब धर्म की महिमा का प्रताप है ।

साध्वी जिनवाणी भक्ता आर्यिका सिद्धमती जी

आप गृहस्थावस्था की सोनाबाई थी । आपने जैन बाला विश्राम से शिक्षा दीक्षा लीं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपने नारी जीवन को कठोर आर्यिक पद के व्रतों को लेकर सार्थक बना लिया । आपने अनेक जगह अध्यापन का कार्य किया । संस्था की शुभ चिन्तिका माता जी सोनाबाई से सिद्धगति की पथिक बन गयीं । स्वभाव में सरल, छलप्रपंचों से दूर, अध्यन की ओर विशेष झुकाव रखने वाली इस गौरवमयी मूर्त्ति में नारीतत्व गुणों की गरिमा कूट-कूट कर भरी थी । आपके प्रवचनों में वहुत सारयुक्त बातें मिलती थी । एक बार आश्रम में दिये उनके प्रवचन थे इच्छाएँ ही मोह है और मोह सबसे बड़ा कर्म है । इसको उत्कृष्ट आयु का बँध सत्तर कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है । इससे अनन्तानुबन्धी कषाय का ही बन्ध होता है । अत: इससे छूटने का उपाय है कि साम्यक्त्व के आलोक से जीवन को आलोकित करो ।

आर्यिका परम विदुषी सौम्यमूर्त्ति आदिमति जी

प्रकृत्याशान्त सुशील परिणामों वाली स्वाध्याय प्रेमिणि आर्यिक श्री आदिमति जी गृहस्थावस्था की अंगूरीबाई अजमेर की । वास्तव में अपनी मिष्ठ वाणी और सदाचार से अंगुर की लता के समान उसके प्रिय स्वाद के समान वे बड़ी मीठी-मीठी थीं । आप संस्था की गौरवमयी शिखा हैं, जिनके प्रकाश से हमें भी सत्यज्ञान का आलोक मिलता है । आप महा विवेकी मित्तव्ययी, मृदुभाषी प्रकृत्या कोमल हैं । आपने कम उम्र में ही इस असिधारा तुल्य पद को ग्रहण करके यह बतला दिया कि नारी कोमल नहीं है । आपकी आत्मा में धर्मवृक्ष बढ़ रहा था, संसार को निस्सार समझा धर्मवृक्ष की शीतल सघन-सुखद छाया में स्वपर को रखना चाहा, घर के मोह बन्धन को मकड़ी का जाला मिथ्यात्व समझकर उसका त्याग किया और निकल गयी वीर रमणी भूले भटके धर्मभृष्ट जनों को सच्चा ज्ञान पथ दर्शानें ।

वैराग्यता सहिष्णुता की प्रतिमूर्त्ति आर्यिका आदिमती जी

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इस विभुति ने इस संस्था में आकर बर्षों विद्योपार्जन किया राजस्थान कामां की वीरांगना मैनाबाई आज आर्यिका पद पर सुशोभित हैं और आचार्यश्री विमलसागर जी के संघ में इन्होंने विद्याध्ययन के साथ-साथ माँश्री की, संस्था की तन मन से सेवा की । कामाँ में हुई पंचकल्याणक प्रतिष्ठोत्सव के समय जब हमलोग महिला परिषद् के अधिवेशन में गये तब मौनाबाई की वैयावृत्ति सेवा परायणता प्रशंसनीय थी । वे अब आत्मोत्थान हेतु इन्द्रिय जन्य सुखों की अनित्यता पर विचार करके जैनेश्वरी आर्यिका पद पर तप त्याग से अपनी आत्मा की उज्जवलता करके कर्मों के जाल को काटने में तत्पर हैं ।

आर्यिका विमलप्रभा माता जी

पूर्व नाम आदेश जैन, पौत्री बा० अनन्त कुमार जैन, आरा आपने श्री जैन बाला विश्राम में कक्षा 5 से कक्षा 11 तक की शिक्षा प्राप्त की । साथ ही साथ धर्म में जीव तक की परीक्षा दी है । आप आश्रम की उदाहरणीय छात्रा रहीं तथा आश्रम की एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सफल शिक्षिका भी रहीं हैं । आश्रम में आपने 5 वर्ष तक संस्कृत शिक्षिका के पद पर हाई स्कूल में योग्यतापूर्वक अध्यापन कार्य किया है । तत्पश्चात् आप आर्यिका विजयमती माता जी के संघ में दीक्षिता हुईं ।

वन्दनीया क्षुल्लिका विजयश्री जी

गृहस्थ नाम शान्ति देवी, बांदा निवासिनी अध्ययनशीला, सेवाव्रती थी। इनकी हंसमुख प्रकृति, स्वभाव की सरल शान्ति देवी यथा नाम तथा गुणवाली महिला थी । इन्होंने संस्था में रहकर लौकिक शिक्षा के साथ उच्च सैद्धान्तिक धर्म ग्रन्थों का अध्ययन मनन ही नहीं किया अपितु उसके सिद्धांतों को जीवन में उतारकर अपने हाथों में पीछे कमण्डलू लेकर जिनवाणी की सतत् साधना में तल्लीन हो गई इस प्रकार की विदुषी संस्था से शिक्षा ज्ञान लेकर पंचम प्रतिमा, सप्तम् प्रतिमा आदि के व्रतों को लेकर संयमी जीवन बिताते हुए देश समाज के नव निर्माण में तन मन से योग दान दे रही हैं ।

श्राविका शिरोमणि श्रीमती स्व0 रूपवती जी किरण

बचपन में ही जब 7-8 वर्ष की नन्ही बालिका थी तब आश्रम में आयी । कवित्व शक्ति इसमें बचपन से फूट पड़ी थी । कोई भी कार्य करती कुछ-कुछ शब्दों की तुकबन्दियाँ बनाकर गुनगुनाया करती । संस्था में होने वाली साप्ताहिक बालाहितकारिणी सभा में यह बाला स्वयं लिखे निबन्धों में 4-5 वर्षों तक अध्ययन करके इस महिला ने योग्यता पायी वह उनके नाटकों, लेखों, भाषणों, कविताओं में हम देखते हैं, अनुभव करते हैं । विद्वता की वे पिटारी थीं । व कविताओं को बोला करतीं । भाषा में मधुरता और भाषण में ओज उनके शब्दों में था । संस्था इस प्रकार बहन लक्ष्मीमती जी, कारकल, कैलाशवती जी, सरधना, वागदेवी जी, मूडबिद्री, प्रभावती जी, बीड़, श्री जयवन्ती देवी, दिल्ली, श्री प्रभावती देवी, गुणमाला देवी, भुवनेश्वर, श्रीमती कैलाशवती, ललितपुर, श्रीमती चन्द्रमुखी देवी, डिब्रूगढ़, सूरजमुखी देवी, बड़ौत, श्री शान्ति देवी, मुज्जफरनगर, डॉ श्रीमती रमा जैन, छतरपुर, श्रीमती लीलावती, पोर्ट लुई, मॉरिशस, सुशील देवी, जबलपुर, सुलोचना देवी, सिमगा, शान्ति देवी, बीना, मालती जैन, मैनपुरी, सुश्री आदेश जैन, आरा, श्री ज्ञान कुमारी जी, लखनऊ, सरोज जैन, लखनऊ, श्री चन्द्र कुमारी जी, फिरोजाबाद, श्री प्रभा जी, दिल्ली, जया जैन, दिल्ली, सुषमा जैन, बरेली, ज्ञानवती जी, त्रिशला देवी जी, केसरबाई जी, आदि अनेकानेक परम वैदुष्यता को प्राप्त बहनें अपने तन-मन-धन से जनमानस का कल्याण करते हुए संस्था की पूज्या माँश्री की यशः कीर्ति को लहरा रही हैं । उन्होंने माँश्री के जीवन से संस्था जो पाया उसे जीवन की अमूल्य वस्तु समझ ग्रहण किया । संसर्ग से ही इन्सान उँचा या नीचा बनता है ।

काचः काञ्चन संसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम् ।
यथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम् ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महिलारत्न, वैदुष्यता की प्रतिमूर्ति
माँश्री ब्रजबाला देवी

❑ सुश्री शशिप्रभा 'शशांक'

ब्रजबाला जी माँश्री चन्दाबाई की द्वितीय सहोदर अनुजा थीं। वैधव्य के बाद अपनी नन्हीं-सी बिटिया को साथ लिए वो अपनी अग्रजा के पास आरा आई तो, बाला विश्राम की ही होकर रह गई । भारत के सांस्कृतिक इतिहास में "द्वौ सुपर्णौ सयुजौ सखया समानं वृक्षं शिश्रिये" का आर्ष वचन इस मातृद्वय का अद्वितीय उदाहरण है । माँश्री चन्दाबाई जी के सन् 1977 में समाधिमरण के बाद वे बहुत एकांकी महसूस करती थीं फिर भी उन्होंने अग्रजा के सभी दायित्व सम्भाल लिए ।

माँश्री चन्दाबाई जी के समाधिमरण के बाद 1978 से ब्रजबाला जी श्री जैन बाला विश्राम ट्रस्ट समिति की अधिष्ठात्री एवं संचालिका तथा श्री जैन बाला विश्राम मध्य विद्यालय की दिनांक 8 सितम्बर 1992 तक समाधिमरण अध्यक्षा रहीं । (सम्पादक)

ब्र0 ब्रजबाला जी माँश्री चन्दाबाई की द्वितीय सहोदरा अनुजा थीं । श्रावण मास,विक्रम संवत् 1954 में जनमीं । शैशव और बाल्यकाल वृन्दावन में बीता । 14 वर्ष की उम्र में आगरा के बाबू मोतीलाल के साथ विवाह कर दिया गया ।

ब्रजबाला जी का पारिवारिक जीवन सुख-शान्ति से बीतने लगा । लगभग दो वर्ष बाद उनकी गोद भरी । प्यारी सी कन्या-रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नामकरण 'शीला' किया गया ।

शीला दो वर्ष की भी नहीं हुई थी कि पिता मोतीलाल असाध्य बीमार हुए और चल बसे । सब असहाय रह गये ।

ब्रजबाला जी नन्हीं सी बालिका 'शीला' को लेकर अपनी अग्रजा चन्दाबाई जी के पास आरा आ गयीं । माँश्री चन्दाबाई जी ने वैधव्य की पीड़ा स्वयं झेलती थीं और जीवन का रास्ता स्वयं बनाया था । उन्होंने अपनी अनुजा को गले से लगा लिया । ढाढ़स बँधाया और जीवन को शिक्षा की ओर मोड़ दिया ।

ब्रजबाला जी ने आरा में रहकर जैन धर्म, दर्शन, संस्कृत आदि का अध्ययन किया । उच्च शिक्षा के लिए उनकी अग्रजा ने उन्हें कलकत्ता भेज दिया । वहाँ उन्होंने कॉलेज में अंग्रेजी तथा बांगला का अच्छा अध्ययन किया और आरा लौट कर चन्दाबाई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जी के कार्यों में सहभागिनी बन गयीं । शीला का लखनऊ में विवाह कर दिया ।

नियति की क्रूरता जिसने झेली नहीं वो क्या जानता है । छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर दामाद चल बसे । ब्रजबाला जी ने सब बच्चों को अपने सान्निध्य में रखकर पढ़ाया-लिखाया और योग्य बनाकर पारिवारिक जीवन में पहुँचाया ।

अग्रजा चन्दाबाई जी के सान्निध्य से ब्रजवाला जी के जीवन को नई दिशा, नई ऊर्जस्विता और नई सामर्थ्य प्राप्त हुई । वे उनके प्रत्येक कार्य की सहभागिनि बन गयीं । अहर्निश साथ रहने, साथ कार्य करने और समान दिशा में चिन्तन करने के प्रतिफल दोनों का कर्त्तव्य पथ और अधिक सुगम हो गया । दोनों एकाकार हो गयीं। माँश्री चन्दाबाई ने जो कार्य आरम्भ किये थे, वे दुगुनी गति से आगे बढ़ने लगे ।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भूमिका

माँश्री चन्दाबाई जी ने कस्तूरबा और महात्मा गांधी को सन् 1926 में बाला विश्राम में लाकर ठहराया था और तभी से 'आश्रम' राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का सहभागी बन गया था । खादी पहनना, चरखा चलाना, विदेशी वस्त्रों -सामग्रीयों का बहिष्कार तथा असहयोग आन्दोलन में भाग लेना । बा और बापू के आश्रम में आगमन की स्मृति में एक प्रार्थना भवन बना । वहाँ चरखे चलते,हाथ करघे चलते, आश्रम की छात्राएँ, शिक्षिकाएँ प्रशिक्षण लेतीं । ब्रजबाला जी की इस सब में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही । अंग्रेजों को आश्रम में प्रवेश करने का दृढ़ता के साथ प्रतिरोध करती थीं ।

सेवा के साथ साधना

लगभग 32 वर्ष की आयु में ब्रजबाला जी ने आचार्य महावीर कीर्ति जी से पंचम प्रतिमा के व्रत ले लिये । आश्रम की सेवा के साथ वे आध्यात्मिक साधना के पथ पर बढ़ चलीं ।

पूज्या माँश्री चन्दाबाई जी के सफल निर्देशन में रह कर आपने देश समाज की तन-मन-धन से जो सेवाएँ प्रदान की हैं, वह अनिर्वचनीय है । परमार्थ सेवा में इनकी तन्मयता देखी जाती थी । एक बार मेरे दाहिने हाथ की अँगुली में विषैली लाल बर्रे के काटने से भयंकर घाव-सा हो गया । हाथ फूलकर गुब्बारा, अंगुली का रंग पीला पड़ गया, असीम वेदना हो रही थी । जैन महिलादर्श के कैटर का संशोधन कार्य, प्रूफ रीडिंग, पत्राचार का काम माँश्री के आदेशानुसार मुझे ही करना पड़ता था । परेशानी महसूस हुई । डॉक्टरों ने ऑपरेशन कराने की सलाह दी, पर माँश्री ब्रजबाला ने मुझे धैर्य बँधाते हुए कहा-बेटी घबड़ाने-रोने से काम नहीं चलेगा । मैं तुम्हारे हाथ को ठीक कर दूँगी, कहीं आने-जाने की जरूरत नहीं है । कल सुबह मंदिरजी की पूजन प्रक्षालन के पश्चात् आना । बात उनकी सिर आँखों पर, दूसरे दिन प्रात:काल भोजन के पूर्व उन्होंने अपने सामान्य कैंची ब्लेड को गरम करके हल्के से चीरा लगाकर, उससे हौले-हौले मवाद निकाली और अच्छे विशेषज्ञ सर्जन का कार्य कर दिखाया है । उसे देखकर मैं क्या सभी आश्चर्यान्वित थे । 3-4 दिनों तक दवा ड्रेसिंग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करके हाथ ठीक कर दिया । इसी तरह कान्ता नामक दिल्ली की लड़की को हार्ट कम्पन्न होने और अधिक बेचैन रहने से दो दिनों तक बराबर पुराने गाय के घी में घर की बनी औषधि मिलाकर जो हल्के-हल्के हार्ट में रात-दिन करके लगाया, वह लड़की चंगी हो गई । ऐसे कई छात्राओं, कर्मचारियों की सेवा में माँश्री हमेशा तत्पर रही हैं। लगता था घर की यह डॉक्टर विशेषज्ञा हैं । सेवाधर्म,आत्मत्याग, अपूर्व आत्मिक बल, साहस ,धार्मिक क्रिया-कलापों में दृढ़ता, स्वाध्याय में किंचित् भी प्रमाद नहीं, ऐसी थी माँश्री ब्रजबाला देवी ।

सम्य हित मिष्ट वाणी, रसना में अमृत भरे ।
शान्ति धीरज धर्म बल कारूण्यता उर से बहे ।।
सन्मार्ग दर्शिका, सदुपदेश की आजस्र धारा ।
दीन दरिद्रों की सेवा में, जीवन लगा दिया सारा ।

आहार, चर्चा-दिनचर्या

माँश्री चौके का शोधपूर्ण कार्य स्वयं हाथों से करतीं । किसी के उपर कार्य छोड़ना तो वे जानती ही नहीं थीं । कितने पत्राचार करतीं, संस्था का हिसाब-किताब देखतीं कभी-कभार हँसी में कह देतीं, 'किसी जनम में बेटी मुनीमी का काम किया है, तभी यह सब देखना पड़ता है ।' कभी दिन में उनको लेटते-सोते नहीं देखा ।

महिला परिषद् का मन्त्रितत्व

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् की वर्षों तक मंत्राणी का कार्य आपने बड़ी कुशलता के साथ किया । इतने गहन दायित्वों का भार अथक श्रम और आत्मशक्ति की ओजस्विता के समय इनका वक्तव्य बड़ा ही ह्रदयस्पर्शी होता था । प्रति प्रस्ताव पर ये जब विवेचन-विश्लेषण करतीं तब सभी उन्मुक्त कण्ठ से प्रस्तावों को पारित करने और अमल में लाने की स्वीकृति पर हाथ उठा देते । मुझे आपके साथ 4-5 अधिवेशनों में जाने का और कार्यों के सम्पादन का अच्छा निर्देशन पाठ मिला है, यही कारण है कि कभी-कभी माँश्री द्वय की अस्वस्थतावश मैंने स्वयं जाकर अधिवेशन किसी धार्मिक विशेष समारोहों में दो-दो दिन तक सम्पन्न कराए हैं और अतीव सफलता भी मिली है ।

अपनी बेटी सुशीला देवी का लखनऊ में विवाह के पश्चात् छोटी-छोटी सन्तानों को छोड़कर दामादश्री स्वर्गवासी हो गए। सबकी शादी-विवाह करके गृहस्थ जीवन सुसम्पन्न कर दिया । सबको अपने सान्निध्य में रखकर पढ़ाया योग्य बनाया । आज वे अपने "नन्ना" (नानीजी) के सदैव ऋणी हैं ।

माँश्री में थी अनोखी शक्ति, जिनमें थी कर्त्तव्य की भक्ति ।
प्रेम नेह का अतुल निवास, ममतामयी की रहीं सुवाष ।।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संकट समय नहीं घबड़ायी, मर्यादित जीवन अपनायी ।
पति पुत्र पर जन के हित में, तन मन धन अर्पित कर पायी ।।

जीवन की चतुर्थावस्था में अपनी बड़ी जीजी बहन चन्दाबाई जी का समाधिमरण होने से आपको विशेष वियोग की अनुभूति हुई । वर्षों-वर्षों तक धूप-छाँव की तरह रहने वाली ये चारित्रशिरोमणी महिलाएँ अन्य के लिए महानतम प्रेरणा की स्रोत रही हैं । उनकी अनुपमेय अन्त: बाह्य सेवाओं का कौन मूल्यांकन कर सकता है । समस्त महिला समाज, संस्था की सुशिक्षिता हजारों स्नातिकाएँ आपलोगों की चिरऋणी हैं और रहेंगी।

समाधिमरण की कामना

अंत समय वृद्धावस्था में शरीर की क्षीणता बढ़ जाने और कमर के कुछ नीचे की हड्डी में चोट आ जाने से आप बाह्य रूप से पीड़ित तो दिखतीं, पर आत्मशक्ति धर्म-क्रियाओं में बराबर अद्भुत थीं । नित्य का स्वाध्याय पाठ करना, पूजन करना, शोध के वस्त्र पहनकर ही अल्पाहार लेना, पड़े-पड़े सबको अन्यान्य सद्कार्यों को करने कराने में सदा निर्देश देती रहतीं । मुझे हमेशा कहतीं, "बेटी, ध्यान रखना, मेरा समाधिमरण करा देना । धार्मिक पाठों का श्रवण कराती रहना । णमोकार महामंत्र सुनते-सुनते मेरे प्राणों का विसर्जन हो ।" मैंने कहा, "माँश्री आपके कहे अनुसार ही सब होगा, आप एकदम निश्चिन्त रहें ।" माँश्री को स्वयं का कुछ भान हो गया । मैं पटना में "कालाजार" जैसे भयंकर रोगग्रस्त होने से प्राईवेट कक्ष लेकर इलाज करा रही थी, तभी माँश्री ने मुझे याद करके बुलवाया। मैंने टैक्सी करवाकर भाद्रपद शुक्ला की नवमी को आकर उनके पास हमेशा अपने दु:ख को भूलकर बैठकर समाधिमरण, बारह भावनाओं का वाचन किया । उन्होंने संतोषपूर्वक मेरे सिर पर हाथ फेरा । आश्रमवासिनी छात्राएँ मिलकर णमोकार मंत्र का अखण्ड पाठ करने लगीं । अंत में होश हवाश की पूर्ण स्थिति में उनको आत्म संबोधित करके सब कुछ त्याग कराकर शुद्ध वस्त्रादि पहनाकर चटाई में नीचे लिटाकर ज्योंही उनको स्वयं का आभास हुआ, अन्य के साथ कंपकंपाते ओठों से णमोकार मंत्र ध्यान करते-करते प्राणान्त हो गया । उस दिन भाद्रपद शुक्ल द्वादशी थी । 8 सितम्बर 1992 इतना अच्छा मरण सद्गति का सम्यक् कारण बन गया । धन्य माँश्री धन्य-धन्य हैं तेरे जीवन की अकथ कहानी ।

श्रद्धा सुमन समर्पित करती हे जग माता सद् कल्याणी ।
शत् शत् नमन श्री माँ चरणों में, अमर हो गयी जिन की वाणी ।।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जय जयवन्ती

❑ डॉ0 गोकुलचन्द्र जैन

सुश्री जयवन्ती देवी माँश्री चन्दाबाई जी द्वारा सन् 1921 में संस्थापित 'श्री जैन बाला विश्राम' की उन प्रथम पाँच छात्राओं में प्रथम छात्रा हैं, जिनसे आश्रम प्रारम्भ हुआ। ऐसे सौभाग्य बड़े पुण्य से मिलते हैं।

जयवन्ती देवी बीसवीं शती के प्रसिद्ध विद्वान् एवं समाज सेवी श्री जुगल किशोर 'मुख्तार' की बहन थीं।

माँश्री चन्दाबाईजी ने 1921 में बालाश्रम प्रारम्भ करने के पूर्व सुश्री जयवन्ती देवी तथा उनकी बुआ गणमाला देवी को देवाश्रम में अपने साथ रखकर अध्ययन आरम्भ कराया। आश्रम एक वर्ष बाद स्थापित हुआ।

जयवन्ती जी बाला विश्राम में सन् 1923 तक रहीं। दिल्ली में माँश्री चन्दाबाई जी की प्रेरणा से सन् 1956 में दिगम्बर जैन महिलाश्रम प्रारम्भ हुआ, तब वे उसकी संचालिका बनीं और अत्यन्त कुशलता के साथ संचालन किया। वृद्धावस्था में भी अपनी मातृ-संस्था' श्री जैन बाला विश्राम'' तथा 'जैन महिलाश्रम' दिल्ली के लिए हृदय में सद्भावनाएँ संजोए हुए हैं।

श्री जैन बाला विश्राम के हीरक जयन्ती महोत्सव पर प्रकाशित स्मारिका में उनका एक अत्यन्त मार्मिक संस्मरण प्रकाशित हुआ था, उसे यहाँ अविकल पुन: प्रकाशित किया जा रहा है।

18 अक्टूबर 97 को दिल्ली के लाल मंदिर में आयोजित अमृत महोत्सव उत्सव के उपरान्त उसी दिन सुबोध कुमार जी सपत्नीक तथा अपनी पुत्री श्रीमती जया जैन को साथ लेकर दिल्ली के सुप्रसिद्ध जैन महिलाश्रम श्री जैन बाला विश्राम की प्रथम छात्रा जो कि महिलाश्रम में अत्यधिक अस्वस्थ अवस्था में पड़ी हुई थीं, उनके प्रति आदर प्रकट करने और उन्हे अमृत महोत्सव का प्रतीक ''रजत पदक'' प्रदान करने गए। रजत पदक पाकर वे प्रसन्नता से विभोर हो गईं और उनकी आँखों में आंसू आ गए। तत्पश्चात् उन्होंने आश्रम और पूज्या मांश्री के प्रति आदर प्रकट किया। उसके बाद उन्होंने इन तीनों लोगों को प्रेम-पूर्वक जलपान कराया और रजत पदक को माथे से लगाकर स्वीकार किया।

आ0 जयवन्ती जी ने बाबू सुबोध कुमार जैन को सम्बोधित अपने दिनांक 15. 07.96 के पत्र में उनके द्वारा, अपेक्षित कार्यक्रमों को अपनी अस्वस्थता के कारण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करने में असमर्थता व्यक्त की है । पत्र में हस्ताक्षर करने के पूर्व 'नालायक' जैसे शब्द के द्वारा अपनी मजबूरी व्यक्त की है । कृतज्ञता का ऐसा उदाहरण दुर्लभ है । .....

जैन महिलाश्रम
दरियागंज, दिल्ली
15.07.96

आदरणीय भाई साहब,

सादर जयजिनेन्द्र (अभिवादन)

आपका पत्र पाकर मन अति प्रफुल्लित हुआ । आपकी जो-जो योजनाएँ हैं वे अति प्रसंशनीय हैं । पूज्या माँश्री का जीवन समाजिक व धार्मिक कार्यों में ही लगा । उनके द्वारा महिलाओं का जितना उपकार-उद्धार हुआ वह वर्णनातीत है । उनकी यश पताका भारत में फहरा रही है ।

मैं तो साल भर से बीमार चल रहीं हूँ और पूर्णतया बिस्तर पर हूँ। गिरने से हड्डी टूट गई है, जो कभी ठीक नहीं हो सकती । अत: सर्वथा बेकार हो गयी हूँ । अत: कुछ भी करने योग्य नहीं हूँ । मैं आपका आदेश नहीं पाल सकीं, इसका बहुत अफसोस है, दुख है । यहाँ मेरा निजी कोई व्यक्ति नहीं है, जिससे कुछ करा सकूँ । बहुत व्यथित हूँ । अत: क्षमा प्रार्थिनी हूँ ।

आपके कोई सम्बन्धी इधर हैं, जो यहाँ के लोगों से सम्पर्क करें । जो-जो व्यक्ति इन कार्यों में सहयोग देने वाले थे, वे नहीं रहे । नये व्यक्तियों से परिचय नहीं है । मैं चलने योग्य होती तो सब कुछ कर सकती थी । मैं आपका आदेश पालन करने में असमर्थ हूँ, इसका बहुत दु:ख है । फिर भी कुछ प्रयत्न कर सकी तो अवश्य करूँगी ।

बहन शशि प्रभा जी से भी मैं क्षमा चाहती हूँ । मुझसे हाथ खराब होने से लिखा भी नहीं जाता ।

भवदीया
(नालायक) जयवन्ती

सेवा में,
श्री सुबोध कुमार जी जैन
देवाश्रम, महादेवा रोड,.
आरा (बिहार) 802301

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम और उसकी आदर्श क्रियाएँ

❑ जयवन्ती देवी जैन

यह संस्था मार्च सन् 1921 में धर्मकुञ्ज, धनुपुरा की विल्डिंग में स्थापित हुई थी। उस समय केवल पाँच छात्राएँ थीं जिनमें मैं, मेरी बुआजी (गुणमाला देवी), बुद्धिमती, कुन्ती देवी तथा सावित्री देवी थी।

इनमें से गुणमाला जी और कुन्ती देवी का श्रावकों के बारह व्रतों के पालन सहित णमोकार मंत्र जपते-जपते अब देहान्त हो चुका है। बुद्धिमती का भी निधन हो चुका है। मैं जयवन्ती श्री दिगम्बर जैन महिलाश्रम दिल्ली का सन् 1956 से संचालन सुचारु रुप से कर रही हूँ जो कि देहली में हुई माँश्री चन्दाबाई जी द्वारा दिगम्बर जैन महिला परिषद् के अधिवेशन में प्रस्तावानुसार स्थापित हुई थी इस समय की मंत्री सितारा सुन्दरी जी भी थीं। बाद में वे जैन बाला विश्राम में ही सुपरिन्टेन्डेन्ट के पद पर नियुक्त कर दी गई। अब उनका भी देहान्त हो चुका है। उन्होंने वहाँ काव्यतीर्थ गोमट्टसार आदि तक की शिक्षा प्राप्त की थीं। वे एक सुयोग्य महिला थीं सावित्री देवी वर्त्तमान में गार्हस्थ जीवन बिता रही हैं।

मेरी उपस्थिति तक आश्रम में 25-30 छात्राएँ सन् 23 तक हो गई थीं। उस समय संस्था में छात्राएँ निम्न रूप से अपनी जीवनचर्या यापन करती थीं। ♦

छात्राओं की दिनचर्या

प्रात: 5 बजे उठकर प्रार्थना करना तथा नित्यक्रियाओं से निवृत हो दर्शन पूजन सामयिक स्वाध्याय करके जलपान करना।

7.30 बजे से क्लास में जाना।

मध्याह्न भोजनोपरान्त एक घंटे विश्राम करना।

2 से 4 बजे तक सिलाई आदि सीखना।

4 से 5 बजे निजी आवश्यक कार्य करना।

5 से 6 बजे तक भोजन आदि से निवृत्त होना।

6 से 7 बजे तक मन्दिर में दर्शन-आरती एवं शास्त्र पढ़ना।

7 से 9 बजे तक अध्ययन।

9 बजे से रात्रि में शयन।

सर्वप्रथम श्री कृष्णा देवी जी अध्यापिका एवं श्री धनेन्द्र चन्द अध्यापक थे व श्रीमति कस्तूरीबाई जी सुपरिंटेन्डेंट थीं सौभाग्य से श्री वर्णी नेमीसागर जी (चारूकीर्तिजी

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

भट्टारक) भी यहाँ कुछ समय तक रहे उनसे विशारद धर्म की शिक्षा मिलती रही । साथ ही माँश्री भी समय-समय पर अपने सदुपदेशामृत से परिप्लावित करती थीं । इन दिनों साधारण लौकिक शिक्षा के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाता था। धार्मिक संस्कारों से सुसंस्कृत करना मुख्य ध्येय संस्था का था । फलतः कतिपय छात्राएँ प्रमेय कमल मार्तण्ड, गोमट्टसार जैसे महान् ग्रन्थों की परीक्षा में उत्तीर्ण होती थीं।

मैंने स्वयं 13 वर्ष की आयु में संस्कृत प्रथमा सेकेंड डिवीजन से पास की थी । सन् 1921 में कांग्रेस आन्दोलन जोरों पर होने से उस वर्ष परीक्षा न देकर अगले वर्ष दी थी ।

मेरे अध्यापक श्री राम सकल उपाध्याय एवं श्री शांतिराज शास्त्री (दक्षिण) थे । अन्य छात्राओं को भी काव्य व्याकरण आदि पढ़ाये जाते थे । प्रारम्भ में पाँचवीं कक्षा तक पढाई थी, फिर आठवीं तक चली, मैट्रीक की परीक्षा प्राइवेट दिलवायी जाती थी, बाद में उन्नति करते करते वर्त्तमान में इण्टर तक हो गई यह हमारे लिए गौरव की बात है । आरा शहर की तथा आसपास के गाँवों की लड़कियाँ भी आश्रम की बसों द्वारा यहाँ शिक्षा पाने आती हैं ।

पूज्या माँश्री केवल सुपरिंटेण्डेंट के ऊपर ही न छोड़ कर स्वयं छात्राओं की सुख सुविधा का विशेष ध्यान रखती थीं एवं श्रीमती ब्रजबालाजी भी उनकी देख-रेख करती थीं । उनकी आवश्यकताओं की फौरन पूर्ति करना, छात्राओं की रूग्णावस्था में परिचर्या एवं इलाज कराने में जरा भी कमी या विलम्ब नहीं होने देती थीं । अपने साथ पूजन कराती, समय-समय पर उत्तमोत्तम शिक्षाएँ देती रहती थीं । इन सभी की प्रगति में माँश्री का व उनकी बहन ब्रजवाला देवी का पूरा सहयोग था । इतना भार संभालते हुए भी माँजी निरन्तर धर्म ध्यान में रत रहती थीं । वैसे तो उन्होंने सातवीं प्रतिमा का व्रत ले रखी थीं, परन्तु आन्तरिक त्याग तो आर्यिकाओं जैसा था । अन्तिम समय तक अपनी धार्मिक क्रियाओं में फर्क नहीं आने दिया । इसके अतिरिक्त सभी सामाजिक कार्यों में भाग लेती थीं। काँग्रेस आन्दोलन के समय फौरन खद्दर के कपड़े पहनने शुरू कर दिये ।

कितनी ही सभाओं की अध्यक्षा बनीं । जगह-जगह शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया । कुरीतियों का निवारण किया जगह-जगह आश्रम पाठशालाएँ खुलवाईं, सभी को अपना सत्परामर्श देती रहीं । दीन दुखी मनुष्यों के सहायतार्थ सदैव तत्पर रहती थीं ।

गाँधी जी हमारे समय आश्रम में आए थे । उनका भव्य स्वागत किया गया। माँजी स्वयं स्टेशन लेने एवं पहुँचाने गई । चोटी के अन्य नेता, जैसे राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र बाबू,सुभाष चन्द्र बोस, नेहरू,जयप्रकाश नारायण आदि अनेकों ने आश्रम का निरीक्षण कर आश्रम के गति विधि की मुक्तकंठ से प्रशंसा की । प्रत्येक राष्ट्रीय नेता,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

त्यागीवर्ग एवं सभी गणमान्य विद्वानों ने अपने पदरज से आश्रम को पवित्र किया और हर प्रकार से प्रशंसा की।

हस्तकला उद्योग

यह उद्योग मेरे सामने साधारण ही था । दरी, निवार, कालीन और खड्डियों द्वारा कपड़ा बुनना हमलोगों को सिखाया जाता था ।

मैं केवल सन् 1923 तक ही रही थी । उस समय तक 25-30 छात्राएँ हो गई थीं । नानौता, जिला सहारनपुर में मेरा जन्म हुआ था । बचपन में ही माता पिता का देहान्त होने से दादी बुआ ने ही मेरा पालन पोषण किया । प्रारम्भिक शिक्षा भाई श्री पं0 जुगल किशोर जी मुख्तार के सान्निध्य में हुई । पत्नी के देहान्त हो जाने से उन्होंने मुझे व बुआ जी को पूज्या माँश्री के पास उनके घर कोठी पर ही (आश्रम एक साल बाद में खुला) पठनार्थ भेज दिया । पू0 माँश्री के प्रथम दर्शन में उनकी सौम्य मुद्रा एवं चेहरे पर अपूर्व तेज देखकर मैं तो चकित रह गयी । उन्होंने मुझे अपनी पुत्रीवत स्नेह से ओत प्रोत कर दिया । बड़ी लगन से पढाया । जहाँ जाती मुझे अपने साथ ले जाती थीं । माँश्री 'जैन महिलादर्श' पत्र की सम्पादिका थीं । मुझे भी लेख लिखने की प्रेरणा देती रहती थीं तथा मुझे इस पत्र की उपसंपादिका भी बना दिया था ।

मुझे शिक्षा प्रचार के लिये भी प्रेरित करती रहती थीं, फल स्वरूप मैंने भी जगह-जगह जाकर महिला परिषद् के माध्यम से शिक्षा का प्रचार किया । आगरा, झांसी, रॉयपुर, शामली आदि में परिषद् की शाखा स्थापित की तथा पाठशालाएं भी खुलवाई । तभी से मेरा मन इन्हीं सामाजिक कार्यों में बहुत लगा रहता है और सबके मना करने पर भी जैन महिलाश्रम की सेवा में आज तक लगी हुई हूँ ।

पहले माँ जी का विचार राजगीर जैसी पावन नगरी में आश्रम खोलने का था, परन्तु इनके परम सहायक श्री कुमार देवेन्द्र प्रसाद के देहान्त से तथा बाबू निर्मल कुमार जी और पू0 बुआजी नेमसुन्दर बीबी के परम आग्रह से आरा में ही आपको अपने विशाल बगीचे में ही आश्रम खोलना पड़ा । इस आश्रम ने अपने अल्प समय में ही महान् प्रगति की, यह सर्वविदित ही है ।

माँश्री की पवित्र आत्मा अत्यन्त सुख की भोक्ता हो और हम सबको उनका आशीर्वाद प्रगति पथ पर निरन्तर लगाए रहे, यही मेरी हार्दिक शुभ कामना है ।

नोट:- बाला विश्राम की हीरक जयन्ती उत्सव के समय श्रीमती प्रकाशवती देवी (धर्मपत्नि बाबू नेमिचन्द जैन और पुत्री श्रीमती नेमसुन्दरी देवी) ने घोषणा की थी कि वे भी बालाविश्राम की प्रथम छात्राओं के ग्रुप में एक थीं, तब से उनकी भी गिनती उस प्रथम ग्रुप में होने लगी है । - सुबोध कुमार जैन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एक समर्पित जीवन स्मृतिशेष सुश्री शशिप्रभा 'शशांक'

❑ डॉ0 गोकुलचन्द्र जैन

एक समर्पित जीवन का नाम है-शशिप्रभा 'शशांक' , शशि जी को यह शीर्षक प्रिय था । मध्य प्रदेश के सिवनी नगर में जनमीं सुश्री शशिप्रभा को पिता की मृत्यु के बाद बारह वर्ष की अल्पायु में ही श्रीमती सुन्दरबाई 'श्री जैन बाला विश्राम' में सन 1957 ई0 में ले आयीं । उनकी सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा और व्यक्तित्व का निर्माण माँश्री चन्दाबाई जी के स्नेहिल सान्निध्य में हुआ । जैन धर्म की उच्च शिक्षा प्राप्त करके, उन्होंने 'शास्त्री' उपाधि प्राप्त की तथा हिन्दी में साहित्य रत्नाकर और लौकिक शिक्षा में बी0 ए0,बी0 एड0 की परीक्षायें उत्तीर्ण की ।

1 अक्टूबर 1967 को सुश्री शशिप्रभा जी जैन बाला विश्राम के मध्य विद्यालय की शिक्षिका नियुक्त हुईं । 1, अगस्त 1968 ई0 को यहीं के उच्च विद्यालय में शिक्षिका बनीं । 1 जनवरी, 1975 को उपप्राचार्या हुई तथा 11 मार्च, 1985 से अंतिम समय 24 अगस्त 1996 तक प्राचार्या के पद पर प्रतिष्ठित रहीं ।

माँश्री के सान्निध्य से सुश्री शशिप्रभा ने लेखन, संपादन तथा प्रशासन में दक्षता प्राप्त की, जिसके परिणामस्वरूप वे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ माँश्री के साथ 'महिलादर्श' के संपादन, स्वतंत्र लेखन तथा महिला परिषद् के अधिवेशनों में सक्रिय भागीदारी निभाती रहीं। कविता, कहानी, नाटक , निबन्ध , संस्मरण आदि में उनकी लेखनी अबाध गति से चलती थी ।

पत्र-पत्रिकाओं में 'शशांक' उपनाम के साथ लिखती रहीं और साहित्य जगत् में प्रतिष्ठा प्राप्त की । श्री जैन बाला विश्राम की हीरक जयंती पर प्रकाशित स्मारिका के संयोजन/संपादन के लिए शशि जी ने गहन परिश्रम किया । उसी के अनुरूप अमृत-महोत्सव पर प्रकाश्य स्मारिका तथा 'जैन महिलादर्श' के आर्यिका रत्न चंदा माँश्री स्मृति विशेषांक की तैयारी में अहर्निश लगी रहीं ।

सुश्री शशिप्रभा विनम्रता, शालीनता एवं प्रतिबद्धता के लिए ख्याति प्राप्त थी । आरा समाज ने भगवान् महावीर स्वामी के 2500 वें निर्वाण महोत्सव पर प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर उनका नागरिक अभिनंदन किया । प्रशस्ति-पत्र में लिखा है :-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"आपने जिन विषम परिस्थितियों में रहकर साहित्य साधना की है, वह अत्यन्त सराहनीय एवं अनुकरणीय है । आपने जिन वाणी की सेवा एवं उसके प्रचार-प्रसार में बहुमूल्य योगदान दिया है । विविध पत्र पत्रिकाओं में आपने अपने निबन्धों,कहानियों एवं कविताओं के माध्यम से 'श्रमण-संस्कृति' के विविध पक्षों को मुखर किया है ।

"आज के बच्चे कल के कर्णधार " वाले सिद्धांत को ध्यान में रखकर आपने शिक्षा के क्षेत्र में रहकर छात्राओं के राष्ट्र- प्रेम के साथ-साथ अनुशासन एवं उत्तरदायित्व की भावना को जाग्रत करते रहने की आजीवन प्रतिज्ञा की । इसके लिए आपने अपने व्यक्तिगत सुखों की भी बलि दे डाली । आपकी यह निःस्पृह त्यागवृत्ति शिक्षा,समाज एवं राष्ट्र सेवा के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगी ।

भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव तथा अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष्य में समिति आपके उक्त कार्यों का सराहनापूर्वक अभिनन्दन करती है तथा सम्मान के प्रतीक स्वरूप यह प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर गौरव का अनुभव करती है । "

माँश्री चन्दाबाई तथा उनकी अनन्य सहयोगी अनुजा विदुषीरत्ना ब्रजबाला देवी की दिनचर्या और कार्यों के साथ शशि जी ने अपने आपको सम्पूर्ण मन और समर्पित भाव से जोड़ लिया था । इसी का पुण्यफल था कि उन्हें दोनों का असीम स्नेह और विश्वास प्राप्त हुआ । शशि जी को मातृद्वय से माँ और पिता दोनों की ममता, दुलार, मार्गदर्शन और व्यक्तित्व निर्माण के निरन्तर सुअवसर प्राप्त हुए । कितने-कितने मधुर संस्मरण शशि जी विभिन्न प्रसंगों पर भाव-विभोर होकर सुनाती थीं ।

"जैन महिलादर्श" के सम्पादन में मातृद्वय का सहयोग करते-करते शशिप्रभा की लेखनी स्वत: सहज अजस्र रूप से चलने लगी । फिर उसकी स्याही कभी सूखी नहीं । उन्होंने कवितायें लिखीं, कहानियाँ लिखीं, निबंध लिखे । लिखना शुरू किया तो जीवन के अंतिम समय तक लिखती रहीं । अपनी लेखनी के बल पर ही वे "जैन-महिलादर्श" की उप-संपादिका बनीं । फिर जब सम्पादिका मंडल बना तब तो शशि जी का कार्य दायित्व और अधिक बढ़ गया । माँश्री की तरह पूरे अंक की सामग्री का आयोजन संपादन करके प्रकाशनार्थ सूरत भेजने का दायित्व उन्होंने अपने उपर लेकर माँश्री को राहत दी । 52 वर्षों के बाद "जैन महिलादर्श" के प्रकाशन में विराम आया । श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (धर्म-संरक्षिणी) महासभा ने "जैन महिलादर्श" का पुन: प्रकाशन आरंभ किया तो शशिजी का नाम पूर्ववत सम्पादिका मंडल में सम्मिलित रहा । श्री जैन बाला विश्राम के अमृत महोत्सव पर प्रकाशित "जैन महिलादर्श के "आर्यिका रत्न श्री चन्दा माँश्री स्मृति विशेषांक" की सामग्री का संयोजन-सम्पादन करके उसे प्रकाशनार्थ भेजकर वे 'स्मारिका' के कार्य में जुट गई थीं । प्रधान-संपादिका के नाम संलग्न सामग्री के साथ लिखा । उनका 19.08.96 का पत्र और टिकट लगा लिफाफ संभवतया उनका अंतिम पत्र है जो डाक में डला नहीं । 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् ' के अधिवेशनों में शशि जी मातृद्वय के साथ नियमित रूप से जाती रहीं । यहीं से उन्होंने अखिल भारतीय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्तर के मंच-संचालन, वक्तृत्व तथा बड़े आयोजनों की व्यवस्था करने की दक्षता प्राप्त की, और यहीं मिला उन्हें अखिल भारतीय नेतृत्व का सहज सम्पर्क, सान्निध्य । शशि प्रभा ने इस सबसे वह सब संचित और आत्मसात् कर लिया कि उन्हीं के शब्दों में ''कभी-कभी माँश्री द्वय की अस्वस्थता वश मैंने स्वयं जाकर धार्मिक विशेष समारोहों में दो-दो दिन तक अधिवेशन सम्पन्न कराये और अतीव सफलता मिली।

माँश्री चन्दाबाई की सल्लेखना और समाधिमरण का प्रसंग उनके मन मस्तिष्क पर डाक्यूमेन्टरी की तरह अंकित था । माँश्री की 19वीं पुण्यतिथि उन्होंने उसी आम्रकुंज में मनायी, जिसमें छात्राओं, शिक्षिकाओं और जन-समूह के साथ वे अखण्ड णमोकार मंत्रोच्चार करतीं रहीं थीं और जहाँ भगवान् बाहुबली की प्रतिमा के पथ पर माँश्री को उन्हीं के आश्रम की स्नातिका शरबती देवी जो आर्यिका विजयमती बन चुकीं थीं, ने आचार्य श्री कुंथुसागर जी के सान्निध्य में आर्यिका दीक्षा दी । माँश्री के समाधि स्थल पर शशि जी ने संगमरमर के कमल-पुष्प पर 'चरण-चिन्ह' स्थापित किए ।

ब्रजबाला जी-माँश्री की अनुजा ने 'शशि' से प्रार्थना के स्वर में कहा-बेटी, ध्यान रखना मेरा समाधिमरण करा देना ! और सचमुच शशि प्रभा पटना के नर्सिंग होम से व्याधि भूलकर दौड़ आयीं और भाद्रप्रद शुक्ल द्वादशी सितम्बर सन् 1992 को विदुषीरत्न ब्रजबाला देवी का समाधिमरण सम्पन्न कराकर वापस नर्सिंग होम लौट गयीं और स्वस्थ होकर लौटीं । 1996 का स्वंतत्रता दिवस समारोह शशिजी की उपस्थिति के बिना बुझा-बुझा सा लगा । मैंने अपने वकृत्य में इसका उल्लेख करते हुए कहा- ''आप सब शशि जी के पास जायें । उन्हें स्वतंत्रता-दिवस की बधाई दें और शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामनाएँ व्यक्त करें ।'' ऐसा ही हुआ । और सचमुच 16 अगस्त को शशि जी स्कूल गयीं तथा अपने प्रधानाचार्या कक्ष में घंटो' अमृत-महोत्सव स्मारिका' के लिए सामग्री संजोती रहीं । माँश्री की पूर्व प्रकाशित पुस्तकों के पुर्नमुद्रण का निर्णय लिया गया तो शशिजी ने एक पुस्तक का व्यय अपनी ओर से प्रदान करने की स्वीकृति दी ।

मातृद्वय चन्दाबाई और ब्रजबाला देवी के प्रति अनन्य निष्ठा एवं समर्पित भाव ने शशि जी को वह सब दिया जिससे सिवनी की बाला 'बाला विश्राम ' में सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गयी । माँश्री चन्दाबाई पर शशि जी चन्द्रायन नाम से एक काव्य लिख रही थीं, जिसके कुछ अंश वे विगत दो वर्षों से माँश्री की पुण्य तिथि पर अपने मधुर कंठ से सुस्वर सुनाती रहीं ।

सुश्री शशि प्रभा 'शशांक' 24 अगस्त 96 को अचानक चली जायेंगी, इसकी किसी ने कल्पना नहीं की थी । उनके रचनात्मक कार्य अनेक पीढ़ियों तक प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे ।

❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम में भगवान् बाहुबली स्वामी
प्रतिमा स्थापना की हीरक जयन्ती (सन् 1937-97)
पर विशेष संस्मरण

❑ सुबोध कुमार जैन

श्री जैन बाला विश्राम परिसर में विशाल विद्यालय भवन, विशालकाय भगवान् बाहुबलि एवं महावीर प्रभु मंदिर के प्रतिष्ठाकारक बा० धनेन्द्र दास जी एवं भक्त-वत्सला नेमसुन्दरी देवी थीं।

श्रीमती नेमसुन्दरी देवी, राजर्षि बाबू देवकुमार जी की छोटी बहन थीं उनका विवाह दानवीर बाबू हर प्रसाद जी के दत्तक पुत्र बाबू धनेन्द्र दास जी से हुआ। उनको पाँच पुत्रियाँ हुईं - जयनेमि देवी, सुशीला देवी, प्रकाशवती, द्रौपदी देवी और आशावती। सभी पुत्रियों का विवाह सम्मानित परम धार्मिक परिवारों में सम्पन्न हुआ श्रीमती द्रौपदी देवी बाला विश्राम की माननीया अधिष्ठात्री हैं। बाकी चारों बहनें स्वर्गवास हो गईं हैं।

परम धार्मिक नेमसुन्दरी देवी अपने भाई देव कुमार जी के देहावसान के पूर्व उनकी बीमारी में उनकी बहुत सेवा बराबर की और बाबू देव कुमार जी के देहावसान के उपरान्त उनके दो पुत्रों बाबू निर्मल कुमार (9 वर्ष) तथा बाबू चक्रेश्वर कुमार (5 वर्ष) को अपनी बड़ी भावज, जो कि कुछ ही घण्टे पूर्व विधवा हुई थीं, उन्हें तथा चन्दाबाई जी को साथ लेकर हावड़ा स्टेशन आधी रात के बाद ही चली आई थीं साथ में दरवान और खिदमतगारों के अतिरिक्त एक पुराने मुनीम भी थे। बाकी लोग क्रिया पूरा करने कलकत्ता के सेठ रामजीवन सरावगी, बनारस के बाबू छेदी लाल जी (छेदी भैया) आदि मित्र वर्गों के साथ दिन निकलने के बाद स्टेशन पहुँचे यह नेमसुन्दरी जी के वर्णन के अनुसार जानकारी मिली। नेमसुन्दरी जी भैया देवकुमार जी की परम भक्त थीं और जैसाकि उन्होंने वर्णन किया- " भैया ने मुझे कई दिन पूर्व ही कह दिया था कि उनके अन्त समय की सूचना बेहिचक, मालूम पड़ते ही मुझे पहले ही बता देना, ताकि मैं अपना समाधि मरण कर सकूँ और आखिर जब डॉक्टरों से मुझे ज्ञात हो गया कि वे कुछ ही घन्टों के मेहमान हैं, तो मैंने रोते-रोते उनके कानों में यह दु:ख भरी सूचना दे देना अपना परम कर्त्तव्य समझा।

भैया ने तत्काल छेदी भैया बनारस वाले को तथा (भट्टारक) नेमिसागर जी वर्णी को बुलाकर उन्हें भू-शैय्या देने को राजी किया। उनकी पीठ में कारबंकल हो गया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। बहुत कृश हो गए थे। सभी ने रोते-रोते उन्हें भू-शैय्या बड़ी कठिनाई से दी। भाभी अनूपमाला चीखने लगी तो भैया के इशारे द्वारा आदेश के अनुसार हम लोगों ने कमरे से बाहर कहरियों के जिम्मे लगाकर, भैया के ही इशारे पर रोते-रोते अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। भैया पहले सब प्रक्रिया वर्णीजी से निश्चित कर चुके थे। हम सभी उन्हें णमोकार मंत्र सुना रहे थे और तभी वर्णी जी ने शास्त्रोक्त विधि के अनुसार उन्हें मुनिव्रत देकर नग्न कर दिया और वैराग्य भावना का सस्वर पाठ करने लगे। इसके पूर्व उन्हें आवश्यक व्रतादि दे दिए थे। जिसे भैया पूरे होशोहवास में विनय पूर्वक पालन करते जा रहे थे तथा दोनों हाथों को जोड़ कर भगवान का नाम स्वयं भी अपने कण्ठ से मन्दगति से लेते जा रहे थे। लगभग आधा घंटे के उपरांत वे मन्द मुस्कुराहट के साथ समाधि में लीन हो गए।

नेमिसागर जी स्याद्वाद विद्यालय के विद्यार्थी थे और भैया की बीमारी में अन्त तक उनके साथ रहे। विद्वान् और परम धार्मिक वृति के थे। श्रवण बेलगोला के "भट्टारक" पद पर बाद में आसीन हुए थे। इसके पूर्व भी जब भैया ने हम सभी को लेकर बनारस, इलाहाबाद, शत्रुञ्जय जी, गिरनार, बम्बई, बंगलौर, हुम्मचपदमावति की दक्षिण भारत के सभी तीर्थों के सुप्रसिद्ध यात्रा पूरी की थी, नेमिसागर जी बराबर उनके साथ थे। बैलगाड़ी और पैदल अधिकांश यात्रा बंगलौर के बाद पूरी हुई थी।

बहुत नाम हो गया था। लोग बाजे-गाजे के साथ उनका स्वागत करने गाँवों से बाहर पहुँच जाते थे। भैया भी राजा-महाराजा की तरह कपड़ों में नौकर गुमाश्ता (तलवारों से लैस) के साथ उनसे आदरपूर्वक मिलते थे।

पहुँचते ही शास्त्रसुरक्षा का कार्य हो जाता था। शास्त्रों को साफ सुथरा कराने वर्णीजी अपने लोगों के साथ लग जाते थे। जहाँ रखने का प्रबंध नहीं होता, वहाँ समुचित प्रबंध किया जाता था। जहाँ बिल्कुल देखभाल की आशा नहीं थी, वहाँ के हस्तलिखित ग्रंथों को गाँवों के मुखिया आदि से लिखा पढ़ी करके "भवन" के लिए भेंट स्वरूप वर्णीजी ले लिया करते थे।

मूडबद्री और श्रवणबेलगोला में मुख्य दफ्तर खोले गए थे,जहाँ शास्त्रों की मरम्मत आदि भी कराए जाते थे। ताड़पत्र ग्रंथ बहुत खराब हो रहे थे। देख-रेख कर भैया की आँखों में आँसू भर आते थे।

और उन्होंने तभी आजीवन ब्रह्मचर्य का कठिन व्रत ले ही लिया। कहा- "जबतक शास्त्रों का पूर्णरूप से उद्धार नहीं करा लूँगा ब्रह्मचर्य व्रत का अखंड पालन करूँगा।"

तो हर जगह उन्होंने वेष्टन बनवाने का प्रबंध किया ही, आलमारियों का प्रबंध भी जहाँ अधिक शास्त्र थे वहाँ के लिए किया।

उनके भाषण को दक्षिण भारत की भाषा में वर्णी जी अनुवाद किया करते थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चन्दाबाई (छोटी भाभी) से भी औरतों के बीच भाषण देने के लिए उत्साहित करते थे। छोटी बहू धीरे-धीरे करके बहुत अच्छा भाषण देने लगी थीं ।

मद्रास पहुँच कर समुद्र के किनारे जब उन्होंने ताड़पत्रों पर लिखे शास्त्रों को तौलकर बेचते हुए तथा अंग्रेजो को उन्हें तौल के मात्रा खरीदते हुए देखा, तो वे रो पड़े थे ।

बाद में उसी की बड़ी तस्वीर एक चित्रकार से बनवाकर कुमार देवेन्द्र ने भवन में तथा बनारस, कलकत्ता आदि की भवन की प्रदर्शनियों में ले जाकर टाँगा था।

''कलकत्ता में तो रवीन्द्र नाथ टैगोर ,आसुतोष मुखर्जी जज, सपरिवार आए थे। बनारस के विद्यालय में जर्मनी के बड़े विद्वान् हर्मन जैकोबी ने भैया के चित्र का उद्घाटन किया था और सभी जगह भैया की बड़ी बड़ाई की जाती थी ।''

''हमलोगों का सर गौरव से ऊँचा उठ जाता था । ऐसे महान् थे हमारे भैया। जीवित रहते तो न जाने, कितना क्या करते धर्म के लिए ।''

''भैया की भक्त नेमसुन्दरी जी अपनी स्मृति से कितनी-कितनी बड़ाई अपने भैया की किया करती थीं, जिसका कोई अन्त नहीं ।''

नेमसुन्दरी जी को हम सभी बूआ दादी कहते थे । पिताजी / चाचाजी की वे बूआ थीं । वे जहाँ किसी नए शहर में नई जगह जाती तो अपना परिचय '' निर्मल कुमार की बूआ'' के नाम से दिया करती थीं ।

फिर तो वे जगत बूआ हो गईं । सभी लोग उन्हें बूआ जी पुकार कर ही सम्मानपूर्वक बातें करते थे। सर्वप्रथम उनके पति बाबू धनेन्द्र दासजी ने जब एक नई कोठी बाबू हर प्रसाद दासजी धर्मशाला के निकट बनवाई तो छत के ऊपर नये मंदिर का निर्माण कराया और बड़े विधि पूर्वक उसे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करायी।

आचार्य कुन्दकुन्द के जन्म स्थान कुन्द कुन्द ग्राम पर भी एक छोटी धर्मशाला बनाई, जहाँ दादाजी धनेन्द्र दास जी कई माह जाकर एकान्तवास कर चुके थे ।

तत्पश्चात् बाला विश्राम के खुलने पर सन्1921 में उन्होंने और बूआ दादीजी ने विद्यालय भवन और उसकी छत पर मनोरम बड़े शिखर गुम्बज का भगवान महावीर का मन्दिर बनावाकर दादाजी और वे स्वयं इंद्र-इंद्रानी बनकर उन्होंने बड़े धूम-धाम से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराई थी । सारा नगर उपस्थित हुआ था ।

बाद में दक्षिण भारत की यात्रा पू० बाबूजी, चाचाजी तथा कोठी के पूरे परिवार के साथ पूरी करके जब लौटे तो बाहुबलि भगवान की भक्ति से इतनी अभिभूत हो गई कि जयपुर से 14 फुट ऊँची भगवान बाहुबलि की मूर्ति बनवाकर मंगवाई और बाला विश्राम में स्थापना तथा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा अपने ज्येष्ठ नाती श्री प्रताप चंद और उनकी पत्नी को इंद्र-इंद्रानी बनाकर, कराया और अपार यश प्राप्त किया। इतनी विशाल और सुन्दर प्रतिमा उत्तर भारत में इसके पूर्व कभी नहीं विराजित हुई थी ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देश के कोने--कोने से अपार यात्री बराबर आरा के बाहुबलि के दर्शन करने आते रहते थे। अभी भी आते हैं। पू० आचार्य देशभूषण महाराज जी तो बुआ दादीजी को "बाहुबलि की माँ" कहकर उनके भक्ति की प्रशंसा किया करते थे ।

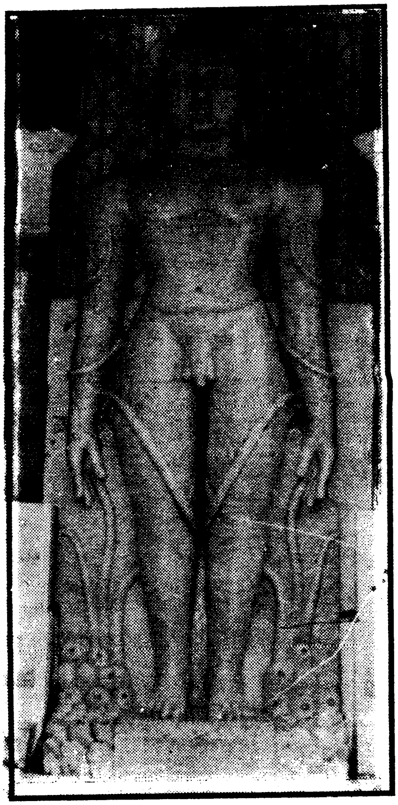

हमारे परिवार की वे अगुआ बराबर रहीं । हमसबों की शादियाँ उनकी पसन्दगी पर ही निर्णीत होती थीं और शादी के वक्त खाने-पीने का प्रबंध , बिना उनके कभी आरम्भ ही नहीं होता था।

शादी के लिए लड़के-लड़कियों का चयन उनके बिना होता ही नहीं था।

वे अत्यन्त उदार और धार्मिक वृत्ति की तो थी हीं, नगर की माहिलओं और पुरूषों में उनका भारी सम्मान था।

अभी भी आरा उन्हें भूला नहीं है। उनकी पुत्री द्रौपदी बूआ का वही सम्मान आरा में है। कोई धार्मिक कार्य उनकी उपस्थिति के बिना पूरा नहीं होता।

हमारे परिवार में उनका वही सम्मान है जो पू० बूआ दादी का था। जिस प्रकार देश भर में घूम-घाम कर पू० मुनि महाराजों को आहार तथा तीर्थ वन्दना बूआ दादीजी उत्साहपूर्वक करती थीं, उसी प्रकार द्रौपदी बूआ जी अभी तक करती हैं, यद्यपि वे अब बहुत अस्वस्थ हो गई हैं और उनकी अस्वस्थता हमलोगों के लिए चिन्ता का कारण बनी रहती है।

तो, ऐसी थी हमारी पूज्या बूआ दादी जी जो कि जगत बूआ थीं । भगवान बाहुबलि तथा उनके चरणों के दोनों ओर उनकी और पूज्या दादाजी धनेन्द्र दासजी की संगमरमर के उनके चित्र बरांबर उनकी याद दिलाते रहेंगे ।

ଓଃ ଝ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चारित्र चक्रवर्ती 108 शान्तिसागरजी
संस्मरण और श्रद्धांजलि

❑ आर्यिकारत्न विदुषी माँश्री

सन् 1922 में जबकि उत्तर भारत में श्री मुनियों का विहार नहीं होता था,दक्षिण में ही दर्शन होते थे, तब हम सेडवाल गये और श्री 108 आचार्य शान्ति सागर जी चारित्र -चक्रवर्ती के दर्शन किये। कुछ दिन वहाँ रहकर धर्मलाभ लिया। आचार्य श्री हिन्दी नहीं बोल सकते थे। पश्चात् अनेक चातुर्मास में आचार्यश्री के दर्शनों को हम गए थे। 10 स्थानों के नाम इस प्रकार हैं-

1. सेडवाल में प्रथम दर्शन।
2. कटनी प्रथम चातुर्मास।
3. कुम्भोज।
4. फलटन में दो माह रहे।
5. मथुरा।
6. दिल्ली।
7. आथड़ ग्राम चातुर्मास में उदयपुर।
8. प्रतापगढ़ शान्तिनाथ।
9. राजाखेड़ा।
10. गजपंथ में अन्तिम दर्शन।

कुम्भोज (हाथ कलंगड़े) में आर्चायश्री का चातुर्मास हुआ। हम भी वहाँ 15 दिन रहे। सेठ घासीलाल जी बम्बई से अपने पुत्रों के साथ आये थे। आचार्यश्री को उत्तर प्रदेश में लाने का प्रोग्राम बनाया गया। श्री सम्मेदशिखर पर सेठ साहब ने मन्दिर बनवाना प्रारम्भ किया। आचार्यश्री बहुत कम बोलते थे, साथ में पुस्तकादि का संग्रह भी नगण्य ही रहता था। साथ में साधु समुदाय भी कम था।

एक बार आचार्यश्री अपनी दीक्षा के विषय में कहने लगे कि -पहले दक्षिण में मुनिगण मन्दिर में बैठे रहते थे और एक श्रावक कमण्डल उठाकर चलता था, तब उसी के साथ मुनि महाराज जाकर आहार एक घर में ले लेते थे। आचार्यश्री ने स्वाध्याय किया। तब यह क्रिया उनको खटकी और उन्होंने कहा कि हम चर्या करके आहार लेंगे, जैसा कि शास्त्रोक्त विधान है। इस पर श्रावकों ने कहा कि इस काल में यह न हो सकेगा। तब आचार्यश्री 4-6 दिनों तक आहार के लिए नहीं उठे। कई घर के लोग प्रतिक्रमण करने को खड़े हुए तब आचार्यश्री ने आहार ग्रहण किया। तब से अब तक वह मार्ग चला आता है।

कई चौमासों के बाद आचार्यश्री राजाखेड़ा पहुँचे। मैं भी वहाँ गयी थी, वहाँ के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रावकों ने सबको ठहराया । प्राय: कच्चे मकान थे, एक चबुतरा बड़ा था । उसके ऊपर एक ओर दो कोठे थे, वहीं श्री मुनि संघ ठहरा था । सात श्री मुनि महाराज क्षुल्लक दो ब्रह्मचारिणी थीं । दो दिन उपदेश हुए, सभा हुई ।

राजाखेड़ा के ब्राह्मणों को यह सहन नहीं हुआ और उन्होंने साधुओं को मारने का उपक्रम किया । तीसरे दिन जब कि आहार करके साधुगण बाहर चबूतरे पर सामायिक करने को बैठने लगे तब आचार्यश्री शन्तिसागरजी ने कहा कि भीतर बैठो । उनकी आज्ञा प्रमाण सब साधु भीतर सामायिक करने बैठ गये ।

हमारे यहाँ ही महाराजश्री का आहार हुआ था । जैसे ही हम लोगों ने भोजन की थाली परोसी थी कि हल्ला जोरों का सुनाई पड़ा । ब्राह्मण लोग तलवार आदि लेकर आ गये। हमलोग थाली छोड़कर सामने पास ही में जिन मन्दिर था वहाँ चले गये । बन्द करके बैठे। साधुगणों की कोठरी श्रावकों ने बन्द कर ताले लगा दिये । अब आपस में युद्ध चला । जैनों के पास तो शंख थे, शस्त्र थे नहीं । ईंट, लकड़ी उठाई । उधर दंगे वालों ने तलवार से कई लोगों को जख्मी कर दिया। घंटों दंगा हुआ । राजाखेड़ा में साधारण पुलिस थी । तब धौलपुर से पुलिस रसाला बुलाया गया तभी दंगा दबा और दंगे का मुख्य छिट्टा नामक व्यक्ति पकड़ा गया, उसको मार पड़ी । परन्तु आचार्य ने बचा लिया, वरन प्राणांत उसका हो जाता । आचार्यश्री का निमित्त ज्ञान प्रबल था वरना सब साधुओं का वध हो जाता, बाहर बैठ जाते तो । पश्चात् सब परदेशी श्रावक और संघ राजाखेड़ा से रवाना हुआ।

आचार्यश्री ने हरिजन आन्दोलन के समय अन्न आहार लेना त्याग दिया था तब श्रावकों को चिन्ता हो गई । हम दिल्ली जाकर राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी आदि राज्य के संचालकों और बम्बई जाकर श्री खेर साहब (मुख्यमंत्री) से मिले,किन्तु सफलता नहीं मिली।

हरिजन मन्दिरों में जाकर प्रतिबिम्बों को छूने लगे इत्यादि होता ही रहा, तब अकलूज में मुकदमा दायर किया गया । सेठ गजराज जी गंगवाल, कलकत्ता वाले आरा आये और पटना से बैरिस्टर पी०आर० दास को बहस करने के लिये ले गये । वहाँ उनकी बहस से मुकदमा सुलझ गया और जैन मन्दिरों में हरिजन न जाये यह तय हो गया ।

तब बारामति (पूना) में आचार्यश्री शान्तिसागरजी से कहा गया कि आहार ग्रहण करिये किन्तु आपने अन्न नहीं लिया और कहा कि शायद अपील में हार हो जाय । तब तक अन्न लेना नहीं होगा ।

यह सुनकर हमने सुबोध कुमार (अपने पौत्र) को पटना भेजा और बैरिस्टर पी०आर०दास से अपील को देखने को कहा । बैरिस्टर जी ने भली भाँति अपील देखी और कहा कि इसमें कोई दम नहीं है, दूसरे पक्ष से अपील नहीं होगी और केश को उल्टा भी न जा सकेगा । जब यह निश्चित हो गया तब हमने बारामति (पूना) को तार दिया कि अपील खारिज ही समझें क्योंकि मुकदमा नहीं हो सकता है । अत: सबने आचार्यजी को पी०आर०दास बैरिस्टर की सम्मति सुनायी । हमारा तार भी सुनाया तब अन्नाहार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुआ। धन्य भाग थे जो कि सफलता मिली।

श्री 108 आचार्य चारित्र चक्रवर्त्ती शान्तिसागरजी से सन् 1934 मि० कार्तिक सुदी पूर्णिमा को आमड़ ग्राम (उदयपुर) में हमको सातवीं प्रतिमा के व्रत लेने का अवसर प्राप्त हुआ था।

(ब्र० पं० चंदाबाई, आरा के हस्तलिखित पन्नों में उपर्युक्त लेख 1-8-90 को प्राप्त हुआ)

नोट :

(1) पटना के बैरिस्टर पी० आर० दास, काँग्रेस के सुप्रसिद्ध नेता देशबन्धु चितरंजन दास के छोटे भाई थे। दोनों ही बन्धु नामी वकील थे।

(2) पूज्य दादीजी ब्रह्मचारिणी चन्दाबाई के साथ हमारे पूज्य चाचा बाबू चक्रेश्वर कुमारजी और हम भी बम्बई गए थे। बाद में गजपन्था जी जाकर हम सभी ने पूज्य आचार्य महाराज के दर्शन किये। महाराज जी को सभी बातें बताई गई।

(3) इसी सिलसिले में पूज्य दादीजी हरिजनों के नेता बाबू जगजीवन राम से भी मिलीं थीं और उन्हें भी राजी किया था।

(4) बम्बई के मुख्यमंत्री श्री खेर साहब को डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का हस्ताक्षरित पत्र भी इस विषय में उनकी अनुमोदन किया हुआ दिया था। -सु०कु०

❖

पं० चन्दाबाई जी के विद्यागुरू चारूकीर्ति भट्टारक नेमिसागर जी वर्णी

❑ सुबोध कुमार जैन

श्री नेमिसागर वर्णी स्याद्वाद महाविद्यालय,वाराणसी में प्रशिक्षित हुए थे। राजर्षि बाबू देवकुमारजी ने इन्हें आरा बुलाकर अपने साथ रखा। वे स्वयं भी उनसे शास्त्रों का अध्ययन करते तथा पूज्या दादीजी चन्दा माँश्री भी उनसे शिक्षा प्राप्त करती थीं।

निबंध रत्नमाला को पूज्या चन्दा माँश्री ने विद्वत्वर स्वामी श्री नेमिसागर के कर कमलों में सादर भक्ति पूर्वक अर्पित किया उसमें इन्होंने जो कविता लिखी है, वह इस प्रकार है-

स्वार्थ रहित हो निश दिन जो, परहित में तत्पर रहते हैं।
ज्ञान-साधु-रस से अभिसिंचित, सब जीवों को करते हैं॥
जिनके पद -प्रसाद से मैंने, पाया जग में उजियाला।
जिनकी विमल-विराग प्रभा से हटा अविद्या-तम काला।
बाल ब्रह्मचारी विद्वत्वर, स्वामि श्री नेमिसागर।
उनके कर कमलों में है यह, अर्पित भक्ति भेंट सादर॥

तत्पश्चात् चारूकीर्ति भट्टारक जी को आरा में विशेष रूप से आमंत्रित करके सम्पूर्ण समाज के द्वारा भारी सम्मान दिया गया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन महिला विद्यापीठ का उदय

❑ सुबोध कुमार जैन

श्री जैन महिला विद्यापीठ का उदय सन् 1957 में हुआ । मैंने सन् 1943 में श्री जैन बाला विश्राम के मंत्रीत्व का कार्यभार संभाला था। पू० दादी माँश्री की आर्शीवाद से इस संस्था के गुरूत्तर भार की संभाल इस मान्यता के आधार पर करता रहा कि यह भारत प्रसिद्ध जैन समाज की स्त्री शिक्षण संस्था है ।

यह स्पष्ट महसूस हुआ कि जैनेतर समाज भी इस संस्था से पूरा लाभ उठाना चाहता है और ऐसा तभी हो सकता है, जब कि हम सरकारी सहयोग लेकर इस संस्था के तत्वावधान में भूमि, बिल्डिंग, हाई स्कूल की सरकारी मान्यता आदि का पर्याप्त प्रयत्न करें।

परन्तु ऐसा होने से सरकारी हस्तेक्षप तो होने ही लगेगा, तो मैंने पू० दादी जी से विचार-विमर्श किया और उन्हें बताया कि डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह बाबू, श्री अब्दुल कयूम अंसारी, जगजीवन बाबू आदि अपने हितैषी नेताओं का सुझाव है कि हम बाला विश्राम में लगी हुई अलग भूमि पर सरकारी सहयोग भी लेना शुरू कर दें ।

1. यह भी निर्णय हुआ कि जैन-धर्म की शिक्षा भी रूटीन बनाकर ऐच्छिक रूप से नित्य सभी क्लास में पढ़ाई जाए । तदुपरान्त निम्न कार्यवाई की गई - श्री जैन बाला विश्राम के अन्तर्गत एक नई शिक्षा संस्था **श्री जैन महिला विद्यापीठ** की स्थापना सन् 1957 में की गई ।

2. इस संस्था का रजिस्ट्रेशन इण्डियन सोसायटी ऐक्ट 1918 के अन्तर्गत सन् 1957 में कराया गया ।

3. श्री जैन बाला विश्राम हाई स्कूल सन् 1951 में स्थापित करने के पूर्व इसे श्री जैन महिला विद्यापीठ के अन्तर्गत रखा गया और मन्दिर जी के पीछे, बाला विश्राम के छोटे बाग में हाई स्कूल के लिए बिल्डिग का निर्माण कार्य आरंभ कर दिया गया। सरकारी मान्यता और तद्नुसार शिक्षकों के वेतन सरकारी नियमानुसार प्राप्त करने की कोशिश हुई, जिसकी मन्जूरी मिल गई । प्रथम प्रधा--नाध्यापक आरा जिला स्कूल के अवकाश प्राप्त शिक्षक पं० देवी दयाल जी उपाध्याय को नियुक्त किया गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

4. उपाध्यायजा का कार्यकाल समाप्त होने पर श्रीमती सावित्री अस्थाना जो कि अध्यापिका थीं, उन्हें प्रधानाध्यापिका नियुक्त किया गया।

इनके समय में इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल के बहकावे में आकर बिहार सरकार ने इस फली-फूली संस्था का सरकारीकरण कर दिया। हाई कोर्ट ने महत्वपूर्ण फैसले द्वारा इस संस्था को जैन अल्पसंख्यक के समुदाय द्वारा स्थापित संस्था घोषित कर दिया। और यह संस्था श्री जैन बाला विश्राम के अन्तर्गत श्री जैन महिला विद्यापीठ के संचालन में वापस आ गई। तत्पश्चात् बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के यह संस्था सेवा कार्य अपने ही द्वारा मनोनीत प्रबंधकारिणी कमिटी के द्वारा चल रही है।

5. सन् 1964 में अपने द्वारा स्थापित श्री आदिनाथ नेत्रहीन विद्यालय को केन्द्रीय सरकारी ग्रान्ट के हित में, श्री जैन महिला विद्यापीठ के प्रबंध में देकर तत्कालीन केन्द्रीय कल्याण मंत्री श्री सीताराम जी केशरी के माध्यम से पहली बार सरकारी ग्रान्ट प्राप्त कराया तथा विद्यापीठ द्वारा मनोनीत कार्यकारिणी के द्वारा तब से आरा, बक्सर,सासाराम आदि जिले के बीच एक मात्र नेत्र विहीन विद्यालय कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। इस संस्था को जैन समुदाय एवं यात्रियों का आर्थिक सहयोग प्राप्त रहा है।

6. सन् 1958 में मैंने अपने द्वारा स्थापित आरा मूक वधिर विद्यालय को सुप्रबंधन और स्थायित्व के हित में श्री जैन महिला विद्यापीठ के जिम्में लगा दिया। अब तक पूर्व की भाँति देवाश्रम परिवार के सक्रिय सहयोग से यह संस्था 40 छात्रों को शिक्षा दे रही है।

प्रयत्न चल रहा है कि इस संस्था को भी केन्द्रीय कल्याण विभाग द्वारा ग्रान्ट मिलने लगे ताकि सभी कर्मचारियों को उचित वेतनमान प्राप्त होने लगे।

7. सन् 1996 में मैंने श्री जैन महिला विद्यापीठ द्वारा बिहार प्रादेशिक विकलाँग सेवा समिति की स्थापना कराई और सन् 1997 में ही तत्कालीन केन्द्रीय कल्याण मंत्री श्री सीताराम जी केशरी के सहयोग से सरकारी आर्थिक सहयोग प्राप्त किया जिसके द्वारा पटना में तथा आरा में विकलाँगों को निःशुल्क डाक्टरी जाँच कराकर अंग प्रदान किए गए।

प्रयत्न चल रहा है कि फिर उसी प्रकार का कैम्प श्री सम्मेद शिखर तीर्थ पर लगाया जाय।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम एवं श्री जैन महिला विद्यापीठ आपसी सम्बन्ध

❑ सुबोध कुमार जैन

1. श्री जैन बाला विश्राम के अन्तर्गत श्री जैन महिला विद्यापीठ की स्थापना क्यों की गई और कब ?

(अ) बाला विश्राम के मंत्रित्व का भार संभालने के उपरान्त एक अलग संस्था, पू० दादी माँश्री से राय सलाह ले कर इसलिए इंडियन सोसायटीज ऐक्ट के अन्तर्गत रजिस्टर्ड कराकर, उसकी अलग नियमावलि बनाई, क्योंकि हम निर्णय ले चुके थे कि एक उच्च शिक्षा विद्यालय की स्थापना करनी है। इसके लिए सरकारी वित्तीय सहायता लेनी ही होगी।

(आ) तद्नुसार, जैन बाला विश्राम ने हाई स्कूल के लिए विद्यालय भवन के पीछे की ओर की जमीन की रजिस्ट्री मैंने श्री जैन महिला विद्यापीठ के लिए कर दिया, जो कि अलग रजिस्टर्ड संस्था बना दी गई थी। बाद में बाला विश्राम की चहार दीवारी भी बीच में खड़ी कर दी गई। इससे हाई स्कूल विद्यापीठ के अन्तर्गत ही एक स्वशासी संस्था अलग प्रंबध कारिणी के अधीन बन गई। इसे अल्पसंख्यक जैन समुदाय की संस्था भी घोषित करा दिया गया।

(इ) जैन बाला विश्राम ने कभी सरकार से कोई शिक्षकों आदि के लिए या किसी प्रकार का अनुदान नहीं लिया और विश्राम की स्वतंत्र नियमावलि अपने शासकीय कमिटी द्वारा पूर्ववत् चल रही है।

2. इसी विद्यापीठ के अन्तर्गत, विश्राम से अलग, श्री आदिनाथ नेत्र विहीन विद्यालय, अपनी प्रथम विकलाँग सेवा संस्था भी बाद में मैंने करा दी।
3. इसी क्रम में नगर में हमारे परिवार द्वारा स्थापित मूक वधिर विद्यालय भी विद्यापीठ के अन्तर्गत ही उसकी कमिटी बनाकर स्थापित करा दिया ताकि विद्यापीठ का संरक्षण इसे बराबर मिलता रहे।
4. विकलाँगों को अंग प्रदान करने हेतु मैंने अपने मित्र भारत के तत्कालीन केन्द्रीय समाज कल्याण मंत्री, श्री सीताराम केशरी से आदेश दिलवाकर पटना में 1000 और आरा में 500 विकलाँगों को कृत्रिम अंग प्रदान कराने का शुभ कार्य पूरा कराया। उसकी भी एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अलग प्रबंध समिति बनाई गई । हमें श्री जैन महिला विद्यापीठ के ही आवेदन पत्र पर भारत सरकार ने कृत्रिम अंगों तथा उनके लगाने का पूरा खर्च उठा लिया, बाकी जैन समाज का मुख्य रूप से सहयोग लेकर एक और उपकारी कार्य आरंभ किया गया। विद्यापीठ की ओर से मैं संरक्षक और अजय कुमार भगवान महावीर विकलाँग सेवा समिति के कोषाध्यक्ष हैं । पटना के श्री रामगोपाल जैन अध्यक्ष और श्री विमल जैन मंत्री हैं ।

ये सभी संस्थाएँ श्री जैन बाला विश्राम की छत्रछाया में इसकी संस्थापिका पूज्या चन्दा माँश्री के आर्शीवाद से कार्यरत हैं । ♦

श्री जैन बाला विश्राम मध्य विद्यालय

सन् 1921 में श्री जैन बाला विश्राम, आरा की स्थापना हुई । उस समय धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा दी जाती थी। प्रारम्भ में प्राइमरी तक की कक्षाएँ चलती थीं । क्रमश: आगे की कक्षाएँ आरम्भ होती गईं । सभी कक्षाएँ विद्यालय भवन में चलती थीं ।

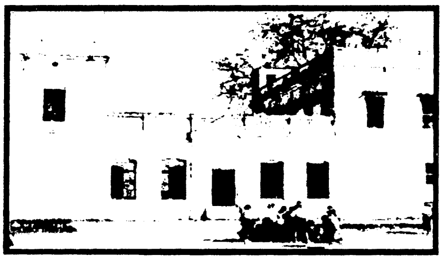

बिहार विद्यालय निरीक्षिका पटना, शाहाबाद के ज्ञापांक 3087 दिनांक 16-8-1934 के द्वारा 8 अगस्त से मिडिल स्कूल का रिकोग्नीशन प्राप्त हुआ । उस समय अध्यापिकाओं की संख्या आठ थी। सन् 1962 से दो अध्यापक नगरपालिका की ओर से प्रति नियोजित किये गये । बाद में उनकी संख्या पाँच हो गयी ।

सन् 1949 के पूर्व मिडिल स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती सरस्वती देवी थीं । उसके बाद श्री केशरी प्रसाद प्रधानाध्यापक हुए । श्रीमती प्रभा जैन इस संस्था में छात्रा के रूप में सन् 1953 से जुड़ी । सन् 1962 में अपनी शिक्षा पूर्ण करके मध्य-विद्यालय में अध्यापिका नियुक्त हुईं । सन् 1964 से अब तक प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं ।

बिहार सरकार शिक्षा विभाग के पत्रांक 85-156 दिनांक 27.01.1979 एवं जिला विद्यालय भोजपुर के पत्रांक 57-60 दिनांक 21.01.1980 के आदेशानुसार जनवरी 1980 से विद्यालय में कक्षा आठवीं की पढ़ाई होने लगी है ।

01 अप्रैल 1978 को विद्यालय अल्पसंख्यक घोषित किया गया वर्तमान में कक्षा पहली से आठवीं तक लगभग 500 छात्राएँ अध्ययनरत हैं तथा 13 अध्यापक, अध्यापिकाएँ हैं ।

समस्त छात्राएँ, कर्मचारी एवं अध्यापक-अध्यापिकाएँ संस्थापिका पूज्या चन्दा माँश्री के चरणों में हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करती हैं ।

⊙

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आरा मूक बधिर विद्यालय
- प्रारंभिक कथा -

❑ सुबोध कुमार जैन

बहुत कम व्यक्तियों को यह ज्ञात होगा कि साधारणतया जिन्हें मूक बधिर कहा जाता है, वे जन्मजात बधिर ही होते हैं। माँ-बाप को समय लगता है यह लक्ष्य करने में कि उनकी नवोदित संतान जन्म-जात बधिर है ।

होता यह है कि नवजात शिशु अगर जन्मजात बधिर है, तो वह अपने माता या अपने परिवार वालों की बाते सुन नहीं पाता और इसीलिये उस बेचारे को भाषा का ज्ञान हो नहीं पाता है और वह भाषा न सुनने के कारण केवल डा-डू-डू या अन्य 2-1 शब्द ही बोल पाता है, बस और कुछ नहीं ।

हमारे ज्येष्ठ भाई श्री प्रबोध कुमार जी हमारे माता -पिता की तरह ही गोरे-सुन्दर, ऊँची नाक नक्श वाले ने जन्म लेकर घर में खुशहाली भर दी । परन्तु कुछ ही माह में ऐसा आभास होने लगा कि नवजात शिशु के कानों में कुछ दोष है। दाइया लगी हुई थीं। उन्होंने आँखों आँखों में बातें की । फिर तालियाँ बजा-बजाकर बच्चे के कानों के पास शोर के उत्तर के रिएक्शन का इंतजार करते जब माता जी द्वारा लक्षित की गई, तो माताजी का कलेजा धक्-धक् करने लगा । पहले तो उन्होंने दाइयों को फटकारा । पर दूसरे क्षण उन्होंने बच्चे को गोद में उठाकर जाँचों का सिलसिला शुरू किया और अंत में निराश होकर रो पड़ीं । जिस दिन सभी जाँच पड़ताल से बात स्पष्ट हो गई कि घर का ज्येष्ठ नवजात पुत्र, सुन्दर है, हँसता है, मुस्कुराता है, चारों हाथों पैंरो से खेलता है, पर न कुछ बोलता है, न कुछ सुनता है, सभी सगे सम्बन्धी जड़वत् हो गए।

पिताजी ने हौसला बनाकर देखा, बोले-सब ठीक हो जाएगा । 2 वर्ष निकल गए और माँ के दुबारा गर्भ का समाचार बिजली की तरह रिश्तेदारों, दोस्तों तथा बहुत बड़ी जमींदारी के हजारों किसानों के घर-घर पहुँच गया । लोग चौकन्ने होकर भी प्रसन्न थे। डॉक्टरों ने जाँच करके तथा वैसे भी भरोसा दिया था कि चान्स की बात है कि पहला केस मूक-बधिर हो गया। अगला अवश्य ठीक होगा। फिर सभी चिन्तित थे ।

तो बड़े बच्चे श्री प्रबोध कुमार ने एक दिन अपनी (प्रभुदासजी की पतोहू) पर-दादी जी की अंगुलियों को नोच लिया । कुछ माँग रहे थे । पर दादी जी नहीं समझ पा रही थीं । पू० दादी चन्दाबाई जी ने कहा -इसमें बच्चे का क्या कसूर । इसके लिए किसी मूक-वधिर स्कूल से हिन्दी के जानकार मास्टर को बुलाकर रखना ही होगा । अमेरिकन हेलेन केलर भी ऐसी पैदा हुई थी । वह तो मूक बधिर अन्धी भी थी । अमेरिकनों ने उसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस प्रकार की शिक्षा दी कि एक दिन वह विश्व प्रसिद्ध गूँगी / बधिर, अन्धी नारी सब कुछ पढ़ने-लिखने लगी। लोगों को छूकर पहचान लेती थी। छूकर शब्दों को पहचान लेती थी। लिख लेती थी, पढ़ लेती थी ब्रेल से। फिर अपना मुन्ना तो केवल मूक बधिर ही है। इस बीच दूसरे बच्चे ने जन्म लिया और बड़ी खुशियाँ मनाई कि दूसरा बच्चा मूक बधिर नहीं है। मन्नतें पूरी की गई। नाम रखा गया सुबोध कुमार।

बड़ा भाई प्यार करता छोटे भाई सुबोध को, पर उसकी अधिक पूछ को भैया भाँपने लगा और एक दिन न जाने क्यों क्रोध में आकर एक पत्थर फेंक दिया। गनीमत थी, आँख बच गई। बाएँ भौं से निकलते खून की धार ने सुबोध के चेहरे को खून-खून कर दिया।

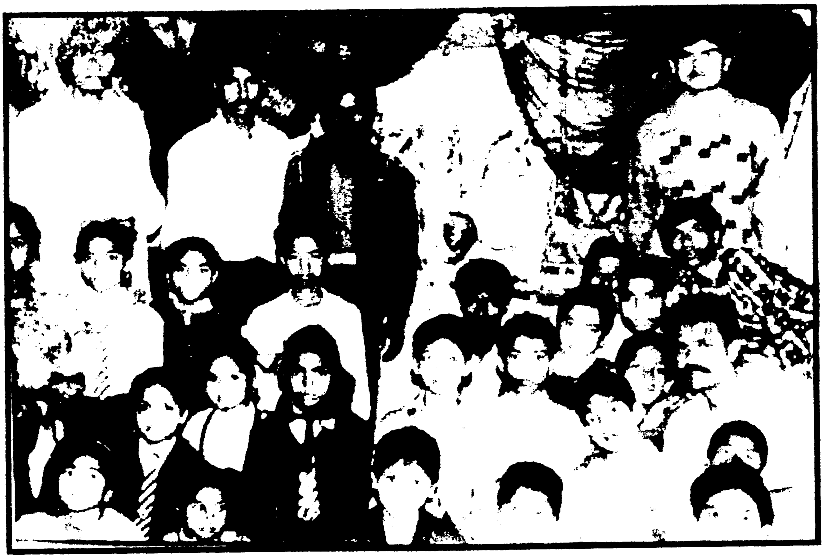

खैर, पिताजी कलकत्ता के ट्रिपों में मूक बधिर विद्यालय के चक्कर लगाने लगे। बिहार में कोई मूक बधिर विद्यालय नहीं था। मालूम हुआ कि एक बलिया जिला के हिन्दी भाषा-भाषी, काँग्रेसी, गाँधी भक्त जल्दी ही सेवा मुक्त होने वाले हैं।

बिना सुनने -बोलने वाला ही तीक्ष्ण बुद्धि का सुन्दर बालक घर में कभी किसे मारपीट करे, इतना तो ठीक था, पर कहीं घर के बाहर अकेले न निकल जाए उनके गले में नाम/पता लिखकर जन्तर की तरह लटका देने का निर्णय हुआ। साल डेढ़ साल और निकल गए। तभी कलकत्ता से लम्बे, गौरवर्ण के, हाथ में चरखा और बड़े झोलों में अपना कपड़ा/समान लेकर पं० प्रदुम्न मिश्र देवाश्रम पहुँच गए। उन्होंने हंसते बोलते हुए प्रबोध कुमार और सुबोध कुमार को अपनी बाहों में उठा लिया और देवाश्रम के समाने स्थित अतिथि भवन की ओर लेकर चले गए। बोले दोनों केवल खाने पीने के वक्त और सोने के वक्त हमारे साथ देवाश्रम आवेंगे, बाकी पूरा समय हमारे साथ रहेंगे।

पं० प्रदुम्न मिश्र ने गेस्ट हाऊस (अतिथि भवन) को स्कूल का रूप दे दिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अगल बगल के बच्चे भी पढ़ने आने लगे। रिश्तेदारों के कुछ बच्चे आने लगे । एक छोटे मास्टर भी नियुक्त किए गए। वे भी मिश्रजी के शिष्य थे । खद्दर पहनते ही नहीं सभी शिक्षक / विद्यार्थी एक साथ नाश्ता करते, चरखा कातते, रूई धुनते और वन्दे मातरम् का गीत समवेत स्वर में गाते । इतने बच्चों के बीच प्रबोध कुमार प्रसन्न हो गए वे भी चरखा कातते, सूत निकालते, रूई धुनते और स्लेट पर चित्र बनाते ।

कोठी के बच्चों के साथ खाना पीना, सुबह शानदार घोड़ा-गाड़ी पर रमना मैदान घूमने तथा फुटबाल वहाँ इक्ट्ठे अन्य बच्चों की ही टीम बनाकर एक घंटे खेल कूदकर लौटना और फिर गरम जलेबी और गरम दूध सब लेते ।

पं० प्रदुम्न मिश्र जी को सभी बड़े मास्टर कहते और नए शिक्षक बालेश्वर द्विवेदी जी को छोटे मास्टर । इस प्रकार हमलोग 6 भाई, एक बहन तथा चाचाजी के पुत्र-पुत्रियाँ सभी एक साथ गेस्ट हाऊस में पढ़ने लिखने लगे । श्री महेश चन्द्र प्रसाद एम0 ए०(अंग्रेजी) एम0 ए० (हिन्दी) को ब्रिटिश सरकार ने सरकारी स्कूल से निकाल दिया । क्योंकि उन्होंने " स्वदेश सतसई " नामक एक राष्ट्रीय काव्य ग्रंथ लिख कर दिया था। उन्हें हमलोगों के हिन्दी /अंग्रेजी शिक्षक के रूप में नियुक्त कर लिया गया।

प्रबोध कुमार में आशातीत परिवर्तन आने लगा। चित्रकला से उन्हें शौक था । दो-चार वर्ष बीते । कलकत्ता आर्ट स्कूल के अवकाश प्राप्त एक उच्च कोटि के चित्रकार श्री ईश्वरी प्रसाद वर्मा, जिनके पूर्वज मूल रूप से आरा वासी ही थे, उन्हें पिताजी कलकत्ता से ले आए । वर्मा जी सितार अच्छा बजाते थे और उनकी गीत संगीत गोष्ठी पिताजी के दरबार में होने लगी । दिन में वे प्रबोध कुमार को चित्रकला बताने लगे ।

इसी बीच एक दर्जी का एक मूक वधिर बच्चा भी हमारे स्कूल का छात्र बन गया है और "यह हुई आरा मूक वधिर विद्यालय की शुरूआत" । वास्तविक वर्ष सरकारी रेकर्ड के लिए 1958 माना गया, वही आज भी सरकारी रेकर्ड में है। पर स्थान जो हमारे स्कूल का, कोठी के समाने था, वह आज भी 2 बार स्थान परिवर्तित होकर, फिर वहाँ कोठी के सामने वाला गेस्ट हाऊस ही बना हुआ है।

इसी पते पर श्री सीताराम जी केशरी के कल्याण विभाग द्वारा भेजे गए प्रतिनिधि ने आरा मूक वधिर विद्यालय का इंस्पेक्शन 13/5/93 को किया और अपनी इंस्पेक्शन रिपोर्ट वे दे गए।

परन्तु *किन्हीं न किन्ही कारणों से अभी तक सरकारी मान्यता*, केन्द्रीय सरकार द्वारा इस विद्यालय को नहीं मिली। राज्य सरकार की मान्यता हमें सन् 1962 में मिल चुकी है और नाम मात्र को बिहार सरकार आर्थिक सहायता देती रही है, पर कभी भारत सरकार को केन्द्रीय मान्यता के लिए बिहार सरकार ने प्रपत्र तैयार कर नहीं दिया और एक-एक करके हमारे दोनों मित्र केन्द्रीय कल्याण विभाग के मंत्री श्री सीताराम जी केशरी ,काँग्रेस के अध्यक्ष हो गए और श्री अशोक कुमार चौधरी का दिल्ली से दक्षिण भारत ट्रान्सफर हो गया और हमारी फाईल अभी दबी पड़ी है ।

❖

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री आदिनाथ नेत्रविहीन विद्यालय

- स्थापना का संक्षिप्त इतिहास -

❑ सुबोध कुमार जैन

सितम्बर सन् 1964 की बात है । पुनीत जी मुझसे मिलने आए । मुझे आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने अपनी आँखें खो दी है । देखने से बिल्कुल नहीं मालूम पड़ता था। हमारे समक्ष जो नवयुवक बैठा हुआ था, उसकी आँखों से देखने की शक्ति चली गई है । पूछने पर पुनीत जी ने बताया कि वे कॉलेज में इम्तहान दे रहे थे, तभी उन्हें लगा कि उनकी आँखों से देखने की शक्ति चली गई

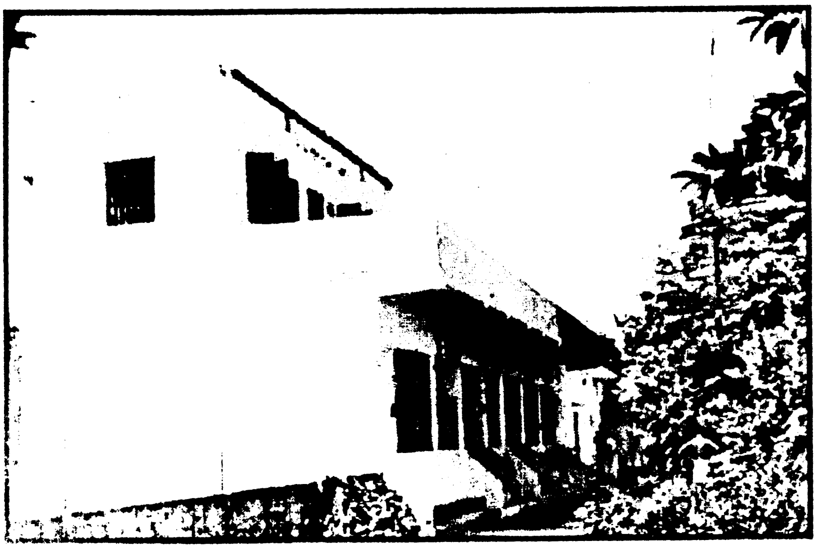

है। उन्होंने मुझे बताया कि अब वे बिल्कुल बेकार बैठे हैं और अगर अपने प्रभाव से उन्हें किसी नेत्रविहीन विद्यालय में काम दिलवा सकें, तो उनकी जिंदगी का उपयोग हो जायेगा । उन्हें ब्रेल से पढ़ने लिखने का पर्याप्त ज्ञान है । भले ही कुछ भी वेतन न मिले, वे काम में लगे रहना चाहते हैं । खाने-पीने आदि का प्रबंध है ।

मैंने उन्हें बताया कि पटना नेत्रविहीन विद्यालय में मेरी किसी से भी जान-पहचान नहीं है, पर मैं आपको सक्रिय रखने के लिये एक नेत्रविहीन विद्यालय खोलने का प्रयत्न कर सकता हूँ । वे प्रसन्न हो गये और तत्काल तैयार हो गये।

"तो यह है श्री आदिनाथ नेत्रविहीन विद्यालय के आरम्भ होने की कहानी ।"

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम के सामने श्री आदिप्रभु का मंदिर आरा-पटना रोड के उस पार स्थित है। एक टूटी-फूटी हालत में 3-4 कमरों की छोटी धर्मशाला के ट्रस्टी सदस्य थे, जो उसकी देखभाल करते थे। उनके माध्यम से बिना किसी कठिनाई के और बिना कुछ किराया के वह स्थान हमलोगों को मिल गया, जिसको मरम्मत कराकर श्री आदिनाथ प्रभु की कृपा से स्कूल खुल गया। बाला विश्राम का मंत्री होने से बाला विश्राम से भी सहयोग मिलता रहा और जैन यात्रियों की सहायता भी मिलने लगी। आरा की म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन हमारे मित्र थे, उनके सहयोग से इस स्कूल को मिडिल स्कूल तक की सरकारी मान्यता मिलने से पुनीत जी को तथा एक और शिक्षक को सरकारी वेतन मान मिलने लगा।

विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। सन् 1991 में श्री सीताराम जी केशरी भारत सरकार के कल्याण -विभाग के मंत्री नियुक्त हुए । उनसे हमारी पुरानी मैत्री थी।

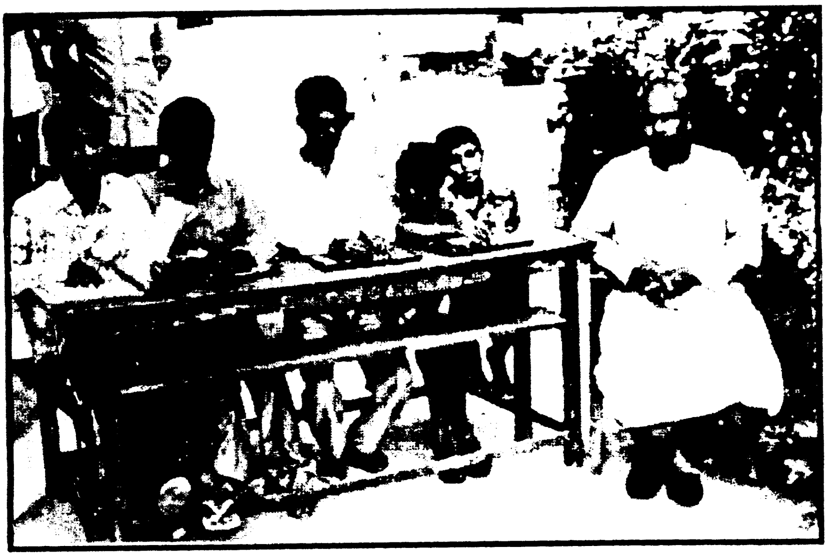

उन्होंने केन्द्रीय पर्यवेक्षक दिल्ली से भेजा और अन्ततोगत्वा केन्द्रीय कल्याण विभाग द्वारा सन् अक्टूबर 1993 से विद्यालय को केन्द्रीय आर्थिक सहायता मिलने लगी, जिससे होस्टल के नेत्रविहीन छात्रों के खाने-पीने और रहने का संतोषजनक प्रबंध होने लगा ।

सन् 1994 को हमारे एक मित्र प्रो० डॉ0 महन्द्र कुमार जैन का एक पत्र मुझे अमेरिका से मिला, कि वे जैन बाला विश्राम में अपने बच्चे की स्मृमि में 2-1 नये कमरे बनवा देना चाहते हैं । मैंने उत्तर दिया कि बाला विश्राम में फिलहाल नये कमरों की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी कि बाला विश्राम के अन्तर्गत श्री जैन महिला विद्यापीठ द्वारा स्थापित श्री आदिनाथ नेत्रविहीन विद्यालय को है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

डॉ० जैन कई वर्षों तक आरा के जैन कॉलेज में प्रोफेसर रह चुके थे, और हमारी कोठी के सामने हमलोगों के ही मकान में किरायेदार रह चुके थे । धर्मात्मा व्यक्ति थे, और हमलोगों से तथा आरा से सुपरिचित थे।

उन्होंने हमारे लिखने पर नेत्र विहीन विद्यालय के मंत्री डॉ० डी०सी० जैन से पत्राचार करके 3003 डालर भेज दिये । बाद में किश्तों में अमेरिका के भारतीय प्रवासियों की संस्था ट्रिपल (एच एच एच), ने भी 2500 डालर सहायता के रूप में भेजे, जिससे आज उस टूटी -फूटी धर्मशाला की पूरी तरह से मरम्मत कारकर दुमंजिला पर भी 3-4 कमरे बनवा दिये ।

छात्रों की संख्या 20-25 रहती है। सभी शिक्षकों को अब भारत सरकार के द्वारा पर्याप्त वेतन तथा छात्रों को नि:शुल्क भोजन-पानी -आवास की अच्छी व्यवस्था हो गई है ।

सौभाग्य से उस समय कल्याण विभाग के सचिव श्री अशोक चौधरी जी से हमारा पुराना संबंध निकल आया। किसी समय आरा में वे जिला कलेक्टर थे। वे बनारस के सुप्रसिद्ध कला प्रेमी और भारत कला मंदिर, बी०एच०यू०,बनारस के संस्थापक, निदेशक राय कृष्ण दासजी के पुत्र के दामाद थे । एक बार अपने दामाद श्री चौधरी के निमंत्रण पर वे आरा आए तो उन्होंने मुझे फोन किया और हमारे निमंत्रण पर श्री चौधरी, उनकी पत्नी तथा हमारे मामा जी साहब हमारे घर भोजन पर आए थे । काफी समय तक बातें होने से चौधरी जी से पारिवारिक व्यक्ति के रूप में हमारे ग्रुप में आ चुके थे । यद्यपि श्री सीताराम जी केसरी की अनुकम्पा से मुझे केन्द्रीय ग्रान्ट मिलने लगा पर इसे मिलने के क्रम में श्री चौधरी का सहयोग भी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा ।

बाद में इन्हीं चौधरी जी के कारण मुझे 3000 विकलाँगों को कृत्रिम अंग प्रदान करने में उन्होंने आरा और पटना में केन्द्रीय कल्याण विभाग का बहुत सहयोग दिलाया था। वह अलग कथा है ।

केन्द्रीय ग्रान्ट श्री जैन महिला विद्यापीठ के मार्फत नेत्रविहीन विद्यालय को मिल रहा है और उसमें बढ़ोत्तरी भी होती जा रही है ।

इस प्रकार नेत्र विहीनों के कल्याण के लिए जैन समाज तथा हमलोगों के सुप्रयत्न से एक अच्छी संस्था सफलतापूर्वक चल रही है और इस समय स्कूल के पुनीत जी हेड मास्टर हैं और कई शिक्षक कार्यरत हैं ।

●

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री की डायरी से . . .

जीवन– काल में मृत्यु महोत्सव

सन् 1973 ई० अर्थात् माँश्री चँदाबाई के समाधिमरण से चार वर्ष पूर्व ही जैन समाज के प्रसिद्ध साप्ताहिक समाचार पत्र ''जैन संदेश'' में माँश्री की मृत्यु का समाचार प्रकाशित हो गया। जैन संदेश की मातृ संस्था दिगम्बर जैन संघ, मथुरा के प्रधानमंत्री पं. जगन्मोहन लाल जी ने इस समाचार को विस्तार से इस प्रकार लिखा--

दि. जैन समाज की माताजी का चिरवियोग

बाल-वैधव्य के अभिशाप को जगन्मातृत्व में बदलने वाली माताजी (ब्र. विदुषी पंडिता चंदाबाई जी) के देहावसान का दु:खद समाचार पाकर दि० जैन समाज के मातृमंडल का विगत 50 वर्षो का इतिहास मानस क्षितिज पर घूम गया। वैष्णव कुल में जन्म लेकर माताजी अभिजात्य के साथ दि० जैन राजकुल की बहू होकर आयीं। और अपने आपको पतिकुल के धर्म तथा मर्यादाओं में ढाला। यौवन कलिमा प्रस्फुटित होने के पहले ही करालकाल ने किशोर पति को छीन लिया। पारिवारिक शोक सागर का ज्वार-भाटा होना ही नहीं चाहता था किन्तु जिन शासन की दृढ़ श्रद्धानी-कुलवधू ने भोग-भाग को योग मार्ग बनाने की ठानी।

ऋषिकल्प जेठ स्व. बाबू देवकुमार रईस, आरा ने अनुजवधू के अध्ययन की राजसी व्यवस्था की। उत्तर-दक्षिण भारत के ख्यातनामा, त्यागी अध्यापक रखे गये और माताजी का सरस्वती रूप निखर उठा। ज्ञानार्जन और संयम ने उनके महाश्वेता स्वरूप को साकार कर दिया।

परम कल्याणपूर्ण हृदय ने आस-पास की विधवा बहनों को देखा। उनका सर्वदा सर्वथा परिवदेनमय जीवन देखकर हृदय में टीस उठी और कन्याशाला ने ''दि० जैन बाला विश्राम'' का रूप ले लिया।

राजन्य उदारता, सुरूचि और शिष्टता की प्रतिमूर्त्ति स्व० बाबू निर्मल कुमार जी रईस ने अपने पारिवारिक दानों से इसे ऐसा सम्हाला और संजोया कि यह दि० जैन समाज की एक आदर्श महिला शिक्षा संस्था बन गयी। किन्तु इस प्रकृति सुन्दर शरीर की आत्मा बड़ी माता जी ही थीं। वे एक होकर भी त्रिमूर्ति

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुआजी नेमिसुन्दरीजी और मौसी बृजबाला देवीजी के सहयोग के कारण) थीं। और प्रत्येक छात्रा का पूरा-पूरा ध्यान रखना, उसे उसके अनुरूप पठन-पाठन, त्याग की सुविधाएँ जुटाना माता चंदाबाई जी की प्रकृति थी। इस प्रकार माताश्री ने चुपचाप समाज को विदुषियों और सुसंस्कृत कुल बंधुओं से भर दिया। उन्होंने जो किया वह अपने आप में अनुपम है। पूज्यवर श्री 105 स्व. गणेश वर्णी महाराज और पूज्यवर श्री 108 समन्तभद्र महाराज माताजी के आदर्श थे। विशेषता इतनी ही थी कि माताजी सप्तम प्रतिमा से आगे के त्याग का निरवद्य पालन इस युग में दुष्कर मानती थीं। फलतः कहे जाने पर भी और मनसा परम विरक्त होने पर भी ब्रह्मचर्य प्रतिमा पर वे त्याग मार्ग में भी अनुपम मर्यादा बना गयी हैं। आयुकर्म का विधान जानकर भी आज मातृवियोग की वेदना को रोकना असम्भव हो रहा है। संघ परिवार उनके चरणों में श्रद्धांजलि समर्पित करता हुआ उनके अनन्त आशिष्य की कामना करता है।

-**पं. जगन्मोहन लाल**, प्रधानमंत्री, दिगम्बर जैन संघ, मथुरा

माँश्री ने अपनी डायरी में दिनांक 28 जून 1973 को उक्त समाचार की कटिंग संलग्न की और लिखा--

" हमारे मरने पर इसी को पुन: छपा दें – जैन अखबारों में पुन: परिश्रम नहीं होगा। " जीवन काल में मृत्यु महोत्सव की अनुभूति और अनाशक्ति का इससे महत्त्वपूर्ण उदाहरण क्या हो सकता है।

जैन संदेश के नौवें अंक में गलती से हमारे मरण के समाचार छप गए हैं सब ओर से तार–पत्र आ रहे हैं। उसकी कटिंग यह है। २ छात्राएं दिल्ली और कटनी से भी आई। शशिप्रभा और सुलोचना दोनों अपने भाईयों का विवाह छोड़कर आ गई इस गलत घटना से सबको बड़ा कष्ट हुआ। हमें तो हर्ष विशाद कुछ नही हुआ। इस गलत खबर का निराकरण कर दिया।

चन्दाबाई

(चंदाबाई)

●

प्रदेश के शिक्षकों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता पर माँश्री की चिंता

शिक्षकों के वेतनमान बढ़ाने के लिए भारत सरकार ने डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में कमीशन नियुक्त किया, इसकी संस्तुतियाँ कोठारी कमीशन के नाम से जानी गई। कमीशन की संस्तुतियों के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के अध्यापकों के वेतनमान संशोधित किए गए, जिससे सभी अध्यापकों के वेतन में पर्याप्त वृद्धि हुई।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को यह वेतनमान प्राप्त करने के लिए राज्य सरकारों द्वारा एक विशेष परीक्षा का आयोजन किया गया। श्री जैन बाला विश्राम, आरा में आरा - शाहाबाद जिले के अध्यापकों की परीक्षा का आयोजन किया गया। अध्यापकों ने परीक्षा में जमकर नकल कीं तथा निरीक्षकों के रोकने पर उल्टा उन्हें ही डांट दिया, जिससे उन्हें ही चुप होना पड़ा । मांश्री ने आश्रम में घटित इस प्रसंग को अत्यंत कष्ट से झेला भोगा ।

मांश्री ने अपनी डायरी में दिनांक 01.11.68 को लिखा --

दो दिनों से शिक्षक लोग परीक्षा दे रहे हैं, कोठारी कमीशन के नियमानुसार पास होने पर वेतन बढ़ेगा । प्रौढ़ पुरूष–महिलाएँ हैं देख–देख कर और परस्पर पूछ–ताछ कर पर्चे कर रहे हैं, पूरी अनुशासनहीनता है । गार्ड बोलते हैं तो उनको डांटते हैं। बेचारे चुप हैं कुछ गुंडे भी साथ घुस आते हैं । अत: २ दिन की पढ़ाई की छुट्टी कर दी है, गेट पर चपरासी बैठा है। कल परीक्षा समाप्त होगी ईमानदारी सब क्षेत्रों में से उठ गई है। यहाँ की अध्यापिकाएँ भी बैठी रहती हैं, उपन्यास पढ़ती हैं, पढ़ाती नहीं ।

चन्दाबाई

माँश्री "वाचस्पति" उपाधि से अलंकृत

ब्र. पं. मांश्री चंदाबाई को मगध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विश्वमोहन ने 26 जुलाई 1969 को 'वाचस्पति' की मानद उपाधि से अलंकृत किया। उत्तरीय और मांश्री की साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख करने वाली पुस्तिका भेंट करके सम्मानित किया। नागरी प्रचारिणी सभा के सभागार में शाहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन, आरा द्वारा आयोजित विशेष समारोह में विशिष्ट सेवाओं के लिए 10 विद्वानों को सम्मानित किया गया। मांश्री एक मात्र महिला विदुषी थीं जिन्हें उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया ।

मांश्री ने अपनी डायरी में लिखा --

आषाढ़ शुक्ल द्वादशी वि. सं. २०२६ ता: २६ जुलाई सन् ६९ को शाहाबाद हिन्दी – साहित्य–सम्मेलन, आरा मगध विश्वद्यालय के कुलपति विश्वमोहन कुमार सिंह ने हमको साहित्य वाचस्पति की उपाधि दी । १ दुपट्टा ,१ पुस्तिका भी दी जिसमें हमारी लिखी पुस्तकों और लेखों के विषय में लिखा है । नागरी प्रचारिणी सभा की इमारत में उत्सव हुआ । १० मनुष्यों को उपाधि दी गई । डा० नेमी चन्द जी शास्त्री, ज्योतिषाचार्य मुख्य कार्यकर्ता थे । पुस्तकें भी उन्होंने लिखी है ।

चन्दाबाई
(चंदाबाई)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन बाला विश्राम की स्वर्ण जयन्ती

चैत्र शुक्ल सप्तमी दिनांक 13 अप्रैल 1970 को जैन बाला विश्राम, आरा की स्थापना के पचास वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयन्ती का उत्सव आश्रम परिसर में मनाया गया । बिहार सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री ने समारोह की अध्यक्षता की। कलकत्ता से बाबू नन्दलाल जी सरावगी तथा पटना से श्री बद्री प्रसाद जी विशेष रूप से आमन्त्रित थे ।

शिक्षा मन्त्री ने 50 दीप जला कर उत्सव का शुभारम्भ किया । आश्रम परिसर में भगवान् बाहुबली की प्रतिमा के समक्ष ब्र. चन्दाबाई जी द्वारा निर्मापित भगवान् आदिनाथ के मानस्तम्भ पर 50 पीत पताकायें फहरायी गयीं । आश्रम की छात्राओं में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये । 'श्रेष्ठ भारतीय नारी' शीर्षक नाटक का अभिनीत हुआ । सादगी और गृहस्थी का कार्य पसन्द करने वाली कस्तूरबा गान्धी का अभिनय प्रस्तुत करने वाली छात्रा को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया । भारतीय नारी के अभिनय को बहुत सराहा गया ।

जैन बाला विश्राम की संस्थापिका, अधिष्ठात्री एवं संचालिका ब्र. पंडिता चन्दाबाई जी ने आश्रम की स्वर्ण जयन्ती के उत्सव का वृत्त अपनी डायरी में इस प्रकार लिखा है--

मि० चैत्र सुदी सप्तमी ता० १३ अप्रैल सन् ७० को जैन बाला विश्राम का वार्षिकोत्सव पचास वर्ष की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई, शिक्षा मंत्री बिहार सरकार के सभापतित्व में । भीड़ बहुत थी, कलकत्ता से बाबू नन्दलाल जी सरावगी, पटना से बद्री प्रसाद आए । छात्राओं का अभिनय बहुत अच्छा हुआ । भारत को सादगी गृहस्थ कार्य पसन्द करने वाली नारी का चुनाव था । कस्तूरबा गाँधी का वेशभूषा पसन्द हुआ, उनका ही चुनाव हुआ । ५० दीपक जलाकर मंत्री जी ने उद्घाटन किया । ५० पीस पताका मानस्तंभ पर लगाई गई ।

चन्दाबाई

(चंदाबाई)

⊙

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमती अनूपमालाजी तथा ब्र. चंदाबाई जी के नाम क्षु. गणेश प्रसाद वर्णी का ऐतिहासिक पत्र

अध्यात्म पुरूष क्षु. गणेशप्रसाद जी वर्णी तथा अनूपमाला देवी धर्मपत्नी श्रीदेव कुमार जी और चंदाबाई जी के बीच बराबर पत्राचार होता रहा । ऐतिहासिक तथा आध्यात्मिक महत्त्वपूर्ण उन पत्रों में से एक यहाँ प्रस्तुत है । आशा करनी चाहिए कि सभी पत्रों का संग्रह प्रकाशित होगा । - ***संपादक***

''न शीतलाश्चन्दन चन्द्र खूमयो न गाङ्. मम्मों न च हारशष्टयः ।
यथा मुने तेऽनद्य वाक्यश्मयः शमाम्बुगर्भाः शिशिरा विपश्चितं ।।''

श्री शांतमूर्ति अनूपमाला देवी योग्य इच्छाकार

श्रीमति प्रशममूर्ति चंदाबाई जी योग्य इच्छाकार ।

पत्र आया । समाचार जाने । आपका दिल और दिमाग कमजोर है सो इससे आपकी जो चरम अभिलाषा है उसमें तो यह योग बाधक नहीं-- क्योंकि ज्ञान की पूर्णता का विकाश तो भाव मन के अभाव में ही होता है और परम यथा ख्यात चरित्र की प्राप्ति कार्य योग के ही अभाव में होती है । मन जितना बलिष्ठ होगा उतना ही चंचल होगा तथा इन्द्रियों में जितनी प्रबलता होगी उतनी ही विषयोन्मुख होने में साधक होगी । अतः इनकी यदि निर्बलता हो गयी हो, जाने दो- अब रही बात भावों की शुद्धता की सो की अशुद्धता का कारण मिथ्यात्व और कषाय है। उस पर विचार कीजिये मिथ्यात्व तो आप की सत्ता में है ही नहीं अब केवल कषाय ही बाधक कारण रह गया । अस्तु कषाय के होने में बाह्य कर्म विषयादिक हैं सो उनके साध--क कारण इन्द्रियादिक हैं वह आप के पुण्योदय कृश ही हो गए हैं । अब तो केवल सिद्धेम्यो नमः की भावना ही कल्याणकारिणी है - कल्याण के अर्थ ही इन साधनों की आवश्यकता है आत्मा यदि देखा जावे तब स्वभाव से अशांत नहीं कर्म कलंक के समागम से अशांत सदृश हो रहा है । कर्म कलंक के अभाव में स्वयमेव शांत हो जाता है । जैसे श्री पुरूषोत्तम रामचन्द्र जी श्री शीलमूर्त्ति सीता जी के विरह में कितने व्याकुल रहे जो वृक्षों से पूछते हैं तुमने सीता देखी है वही पुरूषोत्तम रामचंद्र जी श्री लक्ष्मण के मृत्त शरीर को छःमास तक लेकर सामान्य मनुष्यों की तरह भ्रमण करते रहे और जब कर्म कलंक उपशम हुआ सर्व उपद्रवों से सुरक्षित हो स्वाभाविक आत्मोत्थ अनुपम चिद्वानन्द मय होकर मुक्ति रमा के वल्लभ हुए यही बात ज्ञान सूर्योदय नाटक में आयी है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"कलत्र चिंता कुल मान सोयो जघान लंकेशमवाप्त युद्धः ।
सांकिंपुनः स्वास्थ्यमवाप्य लोके समग्र धीर्नो विरराम रामः ॥"

अतः सम्पूर्ण विकल्पों को छोड़ निर्बलावस्था में एक यही विकल्प करना अच्छा है अरहंत परमात्मा ज्ञायक स्वरूप आत्मा अथवा यह भावना श्रेयस्करी है । आपका मन निर्बल है और मन ही आत्मा को नाना प्रकार की चंचलता में कारण हैं । शत्रु निर्बल का जीतना कोई कठिन नहीं । अतः ज्ञानासिकर ऐसा निपात करिए जो शिर न उठा सके इसके वश होते ही और शेष शत्रु सहज ही में पलायमान हो जावेंगे यही परमात्मा प्रकाश में योगीन्द्र देव ने कहा है-

**"पंचहंणाय कु वसि करहु जेण होति वसि अण्ण।
मूल विण हई तरू वरहं अवसई सुक्कहि पण्ण॥"**

आप की इस समय जो चंचलता है वह इस विषय की है कि हमारा अंतिम समय अच्छा रहे सो निष्कारण है । क्योंकि आपने उस मार्ग में प्रयाण कर दिया अब उतावली करने से क्या लाभ । अतः श्री धनन्जय इस श्लोक को विचारिए कैसा गंभीर भाव है---

"इति स्तुतिं देव विधाय दैन्याद्वरंनयाचे त्वमुपेक्ष कोसि ।
छायातरूं सं श्रयतः स्वतः स्यात्कश्छायया याचितयात्म लाभः ॥"

अतः स्वकीय कल्याण का मार्ग अपने में जान सानन्द काल यापन करिए और यह पाठ निरंतर चिंतन करिए-

सहज शुद्ध ज्ञानानन्दैक स्वभावोहं निर्विकल्पोहं उहासीनोहं निज निरंजन-शुद्धात्म सम्यक-श्राद्धान-ज्ञानानुष्ठान रूप निश्चय रत्नत्रायात्मक निर्विकल्प-समाधिसंजात वीतराग-सहजानन्दरूप-सुरवानु-भूतिमात्रलक्षणेन स्वसंवेदनज्ञानेन स्वसंवद्यो गम्यः प्रश्रयो भरिता वइयोहं रागद्वेष -मोह-क्रोध-मान-माया-लोभ-पचेन्द्रिय विषय व्यापार-मनोवचन काय व्यापार-भाव-कर्मद्रव्य कर्मनों कार्य ख्याति-पूजा-लाभ-दृष्टश्रनृतानु भूत भोगाकंक्षा रूप निदान-माया मिश्या निदान शल्यत्रयादि सर्वविभाव परिणाम रहित शून्यो हैं, जगत्रये कालत्रयेऽपि मनोवचन कायै कृत कारितोर्मुनु मतैश्च शुद्ध निश्चय नयेन तथा सर्वेऽविजिवा इति निस्तरं भावना कर्त्तव्या ।

श्रीयुत प्रशममूर्त्ति चंदाबाई जी योग्य इच्छाकार । आप का स्वास्थ्य अच्छा होगा। आज कल यहाँ गर्मी बहुत पड़ने लगी है। अतः मैं वैशाख वदी 3 को हजारीबाग चला जाऊँगा और जेठ के अन्त में आने का विचार है ।

आ. शु. चि.
गणेशप्रसाद वर्णी

(क्षु. गणेश प्रसाद वर्णी)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद्

□ डॉ० सुनीता जैन
श्री जैन बाला विश्राम, आरा

नारी जागरण के पुनीत उद्देश्य को लेकर तीर्थराज सम्मेद शिखरजी में माघ सुदी 4 वीर निर्वाण संवत् 2436, विक्रम संवत् 1966 तद्नुसार सन् 1909 में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् की स्थापना हुई। ब्र० मगनबाई, ब्र० ललिताबाई, ब्र० चन्दाबाई जी परिषद् की स्थापना में अग्रगण्य थीं। ब्र० कंकुबाई अध्यक्षा और ब्र० मगनबाई मन्त्राणी मनोनीत हुईं। उन्होंने जीवन पर्यन्त अत्यन्त उदार और सेवाभाव से परिषद् का दायित्व संभाला। समाज ने उन्हें 'महिलारत्न' की सम्मानित उपाधि से अलंकृत किया। मगनबाई के दु:खद वियोग के बाद ब्र० ललिताबाई मन्त्राणी बनीं और अदम्य उत्साह एवं परिश्रम से परिषद् का संचालन किया। सन् 1937 में ललिताबाई जी की अस्वस्थता के कारण ब्र० ब्रजबाला देवी ने मन्त्रित्व संभाला। प्रारम्भ में वार्षिक सदस्यता शुल्क रखा गया मात्र एक रुपया।

राष्ट्रीय मंच

महिला परिषद् की स्थापना ने जैन समाज में नारी जागरण के लिए एक राष्ट्रीय मंच प्रदान किया। भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में परिषद् के अधिवेशन आयोजित होने लगे। देश भर में परिषद् के अधिवेशनों के समाचार बिजली की तरह फैलना शुरु हो गए। नारी जागे, शिक्षित बनें, स्वावलम्बी बनें, रूढ़ियों और अंधविश्वासों से उबरें, पर्दा हटाएँ, आँखों की लज्जा संभाले, अपनी अस्मिता को उजागर करें। और न जाने ऐसे कितने ही संदेशों का शंखनाद समाज में गूँजने लगा। बाल विवाह, अनमेल विवाह, कन्या विक्रय की धज्जियाँ उड़ने लगी। परिषद् के प्रस्तावों को समाज में पुरजोर समर्थन मिला। विभिन्न प्रान्तों में परिषद की शाखाएँ स्थापित हुई। बीसवीं शताब्दी का यह दशक भारत के इतिहास का स्वर्णिम युग था। सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की लहर फैल गई थी। कश्मीर से कन्या कुमारी और काठियावाड़ से कामरूप तक जनमानस में स्वतंत्रता की चिनगारी पहुँच चुकी थी। ऐसे समय जैन समाज में अखिल भारतीय स्तर पर नारी समाज का संगठित होना एक ऐतिहासिक घटना थी।

परिषद् की दुंदुभी बज उठी

परिषद् का ग्यारहवाँ अधिवेशन 1922 में लखनऊ में सम्पन्न हुआ। क्रान्ति के बढ़ते कदम में एक नई चेतना आई। अन्य प्रस्तावों के साथ एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रस्ताव पारित हुआ- 'जैन महिलादर्श' के नाम से परिषद् का एक मुख्य मासिक पत्र निकाला जाए। संकल्प सर्वसम्मति और बड़े उत्साह से पारित हुआ। नई आशाएँ जगीं। नई उम्मीदें जन्मीं। मगनबेन और ललिताबेन गुजराती भाषी थीं। ब्र० चन्दाबाई जी प्रधान सम्पादिका मनोनीत हुईं और ललिताबाई उप-सम्पादिका।

जैन महिलादर्श का लोकार्पण

इसी वर्ष अक्षय तृतीया को **'जैन महिलादर्श'** के प्रथम अंक का लोकार्पण हुआ तो सम्पूर्ण देश में, जैन समाज में अपूर्व उल्लास छा गया। डबल डिमाई आकार के 40 पृष्ठों का अंक, रंगीन कवर, बारह अंकों में नारी के लिए नारियों की लेखनी से लिखित लगभग 500 पृष्ठों की सामग्री। वार्षिक शुल्क एक रुपया पचास पैसा मात्र। परिषद् की सदस्याओं को निःशुल्क। सदस्यता शुल्क मात्र दो रुपये वार्षिक।

'जैन महिलादर्श' ने क्रान्ति की दुंदुभी बजा दी। सन् 1947 में जिस वर्ष भारत की स्वतंत्रता सुनिश्चित हुई, उसी वर्ष जैन महिलादर्श ने अपने प्रकाशन के सफल पच्चीस वर्ष पूर्ण कर 'रजत जयन्ती' अंक निकाला। 52 वर्षों तक 'जैन महिलादर्श' का प्रकाशन निर्बाध गति से चलता रहा। प्रकाशक थे स्वनामधन्य श्री मूलचन्द किसनदास कापड़िया, सूरत (काठियावाड़ - गुजरात)। 'जैन महिलादर्श' ने क्रान्ति की दुंदुभी बजा दी। (महिलादर्श पर स्वतंत्र रूप से अन्यत्र विस्तार से लिखा गया है)।

परिषद् बनी प्रेरणा स्रोत

ब्र० चन्दाबाई जी की अनुजा विदुषीरत्न ब्रजबाला देवी ने सन् 1937 में परिषद् का मंत्रित्व संभाला। 1942 तक की रिपोर्ट में उन्होंने लिखा-

"भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद की सुयोग्य मंत्राणी, महिलारत्न श्रीमती मगनबाईजी, जे० पी०, बम्बई ने इसके प्रारम्भ काल से लेकर अपने जीवन पर्यन्त इसकी सेवा बड़े उदार भावों से की थी। आपके दुःखद वियोग के पश्चात् श्रीमती जैन महिलारत्न ललिताबाईजी मन्त्राणी रहीं और आपने भी उसी अदम्य उत्साह एवं महान् परिश्रम से परिषद् का कार्य सम्हाला, उनके बाद मन्त्रित्व का भार मुझे सौंपा गया।

"महिला परिषद् का 24 वाँ अधिवेशन जैनबिद्री (श्रवणबेलगोला) में तथा 25 वाँ अधिवेशन इन्दौर में पंचकल्याण महोत्सव पर बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। जिनका संक्षिप्त विवरण आगे दिया गया है।

"मुझे आशा थी कि परिषद् की प्रगति अब अधिकाधिक उन्नतशील होगी। परन्तु विश्वव्यापी युद्ध के कारण देश की स्थिति बिगड़ गई। भारतवर्ष में अत्यधिक मंहगाई होने के कारण, रेलों की कमी के कारण, कागज की कमी के कारण सफर की कठिनाइयों से धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों को भारी धक्का पहुँचा। प्रायः सभी संस्थाओं की मंद गति रही। ऐसी विकट परिस्थिति में महिला परिषद् का कार्य भी जैसा होना चाहिए था वैसा न हो सका। तथापि इसकी सदस्याओं के उत्साह से और समस्त जैन समाज की विदुषी स्त्रियों के सहयोग से परिषद् प्रतिवर्ष अपना अधिवेशन करती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रही और 'महिलादर्श' पत्र द्वारा अपने उद्देश्यों का प्रचार करती रही। यह बड़े संतोष का विषय है। इसी प्रकार समय-समय पर उपदेशिकाओं द्वारा भ्रमण कराकर कसबों और ग्रामों में परिषद् का प्रचार किया गया तथा विभिन्न प्रान्तों में महिला परिषद् की शाखा सभायें स्थापित की गईं है। परन्तु केवल स्थापनामात्र से ही कार्य न चलेगा। जबतक प्रत्येक महिला कुरीतियों का त्याग न करेंगी तबतक परिषद् को पूर्ण सफलता नहीं मिल सकती है। अतएव बहनों को परिषद् में पूर्ण सहयोग देना चाहिए। महिला परिषद् अब तक अपने अधिवेशन भारतवर्ष के सभी मुख्य प्रान्तों में कर चुकी है और सारे देशभर की महिलाओं का सहयोग भी प्राप्त कर चुकी है, परन्तु इतने से ही सफलता नहीं समझनी चाहिए। जब भारत की सभी प्रान्तों की जैन महिलाएँ इसके प्रस्तावों को अचूक अमल में लायेंगी, तभी साफल्य समझना होगा।

नारी जागृति

परिषद् के द्वारा स्त्री-समाज में बहुत जागृति हो गई है। जगह-जगह स्त्रियाँ स्वाध्याय करने लगी हैं। शास्त्र-सभाएँ खुलती जाती हैं। स्त्रियाँ पहले पूजन करती हुई संकोच किया करती थीं व पुरुष भी रोकते थे। अब बहुत सी स्थानों में स्त्रियाँ बड़े आनन्द से पूजन करती हैं। पुरुषों की तरफ से भी उनके हकों में रुकावट दूर होती जाती है, मिथ्यात्व का प्रचार भी घट रहा है। गहने कपड़े का शौक भी घटता जाता है। विद्या व धर्मप्रेम बढ़ता जाता है। स्वदेशी वस्त्रों के व्यवहार की रुचि भी बढ़ती जाती है। प्रत्येक प्रान्त में जो शाखा सभाएँ स्थापित हुई हैं उनसे स्त्री शिक्षा प्रचार में बड़ी सहायता मिल रही है। महिलादर्श की कविता मंदिर स्तम्भ में कविताओं की समस्यापूर्ति करने से अनेक महिलाएँ कवियित्री बन गई हैं। उनकी शक्ति का विकास होता जाता है।

नवीन पत्रों का प्रकाशन

परिषद् के आर्थिक सहयोग से 'महाराष्ट्र महिला' नामक मराठी भाषा का मासिक पत्र सोलापुर से श्रीमती ब्र० विदुषीरत्न सुमतिबाई शाह के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता रहा है।

बुन्देलखण्ड सी० पी० में सागर का महिला-मण्डल अच्छा कार्य कर रहा है। "जैन महिला बोधक" त्रैमासिक पत्र श्रीमती तेजाबाई जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता है। इस प्रकार महिलादर्श के दो सहयोगी पत्रों का जन्म हुआ है।

देशभर में परिषद् की शाखाएँ खुलें

रिपोर्ट में आगे कहा गया- परिषद् की जागृति के बिना शाखा सभाओं के नहीं हो सकती है। हर्ष का विषय है कि सन् 1939 से कितने प्रान्तों में शाखा सभाएँ स्थापित हो गई हैं और हो रही हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निम्नलिखित शाखाएँ अच्छा कार्य कर रही हैं।

1. शोलापुर - मंत्रिणी सुमतिबाई शाह।
2. सागर- मंत्रिणी तेजाबाई रांधेलिया।
3. इन्दौर- मंत्रिणी श्रीमती कंचनबाई जी।
4. सहारनपुर- मंत्रिणी केशरबाई जी।
5. मुजफ्फरनगर- मंत्रिणी सरस्वती देवी बस्सो देवी।
6. झाँसी- मंत्रिणी सुनहरी देवी/उपमंत्रिणी-मखतुल्ली देवी।
7. आगरा- मंत्रिणी अंगूरी देवी जी।
8. कैराना-मंत्रिणी भागवती देवी/उपमंत्रिणी-चम्पा देवी।

पढ़ी लिखी महिलाओं और अध्यापिकाओं को उचित है कि अपने-अपने नगर में महिला परिषद् की शाखा स्थापित करें और उनका भली प्रकार संचालन कर रिपोर्ट हमारे पास भेजें।

परिषद् ने ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में अपने प्रतिनिधि भेजकर नारी जागरण का बीड़ा उठाया है।

सन् 1940 ई० में उपदेशिका का कार्य श्रीमती मूलाबाई जी ने चौरई में कई महीनों तक रह कर अच्छा काम किया। सी० पी० प्रान्त में नागपुर, डोंगरगढ़, देवगढ़, दुर्ग आदि विभिन्न स्थानों में घूम-घूम कर शास्त्र सभा, स्त्री सभा, बहनों में कुरीति निवारण, शिक्षा प्रचार कर, सदुपदेश देकर जागृति कीं। स्वाध्याय करने के नियम बताये। स्थान-स्थान पर जो पाठशालाएँ चालू थीं, निरीक्षण किया। जहाँ पाठशालाएँ बन्द हो गई हैं, उन्हें पुनः प्रेरणा देकर चालू किया। आपके भ्रमण के समाचार बराबर जैन पत्रों में समय-समय पर निकलते रहे। जहाँ-जहाँ की बहनों ने परिषद् को द्रव्य देकर पुण्य लाभ लिया। वह चंदा महिला परिषद् में जमा हुआ तथा उनका नाम पत्रों में प्रकाशित किया गया। दुर्ग में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा के समय आप गई थीं। वहाँ पर स्त्री सभा श्री० ध० प० बैजनाथ जी सरावगी, कलकत्ता के सभापतित्व में की तथा सभापति महोदया ने 51 रु० परिषद को प्रदान किये। सन् 1942 ई० में उपदेशिका का कार्य मूलाबाई जी, चौराई तथा श्रीमती गुणमाला देवी, मुजफ्फरनगर ने किया। मुलाबाई जी ने विशेष सी० पी० में भ्रमण किया। नागपुर, डोंगरगढ़, छिन्दवाड़ा, देवगढ़, दुर्ग आदि में भ्रमण किया। शास्त्र सभा और स्त्री सभाएँ कीं। बहनों में फैली कुरीतियों को हटानें के लिए सभा करके समझाया गया। शिक्षा प्रचार पर अच्छे व्याख्यान दिये। स्वाध्याय करने के नियम दिलाये तथा स्वाध्याय के फार्म भर-भर कर आरा आफिस में भेजे।

प्रस्ताव नं० 6 के अनुसार गुणमाला देवी जी ने केवल सफर खर्च लेकर भ्रमण का कार्य किया। आप देहली, सहारनपुर, चिल्काना,सुल्तानपुर, देवबन्द, ज्वालापुर,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हरिद्वार, कनखल, मुजफ्फरनगर, पानीपत, सोनीपत आदि स्थानों में गईं तथा स्त्री सभा व शास्त्र सभा करके स्त्री शिक्षा का प्रचार किया।

सन् 1942 में महायुद्ध के कारण उपदेशक-विभाग का कार्य उचित रीति से न हो सका। क्योंकि स्त्रियों के सफर करने में कठिनाइयाँ बढ़ती गई तब भी कुछ महिलाओं ने स्थान-स्थान पर सभाएँ कीं और स्त्री शिक्षा का प्रचार किया। श्रीमती चमेली देवी, सिवनी तथा श्रीमती गुणमाला देवी मुजफ्फरपुर के कार्य मुख्य हैं।

परिषद् के माध्यम से स्वाध्याय का प्रचार

परिषद् में एक स्वाध्याय विभाग भी है, जिसकी मंत्रिणियाँ स्थान-स्थान पर जाकर स्वाध्याय करने का प्रचार करती हैं और महिलाओं को नियम बताती हैं। वास्तव में आजकल स्वाध्याय के समान उपयोगी और कोई वस्तु नहीं है। इसके प्रचार की बड़ी आवश्यकता है।

गत् वर्षों परिषद् में स्वाध्याय प्रचार का कार्य भी बहुत अच्छा हुआ। स्वाध्याय की मंत्रिणी होकर विभिन्न देशों में महिलाएँ प्रचार कर रही हैं। परिषद् की तरफ से स्वाध्याय के छपे हुए फार्मो को भरवाकर आरा दफ्तर भेजती हैं।

श्रीमती चमेलीबाई जी, सिवनी, श्रीमती मूलाबाई, चौरई, श्रीमती कुन्ती देवीजी, सहारनपुर, श्रीमती प्रभावतीबाई, खण्डवा, श्रीमती भूरीबाई जी, इलाहाबाद, श्रीमती कस्तूरीबाई जी, इन्दौर ने इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया। श्रीमती चमेलीबाई जी, सिवनी ने भिन्न भिन्न नगरों में जैसे कि जबलपुर, सागर, नागपुर, खुरई, इटारसी, दमोह, छिन्दवाड़ा, होशंगाबाद, बालाघाट, भेलसा, राहतगढ़, कुटेरा, रामटेक, बाँदा, सिवनी, गंजबासोदा, बरोदिया आदि स्थानों में स्वाध्याय प्रचार किया।

परिषद् के वार्षिक अधिवेशन

सन् 1940 के फरवरी माह में श्रवणबेलगोला में श्री बाहुबलि स्वामी के मस्तकाभिषेक के समय भा० व० दि० जैन महिला परिषद् का 24वाँ अधिवेशन श्रीमती अम्मा ध० प० मन्जय्या हेगड़े धर्मस्थल के सभापतित्व में बड़े ही समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। श्रीमती ब्र० सुमतिबाई जी, सोलापुर को विदुषीरत्न की उपाधि दी गई तथा गत वर्ष में उपाधि प्राप्त महिलाओं को मानपत्र अर्पण किये गये। श्रीमती राजुबाई जी, सोलापुर, श्रीमती गुलाबबाईजी तथा प्यार कुमर बाईजी, इन्दौर को दानशीला का पद और श्रीमती ब्रजवाला देवीजी को महिलाभूषण का पद दिया गया। 12 प्रस्ताव पास हुए। गृहणी 'कर्त्तव्य' नामक पुस्तक रचना के लिए सौ० लज्जावती विशसूचीरद् को 50 रु० पारितोषिक दिया गया। इसी प्रकार मराठी भाषा की उत्तम पुस्तक लिखने के उपलक्ष्य में सौ० मनोरमा देवी शाह को 25 रु० पारितोषिक दिया गया। इस समय 401 रु० की सहायता परिषद् को प्राप्त हुई।

सन् 1941 के अप्रैल महीने में चाँदपुर महावीर जी में भा० व० दि० जैन महिला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परिषद् का 25वाँ अधिवेशन श्रीमती विदुषी क्षमादेवीजी जैन, मसूरी की अध्यक्षता में बड़ी सफलतापूर्वक मनाया गया। इस अधिवेशन में श्रीमती वि० ब्र० पण्डिता चन्दाबाई जी, आरा भी सम्मिलित हुई थीं। आपके प्रभावशाली उपदेशों से उपस्थित जनता को बहुत लाभ हुआ तथा पण्डिता जी को समस्त महिला समाज की ओर से पृथक् सभा करके मानपत्र अर्पण किया गया। परिषद् को 734 रु० की सहायता मिली। 9 प्रस्ताव पास हुए।

सन् 1942, जनवरी माह में इन्दौर में पंचकल्याण महोत्सव के समय भा० व० दि० जैन महिला परिषद् का 26वाँ अधिवेशन श्रीमती विदुषी रमा रानी जी ध० प० दानवीर साहु शान्ति प्रसाद जी जैन, डालमियाँ नगर के सभापतित्व में बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सेवा और साधना का सम्मान

महिला परिषद् ने नारी जागरण के क्षेत्र में अपूर्व सेवा और साधना के लिए वैदुष्य और सौजन्य के लिए परिषद् के अधिवेशनों में सार्वजनिक सम्मान और महिलारत्न, महिलाभूषण, विदुषीरत्न, वाणी-भूषण, दानशीला जैसी गरिमापूर्ण उपाधियों से अलंकृत करके नारी की उपलब्धियों को महिमा मंडित किया। ब्र० कंकुबाई, ब्र० मगनबाई, ब्र० ललिताबाई, ब्र० चन्दाबाई, ब्र० ब्रजबाला देवी, ब्र० सुमतिबाई शहा आदि कतिपय ऐसे नाम हैं जो इन उपाधियों से अलंकृत होनेवाली सन्नारियों में प्रथम पंक्ति में अंकित हैं।

विद्या केन्द्रों की स्थापना

महिला परिषद् से प्रेरणा पाकर देश के विभिन्न भागों में ऐसे विद्याश्रमों की स्थापना हुई जो शिक्षा के साथ-साथ नारी के व्यक्तित्व के समग्र विकाश के लिए "आध्यात्मिक प्रयोगशाला" सिद्ध हुए। बम्बई में ब्र0 मगनबाई ने, आरा में ब्र0 चन्दाबाई ने, सोलापुर में ब्र0 राजुबाई ने, कारंजा में ब्र0 कंकुबाई ने, इन्दौर में ब्र० भूरीबाई ने आश्रमों की स्थापना की। इन्हीं आश्रमों से प्रेरणा लेकर, इन्हीं आश्रमों में अपने व्यक्तित्व को निखारकर कई स्नातिकाओं ने अन्य-अन्य क्षेत्रों में आश्रमों की स्थापना की।

सागर मध्य प्रदेश का दिगम्बर जैन महिलाश्रम, श्री महावीरजी में ब्र0 कृष्णाबाई का महिलाश्रम, ब्र0 कमलाबाई जी का आदर्श महिलाश्रम, सोलापुर का श्राविकाश्रम, श्राविका संस्थानगर आदि कतिपय ऐसे विद्यातीर्थ हैं, जिन्होंने नारी शिक्षा और उत्थान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किये और कर रहे हैं। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद् ने नारी जागरण तथा कल्याण के जो कार्य किये उन्हीं का प्रतिफल है कि नारी को अपनी अस्मिता अपनी सामर्थ्य और अपनी उस अनिर्वचनीय शक्ति का बोध हुआ जिससे वह पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नत शिखर पर पहुँच सकीं। परिषद् के इस अवदान को युगों-युगों तक याद किया जायेगा और आगे आने वाली पीढ़ियाँ परिषद् द्वारा स्थापित मूल्यों पर चलकर अपने को कृतकृत्य करेंगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कानपुर अधिवेशन का उद्घोष

महिला परिषद् का दशम् अधिवेशन 2 अप्रैल 1921 को कानपुर में सम्पन्न हुआ। ब्र० पंडिता चन्दाबाई इस अधिवेशन की अध्यक्षा चुनी गयी थीं। उनका अध्यक्षीय भाषण नारी जागरण का उद्घोष सिद्ध हुआ और एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन गया। उसे अविकल रूप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

– **सम्पादक**

मोक्ष मार्गस्य नेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां बन्दे तद्गुणलव्धये॥

प्रिय समागत भगनीगणों,

मुझमें ऐसी कोई योग्यता प्रतीत नहीं होती जिससे मैं आप लोगों जैसी धर्मज्ञ, देश हितैषिणी बहनों की इस महती परिषद् की सभाध्यक्षा हो सकूं, तथापि इतना अवश्य है कि मैं आपलोगों की एक सेविका हूं और यथा शक्ति सेवा करने में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं करूंगी।

इस परिषद् के दशवें अधिवेशन के निर्विघ्न कार्य समाप्त होने के लिये जो आप लोगों ने मुझे सभापति का आसन प्रदान किया है, इसके लिये मैं कोटिशः धन्यवाद देती हूँ।

यद्यपि इस अपार भार के योग्य मेरी वयस, मेरी बुद्धि एवं मेरा ज्ञान पर्याप्त नहीं है तो भी आप पूजनीया बहनों की आज्ञा शिरोधार्य करना कर्त्तव्य समझकर सेवा में उपस्थित होती हूँ।

इस महत् कार्य के आद्योपान्त निर्वाह करने में आपलोगों की पूर्ण कृपा का ही भरोसा है। आज से दस वर्ष पहले जबकि यह परिषद् श्री सम्मेद शिखर की परम पवित्र भूमि पर स्थापित हुई थी उस समय स्त्री समाज में बड़ा-गाढ़ा अज्ञानान्धकार छा रहा था। उस समय यह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आशा नहीं थी कि परिषद् अपना जीवन चिरस्थायी रख सकेगी अथवा अपने नियमानुकूल स्त्री समाज का संगठन कर सकेगी, परन्तु परमात्मा की कृपा से यह भय मिथ्या निकला इसके भिन्न-भिन्न अधिवेशन भिन्न भिन्न स्थानों में श्री गजपन्थशिखर, दाहोद, अम्बाला, उदयपुर, आदि में यथासाध्य समारोह और उत्साह के साथ हुए । तदनुकूल आज यहाँ कानपुर में भी जनसमूह के बीच में कार्य चालू है । कानपुर निवासिनी बहनों के इस अपूर्व उत्साह और संगठन को देख कर बड़ा हर्ष होता है । इस युक्तप्रान्त में भी स्त्री समाज के नवीन सुधार की आशा का संचार होता है ।

अधिवेशनों की बात तो यों रही परन्तु अब दूसरी बात का विचार करना भी आवश्यक है। वह यह है कि परिषद् से स्त्री समाज को कौन-कौन से लाभ हुए ? इसके नियमों का प्रतिपालन और संचालन कहां तक समाज ने किया ? इसका उत्तर हमको सन्तोष जनक नहीं मिलता, इस विषय में यही कहना पड़ता है कि अभी तक हमारा वास्तविक सुधार कुछ भी नहीं हुआ है ।

हमलोग अधिवेशनों में एकत्रित हुई प्रस्तावों से सहमत हुई परन्तु अपने-अपने घर जाकर इसके नियमानुकूल नहीं चलीं ।

इसी का यह प्रतिफल है कि अविद्या, बालविवाह, वृद्धविवाह, व्यर्थव्यय, दरिद्रता आदि दुष्ट शत्रुओं के पंजे से अभी तक नहीं निकली हैं । यहां पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि ऐसा क्यों हुआ । आज तक महिला मंडल ने अमली कारवाई क्यों नहीं की ? इसका उत्तर केवल इतना ही है कि हमारा समाज व्यक्तिगत सुधार नहीं जानता । इस समय प्रत्येक व्यक्ति यही कहता है कि अकेले हमारे करने से क्या होगा ? क्या एक मनुष्य के कुरीति छोड़ने से देश का सुधार हो जाएगा ? बस इसी विचार ने भावी उन्नति में कुठाराघात कर रक्खा है और जब तक प्रत्येक मनुष्य अपना-अपना उत्तरदायित्व स्वयं न लेगा, यह दुरवस्था कदापि परिवर्त्तित नहीं होगी ।

सारा समाज हमारा अंग है । हमारे एक-एक के मिलने से ही जाति व देश का संगठन है । यदि हम अपना-अपना सुधार कर लें तो सहज में जाति और देश का सुधार हो जायगा। हमारी प्रत्येक बहन को दृढ़ होना चाहिये । कोई कुछ करे परन्तु मैं कदापि नियम विरुद्ध कार्य नहीं करूंगी, किसी प्रकार की कठिन समस्या उपस्थित होने पर भी व्रतभंग नहीं करूंगी इस प्रकार की प्रतिज्ञा जिस दिन भगिनी गण और बन्धु अपने-अपने मन में कर लेंगे, उस दिन समस्त जनता का सुधार हो जाएगा ।

जिस जाति का प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान सम्पन्न है वही जाति उज्जवल एवं उन्नतिशील समझी जाती है, जिस देश के मनुष्य धनशाली हैं वही देश धनी कहलाता है । जिस धर्म में धर्मात्मा अधिक हैं वही धर्म चमकता हुआ नजर आता है । तात्पर्य यह है कि एक का अन्तर ही अनेक हैं । अतएव हमको अपने स्वयम् एक का सुधार सबसे प्रथम करना चाहिये फिर अपनी सन्तान और समस्त कुटुम्ब को ज्ञानी, ध्यानी, परोपकारी बनाना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चाहिये तत्पश्चात् समाज और देश का हित करना उचित है ।

इसके विरुद्ध जो मनुष्य स्वयम् अपने सुधार पर ध्यान नहीं देता वह दूसरे के लिए कदापि कुछ नहीं कर सकता । यही कारण है कि जैन समाज के विद्वान और धनवान लोगों के सहस्त्र प्रयत्न करने पर भी जाति का उत्थान नहीं होता । वर्तमान में जैन जाति की जो दुरवस्था हो रही है उसका वर्णन किसी प्रकार नहीं हो सकता । जिस प्रकार अध:पतन हो रहा है वह अकथनीय विषय है तथा प्रत्येक जैन के हृदय से स्वयम् अनुभवित होने योग्य है तथापि स्त्री समाज में किन-किन भयंकर कुरीतियों ने अड्डा जमा रक्खा है उनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है ।

अविद्या

इस राक्षसी ने हमारी बहनों को मनुष्यत्व से वंचित-सा कर रक्खा है । जो बहनें समझती हैं कि पढ़ना लिखना स्त्रियों का कार्य नही हैं वरन् केवल पुरुषों को ही विद्या लाभ करना चाहिए वे देवियां इस वर्तमान युग में अपनी जाति के साथ बड़ा अनर्थ कर रहीं हैं । न स्वयं ज्ञानवती होती हैं न भावी सन्तान को ही ज्ञानी होने देती हैं । हमारी भोली बहनों को यह नहीं मालूम है कि इस समय हमारी जाति, हमारा देश व हमारी सन्तति जितने घोर संकट उठा रहीं है इस सबों का मूल कारण एक अविद्या ही है । यदि हम शिक्षिता और विद्यावती हों तो क्यों अपने गृह प्रबन्ध में कसर रक्खें क्यों अपने बच्चों को बुरा आचरण करने दें तथा किस लिये अपनी पति की गाढ़ी कमाई को धन वस्त्राभूषणों में, नुकता न्योंतों में लुटा कर नाश करें ? और साथ ही हम क्यों धार्मिक ज्ञान से विहीन होकर नरक निगोद के पात्र बनें । ये सब अवस्थायें अज्ञान ने ही कर रक्खी है। निर्मल भूमि दीखजाने पर कौन मनुष्य कंटक पर शयन करेगा। यदि जैन देवियां शिक्षित होतीं तो इन अनर्थो को कदापि न होने देतीं ।

अधर्म

जब तक भारतवर्ष में धार्मिक चर्चा सांगोपांग बनी रही तब तक लोगों ने विधर्मियों के करोड़ों अत्याचार करने पर भी अपने-अपने धर्म की रक्षा की, परन्तु अब वह युग नहीं है इस समय देश ने यूरोप आदि देशों के समान धार्मिक बंधन नितान्त ढ़ीले कर दिये हैं और इसी चक्र में जिनवाणी से अनभिज्ञ हमारी भगिनियों ने भी यह शिथिलता स्वीकार कर ली । न किसी बहिन को भोजन की शुद्धता का ज्ञात है न किसी को अन्यान्य गृहस्थ क्रियाओं का ज्ञान है, और न सन्तान शिक्षण ही मालूम है । इस विषय में केवल स्त्रियों का ही अपराध नहीं है वरन् अधिक पाप पुरुषों के ऊपर है । हमारे भाइयों को आन्तरिक भय है कि स्त्रियाँ पढ़कर और शिक्षिता धर्मात्मा बनकर अपनी आत्मोन्नति में तल्लीन हो जायगीं तथा पति पुत्रों की सेवा छोड़ बैठेंगी । परन्तु यह भय अयोग्य तथा निर्बल है प्रत्युत सभी शिक्षिता स्त्रियाँ कुटुम्ब सेवा में त्रुटि नहीं करतीं बल्कि बड़ी योग्यता से समस्त कार्य सम्पादन करती हैं इसके अतिरिक्त यदि किसी अंश में थोड़े समय के लिए कार्य में कुछ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बाधा भी हो तो भी भाइयों को इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए , अपने थोड़ से स्वार्थ के लिए कन्याओं को और पत्नियों को पशुवत् अज्ञानावस्था में नहीं रख छोड़ना चाहिये ।

बाल विवाह

इस अन्याय ने समस्त भारत वर्ष को निर्जीव बना रखा है । अपक्व अवस्था में बच्चों का विवाह करने से उनका शरीर उनकी बुद्धि उनका तेज सब नष्ट हो जाते हैं । एक-एक मनुष्य के वलहीन स्वल्पजीवी कई कई बच्चे पैदा हो जाते हैं, उनके भरण पोषण और असमय मरण में अल्पवय वाले माता पिताश्री को जो महाकष्ट होता है उसका वर्णन वृहस्पति भी नहीं कर सकते, इसी प्रथा ने देश को अशक्त निर्धन बना दिया है । इसी प्रकार वृद्ध विवाह ने भी छोटी-छोटी बालिकाओं का सर्वनाश कर रखा है । इन्हीं महात्माओं की कृपा से कन्या विक्रय होती हैं इन्हीं की दया से नाई ब्राह्मण पंच सब के मुख मीठे होते हैं और अनेक तरूणी स्त्रियाँ गली गली मारी मारी फिरती हैं । इन दो कुप्रथाओं ने अपनी वैश्य जाति में विवाह सम्बन्ध को भ्रष्ट कर दिया है । सब लोग यह समझते हैं कि 11 या 12 वर्ष की कन्या समर्थ हो चुकी है और 50 वर्ष का पुरुष भी बुड्ढा नहीं है परन्तु इस चालबाजी से विधवाओं की संख्या नहीं घट सकती और न सन्तान ही शक्तिसम्पन्न हो सकती है । वरन् स्वार्थ और लोकलज्जा को छोड़कर कन्या का परिणय 16 वर्ष की अवस्था और पुत्रों का 20 वर्ष की अवस्था में करना चाहिये ।

यहाँ पर यह एक बड़ा भारी प्रश्न खड़ा हो जाता है कि समाज में शिथिलता विशेष है । बच्चे जल्दी संसारी होते हैं और नाना प्रकार के दुर्व्यसन में आसक्त हो जाते हैं । मैं भी कहती हूँ की यह बात बिल्कुल ठीक है क्वारे लड़के लड़कियों को सुशील धर्मात्मा रखना बड़ा टेढ़ा काम है । परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी जिम्मेदारी के डर से और रक्षा करने में कष्ट उठाने के भय से उन्हें बाल विवाह की अग्नि में हवन करने दें । नन्हें-नन्हें बच्चों के विवाह में नाचने गाने की अपेक्षा उनकी रक्षा में ही समय देना माता का प्रधान कर्त्तव्य है । इस समय हमारी सन्तान प्रक्रिया बिगड़ गई है हमारी लड़कियाँ शीघ्र ही यौवनवती दीखती हैं जैसे पोला जेवर बाहर से मोटा और भारी दीखता है, परन्तु वास्तव में सारहीन है । इस समय उनकी रखवाली में हमको अवश्य समय लगाना होगा परन्तु बीस वर्ष बाद फिर पूर्व अवस्था दीखने लगेगी । जैसे 100 वर्ष पहले 16 वर्ष में कन्याओं के यौवन चिन्ह दीखते थे । उसी प्रकार दीखेंगे । हम लोग झटपट विवाह कर कन्याओं को ससुराल भेजकर निश्चिन्त हो जाती हैं बस यही प्रमाद हमारी जाति को अभी छठे काल का तमाशा दिखलाने लगा है ।

अपव्यय

इसने भी समाज को कम हानि नहीं पहुँचाई है । भारत जैसे कृषि प्रधान देश में विशेष खर्च करने वाला मनुष्य अवश्मेव पापी हैं । लखपति हो या करोड़पति हो , जो मनुष्य अधिक व्यय करता है एक दिन अवश्य कष्ट भोगता है । यह खर्चीला अभ्यास

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हमको विलासिता सिखाकर लालची बना देता है । परिग्रह का निषेध हमारे आचार्यों ने मुनि से लेकर गृहस्थ तक को यथावस्था भली प्रकार बताया है । " घटती जान घटाइये" यह वाक्य बहुत ही करूणाकारी है । जो मनुष्य साधुता से जीवन व्यतीत करता है वह बड़ा दुखी है, उसको कभी दरिद्रता दु:ख नहीं दे सकती न किसी की सेवा करनी पड़ती है । यदि हमारी बहनें परिग्रह की तृष्णा कम कर लें तो उनको विदेशी वस्तुएँ कदापि न खरीदनी पड़े । अपने देश के गाढ़े सादे कपड़ों से और अल्प मूल्य के आभूषणों से ही सन्तोष हो जाय । इसी प्रकार यदि हम अपव्यय करना बन्द कर दें तो विवाह के समय बागबाड़ी, फुलबाड़ी, वेश्या नृत्य सब उठ जाँय । यहाँ तक कि यदि वेश्याओं की धनपूजा कम हो जाय तो उनका यह महाघृणित रोजगार ही कम हो जाय । इन सब कुकृत्यों से धन को बचा कर परमार्थ में, दान में, धर्म में लगाना ही हमारा कर्त्तव्य है । यदि हम धन् फेंकना बन्द नहीं करेंगी तो हमारे पास कभी शुभ कार्य के लिए लक्ष्मी नहीं रहेगी । हमने कितने ही बार देखा है कि सुवर्ण और मोतियों से लदी हुई बहनें भी जब सभा सोसाइटी में चन्दा देती हैं तो 2 रु० से अधिक देना उनको बड़ा बुरा लगता है और भागने के लिए तत्पर हो जाती हैं, इसमें बहनों का अपराध नहीं है यह उनकी फिजूल खर्ची का फल है ।

दुराचरण

इसने जैन समाज को बहुत ही गिरा दिया है । पुरुषों के आचरण तो भ्रष्ट हो ही रहे हैं परन्तु अब दिनों दिन स्त्रियाँ उनसे भी अधिक बिगड़ी जाती हैं । आज कल प्रत्येक युवती यह समझती हैं कि मेरे पति ने अंग्रेजी पढ़ी है विदेश घूमने वाला है, जिस जगह यह जाँय वहां जाना और भक्ष्याभक्ष्य यह खाय, वह खाना मेरा कर्त्तव्य है । इसी में प्रेम है, यही पतिव्रत धर्म है, ऐसे ऐसे विचारों से बहुत-सी बहनें जो कि बड़े-बड़े धर्मात्मा घरानों की पुत्रियाँ हैं जिनके पिता माताओं ने अनेक धर्म कार्य किये हैं वे भी रात्रि भोजन आदि करती हुई दृष्टिगोचर हो रही हैं, परन्तु देवियो ! यह आप का विचार हितकारी नहीं है । स्त्री पति की अर्द्धांगिनी है उसकी सहायिका है और कुमार्ग से बचाने वाली गृहदेवी है । यदि किसी मनुष्य का एक हाथ लकवा की बीमारी से शून्य हो जाये और बिल्कुल कार्य का न रहे तो क्या दूसरे हाथ को भी यह उचित है कि वह चुपचाप बैठ जाय ? कदापि नहीं वरन् वह और भी तेजी से काम करने लगता है । इसी प्रकार पतिरुपी आधा अंग पाप करने लग जाय तो हमको पाप कदापि नहीं करना चाहिए वरन् अपनी बुद्धिमता से पति पुत्र या जो कोई सम्बन्धी हो उसको सुमार्ग पर ले आना चाहिए । जो वस्तुएँ सन्मुख दीखती हैं वे सब यहाँ ही रह जायेगी परन्तु धर्म तुम्हारा साथी पराभव तक साथ चलेगा इसको धक्का देना उचित नहीं है । धर्म तुम्हारे किसी कार्य में बाधक नहीं है । यह विचार भ्रम मात्र है । देखिये महात्मा गाँधी भी रात्रि भोजन नहीं करते , कभी मौन से रहते हैं क्या वह काम करने वाले नहीं हैं ? क्या कोई उनसे विशेष पर्यटन करने वाला है ? कदापि नहीं, मनुष्य को किसी कार्य को करने के पहले हानि लाभ का विचार कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लेना चाहिये । जिस संगति में रहने से अपना स्वभाव शिथिलता पकड़े जिस वस्तु के खाने से धर्मघात हो, जिस स्थान पर जाने से मर्यादा भंग हो ऐसे स्थलों को दूर से छोड़ना ही श्रेष्ठ है । बहुत सी स्त्रियाँ तीर्थ वन्दना के बहाने से कौड़ी कौड़ी जोड़कर घर से निकलती हैं परन्तु मार्ग में बाजार की वस्तुओं को खाकर परस्पर कलह विसम्बाद करके उल्टा पाप बान्ध कर लेती हैं । तात्पर्य यह है कि मनुष्य कहीं भी किसी अवस्था में क्यों न हो उसे अपना आत्मबल नहीं छोड़ना चाहिये । जैन बहनों को सदैव शुद्ध और अपने हाथों का बना भोजन करना चाहिये, कहार कुर्मियों द्वारा बना भोजन करना मांस भक्षियों के साथ बैठकर खाना परिणामों को मलिन बनाता है । इसी प्रकार झूठ बोलना, दया रहित परिणाम रखना, अत्यन्त लालच करना ये सब कुकृत्य छोड़कर अपना और अपनी सन्तान का हित करना उचित है । कुरीतियों का वर्णन कहाँ तक किया जाय इस समय जिधर देखिये उधर अज्ञानता ही दीखती है । जिस ब्रह्मचर्य व्रत के कारण भारत सतियाँ जगत् प्रसिद्ध थीं उसमें भी त्रुटि होने लगी है । यह किस्सा तो वर्तमान समाज का रहा अब यह विचार भी परमावश्यक है कि पुरातन सतियाँ कैसी होती थीं । प्राचीन देवियों के जीवन चरित्र पुराणों में लिखे मिलते हैं । उनके सादे जीवन इतने पवित्र थे कि जिनका शतांश भी आज हम लोगों के जीवन में नहीं है और इसी कारण नाना प्रकार की यमयातनाएँ सहनी पड़ती हैं । सीताजी ने महायोधा राजमुकुट धारी रावण को कितनी बार किस योग्यता से समझाया था और कितना फटकारा था जिससे वह उस वीरांगना का सामना अन्त तक न कर सका । सीता को अपने पति का बड़ा भरोसा था रावण की परिचारिका विद्याधारियों ने विद्याबल से कई बार राम चन्द्र को मृतक दिखाया उनका कटा हुआ सिर सामने पड़ा दिखाया परन्तु वह अपने धैर्य से च्युत नहीं हुई । इसी प्रकार यदि हमारी बहनें अपने धैर्य और मर्यादा को स्थिर रखें तो कदापि समाज का बाल भी बांका नहीं हो सकता । श्रीपाल की रानी मैना सुन्दरी ने किस प्रकार पति की सेवा की थी श्री जिनदेव की प्रगाढ़ श्रद्धा भक्ति के द्वारा कैसा असीम पुण्य लाभ कर के पति का कुष्ट रोग नष्ट किया था, यह जगत प्रसिद्ध बात है । पिता से शास्त्रार्थ करने में भी यह सती बड़ी विद्यावती सिद्ध हुई थी । मतलब यह है कि स्त्रियों के पूर्व चरितों से यही निष्कर्ष निकलता है कि वे वीर सदाचारिणी और पढ़ी लिखी और विद्यावती थीं ।

उस समय पुत्रियों को मनुष्य उच्च दृष्टि से देखते थे । उनके लालन पालन विद्याभ्यास संगीताभ्यास और शिल्पाभ्यास की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं में अपनी शक्ति लगाते थे । स्वयम् आदिश्वर स्वामी ने ही अपनी पुत्री ब्राह्मी सुन्दरी को निज हाथ से विद्यारम्भ कराया था । इन दोनों देवियों ने अपना जीवन किस उत्तमता से व्यतीत किया है यह बात प्रत्येक पुराण सुनने वाली बहन को ज्ञात ही होगी । स्त्रियों के पढ़ने लिखने का निषेध और परदा करना, बाल विवाह करना ये सब कुरीतियाँ मुगल बादशाहों के समय से चल पड़ी हैं । पुराने इतिहास पढ़ने से यह बात भली भाँति ज्ञात हो जाती है कि ये रीतियाँ पहले हिन्दू महाराजाओं के समय में कभी नहीं थीं । इस समय दक्षिण प्रांत में जहाँ मुसलमान बादशाह नहीं पहुँच

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सके थे परदे की परथा नहीं है । बाल विवाह भी इधर कम हैं ।

भारतवर्ष एक बड़ा देश है । इस में कई भाषाएँ बोली जाती हैं । अनेक प्रकार के वेष हैं और नाना प्रकार के आभूषण पहने जाते हैं । भिन्न-भिन्न प्रकार के रीति रिवाज दीखते हैं । ये सब भेद विशालता के कारण से भी हैं और अधिकतर विदेशी राजाओं के आक्रमण से उत्पन्न हुए हैं । मुसलमानी राज्यों के समय समस्त देश में अरबी, फारसी, उर्दू की भरमार थी अब इंगलिश की पढ़ाई जोर पकड़ रही है । कहने का तात्पर्य यह है कि दूसरों के अधीन रहने से इस देश का निजत्व प्राय: लुप्तसा होता जाता है, परन्तु इस समय काल ने बड़े जोरों का पलटा खाया है और समस्त जातियाँ अपने प्राचीन गौरव को पुन: प्राप्त करने का प्रयत्न बड़े उद्योग से कर रही हैं । अपनी प्राचीनता कायम करने के लिए वे चिराभ्यस्त विलासिता को छोड़ रही हैं । सब लोग देश का मोटा कपड़ा पहन कर सन्तोष करने लगे हैं । बड़े-बड़े विदेशी भारतीयों की अत्यधिक स्वदेश प्रियता देखकर रोजगार छोड़ बैठे हैं । सम्पूर्ण देश में अपना स्वत्व प्राप्त करने के लिए घोर आन्दोलन हो रहे हैं । कृषक से लेकर सिंहासनाधीश तक अपने-अपने योग्य प्रयत्न में लगे हैं । चमार, चुहार, आदि छोटी-छोटी अछूत जातियों ने भी पंचायतों के नियम बना बना कर मदिरापानादि सब कुप्रथाओं का त्याग करना प्रारम्भ कर दिया है । बहनों इस युग में हमारी जैन जाति का भी यही कर्त्तव्य है कि यह अपने धर्म की, अपनी मान मर्यादा की, अपनी सन्तति सुधार की वृद्धि करें । सारी कुरीतियों को हटा दें और उन्नति मार्ग पर आरुढ़ हो जाय । यह उन्नति का मार्ग क्या है और इस पर चलने के कौन-कौन से साधन हैं इस बात का विवेचन पण्डितों और परोपकारी महात्माओं के द्वारा कितनी ही बार आप लोगों ने सुना होगा तथा इस विषय के कितने ही लेख समाचार पत्रों में पढ़े होंगें। पचीसों वर्षों से भा० व० दि० जै० महासभा, प्रान्तिक सभा आदि कितनी ही सभा प्रति वर्ष उन्नति करने वाले प्रस्ताव पास कर रही हैं ।

इसी प्रकार 10 वर्षों से इस परिषद् ने भी कितने ही प्रस्ताव पास किये हैं । अतएव उन्नति का विषय आपलोगों के सम्मुख प्रथम से ही वर्णित है । केवल यहाँ पर मैं उन्हीं बातों को कहना चाहती हूँ जो विशेषत: स्त्री समाज पर निर्भर है और जिनके परित्याग या जिनके ग्रहण किये बिना हमारी उन्नति किसी भी प्रकार नहीं हो सकती । पुरुष कितना ही प्रयत्न क्यों न करें जब तक स्त्रियाँ अपना विचार अपना व्यवहार नहीं सुधारेंगी तब तक समाज सुधार कदापि नहीं हो सकता । बहनों, आपलोग केवल सन्तान की ही जनयित्री नहीं हैं वरन् सम्पूर्ण कल्याणों को पैदा करने वाली माताएँ हैं । धन आप के ही हाथों में जीवित रह सकता है । धर्म भी आप ही के सहारे ठहर सकता है । विद्या भी आप ही के द्वारा विस्तृत हो सकती है । आप का अंग ही देश का अर्ध भाग है । आपके अशिक्षिता रहने से सारे समाज अंगहीन हैं । मैंने जिन-जिन कुरीतियों का वर्णन किया है, उन सबों को जड़ से खोद कर हटायें तभी आपका और आपकी सन्तान का कल्याण हो सकता है।

सभा

इन कुरीतियों को रोकने के लिए एक-एक प्रान्त में एक-एक स्त्री सभा स्थापित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होनी चाहिये, और उसकी वार्षिक रिपोर्ट महिला परिषद् में आनी चाहिये, यदि इन सभाओं के प्रबन्ध में कुछ धन व्यय हो और उसको स्थानीय बहनें न सह सकें तो महिला परिषद् से लेना चाहिये। जब तक प्रान्त-प्रान्त में सभा स्थापित न होंगी तब तक महिला परिषद् के प्रस्तावों का प्रचार सर्वत्र नहीं हो सकता । इन सभाओं में सम्भवत: निम्नलिखित प्रस्ताव होने चाहिये ।

(1) बालविवाह और कन्या विक्रय न होने पावे । (2) धार्मिक विद्या के प्रचारार्थ ग्राम-ग्राम में यथा सम्भव कन्या पाठशाला स्थापित की जाय और उनकी परीक्षा आदि का प्रबन्ध इसी सभा के द्वारा किया जाय । (3) बेढब और बहुमूल्य आभूषणों तथा वस्त्रों के रोकने का प्रयत्न किया जाय।

हमने ग्वालियर की रियासत के आसपास की बहनों को देखा है कि सिर पर चूड़ामणि के स्थान पर एक नोकिला 4-6 अंगुल ऊँचा आभूषण पहनती हैं जिससे ओढ़नी भी कटती है सिर पर भार रहता है । देखने में असभ्यता दीखती है यदि दैवयोग से गिर पड़े , तो मस्तक छिदना भी सम्भव है, इसी प्रकार दक्षिण देश बाली दोनों ओर नाक छिदाकर अंगों को विकृत बनायें रहती हैं, उत्तर प्रदेश बाली भी नथ आदि कितने ही आभूषण इतने बड़े, लम्बे चौड़े पहनती हैं जिससे शरीर को बहुत हानि पहुँचती है । बालकों को भी इतने बन्धनों में बांध डालती हैं जिससे उनके हाथ पैरों का बढ़ना रुकता है । यह तो दिग्दर्शन मात्र है, सब देशों में आभूषणों की गति विचित्र है । इनके सुधार का उपदेश सभाओं द्वारा होना चाहिये । आभूषणों के कम करने में अनेक गुण हैं, प्रथम तो परिग्रह की लालसा घटती है इसलिए पुण्य संचय होता है, दूसरे द्रव्य कम खर्च होते हैं रक्षा की चिन्ता भी नहीं होती । विधवा बहनों के आभूषण नियमों से भी बहुत ही कम कर दिये जांय विधवा को इनके लिये बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं । न तो बनवाने वाला मिलता है न धन ही पर्याप्त मिलता है । बड़ी कठिनाई से बनवाकर पहनी हैं । समस्त कुटुम्ब की शत्रु बन जाती हैं और अपने शील में भी चमक दमक के द्वारा दूषण लगा बैठती हैं । विधवा बहनों को आभूषण सीधे साधे, ठोस दो एक इसलिए पहनने काफी हैं कि जिससे दुष्काल में कुछ द्रव्य की सहायता मिल जाय, इसके अतिरिक्त शरीर को संस्कृत करना उचित नहीं है सधवा बहनों को भी शरीर को सुन्दर दिखाने वाले थोड़े गहने ही पहनने उचित हैं विशेष व्यय ठीक नहीं है ।

उपदेशिका

इन सभाओं की ओर से दो चार उपदेशिका वैतनिक व ऑनरेरी रखी जाये जो घर-घर में जाकर स्त्रियों को स्वाध्याय के योग्य विद्या पढ़ा दें, जिस प्रकार मिशनरी घूम-घूम कर पढ़ाती है । प्रमाद और कृपणता के कारण हमारी जो बहनें अध्यापिका खोजने और पाठशाला या आश्रम आदि में जाने से मुख मोड़ती हैं उनको ज्ञान सम्पन्न बनाने के लिए यही एक मार्ग उत्तम है । मिशनरी की पादरिन जब किसी के घर पर जाकर बैठती है तब कोई बहन मन से पढ़ती हैं, कोई भाई बहन के समान भी बैठ जाती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हैं परन्तु पढ़ने का सिलसिला चलते रहने से कुछ न कुछ आ ही जाता है । इसी प्रकार उपदेशिका बहनों का उपदेश भी अवश्यमेव जैन धर्म के ज्ञान को स्त्रियों में फैला देगा ।

स्वाध्याय

जब तक हमारी बहनों को स्वाध्याय करना नहीं आएगा तब तक उनकी क्रिया स्वपर हितकारणी कभी नहीं हो सकती शास्त्रों के पठन-पाठन से ही हमको यह ज्ञान होता है कि पूर्वकाल में स्त्रियाँ कैसी हुई थीं । इस समय हमलोग कौन-कौन से अन्यान्य अभक्ष्य-सेवन कर रही हैं इनके त्याग करने से क्या लाभ है । किन-किन परिणामों से बन्ध होता है ? कौन-कौन से सत्कृत्य स्वर्ग मोक्ष में सहायक हैं । जिनदेव का क्या स्वरूप है ? किस प्रकार भक्ति और श्रद्धा करनी चाहिये । मित्थयात्व सेवन से कितना पाप बन्ध होता है ? कषाय और मिथ्यात्व यानि कुदेवादियों को मानना पूजना और अपने आत्मस्वरूप को समझना इन बातों में हमारी आत्मा को कितना भव भ्रमण कराया है । नरक निगोद तक अनन्तवार पहुँचाया है । इत्यादि बातों का सम्पूर्ण ज्ञान शास्त्र स्वाध्याय से ही भली प्रकार हो सकती है । दान धर्म में भी प्रवृत्ति धर्म ज्ञान से ही हो सकती है । अमुक दान का यह फल है विद्यादान से ज्ञान की प्राप्ति होती है, औषधि दान से नीरोग शरीर मिलता है, आहार दान से भोग भूमि के सुख मिलते हैं, अभय दान से भय का नाश होकर निर्भय स्थान मिलता है, इत्यादि बातों की समझ और श्रद्धा जिनवाणी से ही हो सकती है । अब यहाँ पर यह कठिन प्रश्न उठता है कि इन सभाओं का संचालन कौन करेगा ? इसके लिये अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं है बाह्य देख भाल परिषद् की रहेगी और अन्तरंग सर्व प्रकार का प्रबन्ध स्थानीय परोपकारिणी बहनों को लेना चाहिये परोपकारियों के लिए कोई बात कठिन नहीं है । किसी बहन को यह न समझना चाहिये कि हम कम पढ़ी लिखी हैं इससे कुछ न हो सकेगा, देखिये अन्य जातियों में एक सामान्य पढ़ी लिखी बहनें बड़े-बड़े विद्यालयों को चला रही हैं । परोपकार के भाव रखने से ही सर्व कार्यो की सिद्धि हो जाती है । अपना स्वभाव सज्जन होगा तो उत्तम वैतनिक सेवक सेविका भी मिल जायगी, द्रव्य भी मिल जायगा, अनुभव भी बढ़ जायगा । सज्जनता के सामने समस्त कार्य स्वयं सफलीभूत हो जाते हैं । कवि का मत है -

सूर्य्यश्चन्द्रो घनोवृक्षों नदीधेनुश्च सज्जन : ।
एते परोपकाराय विधात्रैव विनिर्मिता : ॥1॥

भवार्थ-सूर्य, चन्द्रमा, सघन् पेड़, नदी, गौ, और सज्जन मनुष्य ये सब परोपकार के लिए ही उत्पन्न हुए हैं । परोपकार की महिमा का वर्णन अनेक ग्रन्थों में वर्णित है । वर्त्तमान में भी परोपकारी के गौरव को उनकी, प्रशंसा को कदापि कोई नहीं पा सकता अतएव हमारी बहनों को दूसरों की भलाई में सदैव दत्तचित्त रहना चाहिये ।

मौका न फिर मिलेगा गो सर पटक मरोगे ।
यह वक्त काम का है, तुम काम कब करोगे ।

विद्या वृद्धि

इस समय हमको विद्यावृद्धि के नवीन-नवीन उपाय निकालने चाहिये । जिस प्रणाली में अब तक समाज का संगठन हुआ है या हो रहा है वह पर्याप्त नहीं है । जो लोग शहरों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के बढ़िया-बढ़िया मकानों में बैठे-बैठे दिन पूरा करते हैं उनको जाति व देश का पता नहीं है अथवा जो धनी महाशय नौकर चाकरों को आज्ञा प्रदान करते ही भोगसामग्री को प्राप्त कर लेते हैं उनकों भी सर्वसाधारण की दु:खमयी अवस्था का ज्ञान नहीं होता है । हम लोगों की ऐसी दृष्टि भौचक हो गई है कि उसमें स्वार्थ रहित किसी वस्तु का प्रतिभास ही नहीं होता । इसी से यह सोच बैठे हैं कि विद्या प्राप्त करना, अथवा बहुमूल्य वस्त्र धारण करने और धर्म साधन करना ये सब कार्य इने गिने हम धनीमानी लोगों के ही कर्तव्य हैं, इन पर हमारा ही पूर्ण अधिकार है । परन्तु यह हमारा भ्रममात्र है । इसी भ्रमात्मक दृष्टि ने हमारी संख्या घटा दी । जैन जाति को एक छोटा-सा फिरका बना दिया, संसार से अहिंसा धर्म को विदा कर दिया । बहनों हमको अपने विचार उदार बनाने चाहिये समस्त संसार में परम पवित्र अहिंसा धर्म का प्रचार करना चाहिये परन्तु यह तभी हो सकता है, जबकि हमारी विद्या उन्नतावस्था में हो हमारा समाज दूसरों से घृणा न करके वरन् उनका उपदेश देना सीखे । हमारे यहाँ ऐसे-ऐसे विद्यालय ऐसे-ऐसे विधवाश्रम होने चाहिये जहाँ उपयोगी ऊँच्चकोटि की शिक्षा हो । सब को आत्महित समझाया जाय अहिंसा धर्म का रहस्य बताया जाय । एक-एक प्रान्त में कम से कम एक-एक विद्यालय और एक-एक विधवाश्रम अवश्य होने चाहिये । महिला परिषद् के प्रस्तावानुकूल बम्बई, देहली आदि स्थानों में दो एक आश्रम खुले हैं, परन्तु इतनी बड़ी जनता के लिए ऐसी-ऐसी कितनी ही संस्थाओं की आवश्यकता है तथा उन संस्थाओं के उदार प्रबन्ध और उत्तम नियमों की आवश्यकता है। जिस संस्था के नियम ठीक नहीं हैं उससे उचित लाभ नहीं हो सकता अथवा जिस स्थान पर द्रव्य की कमी है वहाँ भी उत्तम कार्य नहीं हो सकता ।

वर्तमान समय एक ऐसा दुर्घट है जिसमें भारतवर्ष की देवियाँ बिना सहायता के कोई विशेष लाभप्रद कार्य नहीं कर सकतीं । इस समय विद्वान् और धनवान पुरूषों की नि:स्वार्थ भाव से पूर्ण सहानुभूति हो तभी स्त्रियों की संस्थाएँ यथेष्ट काम कर सकती हैं । इतनी बड़ी समाज में से कम से कम दस पाँच भाइयों को भी स्त्रियों के उद्धारार्थ अपना जीवन लगा देना चाहिये । तभी कुछ हो सकता है । जिस समय निष्पक्ष सेवी मनुष्य चन्दा एकत्रित करने लगेंगे तो सरलता से 10-20 लाख का चन्दा इकट्ठा हो जायगा और इस पूँजी से कई संस्था भली प्रकार कार्य कर सकेंगी । अपनी समाज के विद्यालय ऐसे होने चाहिए जिनकी व्यवस्था छात्राश्रम प्रथा पर संचालित हो । प्रत्येक विद्यालय के साथ-साथ छात्रावास होना चाहिए जिनमें विधवा बहनों के लिए रहने का पृथक प्रबन्ध हो और सधवा कुमारियों के लिए भिन्न स्थान हो । इन विद्यालयों में उच्चकोटि के धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन रखा जाए और गणित आदि का भी उचित प्रबन्ध रहे, क्योंकि यदि भाग्यवशात् कुटुम्बियों पर किसी प्रकार की आपत्ति आ जाय और स्त्रियों को अकेले रहना हो तो उस समय हिसाब-किताब के ज्ञान के बिना सब सम्पत्ति नष्ट हो जाती है ।

समाचार-पत्र

अनुभव बढ़ाने के लिए हमारी बहनों को समाचार पत्र अवश्य पढ़ना चाहिये । भाषा का सौन्दर्य , उनकी उन्नति, अवनति का ज्ञान उत्तम पत्रों के पढ़ने से ही होता है तथा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सर्वत्र के समाचारों का बोध एवं साहित्य की उत्तम समालोचना भी इन्हीं से मालूम होती है । इसके लिए महिला परिषद् को एक पत्र निकालना चाहिये जिसकी सम्पादिका स्त्री हो और उसमें निबन्ध भी प्राय: महिलाओं द्वारा लिखे हुए हों ।

देश सेवा

बहनों को भी देश के कार्य में भाग लेना चाहिये वर्तमान में अन्यान्य समाज की भारतीय बहनें काम करने लगी हैं जिस प्रकार सौ० व० अवन्तिका बाई गोखले, नन्हीं बाई गज्जर, सरोजनी देवी नाइडू ये देवियाँ धीरे-धीरे प्रारम्भ करके इस समय बड़े-बड़े उपयोगी कार्य कर रही हैं । उसी प्रकार अपने देश के सुख दु:खों को समझना, अपनी कुरीतियों को हटाना स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार को बढ़ाना इन कार्यों में समय लगाना चाहिये ।

शिल्प शिक्षा

बहनों को अपना समय प्रमाद में खोना उचित नहीं है । गृह के कार्यों से बचाव वाला समय हाथ की चीजों के बनाने में लगाना चाहिये । पूर्व समय के अनुसार चर्खे का काम फिर जीवित करना चाहिये ।

विधवा बहनों के धन की रक्षा

विधवा स्त्रियों को अपनी सम्पत्ति किस ढंग से काम में लानी चाहिये इस विषय में अपना देश अत्यन्त विपरीत मार्ग का आश्रय ग्रहण कर रहा है । केवल पुत्र गोद लेना ही अपना कर्त्तव्य समझती हैं । परंतु यह प्रथा ठीक नहीं है । इस से कभी-कभी नामवरी के स्थान में उल्टा दुर्नाम होता है । अब इस नाम के प्रश्न को छोड़ देना चाहिये । नि:सन्तान बहनों को अपनी सम्पत्ति दान में लगानी चाहिये । एक-एक धार्मिक संस्था कन्याशाला, कन्या विद्यालय स्वयं या कई बहनों को मिल कर खोल देना चाहिये । यही आप की अजर अमर सन्तति चिरकाल तक प्रसिद्धि करती रहेगी । अमेरीकादि देशों में विधवा महिलाओं द्वारा संस्थापित अनेक संस्थाएँ हैं । यही दृष्टान्त हमलागों को भी कर दिखाना उचित है।

जो बहनें प्रौढ़ अवस्था वाली हैं और जिनके काषायमन्द हो गये हैं उनको उदासीन होकर स्त्रियों में त्याग मार्ग को संचारित करना चाहिये । उत्तर देश में एक भी त्याग धर्म वाली स्त्री नहीं दीखती यदि ब्रह्मचारिणी के व्रतों को धारण कर गुणी देवियाँ उपदेश देने लगें तो जैन स्त्री समाज का भाग्योदय फिर होना सम्भव है । अन्त में मैं समस्त भगिनी गणों एवं बन्धुओं से क्षमा चाहती हूँ । इस व्याख्यान में जो कुछ अनुचित प्रलाप हुआ हो उस के लिये मुझे आशा है आप लोग अवश्य क्षमा कर देंगी और अपने गुणग्राही स्वभाव से अच्छी बातों को चुन लेंगी ।

ता : 2-4-21 — **समाज सेविका चन्दाबाई जैन**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मानद् मंत्री का प्रतिवेदन

(क) सन् १९२१ से १९८२ तक की प्रगति -

श्री जैन बाला विश्राम की स्थापना 60 वर्ष पूर्व सन् 1921 में केवल जैन विधवाओं और बालिकाओं के लिए हुई थी और उसके संविधान में भी यह स्पष्टोक्ति है । जैन समाज में बाल-विधवाओं की समस्या अपने में चिन्ताजनक थी। जैन कुल की छात्राओं-बालिकाओं की शिक्षा-दीक्षा की समस्याएँ भी स्वयं बहुत बड़ी थीं । इसीलिए पूज्या दादी माँश्री स्व० ब्र० पं० चन्दाबाई जी ने इन समस्याओं से जूझने का व्रत लिया था।

सन् 1921 से 1947 तक इन दोनों समस्याओं का बहुत कुछ निदान वे निकाल चुकी थीं । बाल-विधवाएँ नगण्य रह गई थीं । विधवाएँ शिक्षित होने लगी थीं । उन्होंने अपने अधिकारों को पहचानना-जानना और निर्भीकता से जीना आरम्भ कर दिया था । बाला विश्राम से उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, दिल्ली की छात्राओं ने छात्रावास में रहकर शिक्षा प्राप्त की । सैकड़ों विधवाएँ शिक्षित/प्रशिक्षित होकर स्वावलम्बी होने लगी थीं और स्कूलों/विद्यालयों में उनकों शिक्षिका, समाज सेविका के रूप में समाज ने सम्मान देना आरम्भ कर दिया था ।

पूज्या दादी माँश्री तो जहाँ जाती वहीं उनके चरणस्पर्श करने वाले पुरुषों/स्त्रियों में होड़ लगने लगती थी । श्री जैन महिलादर्श के सम्पादकीय लेखों के द्वारा तथा श्री जैन महिला परिषद् के अधिवेशनों में वे जैन बाला विश्राम की छात्राओं को लेकर देश भर में अलख जगाती फिरती थीं । पचासों पाठशालाओं को उन्होंने जहाँ-तहाँ खुलवाया । स्त्री सभाओं और शास्त्र सभाओं को जहाँ जातीं, वहीं आरम्भ करा देती थीं । स्त्री शिक्षा की इतनी उन्नति हो गई कि आरा जैन समाज की शत्-प्रतिशत महिलाएँ तो भारत की स्वतंत्रता के पूर्व ही शिक्षित हो चुकी थीं ।

देश की स्वतंत्रता के उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि श्री जैन बाला विश्राम के अन्तर्गत श्री जैन महिला विद्यापीठ की स्थापना की जाय, जिसके माध्यम से बिना किसी जाति या वर्ग भेद के समस्त स्त्री समाज की शिक्षा-दीक्षा की योजना भी आरम्भ की जाय। देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की सलाह लेकर विद्यापीठ का संविधान भी उसी के अनुसार नये ढंग पर तैयार किया गया और इस संस्था को इण्डियन सोसायटी एक्ट के अन्तर्गत रजिस्ट्रेशन करा दिया गया । इस संस्था के द्वारा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिडिल स्कूल, हाई स्कूल, नेत्रविहीन विद्यालय, संगीत विद्यालय, होस्टल आदि संचालित किए गए। विद्यापीठ तथा इसके अन्तर्गत की संस्थाओं को सरकारी सहायता लेने की छूट दी गई।

श्री जैन बाला विश्राम में हमने अभी तक किसी प्रकार की सरकारी सहायता के लिए आवेदन तक नहीं दिया। इस संस्था की निधि को पूर्ण स्वतंत्र रखा गया तथा इस संस्था की भूमि, मकान इत्यादि चल-अचल सम्पत्ति को सरकारी शिकंजे से बिलकुल दूर रखा गया है।

हाई कोर्ट, पटना में आवेदन देकर श्री जैन बाला विश्राम के अन्तर्गत के हाई स्कूल को भारतीय संविधान की संरक्षक धाराओं के अन्तर्गत जैन अल्प-संख्यक समुदाय की संस्था घोषित करा दिया गया। तत्पश्चात् मिडिल स्कूल को भी जैन अल्पमत समुदाय की संस्था के रूप में शिक्षा विभाग ने मान्यता दे दी।

इस प्रकार श्री जैन महिला विद्यापीठ के माध्यम से मातृ-संस्था श्री जैन बाला विश्राम ने आरा नगर में स्त्री-शिक्षा, बाल-शिक्षा एवं अपंग व्यक्तियों की शिक्षा के क्षेत्र में हजारों छात्र-छात्राओं को लाभ पहुँचाया। इसके अन्तर्गत की सभी, शिक्षण संस्थाओं में इस समय लगभग 700 छात्र-छात्राएँ बराबर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यह सर्वमान्य है कि जैन बाला विश्राम की सभी शिक्षण-संस्थाएँ सर्वोत्तम शिक्षा का प्रबन्ध करती हैं और इसीलिए नगर से दो मील दूर होने पर भी यहाँ के स्कूलों और होस्टलों में भीड़ बनी रहती है।

पूज्या दादी माँश्री के नेतृत्व में मुझे बाला विश्राम और विद्यापीठ के मंत्री के रूप में श्री जैन महिला विद्यापीठ की स्थापना के कुछ वर्ष पूर्व से लेकर अब तक स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अहर्निश सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिस समय मैंने कार्यभार संभाला उस समय जैन बाला विश्राम में 40 छात्राएँ थीं। बाद में मिडिल स्कूल से हाई स्कूल तक की शिक्षा का प्रबंध हुआ और 700-800 छात्राएँ यहाँ प्रतिदिन शिक्षा के लिए आने लगीं। नये स्कूल भवन और छात्रावास भवन बनाए गए। बहुत बड़ी जमीन का एक और चकला खरीदा गया और इसकी बाउन्ड्री दीवाल बनाई गई। बाला विश्राम बिहार प्रान्त में ही नहीं, देश की बड़ी और उत्तम संस्थाओं में सर्वमान्य हो गया। यहाँ हर वर्ग/जाति की छात्राएँ बिना किसी भेद-भाव, रोक-टोक के शिक्षा प्राप्त करने लग गयीं।

जैन संस्कृति के आधार भूत सिद्धान्त, सत्य और अहिंसा सभी छात्राओं और शिक्षकों के आचार-विचार संहिता के रूप में स्वीकृत कर सहर्ष पालन किए जाने लगे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि इस संस्था से प्रभावित होकर सामिष-भोगी परिवारों में माँसाहार वर्जित हो गया। स्वाध्याय एवं देव-दर्शन घर-घर में दैनिक चर्या के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक योग्यताएँ ही महिलाओं के वास्तविक सौन्दर्य-प्रसाधनों के रूप में स्वीकृत होने लग गई।

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

जैन बालिकाओं के साथ जैनेतर बालिकाओं और उनमें भी विशेष रूप से ग्रामीण बालिकाओं के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रतीक रूप में श्री जैन बाला विश्राम एवं श्री जैन महिला विद्यापीठ सदा याद किया जाता रहेगा, इसमें कुछ भी शंका नहीं ।

यह परम संतोष और गौरव की बात है कि अपने सेवाकाल के साठ वर्ष पूरे कर इस प्रतिष्ठित संस्था ने हीरक जयन्ती उत्सव मनाया । इस महान संस्था से शिक्षा प्राप्त छात्राएँ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान कर रही है धार्मिक क्षेत्र में विदुषी आर्यिकाएँ, शिक्षा के क्षेत्र में सेवा-व्रती शिक्षिकाएँ, सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में निष्ठावान समाज सेविकाएँ तथा घर-परिवार के विस्तृत क्षेत्र में आदर्श गृहणियों/माताओं और बहनों के पद और मर्यादा का वे पालन कर रही हैं। बाला विश्राम की एक विशिष्ट छाप इन सभी छात्राओं पर ऐसी पड़ी हुई है जिसे सहज पहचाना जा सकता है ।

हीरक जयन्ती के अवसर पर अनेकानेक छात्राओं के प्रेमपूर्ण उद्गार लिखकर आए हमने यथासंभव उन्हें स्मारिका में प्रकाशित किया था ।

(ख) सन् १९८२ से १९९६ तक की प्रगति -

सन् 1982 ई० में श्री जैन बाला विश्राम की हीरक जयन्ती का वृहत अयोजन हुआ था । उस समय हमारे बीच में श्री जैन बाला विश्राम की पूज्या संस्थापिका आर्यिकारत्न पंडिता चन्दा माँश्री नहीं थीं । उनका समाधिमरण दिनांक 28 जुलाई 1977 ई. को हो चुका था । इसके पूर्व आचार्य 108 श्री कुन्थु सागरजी महाराज और पूज्या 105 आर्यिका विजयमती माता जी ने शास्त्रोक्त विधियों से श्रद्धेया दादी माँश्री को आर्यिका व्रत दिलाया था । अन्तिम संस्कार भी शास्त्रोक्त विधियों के अनुसार पूरे किये गये थे ब्रजबाला देवी 1982 के हीरक जयन्ती समारोह में उपस्थित थीं। उन्होंने अपना जीवन दान देकर पूज्या दादी माँश्री तथा श्री जैन बाला विश्राम की इतनी बहुमूल्य सेवाएँ निःस्वार्थ भाव से की है, जिनके ऋण से हमलोग कभी मुक्त नहीं हो सकते ।

श्री जैन बाला विश्राम परिवार तपस्विनी परम विदुषी ब्रजवाला देवी की दिवंगत आत्मा को अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर अत्यन्त आदरपूर्वक श्रद्धांजली अर्पित करता है ।

डा0 नीलम जैन द्वारा सम्पादित तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के द्वारा प्रकाशित श्री जैन महिलादर्श का "पूज्या माँ आर्यिकारत्न चन्दा माँश्री विशेषांक" लखनऊ से प्रकाशित हुआ था । इसके लिए हम महासभा के अध्यक्ष श्रीमान् निर्मल कुमार जी सेठी तथा डॉ० नीलम जैन को धन्यवाद देते हैं ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिल्ली में अमृत महोत्सव का क्षेत्रीय समारोह सुप्रसिद्ध दिगम्बर जैन लाल मन्दिर के हॉल में श्रद्धेया आर्यिका शिरोमणि ज्ञानमती माता जी तथा उनके विशाल संघ की पावन उपस्थिति में बहुत भव्य रूप में दिनांक 18-10-97 को संयोजित हुआ । इस महोत्सव का सभापतित्व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी जैन ने किया । इस उत्सव का पूरा विवरण इस स्मारिका में अन्यत्र प्रकाशित है। इस उत्सव का संयोजन श्रीमती श्रीप्रभा जैन एवं श्रीमती जया जैन तथा अन्य स्थानीय लोगों ने उत्साहपूर्वक किया ।

इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश में बाला विश्राम की भूतपूर्व छात्रा डा० रमा जैन ने कई स्थानों पर क्षेत्रीय उत्सवों का संयोजन किया। बिहार प्रान्त में कई स्थानों पर उत्सव सम्पन्न हुए । इसका संयोजन श्री पराग जैन ने उत्साहपूर्वक कराया । द्रोणगिरी क्षेत्र के निकट क्षेत्रीय उत्सव पूज्या 105 गणिनी आर्यिका विजयमती माता जी की उपस्थिति में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ । भारतवर्ष के विभिन्न 75 स्थानों पर क्षेत्रीय उत्सव कराने के लिए हम सभी को हृदय से धन्यवाद देते हैं । क्षेत्रीय उत्सवों के संयोजन में डा0 नीलम जैन के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है ।

यह सौभाग्य की बात है कि आरा उत्सव के प्रारंभिक काल में दिनांक 17 मार्च 1998 को श्री जैन बाला विश्राम की भूतपूर्व छात्रा, अत्यन्त सफल शिक्षिका तथा इसी पुण्यभूमि की प्रेरणा से दीक्षित आर्यिका, श्रद्धेया 105 प्रथम गणिनी विजयमती माता जी तथा आर्यिकाश्री विमल प्रभा माता जी के नेतृत्व में जैन बाला विश्राम अमृत महोत्सव का एक विशेष उत्सव सम्पन्न हुआ । इसमें बाला विश्राम की भूतपूर्व छात्राएँ एवं शिक्षिकाएँ एकत्रित हुई और उनलोगों ने बाला विश्राम तथा इस संस्था की शिक्षा तथा दीक्षा की परम्परा के विषय में उपयोगी संगोष्ठी की । इसकी पूरी रिपोर्ट स्मारिका में अन्यत्र पठनीय है ।

हीरक जयन्ती स्मारिका का सम्पादन मैंने 1982 ई० में किया था। यह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है कि इस वर्ष अमृत महोत्सव स्मारिका सम्पादन का दायित्व देश के जाने-माने विद्वान् डॉ० गोकुलचन्द्र जैन ने किया है। उन्होंने जिस लगन और परिश्रम से सम्पादन का कार्य पूरा किया है तथा इस कार्य में उनकी धर्मपत्नी एवं श्री जैन बाला विश्राम की शिक्षिका डॉ० सुनीता जैन से सहयोग मिला उसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद दे रहा हूँ ।

देश और समाज के सभी वर्गों के साधुओं, विद्वानों, नेताओं और मित्रों के शुभाशीर्वाद, संस्मरण, शुभकामनाएँ एवं संदेश भी जितने प्राप्त हुए उन्हें हम सम्मान पूर्वक प्रकाशित कर रहे हैं ताकि भविष्य में इनसे सदा आश्रम के संचालक प्रेरणा लेते रहें ।

पिछले पचहत्तर वर्षों में अनेकानेक साधु-संत नेतागण, समाज सेवक एवं विद्वत् वर्ग इस संस्था में पधारे हैं । हमने आश्रम की निरीक्षण पुस्तिका में उनके विचार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन बालिकाओं के साथ जैनेतर बालिकाओं और उनमें भी विशेष रूप से ग्रामीण बालिकाओं के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रतीक रूप में श्री जैन बाला विश्राम एवं श्री जैन महिला विद्यापीठ सदा याद किया जाता रहेगा, इसमें कुछ भी शंका नहीं ।

यह परम संतोष और गौरव की बात है कि अपने सेवाकाल के साठ वर्ष पूरे कर इस प्रतिष्ठित संस्था ने हीरक जयन्ती उत्सव मनाया । इस महान संस्था से शिक्षा प्राप्त छात्राएँ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान कर रही है धार्मिक क्षेत्र में विदुषी आर्यिकाएँ, शिक्षा के क्षेत्र में सेवा-व्रती शिक्षिकाएँ, सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में निष्ठावान समाज सेविकाएँ तथा घर-परिवार के विस्तृत क्षेत्र में आदर्श गृहणियों/माताओं और बहनों के पद और मर्यादा का वे पालन कर रही हैं। बाला विश्राम की एक विशिष्ट छाप इन सभी छात्राओं पर ऐसी पड़ी हुई है जिसे सहज पहचाना जा सकता है ।

हीरक जयन्ती के अवसर पर अनेकानेक छात्राओं के प्रेमपूर्ण उद्‌गार लिखकर आए हमने यथासंभव उन्हें स्मारिका में प्रकाशित किया था ।

(ख) सन् १९८२ से १९९६ तक की प्रगति -

सन् 1982 ई० में श्री जैन बाला विश्राम की हीरक जयन्ती का वृहत अयोजन हुआ था । उस समय हमारे बीच में श्री जैन बाला विश्राम की पूज्या संस्थापिका आर्यिकारत्न पंडिता चन्दा माँश्री नहीं थीं । उनका समाधिमरण दिनांक 28 जुलाई 1977 ई. को हो चुका था । इसके पूर्व आचार्य 108 श्री कुन्थु सागरजी महाराज और पूज्या 105 आर्यिका विजयमती माता जी ने शास्त्रोक्त विधियों से श्रद्धेया दादी माँश्री को आर्यिका व्रत दिलाया था । अन्तिम संस्कार भी शास्त्रोक्त विधियों के अनुसार पूरे किये गये थे ब्रजबाला देवी 1982 के हीरक जयन्ती समारोह में उपस्थित थीं। उन्होंने अपना जीवन दान देकर पूज्या दादी माँश्री तथा श्री जैन बाला विश्राम की इतनी बहुमूल्य सेवाएँ नि:स्वार्थ भाव से की है, जिनके ऋण से हमलोग कभी मुक्त नहीं हो सकते ।

श्री जैन बाला विश्राम परिवार तपस्विनी परम विदुषी ब्रजवाला देवी की दिवंगत आत्मा को अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर अत्यन्त आदरपूर्वक श्रद्धांजली अर्पित करता है ।

डा0 नीलम जैन द्वारा सम्पादित तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के द्वारा प्रकाशित श्री जैन महिलादर्श का "पूज्या माँ आर्यिकारत्न चन्दा माँश्री विशेषांक" लखनऊ से प्रकाशित हुआ था । इसके लिए हम महासभा के अध्यक्ष श्रीमान् निर्मल कुमार जी सेठी तथा डॉ० नीलम जैन को धन्यवाद देते हैं ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिल्ली में अमृत महोत्सव का क्षेत्रीय समारोह सुप्रसिद्ध दिगम्बर जैन लाल मन्दिर के हॉल में श्रद्धेया आर्यिका शिरोमणि ज्ञानमती माता जी तथा उनके विशाल संघ की पावन उपस्थिति में बहुत भव्य रूप में दिनांक 18-10-97 को संयोजित हुआ । इस महोत्सव का सभापतित्व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी जैन ने किया । इस उत्सव का पूरा विवरण इस स्मारिका में अन्यत्र प्रकाशित है। इस उत्सव का संयोजन श्रीमती श्रीप्रभा जैन एवं श्रीमती जया जैन तथा अन्य स्थानीय लोगों ने उत्साहपूर्वक किया ।

इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश में बाला विश्राम की भूतपूर्व छात्रा डा० रमा जैन ने कई स्थानों पर क्षेत्रीय उत्सवों का संयोजन किया। बिहार प्रान्त में कई स्थानों पर उत्सव सम्पन्न हुए । इसका संयोजन श्री पराग जैन ने उत्साहपूर्वक कराया । द्रोणगिरी क्षेत्र के निकट क्षेत्रीय उत्सव पूज्या 105 गणिनी आर्यिका विजयमती माता जी की उपस्थिति में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ । भारतवर्ष के विभिन्न 75 स्थानों पर क्षेत्रीय उत्सव कराने के लिए हम सभी को हृदय से धन्यवाद देते हैं । क्षेत्रीय उत्सवों के संयोजन में डा0 नीलम जैन के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है ।

यह सौभाग्य की बात है कि आरा उत्सव के प्रारंभिक काल में दिनांक 17 मार्च 1998 को श्री जैन बाला विश्राम की भूतपूर्व छात्रा, अत्यन्त सफल शिक्षिका तथा इसी पुण्यभूमि की प्रेरणा से दीक्षित आर्यिका, श्रद्धेया 105 प्रथम गणिनी विजयमती माता जी तथा आर्यिकाश्री विमल प्रभा माता जी के नेतृत्व में जैन बाला विश्राम अमृत महोत्सव का एक विशेष उत्सव सम्पन्न हुआ । इसमें बाला विश्राम की भूतपूर्व छात्राएँ एवं शिक्षिकाएँ एकत्रित हुई और उनलोगों ने बाला विश्राम तथा इस संस्था की शिक्षा तथा दीक्षा की परम्परा के विषय में उपयोगी संगोष्ठी की । इसकी पूरी रिपोर्ट स्मारिका में अन्यत्र पठनीय है ।

हीरक जयन्ती स्मारिका का सम्पादन मैंने 1982 ई० में किया था। यह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है कि इस वर्ष अमृत महोत्सव स्मारिका सम्पादन का दायित्व देश के जाने-माने विद्वान् डॉ० गोकुलचन्द्र जैन ने किया है। उन्होंने जिस लगन और परिश्रम से सम्पादन का कार्य पूरा किया है तथा इस कार्य में उनकी धर्मपत्नी एवं श्री जैन बाला विश्राम की शिक्षिका डॉ० सुनीता जैन से सहयोग मिला उसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद दे रहा हूँ ।

देश और समाज के सभी वर्गों के साधुओं, विद्वानों, नेताओं और मित्रों के शुभाशीर्वाद, संस्मरण, शुभकामनाएँ एवं संदेश भी जितने प्राप्त हुए उन्हें हम सम्मान पूर्वक प्रकाशित कर रहे हैं ताकि भविष्य में इनसे सदा आश्रम के संचालक प्रेरणा लेते रहें ।

पिछले पचहत्तर वर्षों में अनेकानेक साधु-संत नेतागण, समाज सेवक एवं विद्वत् वर्ग इस संस्था में पधारे हैं । हमने आश्रम की निरीक्षण पुस्तिका में उनके विचार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संजोकर रखे हैं। उन्हें भी यथा सम्भव स्मारिका में प्रकाशित कर हम अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

इस संस्था के ट्रष्टियों, पदाधिकारियों एवं शिक्षकों के 75 वर्षों की सूची तथा इसी प्रकार विशिष्ट छात्राओं, धार्मिक आदि परीक्षाओं आमद-खर्च आदि की सांख्यिकी प्रकाशित की जा रही है ताकि पाठकों को इस संस्था के पचहत्तर वर्षों का सम्पूर्ण लेखा-जोखा मिल जाय ।

इस उत्सव में पधारने वाले सभी महानुभावों, छात्राओं, शिक्षिकाओं और अभिभावकों को हम और स्वागत समिति के सभी सदस्य उनके प्रेमपूर्ण सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करते हैं ।

श्री जैन बाला विश्राम में स्थापित भगवान बहुबली की अदभुत मूर्ति के लिए आर्यिका नेमसुन्दरी जी को बराबर याद किया जायेगा । इसी वर्ष 15 मार्च को आर्यिकारत्न गणिनी विजयमती माता जी तथा उनकी शिष्या आर्यिका 105 विमलप्रभा माता जी एवं उनके समस्त संघ की उपस्थिति में भगवान बाहुबली का 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक आरा नगर के सभी स्त्रियों, बालाओं, वृद्धों की भारी उपस्थिति में बहुत धूमधाम से सम्पन्न हुआ । ये सभी कार्य पूज्या विदुषीरत्न, सिद्धान्ताचार्य, साहित्यसूरि आर्यिका चन्दा माँश्री का पुण्य प्रताप है, जिससे कि जैन बाला विश्राम का अमृत महोत्सव हम मना रहे हैं और उनके द्वारा लिखित चार महत्वपूर्ण पुस्तकों का पुनः प्रकाशन कर पूज्या माँश्री के उपदेशों का प्रचार कर रहे हैं। उनकी पावन स्मृति सदा जयवंत हो ।

सुबोध कुमार जैन
मानद-मंत्री
श्री जैन बाला विश्राम

देवाश्रम, आरा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विशेष कार्य अधिकारी
OFFICER ON SPECIAL DUTY

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली- 110004

संदेश

भारत के राष्ट्रपति श्री के० आर० नारायणन जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि श्री जैन बाला विश्राम, आरा (बिहार) अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे कर चुका है और 'अमृत-महोत्सव' का आयोजन कर रहा है ।

राष्ट्रपति जी इस आयोजन की सफलता तथा अमृत महोत्सव स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं ।

आपका

(पी० पी० कौशिक)

ऊ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अटल बिहारी वाजपेयी
प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री कार्यालय
नयी दिल्ली - 110011

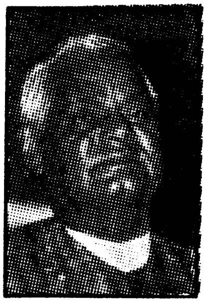

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री जैन बाला विश्राम के सफलतापूर्व 75 वर्ष पूरे होने पर आप "अमृत महोत्सव" का आयोजन कर रहे हैं और इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जायेगा। आशा है स्मारिका में पठनीय एवं संग्रहणीय सामग्री का समावेश किया जायेगा।

मैं आपके अनुष्ठान की सफलता चाहता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

(अटल बिहारी वाजपेयी)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विमला शर्मा

w/o डॉ० शंकर दयाल शर्मा
पूर्व राष्ट्रपति
नई दिल्ली

संदेश

समाज के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि हमारे देश में नारी-शिक्षा को पर्याप्त महत्व दिया जाए। इस दृष्टि से श्री जैन बाला विश्राम संस्था अपनी भूमिका निभा रही है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह संस्था अपनी अमृत महोत्सव मनाने जा रहा है। यह संस्था निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर हो, इस हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

विमला शर्मा

(विमला शर्मा)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ए० आर० किदवई
राज्यपाल, प० बंगाल

राजभवन
कलकत्ता (प० बंगाल)

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि "श्री जैन बाला विश्राम" अपने स्थापना का 75वाँ वर्ष "अमृत महोत्सव वर्ष" के रूप में मनाने जा रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी करने जा रहा है।

मैं उक्त समारोह के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ।

आपका

(ए० आर० किदवई)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बलिराम भगत
राज्यपाल, राजस्थान

राजभवन
जयपुर (*राजस्थान*)

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि श्री जैन बाला विश्राम, आरा (बिहार) द्वारा अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरा करने पर अमृत महोत्सव मनाने का निर्णय लिया है।

महिलाएँ समाज की अभिन्न अंग हैं। राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की महती भूमिका रही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमें सभी बालिकाओं को शिक्षा दिलाने की नितांत आवश्यकता है। इस महत्त्व को इस तथ्य से आंका जा सकता है कि एक पढ़ी लिखी बालिका अपने पूरे परिवार, समाज व राष्ट्र को शिक्षित बनाने में अपना योगदान दे सकती है। इस दिशा में संस्था द्वारा बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य निश्चित रूप से सराहनीय हैं।

मुझे आशा है कि संस्था द्वारा प्रकाश्य स्मारिका में बालिका शिक्षा के संबंध में जनोपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी।

मेरी ओर से शुभकामनायें

आपका

(बलिराम भगत)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुन्दर सिंह भंडारी
पूर्व राज्यपाल, बिहार

संदेश

मुझे यह जानकर असीम प्रसन्नता हो रही है कि श्री जैन बाला विश्राम, आरा अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरा करने के अवसर पर अमृत महोत्सव का आयोजन करने जा रहा है। साथ ही इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित होने वाली है।

मुझे ज्ञात हुआ है कि यह संस्था शिक्षा के साथ ही सामाजिक कार्यों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मैं इस संस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए ''अमृत-महोत्सव'' के सफल आयोजन तथा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

आपका

(सुन्दर सिंह भंडारी)

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

नारी गुणवती धत्ते स्त्रीसृष्टेरग्रिमं पदम्

गुणवती स्त्री नारी-जाति में अग्रगण्या है, श्रेष्ठतम है। आज के इस भौतिकवादी युग में भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा एवं गुणसन्निधानवती नारियाँ देश एवं समाज के लिए गौरव तथा परिवार के लिए सुख-शांति एवं सदाचार का अद्वितीय माध्यम सिद्ध होती हैं।

प्रसन्नता की बात है कि नारी-समाज में शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति के अनुरूप सद्गुणों के सन्निधान के लिए प्रभूत वर्षों से अनवरत समर्पित होकर सेवाभाव से कार्य करने वाला संस्थान श्री जैन बाला विश्राम अपनी स्थापना का "अमृत महोत्सव" मना रहा है।

आशा है इसमें संस्कार पाकर "नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता" जैसी गौरवशालिनी नारियाँ इस भारतभू को अलंकृत करेंगी। इस सुअवसर पर मेरा शुभाशीर्वाद है।

- **आचार्य विद्यानन्द जी महाराज**

उत्कर्ष और कीर्ति की शुभाशंसा

"श्री जैन बाला विश्राम" संस्था के 75 वर्ष पूर्ण होने से "अमृत महोत्सव" का सुयोग आया है। यह संस्था स्व० विदुषी पंडिता आर्यिकारत्न माता जी चन्दा माँश्री ने स्थापित करके संरक्षण-संवर्धन भी किया। कन्या भगिनियों पर अत्यन्त उपकार कर गई। भारत भर में इनका नाम अमर है। भगवान जिनेंद्र प्रभु से प्रार्थना है कि इस संस्था का दिनोंदिन उत्कर्ष होवे और स्व० माँश्री की कीर्ति सदैव कायम रहे एवं बालिका कन्या भगिनियों का धार्मिक आदि ज्ञान पाकर आत्मोद्धार होता रहे।

- **आचार्य मुनि आर्यनंदी जी महाराज**

नये कीर्तिमान स्थापित करें

मैं श्री जैन बाला विश्राम को यह आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन देता हूँ कि वहाँ की आदर्श परम्परा को जीवन्त रखें, आदर्श के नये कीर्तिमान स्थापित करें। वहाँ की छात्राओं एवं शिक्षिकाओं को भी मेरा वात्सल्यमयी आशीर्वाद है। वहाँ के कार्यकर्त्ताओं को एवं आरा वालों को भी मेरा वात्सल्यमयी आशीर्वाद।

- **आचार्य कनकनन्दी जी महाराज**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आशीर्वाद

श्री जैन बाला विश्राम का अमृत महोत्सव तथा पूज्या आर्यिकारत्न चन्दा माँश्री का श्रद्धांजलि उत्सव का आयोजन हो रहा है, पूज्य उपाध्यायश्री का आशीर्वाद ।

- उपाध्याय ज्ञानसागर जी महाराज

जैसा सुना था, वैसा पाया

श्री जैन बाला विश्राम, आरा के विषय में मैंने जैसा सुना था, वैसा पाया । स्व० आर्यिका माँ चन्द्रमति जी ने जो अपने गृहस्थ एवं ब्रह्मचर्य जीवन जो योगदान दिया और जो संस्था प्रारम्भ की, वह अनेक जैन-जैनेत्तर बालिकाओं के भविष्य की उज्ज्वलता पर प्रकाश डाल रहा है । इसका फल माँश्री जी को यह प्राप्त हुआ कि अन्त में आर्यिका व्रत धारण किया एवं आचार्य कुन्थुसागर जी महाराज के संघ सानिध्य में समाधिस्थ हुईं ।

मैं वीर प्रभु से यही कामना करता हूँ कि इस संस्था का कभी अन्त न हो एवं माँ चन्द्रमति जी भी आगामी पर्याय में स्त्रीलिंग छेदकर मनुष्य पर्याय प्राप्त कर मुनिव्रत धारण कर मोक्ष को प्राप्त हों ।

- ऐलक गोसल सागर जी महाराज

जीवन्त कीर्तिस्तम्भ

नारी की गरिमा का पूर्ण विकास माता के रूप में होता है । मातृत्व में सभी कोमल और सुकुमार भावों का समावेश है । सभी धर्मावलंबियों ने मातृत्व के इस कोमल और मधुर रूप का दर्शन किया है । हमारी संस्कृति मातृत्व में मानव हृदय की सर्वोच्च गरिमा का दर्शन करती है । माँ जगज्जननी के रूप में सृष्टि करती हैं, लक्ष्मी के रूप में वैभव देती हैं, सरस्वती के रूप में विद्या देती हैं और शिवत्व के रूप में बल का संचार करती हैं । आज घोर अज्ञान के युग में सन्तान को जन्ममात्र देनेवाली माताओं की कमी नहीं है । परन्तु, सबों की सन्तान को अपना समझकर उनका कल्याण करनेवाली माताएँ दुनियाँ में बहुत कम मिलेंगी । श्रीमती चन्दाबाई उन नारियों की परंपरा में हैं जिन्होंने धर्म और कर्त्तव्य भावना को अभ्युन्नति के लिये अपने आप को समर्पित कर दिया है ।

"श्री जैन बाला विश्राम" उनका जीवंत कीर्तिस्तंभ है और अशेष शताब्दियों तक उनका जयगान इस विश्राम को केन्द्र मानकर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक गुंजायित होता रहेगा । माँ चन्दाबाई के त्याग के कारण ऐसी विशाल और विशिष्ट संस्था

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का निर्माण हो सका है। भगवान् महावीर ने अपरिग्रह का जो ज्वलंत लोक संग्रही लक्ष्य भारतीय समाज के सम्मुख रखा था, उसी लक्ष्य की प्राप्ति में श्रीमती चंदाबाई जी सदा संलग्न रहीं। ब्र० चन्दाबाई जी ने आरा में श्री जैन बाला विश्राम की स्थापना कर भारत के कोने-कोने से आनेवाली सहास्रों बालाओं को सुशिक्षित बनाया है। आपके द्वारा संचालित आश्रम निश्चय ही नारी समाज का अभ्युत्थान करने वाला होगा। यह आश्रम एवं विद्यापीठ चिरकाल तक इसी प्रकार समाज को धर्म तक पहुँचाती रहे, यही हमारी शुभकामनामय आशीर्वाद है। भद्रं भ्रूयात्। वर्धतां जिनशासनम्।

- **स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज**
श्री जैन मठ, मूडबिद्री

शुभकामनाएँ

अत्यधिक प्रसन्नता की बात है- शताब्दी की गौरवमाता माँ चन्दाबाई जी की साधना भूमि आरा के विद्यामंदिर "बाला विश्राम" का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। सुना है, बाला विश्राम की इस अनवरत साधिका ने महोन्नत साधना से प्रेरित होकर कभी विश्राम न लिया। अमृत महोत्सव में फिर से उस महाचेतना की सम्प्रेरणा जगवासी आबाल-वत्सला, साधिका, साध्वीजनों को मिलें, ऐसी हमारी शुभकामनाएँ।

- **भट्टारक भुवनकीर्ति जी महाराज**
कनक गिरी मठ, कर्नाटक

कीर्ति दिगदिगन्त में प्रसारित हो

जैन बाला विश्राम ने नारी उत्थान के लिए, कन्याओं की शिक्षा के लिए, दिगम्बर जैन समाज को बहुत बड़ा लाभ प्रदान किया है। संस्था की संस्थापिका ब्र० चन्दाबाई से मेरा पुराना परिचय था, मैंने बहुत नजदीकी से उनकी भावनाओं को समझा था कि किस प्रकार से वे आगम परम्परा में कट्टर रहकर देश की बालाओं को सम्यक् पथ पर अग्रसर करके उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना चाहती थीं।

सन् 1963 में सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की ओर विहार करते समय रास्ते में आरा के इस आश्रम में अपने आर्यिका संघ सहित ठहरी थीं तब चन्दाबाई मेरी छोटी उम्र और गहन स्वाध्याय आदि देखकर परम प्रसन्नता का अनुभव करती थीं तथा वे स्वयं मेरी शिष्याओं के साथ अध्ययन की कक्षाओं में बैठकर आगम के तलस्पर्शी विषयों की चर्चा करती थीं।

ब्र० चन्दाबाई ने आश्रम का संचालन करते हुए जीवन के अन्तकाल में आर्यिका दीक्षा धारण कर नारी जीवन के अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि की थी। उनके पश्चात् आश्रम की व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से संचालित करने में शशिप्रभा जैन का जो योगदान रहा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वह भी अविस्मरणीय है।

"जैन बाला विश्राम" की कीर्ति दिगदिगन्त में प्रसारित हो,यही मेरा मंगल आशीर्वाद है।

- गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माता जी

दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो

एक कविता की पंक्तियों से अपनी बात प्रारंभ करती हूँ-

एक नहीं कितनी गाथाएँ इतिहासों में छिपी हुई हैं।
वीर शहीदों की स्मृतियाँ स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई हैं।
नहीं केवल पुरुष की पौरुषता से देश का मस्तक ऊँचा।
बल्कि नारियों ने भी हँसकर माँगों के सिंदूर को पोंछा।

अर्थात् इतिहासों में वर्णित नारी का रूप तो कभी-कभी काल्पनिक-सा प्रतीत होने लगता है। किन्तु बीसवीं शताब्दी में जब हम कुछ कर्मठ नारियों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दृष्टिपात करते हैं तो भविष्य का इतिहास उसमें झलकने लगता है। उनमें ब्र० चन्दाबाई का नाम भी अमर स्मृति बनकर सामने आता है, जिन्होंने अपने जीवन का पल-पल आश्रम के लिए न्योछावर कर दिया था।

मैं बचपन में सुना करती थी कि ब्र० चन्दाबाई के आश्रम में पढ़ी हुई कन्याएँ बुद्धिशालिनी एवं उत्तम गृहणी होती हैं। टिकैतनगर के अनेक जैन घरों में इसी अपेक्षा को लेकर लोगों ने आरा की लड़कियों से अपने पुत्रों का विवाह कर उन्हें बहू बनाने में गौरव माना है।

मैंने ब्र० चन्दाबाई को तो नहीं देखा किन्तु उनके द्वारा स्थापित "जैन बाला विश्राम" का अवलोकन; यात्रा के मध्य किया था।

"जैन महिलादर्श" नामक मासिक पत्रिका जिस प्रकार कुशल हाथों से सम्पादित होकर महिलाओं को सुचारु मार्गदर्शन करती रही है वैसे ही आश्रम की उन्नति में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो, यही मंगलकामना करती हूँ।

- आर्यिका चन्दनामती माता जी

आशीष विचार

इतिहास में वर्णित नारियों के जीवन चरित्र को मानव कभी-कभी तो काल्पनिक भी महसूस करने लगते हैं। पर आज जो बीसवीं सदी में हुई नारियों के जीवन एवं उनके व्यक्तित्व की ओर यदि हम दृष्टिपात करें तो, उनका संघर्षमय जीवन का इतिहास, उनके प्रति अपने मन के भावों को व्यक्त करने के लिए मजबूर हो जाता है। उनमें से ब्र० चन्दाबाई का नाम एक अमर स्मृति बन सामने सहज ही आ जाता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हमने तो सिर्फ उनका नाम बालकपन में ही सुना था और उनके द्वारा बनाये ''जैन बाला विश्राम'' को भी संयमी अवस्था में ही देखा । श्री 1008 तीर्थराज सम्मेद शिखर जी की यात्रा कर, पटना नगरी में चातुर्मास पूर्ण कर, आरा के लिए विहार हुआ और ता० 5-11-97 को आश्रम के प्रांगण में मंगल प्रवेश हुआ। आश्रम में प्रवेश होने के पश्चात् वहाँ की सौन्दर्यपूर्ण लालिमा ने साथ आये सभी श्रावकों एवं मम गुरू श्री जयसागर जी महाराज को भी वहां रुकने के लिए मजबूर किया और बाल योगी युवा संत श्री जयसागर जी महाराज की 13 वीं दीक्षा जयन्ती महोत्सव मनाने का सौभाग्य इसी बाला विश्राम आश्रम को मिला । कार्तिक सुदी सप्तमी (7 नवम्बर, 1997) के दिन यह उत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया गया ।

वास्तव में नारी समाज ने अपने जीवन में आये तीव्र-से-तीव्र कष्टों को सहकर भी इतिहास में जो अपनी प्रतिभा बनाई है, वह चिरस्मरणीय है। भोग-विलास में लिप्त नारिजाति को ऐसी प्रतिभा सम्पन्न एवं आज के ही युग में जन्मी श्री चन्दाबाई जी के जीवन-आदर्श को ग्रहण करना चाहिये। उन्होंने आज की नारियों जैसे पुनःविवाह नहीं किया वरन् अपने जीवन में इन्द्रियों को वश में कर संयम को अंगीकार किया और सारे देश में नारी जागृति के लिए, नारी शिक्षा के लिए, नारी जाति का शोषण को रोकने के लिए देश में प्रचार-प्रसार कर नारी में समाहित शक्ति को जागृत किया।

- **आर्यिका पवित्रश्री माता जी**
संघस्थ-बालयोगी श्री जयसागर जी महाराज

अमर कृति

पूज्या माँश्री चन्दाबाई जी का जीवन एक ज्योतिशिखा की तरह प्रज्ज्वलित और प्रकाशित था । उन्होंने अपने उस निर्धूम प्रकाश को स्थायित्व देने का सफल प्रयास किया । उनकी प्रतिभा, उनका प्रबल पुरुषार्थ आज हम आरा क्षेत्र में बढ़ते ज्ञान-केन्द्र के विविध रूपों में देख सकते हैं ।

माँश्री चन्दाबाई ने वाचन, चिन्तन, मनन, लेखन के अतिरिक्त व्यावहारिक धरातल पर सुख का मार्गदर्शन संस्था के निर्माण द्वारा भी किया है । उनकी अनेक कृतियाँ आज उन्हें अमरत्व प्रदान कर रही हैं । '' श्री जैन बाला विश्राम '' भी उनकी एक अमर कृति है । जैन बालाओं के लिए नयी दिशा देने वाला, ज्ञान का प्रकाश बिखेरने वाला, जीवन को सुख की ओर ले जाने वाला यह एक ऐसा केन्द्र है जहाँ भारतवर्ष के कोने-कोने से बालाएँ आकर इस संस्था से लाभान्वित होती हैं ।

सचमुच आर्यिकारत्न चन्दा माँश्री के चरणों में मस्तक झुकाना नहीं पड़ता, स्वयमेव झुक जाता है, कि युग की सारी कठिनाईयों के बावजूद वे एक ठोस सामाजिक काम कर सकीं ।

हमारे लिए वे आदर्श हैं और उस आदर्श का निर्वाह हम उनके कार्यों को आगे बढ़ाते हुए करेंगे ।

मुझे यह जानकर काफी प्रसन्नता हुई कि "श्री जैन बाला विश्राम" अपनी स्थापना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का अत्यन्त सफल 75 वर्ष पूरा कर चुका है। इस अवसर पर इस महान संस्था का "अमृत महोत्सव" आयोजित हो रहा है, साथ ही एक स्मारिका का प्रकाशन भी हो रहा है।

मैं अमृत महोत्सव के आयोजकों एवं स्मारिका के प्रकाशकों को बधाई देती हूँ साथ ही स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मंगल आशीर्वाद प्रदान करती हूँ। समग्र शुभांशसा के साथ।

- आचार्य चन्दना जी
वीरायतन, राजगीर

पूज्या सुमतिबाई जी का आशीर्वाद

पूज्या सुमति बाई जी वृद्धावस्था में हैं। स्मारिका के लिए उनका बहुत-बहुत आशीर्वाद। उन्होंने कहा है-यह स्मारिका महिलाओं की नयी पीढ़ियों के लिए दीपस्तंभ बनेगी। स्मारिका का प्रकाशन जीवन में नयी रोशनी लायेगी।

- ब्र० विद्युल्लता शहा
क्षु० राजुलमति दि० जैन श्राविकाश्रम, सोलापुर, महाराष्ट्र

चिरस्मरणीय सेवाएँ

विदुषी पंडिता आर्यिकारत्न चंदा माँश्री के द्वारा सर्वप्रथम जैन समाज में महिलाओं के हितार्थ अनुपम कार्य कर जैन समाज की महान सेवा की गयी है। वह चिर स्मरणीय रहेगी। समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। उनके द्वारा सैकड़ों महिलाओं का उद्धार हुआ है।

- ब्र० कमलाबाई, संचालिका,
आदर्श महिला महाविद्यालय, श्री महावीर जी (राज०)

DEDICATED SERVICES

I am happy to note that "Sri Jain Bàla Vishram" has successfully completed 75 years of its dedicated services. I appreciate the activities and achievement of your Institution in the field of Education and wish you all success in future also. It is befitting that you are bringing out a Souvenir to commemorate this happy occasion. I wish the publication of the Souvenir all success.

- D. Veerendra Heggande
Dharmadhikari, Dharamsthala

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निष्कंप दीपशिखा

माँश्री चंदाबाई ने निष्कंप दीपशिखा की भाँति अपने जीवन को तिल-तिल कर जलाया केवल इसी भावना से कि सम्पूर्ण नारी जाति को ज्ञान का अखण्ड प्रकाश मिल सके। उन्होंने अपनी कठिन साधना और श्रम से म्रियमाण नारी की सुप्त शक्तियाँ जागृत कर नवदीप्ति प्रदान की थी। सामाजिक कुरीतियों का विरोध कर भारतीय संस्कृति की पुरातन परम्परा और मर्यादा को कायम रखा। अपनी लगन, आत्म विश्वास, साहस और धैर्य के साथ माँश्री ने सन् 1921 के अंधकार युग में, नारी जाति के हृदय में ज्ञान की चेतना जगाने का संकल्प लिया। नारी के अमंगलमय, बंधनयुक्त जीवन को सही दिशा दिखाने के लिए, इस अपराजित मंत्र का प्रयोग किया-**''उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत''** और घर-घर ज्ञान की अलख जगा दी। सच कहा है ''साधक जब अलख जगाता है, प्रतिमाएँ बोला करती हैं'' फिर तो हजारों छात्रायें, विधवाएँ, परित्यक्तायें ''बाला विश्राम, आरा'' में ज्ञान प्राप्त कर अपना शारीरिक और मानसिक विकास कर स्वावलंबी बनकर, जीवन संग्राम में सफलता पूर्वक सम्मान युक्त जीवन यापन करने लगीं। आज माँश्री हमारे सामने नहीं हैं किन्तु ''जैन बाला विश्राम'' उनका जीवित कीर्ति स्तंभ है जो युगों तक माँश्री का जयगान गाता रहेगा।

- **रीना जैन,** छतरपुर

महिला संस्थाओं में अग्रणी

श्री बाला विश्राम, आरा समाज की अन्य महिला संस्थाओं में अग्रणी है। पूज्य ब्र० चन्दाबाई जी ने अपना जीवन समर्पित कर संस्था को समुन्नत बनाया है। इस आदर्श संस्था का निरीक्षण मैंने किया है और मैं इसकी गतिविधियों से परिचित हूँ। महिलाओं के चरित्र-निर्माण और उन्हें सुसंस्कारित कर आत्मोन्नति के साथ समाज सेवा परायण बनाने के उद्देश्य में यह संस्था सतत प्रयत्नशील रही है। यहाँ महिलाओं के लिए सभी साधन उपलब्ध हैं। संस्था के 'अमृत महोत्सव' पर मैं संस्था और इसके सदस्य कार्यकर्त्ताओं के प्रति मंगलकामना करते हुए समारोह की सफलता चाहता हूँ।

- **नाथूलाल जैन शास्त्री,** निदेशक
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ परीक्षा संस्थान, इन्दौर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शुभ एवं प्रेरणाप्रद

जैन बाला विश्राम एक महनीय संस्था है। अमृत महोत्सव मनाते हुए स्मारिका का प्रकाशन अत्यन्त शुभ और परमोपयोगी कार्य है। इससे सबको महान् प्रेरणा प्राप्त होगी। यह विशेष समारोह तपः विभूति चन्दाबाई जी के महत् आदर्शो का प्रतिफल है। मैं इसकी सफलता के लिए भगवान् से प्रार्थना करता हूँ।

– **डॉ० ताराचन्द्र जैन बक्शी** (स्वतंत्रता सेनानी)
अ० विश्व जैन मिशन, जयपुर

शताब्दी महोत्सव मनायें

विद्या धन के कल्पवृक्ष, जैन बाला विश्राम की आदर्श संस्थापिका, संचालिका, तपोमूर्त्ति, त्याग वैराग्य की अनुपम विभूति उस महान् आत्मा पू० माता जी चन्दाबाई एवं जैन बाला विश्राम संस्था को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

अपना अमृत महोत्सव मनाते हुए स्मारिका के प्रकाशन पर मैं संस्था के कार्यकर्त्ताओं को सधन्यवाद देता हूँ। सहस्रों नारी जाति का कल्याण करने वाली संस्था शीघ्र शताब्दी महोत्सव मनाये, ऐसी मेरी सर्वज्ञ देव के चरणों में सतत् प्रार्थना है। शुभकामना है।

– **निर्मल चन्द्र जैन,** सिवनी

शताब्दी वर्ष द्विगुणित उत्साह से मनायें

अन्नदानं परं दानं विद्यादानमतः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिर्यावज्जीवं तु विद्यया॥

इस श्लोक में शाश्वत संदेश है कि विद्यादान सर्वोत्तम दान है। अन्नदान से कुछ समय के लिए संतुष्टि होती है जबकि विद्या से जीवन पर्यन्त सुख और संतोष प्राप्त होता है।

स्त्री शिक्षण कार्य में प्रवृत्त "जैन बाला विश्राम" विद्यालय आज अपने कार्यकलाप के 75 यशस्वी वर्ष पूर्ण कर रहा है। यह हम सबके लिये बहुत आनंद और गर्व की बात है। इस अवसर पर हम संस्था के संचालक, शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं कार्यकर्त्ताओं को ऐसी लम्बी सफर सफलतापूर्वक पार करने के लिये धन्यवाद देते हैं और अपनी शुभकामनाएँ भेज रहे हैं।

यह विद्यालय बालिकाओं को विकासोन्मुख एवं भारतीय संस्कार के अनुरूप शिक्षा,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जीवन को सुंदरतम और सुखी बनानेवाली शक्ति है । संस्था मूल्य-आधारित हो तभी मानव जीवन की उन्नति हो सकती है ।

ईश्वर आपको शक्ति दें और इसका शताब्दी वर्ष द्विगुणित उत्साह से मनायें यही शुभेच्छा है ।

- एस० पी० देशमुख-माधुरी देशमुख

मारीशस में बाला विश्राम

जैन बाला विश्राम से ज्ञानोपार्जन करके मैं फिर मारीशस द्वीप आ गयी । मैंने संस्था के अविस्मरणीय क्षणों को आज भी अपने मन में संचित रखा है । मैं और हमारी सभी मारीशस की बहनें आश्रम के संचालन तथा प्रगति हेतु शुभकामनाएँ भेज रही हैं ।

मैं जब अपनी संस्था में पढ़ती थी तब पढ़ाई नियमित रूप में चलती थी और प्रतिदिन सायंकाल में शास्त्र-वाचन, भजन, प्रार्थना होती थी । उस समय करघा से घर में हमलोग सूत कातकर कपड़े बुनते थे । यह विद्या हमने भी अच्छी तरह सीखी थी । जिस समय मैं आश्रम में थी, उस समय के अध्यापक अध्यापिकाओं के नाम थे- जीजी बाई, सरस्वतीबाई, रामधारी देवी जी, जगन्नाथ तिवारी, मास्टर जी और पंडित जी । हमारी संस्था उज्ज्वलशीला बने, यही हमारी शुभभावना है ।

- **लीलावती-रामनारायण बोंबास**, मारीशस

आदर्श विद्यालय

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री जैन बाला विश्राम का 'अमृत महोत्सव' मनाया जा रहा है । श्री जैन बाला विश्राम आरा ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है । जैन समाज के इनी-गिनी शैक्षणिक संस्थाओं में यह एक संस्था है, जो निरन्तर प्रगति कर रही है । यह विद्यालय निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होता रहे एवं देश का एक आदर्श विद्यालय बने, ऐसी कामना करता हूँ ।

- **डालचन्द्र जैन** (पूर्व सांसद)
सागर

विनम्र श्रद्धा के दो शब्द

उनकी स्मृतियों को बटोर कर लिखना कठिन काम है । हमारी तीन बुआ जी थीं, जिनमें वे ज्येष्ठ थीं । उन्होंने श्री जैन बाला विश्राम जैसी बड़ी संस्था बनाई जिसमें सैकड़ों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लड़कियों तथा विधवाओं ने शिक्षा पाई और अपना जीवन बनाया । हम वहाँ जब भी गये, उनका प्यार और आशीर्वाद हमें मिला । उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रभावशाली और गौरवपूर्ण था । मुझे 'नग्गी' कह कर संबोधित करती थीं । उनके साथ मुझे बाहुबली भगवान् की पूजा कर बहुत सुख मिलता था । उनके कंठ में माधुर्य और लय था । हम विभोर हो जाते थे । वर्ष में एक बार मथुरा आती थीं, तो घर का सारा वातावरण धर्ममय हो जाता था । बाद में दोनों बुआ जी इन्हीं के साथ आश्रम जाकर रहने लगीं और उनसे इतनी अधिक प्रभावित हुईं कि उनके ही अनुसार आचार-विचार पालने लगीं । वे सभी अंत तक आश्रम में ही रहीं और आश्रम के कार्यों में उन्हें पूरा सहयोग देती रहीं । हमारे बड़े भाई बाल कृष्ण गुप्त उनके परम भक्त थे और बराबर समय निकाल कर उनके पास आश्रम में रहते थे । उनकी स्मृति को हमारा सदा प्रणाम ।

- नागेन्द्र कृष्ण गुप्ता, मथुरा

अवकाश प्राप्त इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (उत्तर प्रदेश)

" Our Bari Bua Dadi Ji "
A Source of Inspiration

I want to offer my congratulations on the Platinum Jubilee celebration of the "Jain Bala Vishram," Our Bari Bua Dadiji was a source of inspiration to me and my late father, Bal Krishna Gupta. My father used to tell me that she was such a learned and respected figure that she was given the title of "Pandita"

I have very beautiful memories of my visit to Arrah in June or July of 1966. I was studying in England and came to India in 1966 for a two Months holiday. My father suggested me to spend some time in Arrah and meet our 3 Bua Dadis. The photo that you are referring to was taken by me with my camera self timer, unfortunately I have looked everywhere and cannot find my copies of the negative.

Bari Bua Dadi was very kind to me. She spoke very fondly of my father and my grandfather, Rai Bahadur Jamna Prasadji and I could tell that she was well versed in all types of issues and had an impressive knowledge of spiritual and worldly affairs.

I still remember going every morning to offer Puja at the feet of the imposing statues of Bahubaliji and also meeting with some of the ladies who were being taught at the Ashram.

- Pradeep K. Gupta

14314 stratton Drive

Sugorland, X 77478, U.S.A

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ज्योर्तिमयी अमर दीपशिखा

माँश्री चन्दाबाई जिन्होंने समस्त नारी जाति को अपनी धरा पर जमना, लहलहाना, फलना-फूलना सिखाया । अपने वरदहस्त के तले उनकी क्षमता प्रतिभा को अपने उत्सर्ग का रस पिला-पिलाकर परिपुष्ट किया । माँश्री जो जीवन की जीवन्त प्रतिमूर्ति थीं । जिनका सैद्धान्तिक लक्ष्य एक था नारी गौरव की प्रतिष्ठापना, लेकिन व्यवहार में उसे बहुआयामी बनाकर विकसित किया । जिसकी यशोगाथा के प्रतीक केवल आरा की धार्मिक शैक्षणिक संस्थाएं ही नहीं अपितु हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश के अनेक नगरों में उनकी दीप्ति को प्रसारित करके अनेक महिला संस्थाएं उनकी कीर्ति को अमर बना रही हैं ।

उनके व्यक्तित्व की सशक्तता आज भी नारी जाति की मानसिकता और उनकी पृष्ठभूमि से जुड़ी प्रथम चुनौती के रूप में परिपाटियों, रूढ़ियों ओर कुरीतियों से जूझते हुए माँश्री ने अपने जीवन को ऐसा प्रांजल बनाया कि आज भी उनका जीवन चरित्र हमें नारीत्व से जुड़े समस्त प्रश्नों का उत्तर और सामाजिक विसंगतियों का सर्वसम्मत प्रतिकार दृष्टिगोचर होता है।

श्री जैन बाला विश्राम, श्री जैन महिला परिषद और जैन महिलादर्श माँश्री के ही उर्वर मस्तिष्क की संकल्पना थी। वे भली-भाँति जानती थीं कि बिना समाज में महिला संस्था, महिला पत्रिका और महिला पत्रकार के महिलाओं की साहित्यिक प्रतिभा, रचनात्मक उर्जा, उनकी समस्याओं और एकता का सही स्वरूप सामने नहीं आ सकता ।

नारी जीवन की प्रगति के रहस्य सूत्र, नैसर्गिक आलोक से अद्यतन प्रदीप्त उनके निर्मल यश: शरीर को मेरा प्रणाम ।

- डा० नीलम जैन
प्रधान संपादिका-जैन महिलादर्श

प्रात: स्मरणीय माँश्री

प्रात: स्मरणीय, परम् श्रद्धेया परम पूज्या माँश्री चन्दाबाई जी के चरणों में मेरा शत् शत् नमन । श्री जैन बाला विश्राम को स्थापित हुए 75 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, अत: इसी उपलक्ष्य में 'अमृत महोत्सव' का आयोजन हो रहा है । अमृत महोत्सव के अवसर पर मैं माँश्री के चरणों में अपनी विनम्र विनयाञ्जलि समर्पित कर रही हूँ। मैं माँश्री ब्र० चन्दाबाई जी की मंझली बहन स्वर्गीय श्रीमती केशर देवी जैन के छोटे पुत्र श्री ज्योतिषचन्द्र की पत्नी हूँ। अत: मुझे माँश्री के दर्शनों का सौभाग्य बराबर ही प्राप्त होता रहा था । मेरे पति कलकत्ता में काम करते थे, हम सब दिल्ली के रहनेवाले थे । अत: जब कभी भी हम दिल्ली जाते थे, तब आश्रम में जरूर ही कुछ दिनों के लिये आते थे,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

माँश्री के दर्शन करके और उनका आशीर्वाद ग्रहण करके ही हम अपनी यात्रा पूरी करते थे। उनके सान्निध्य से जो लाभ मुझे हुआ वह अकथनीय है, उनकी पवित्र यादों को मैंने अपने हृदय में संजोकर रखा है, उन्हीं के कुछ अंश मैं लिख रही हूँ।

उनका तपस्वी जीवन, हंसमुख स्वभाव, ओजपूर्ण मधुर वाणी, सब मधुर स्वप्न के सदृश्य मेरे नेत्रों के आगे सजीव हो जाते हैं। उनका व्यक्तित्व भी अद्वितीय ही था, जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसी का जीवन धन्य हो जाता था। जैसे चन्द्रमा की शीतल किरणें वातावरण को स्वच्छ और शीतलता प्रदान करती हैं उसी प्रकार आपका मुस्कुराता चन्द्रमुख देखकर मन का सारा विषाद मधुर आनन्द में बदल जाया करता था। जैसा उनका नाम था, वैसे ही गुण भी उनमें विद्यमान थे।

माँश्री के अन्तिम तीन वर्ष मैंने अपने परिवार के साथ यहीं श्री जैन बाला विश्राम में रह कर ही व्यतीत किये थे। अतः उनके सान्निध्य में हमें उनके साथ पूजा, धर्मोपदेश में काफी सहयोग मिला। उन्होंने आश्रम की अनगिनत छात्राओं को तो विद्यादान देकर उनके जीवन को धन्य कर ही दिया, मुझे भी उनके समीप रहकर ऐसा लगा कि वही मेरी सच्ची धर्मगुरु और स्नेहमयी माँ हैं। उनके गुणों का वर्णन करने में मैं अक्षम हूँ, फिर भी मैं अपनी श्रद्धा के कुछ सुमन उनके परम पूज्य चरणों में अर्पित कर रही हूँ।

वीर प्रभु से हमारी यही मंगलकामना है कि माँश्री का आशीर्वाद हम सब पर सदैव बना रहे, जिससे हम उनके बतलाये मार्ग पर चल सकें।

– **पद्माचन्द्रा**
ध०प० श्री ज्योतिष चन्द्र जैन, उपअधिष्ठाता
धर्मकुंज, धनुपुरा, आरा।

अटूट प्रयत्नों का फल

जैन बाला विश्राम, आरा (बिहार) ने जो शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया है, वह जैन इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। स्वर्गीय त्यागमूर्ति माँ चन्दाबाई ने इसकी स्थापना करके महिलाओं में न केवल शिक्षा का ही प्रचार-प्रसार किया, अपितु अनगिनत महिलाओं का जीवन निर्माण भी किया, जिन्हें समाज ने उपेक्षित कर रखा था। माँश्री ने स्वयं त्यागमूर्ति बनकर महिलाओं को त्यागमूर्ति बनाया। माँ ब्रजबाला जैसी अनेक महिलाएँ उसकी उदाहरण हैं। मुझे अनेक बार जैन बाला विश्राम में जाने का सुअवसर मिला और वहाँ के शांत वातावरण में शिक्षा पा रही बालाओं एवं अन्य बहनों को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

यहाँ की इस विशेषता का उल्लेख किये बिना नहीं रह सकता कि बाला विश्राम में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जो भी साधु-संत, विद्वान् और अन्य सज्जन गए उनकी सेवा सुश्रुषा और आतिथ्य बाला विश्राम की बहनों द्वारा किया गया। माँश्री से ऐसे आतिथ्य को पाने का मुझे कई बार अवसर मिला। माँ ब्रजबाला जी धन्य हैं कि जीवन भर वे उनके साथ रहीं। मेरे श्रद्धापूर्ण नमन।

- डॉ० दरबारीलाल कोठिया

महिला संस्थाओं में सर्वश्रेष्ठ

श्री जैन बाला विश्राम, आरा जैन समाज की महिला संस्थाओं में सर्वश्रेष्ठ संस्था है और उसकी श्रेष्ठता का कारण है- उसकी स्थापना तथा संचालन की व्यवस्था पूज्य माता ब्र० चन्दाबाई जी के द्वारा हुई थी। पति-पुत्र विरहित एवं गृह-परिजन से उपेक्षित विध--वा बहनों के लिए अवलम्बन देने वाली यह प्रमुख संस्था है। अब तो बम्बई, इन्दौर, सागर और महावीरजी में भी आश्रम खुल गए, परन्तु किसी समय यही एक संस्था थी जो विधवाओं के लिए सहारा देने वाली मानी जाती थी।

इस आश्रम ने अनेक महिलाओं को विदुषी एवं सुयोग्य बनाया है। पद्मश्री ब्र० सुमतिबाई शहा और ब्र० विद्युल्लता शहा ने इससे प्रेरणा प्राप्त की और आज वे स्वयं सोलापुर में एक विशाल महिला संस्था का संचालन कर रहीं हैं।

माता चन्दाबाई जी को पूज्यवर गणेश प्रसाद जी वर्णी उनके लिए लिखे गए पत्रों में 'प्रशममूर्ति' विशेषण लगाया करते थे, इसलिए इनके दर्शन की उत्कण्ठा रहती थी। एक बार सम्मेद शिखर जी की यात्रा से लौटते समय आरा उतरा और आश्रम में उनके दर्शन कर प्रसन्नता का अनुभव किया। तत्पश्चात् वे पंच कल्याण प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव के समय महिला सभा के अधिवेशन के प्रसंग में द्रोणगिरी भी पधारी थीं। उनकी वाणी की मधुरता से उपस्थित जनसमूह अत्यन्त प्रभावित हुआ था।

जैन महिलादर्श का प्रकाशन और उसके माध्यम से अनेक लेखिकाओं को तैयार करना उन्हीं का आद्य उपक्रम था। वे अखिल भारतवर्षीय दि० जै० विद्वतपरिषद् की सम्मान्य सदस्या थीं। एक बार कार्यकारिणी ने सोलापुर अधिवेशन का अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव रखा था, परन्तु प्रवास की कठिनाई के कारण उन्होंने अस्वीकृत कर दिया था।

उनके द्वारा संस्थापित एवं संचालित बाला विश्राम के 'अमृत महोत्सव' पर श्री ब्र० चन्दाबाई जी के प्रति श्रद्धासुमन समर्पित करता हुआ आश्रम की उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूँ।

- डा० पन्नालाल साहित्याचार्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निरवद्य मातृत्व की प्रतिष्ठापक माताजी

सन् 28 में मैं स्याद्वाद विद्यालय का लघुतम विद्यार्थी होकर काशी आया। गंगातीर पर स्थित विशाल भवन के मध्य में स्थित जिन मन्दिर पर पड़ती मेरी दृष्टि उसके शिखर तक चली जाती थी। वहाँ रहकर मैंने राजकीय संस्कृत विद्यालय से, 'साहित्याचार्य' तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से इतिहास में 'एम०ए०' उत्तीर्ण किया।

सन् 45 की जुलाई के द्वितीय सप्ताह में आरा कॉलेज के आचार्य का तार मिला- "यदि इतिहास की प्राध्यापकी अभीष्ट हो तो प्रार्थनापत्र भेजें।" और मैं जुलाई के तीसरे सप्ताह में आरा जा पहुँचा। मुझे माताजी को बड़े निकट से जानने का मौका मिला। मुझे जो स्नेहसिक्त उपदेश और अनुग्रह माताजी से मिले, उन्होंने बताया कि यह हृदय कितना विशाल है। यही कारण है जो वे एक, दो की नहीं सैकड़ों की सफल माता बन सकीं।

मैंने देखा कि माताजी को संस्था- निर्माण में ही दक्षता प्राप्त नहीं है अपितु, आप व्यक्ति-निर्माण में भी पारंगत हैं। श्रीमती ब्रजबाला देवी को समाजसेवा के क्षेत्र में लाना माताजी का ही काम है।

- **प्रो० खुशालचन्द्र गोरावाला**, वाराणसी

अप्रतिम संस्था

75 वर्ष पूर्व आर्यिकारत्न पंडिताचार्य स्व० माँश्री चन्दाबाई ने नारियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए जिस संस्था की स्थापना की थी, वही 'श्री जैन बाला विश्राम, आरा' के नाम से विश्व में विश्रुत है। सन् 1975 में मैंने पहली बार इस त्यागमूर्त्ति के दर्शन किये। उस समय परोपकारिणी माँश्री अस्वस्थ थीं। डॉ० राजाराम जैन मेरे साथ थे। उन्होंने डॉ० साहब के द्वारा मुझे शीघ्र अन्दर बुलवाया। मैंने उनसे यह कहते हुए सुना कि विद्वानों को क्यों रोका जाता है। तात्पर्य यह है कि त्याग और तपस्या की साक्षातमूर्त्ति ब्र० चंदाबाई विद्वानों का समादर करती थीं। मैंने दर्शन कर अनुभव किया जैसे श्वेतवसना साक्षात् सरस्वती के दर्शन कर रहा हूँ। उन्होंने नि:स्वार्थ अप्रतिम संस्था की स्थापना कर नारी समाज का उद्धार किया है।

'श्री जैन बाला विश्राम' एक ऐसा तीर्थ है, जहाँ से अनेक विपत्तिग्रस्त नारियाँ पार हो गई हैं। उस समय महिलाओं की शिक्षा के लिए दूसरी संस्था नहीं थी। समाज को इस प्रकार की संस्था के अध्यक्ष बाबू सुबोध कुमार जी जैन इस संस्था के लिए समर्पित हैं। उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ, ताकि विदुषी माँश्री ने जिस संस्था का स्वयं बीजारोपण कर सींचा, उसका वे सतत् विकास करते रहें।

- **प्रो० (डॉ०) लालचन्द जैन**, वैशाली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धर्म के संस्कार सिंचित करें

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आपकी संस्था अमृत महोत्सव मनाने जा रही है। इस संस्था को आपने अपना जीवन समर्पित करके तन-मन-धन से एवं लगनपूर्वक सिंचित किया है। अत: आप इसके लिए विशेष रूप से बधाई की पात्रा हैं।

महोत्सव एवं स्मारिका के लिए हमारी शुभकामनाएँ। युगों युगों तक यह संस्था नारी जाति में, धर्म के संस्कार सिंचन करने में गतिशील रहेगी।

- **पं० अभय कुमार जैन**, व्याख्याता
श्री टोडरमल स्मारक महाविद्यालय, जयपुर

दिगम्बर जैन समाज का गौरव

दिगम्बर जैन समाज का गौरव श्री जैन बाला विश्राम का 'अमृत महोत्सव' आप लोग मनाने जा रहे हैं। इस आश्रम के द्वारा नारी जागरण में अद्भुत योगदान माँ चन्दाबाई का रहा है। विश्व में अनेक जगहों पर भ्रमण करने के क्रम में आश्रम की पढ़ी लिखी महिलाओं से बातचीत करने का मौका मिलता है। वे इस आश्रम की पुरानी यादों को संजोए हुए हैं और बहुत ही श्रद्धा के साथ माँ चन्दाबाई को याद करती हैं। हमारी हार्दिक मंगलकामनाएँ।

- **निर्मल कुमार जैन (सेठी)**, अध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दि० जैन महासभा

स्तुत्य एवं अभिनन्दनीय

आर्यिकारत्न चन्दा माँश्री ने जीवन भर विभिन्न विशिष्ट कार्यो द्वारा धार्मिक और सामाजिक कार्यो में अपना सक्रिय योगदान, सहयोग एवं समर्पण किया है, जिससे पूरा क्षेत्र गौरवान्वित हुआ है। उनका यह समर्पण प्रशंसनीय, सराहनीय, प्रेरणास्पद, स्तुत्य एवं अभिनन्दनीय है। 'अमृत महोत्सव' पर हार्दिक शुभकामनाएँ।

- **कैलाशचन्द्र चौधरी**
इन्दौर, मध्य प्रदेश

बाला विश्राम विश्वविद्यालय बने

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है और विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा के महत्त्व के बारे में तो कहना ही क्या। एक शिक्षित माता सारे परिवार को शिक्षित करने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में परिवार की नींव के पत्थर का कार्य करती है। महिला शिक्षा में भारत जैसे पिछड़े देश में श्री जैन बाला विश्राम ने परिवार, समाज और राष्ट्र की सेवा में जो अतुलनीय योगदान दिया है, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। आपके मार्गदर्शन में यह संस्था प्रगति के पथ पर आगे बढ़े। यह विश्वविद्यालय का रूप धारण करे इसी भावना के साथ इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

– **उम्मेदमल जैन पाण्ड्या,** महामंत्री
श्री दि० जै० आदर्श महिला महाविद्यालय
श्री महावीर जी

स्मरणीय कार्य

पूज्या माँ साहेब स्व० विदुषी पंडिता आर्यिकारत्न चन्दाबाईजी द्वारा स्थापित श्री जैन बाला विश्राम की स्थापना के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। आपका बहुत अच्छा, प्रशंसनीय विचार है। 'अमृत महोत्सव' खूब धूमधाम से अच्छी तरह बड़े पैमाने पर मनाना चाहिए। पूज्या माताजी ने जो कार्य किया है वह हमेशा स्मरणीय रहेगा।

– **रा०ब० हरकचन्द जैन पाण्ड्या,** राँची

जन कल्याणकारी संस्था

श्री जैन बाला विश्राम ने इन वर्षों में नारी शिक्षा के क्षेत्र में जो कीर्तिमान स्थापित किया है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। यह संस्था जनकल्याण कार्यों की ओर भी अपना दायित्व समझती हुई जनसाधारण के लिये समर्पित है, यह भी रचनात्मक कार्यों की दिशा में एक सफल उदाहरण है।

हमारे समाज की जो भी संस्थाएँ हैं, उन्हें संचालित करने के लिए समर्पित सेवाभावी लोगों की आवश्यकता है। संस्था को लगनशील एवं निष्ठावान् व्यक्ति उपलब्ध हों तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह संस्था दिनोंदिन आगे ही बढ़ती रहेगी। आपके सद्प्रयासों के लिए बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

"अमृत महोत्सव" के दौरान ऐसे संकल्प लिये जाएँ ताकि भावी पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त हो और समाज में ऐसी संस्था उत्तरोत्तर विकसित होती रहे, यही मेरी मंगलभावना है। महोत्सव की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।

– **साहु शरदकुमार जैन,** मुम्बई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ

माँश्री चन्दाबाई अत्यन्त दूरदर्शी, पीड़ित व निर्बल महिलाओं की सेवा के लिए समर्पित, शिक्षा के प्रसार तथा समाज के उन्नयन के लिए सतत् प्रयास करने वाली ममतामयी विदुषी नारी थीं। श्री जैन बाला विश्राम उनके यश की गाथा का स्मारक है। समाज उनके उपकार को कभी विस्मृत नहीं कर पाएगा। नारी-शिक्षा और जैन बाल-विधवाओं की दशा सुधारने के लिए उनके कार्य समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं।

उनकी पावन स्मृति को बढ़ाने और उनकी मानव-कल्याण की भावना के प्रसार के लिए हर प्रयास स्तुत्य है। 'अमृत महोत्सव' के आयोजन के लिए मेरी बधाई व उसकी सफलता के लिए मंगलकामनाएँ स्वीकार करें। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका नयी पीढ़ी को एक दिशा और प्रेरणा देगी, ऐसा विश्वास है।

- **साहु रमेशचन्द्र जैन**, अध्यक्ष
भारतवर्षीय दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी

सतत् प्रयत्नशील

आरा स्थित जैन परम्परा के अनुकूल संचालित "श्री जैन बाला विश्राम" बिहार में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में पूज्य मातुश्री चन्दाबाई द्वारा स्थापित एक मात्र ऐसी संस्था है जो अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील है। वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि यह संस्था सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

- **स्वरूप चन्द जैन 'सोगानी'**, हजारीबाग

दिव्य अवदान

माँश्री चंदाबाई जैन संस्कृति के बीसवीं शताब्दी के इतिहास को गहराई से प्रभावित करने वाली एक महान् महिला थीं। उन्होंने अपने जीवन में वह ज्योति प्रज्ज्वलित की, जिसने हजारों-हजार बालिकाओं को सन्मार्ग का प्रकाश दिया तथा उनके जीवन को दिशा प्रदान की। माँश्री ने स्वयं भी संयम की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते अंत में नारी पर्याय का सर्वोच्च प्राप्तव्य-आर्यिका पद प्राप्त कर लिया। इस काल में नारी जीवन की इससे बड़ी सफलता हो ही नहीं सकती। इस दिव्य अवदान के लिए उनका पवित्र नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

- **नीरज जैन**, सतना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कीर्त्ति स्तंभ

श्री जैन बाला विश्राम आदरणीया स्वस्तिमती चंदाबाई जी के तत्वावधान में हुई महत्त्वपूर्ण सेवाओं का कीर्त्ति स्तंभ है।

– **महेन्द्र सागर प्रचण्डिया**
मंगल कलश, अलीगढ़

हार्दिक शुभकामनाएँ

आरा निवासी लब्धप्रतिष्ठ देवाश्रम परिवार द्वारा संचालित संस्थाओं ने मानव समाज का बड़ा उपकार किया है। इनमें जैन सिद्धान्त भवन, देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, जैन कन्या पाठशाला और जैन बाला विश्राम प्रमुख हैं। उक्त संस्थाओं में शिक्षक, सम्पादक और अनुसन्धान अधिकारी के रूप में मुझे बारह वर्ष तक सेवा करने का अवसर मिला है, जिससे मैं अत्यन्त गौरवान्वित हूँ। संस्था समूह की अनवरत प्रगति और अमृत महोत्सव की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं। संस्थाओं के संचालक एवं कार्यक्रम के आयोजकगण को भी धन्यवाद है।

– **डॉ० ऋषभचन्द्र जैन**
प्राकृत शोध संस्थान, वैशाली

नया चिन्तन आवश्यक

श्री जैन बाला विश्राम के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर एक वर्ष तक अमृत महोत्सव मनाने का आयोजन अत्यन्त स्तुत्य है। इससे जैन समाज को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

इस संस्था एवं इससे सम्बद्ध संस्थाओं की प्रेरणास्रोत माँश्री चन्दाबाई जी की स्मृति भी ताजा हो गई जिन्होंने अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को नारी, बाल विधवाओं, मूक बधिर तथा नेत्र विहीनों के लिए दिया तथा इनकी उन्नति की अनवरत चेष्टा की। यहाँ से शिक्षा प्राप्त की हुई नारी समाज में विशिष्ट स्थान रखती है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि देश के इस परिवर्तित वातावरण में भी जिन मूल्यों के लिये यह संस्था स्थापित हुई है उसे नया आयाम नया चिन्तन देने में सशक्त होगी।

– **हिम्मत सिंह जैन**, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट्स
एच० एस० जैन एण्ड कं०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सम्पूर्ण जैन समाज के लिए गौरव एवं प्रेरणास्पद

यह जानकर अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि आर्यिकारत्न चंदा माँश्री द्वारा स्थापित श्री जैन बाला विश्राम इस वर्ष 75 सोपान पूरा कर रहा है- यह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये गौरव एवं प्रेरणास्पद है कि आज से 75 वर्ष पूर्व जैन नारी एवं बाल-विधवाओं में सम्मान, आत्मरक्षा, आत्मकल्याण एवं संयम चारित्र आदि सद्गुणों के लिए पूज्या माँश्री ने इस संस्था की नींव रखी थी वह आज तक अविरल गति से नारी शिक्षा के रूप में प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक शिक्षा प्रदान कर रही है साथ ही मूक, बधिर एवं नेत्रहीनों की शिक्षा एवं उनके लिए अनेक कल्याणकारी कार्य कर रही है।

यह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये गौरव की बात है कि उनकी स्मृति हेतु यह वर्ष अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है एवं जैन महिलादर्श का विशेषांक एवं स्मारिका के प्रकाशन का भी निश्चय किया गया है।

आशा करता हूँ कि यह अमृत महोत्सव जैन जनजीवन में नई चेतना, उमंग एवं नई प्रेरणा का संचार करेगा साथ ही साथ यह अपने लक्ष्य की ओर अवाधगति से अग्रसर होगा। यह महोत्सव अपने आप में अद्वितीय, अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक होगा। मैं इसकी पूर्ण सफलता की मंगलकामना करता हूँ एवं इस आयोजन के लिये आप सबों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

- **भागचंद पहाड़िया**, कलकत्ता

महिला जागरण का प्रतीक

आश्रम से निकल कर अनेक-स्नातिकाएँ समाज साहित्य और धर्म की सेवा कर रही हैं। जैन-संस्कृति अक्षुण्ण रहे और इस बीसवीं सदी का भौतिक वातावरण उस पर अपना प्रभाव न डाल सके इसकी सतत् चेष्टा इस संस्था द्वारा होती रही है। पूज्या चंदाबाई जी माँश्री ने इस संस्था के उत्थान के लिये अपना तन-मन-धन सर्वस्व समर्पित कर जैन बाला विश्राम को, जैन समाज को, महिला शिक्षा संस्थाओं में नारी जागरण का अद्वितीय प्रतीक बना दिया है। इसकी पृष्ठ भूमि में मूल कारण है माँश्री का साधनामय तपोबल से परिपूर्ण समर्पित जीवन जिसके बिना जैन बाला विश्राम का उद्गम सम्भव नहीं था।

दिसम्बर 1973 में श्री सम्मेद शिखर जी की यात्रा में जाते समय मुझे माँश्री और जैन बाला विश्राम पवित्र धाम दोनों के दर्शन करने का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ था। तब से आश्रम में स्थित बाहुबलि स्वामी की विशाल कार्य खड्गासन मूर्त्ति जो 13

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फुट की है और ऊँचे कृत्रिम पर्वत पर विराजमान की गई है, विद्यालय भवन, पुस्तकालय, धार्मिक स्वाध्यायशाला एवं माँश्री का गंभीर चेहरा और आकर्षित करने वाला अद्भुत व्यक्तित्व मन में घर कर गया है। इस शहर के कोलाहल से दूर शांत वातावरण पर अब माँश्री पार्थिव रूप से नहीं हैं, पर उनकी तपोभूमि जैन बाला विश्राम आज भी उनकी यशोगाथा गा रहा है। एक वाक्य में कहें तो यथार्थ में जैन बाला विश्राम ही माँश्री का सच्चा स्मारक है। यह संस्था अपने मंगलमय उद्देश्य पूर्ति में संलग्न रह दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करे, यही श्री वीर प्रभु से प्रार्थना है।

– **भूरमल जैन,** जबलपुर

अद्भुत संस्था

देश एवं समाज की महान् एवं गौरवशाली विभूति आ० चन्दा माँश्री का मुझे भी एक बार दर्शन का अवसर मिला था। अवसर था आरा के श्री जैन सिद्धांत भवन की हीरक जयन्ती का। उनको तथा कुछ विद्वानों को सिद्धान्ताचार्य की उपाधि से अलंकृत भी किया गया। उस समय के वरिष्ठ विद्वानों के साथ हम सब श्री जैन बाला विश्राम गए थे। माँश्री के दर्शनों का लाभ मिला था।

उन्होंने देश तथा समाज को जितना दिया उससे समाज उऋण नहीं हो सकता। ऐसी पुण्य विभूति शिक्षा के मंत्रचार पर समर्पित समाज पर आए हुए प्रत्येक संकट को दूर करने के लिए सदैव तत्पर, महिलाओं में अपूर्व त्याग, साहस भरने वाली पूज्या माँश्री आर्यिका चन्दाबाई जी के चरणों में शत्-शत् वन्दना तथा उनके द्वारा स्थापित इस अद्भुत संस्था के अमृत महोत्सव पर अनेकों शुभ कामनाएँ।

– **डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् 1921 से सन् 1997 के बीच श्री जैन बाला विश्राम में पधारे

आचार्य महाराज, मुनिगण, आर्यिकाएँ एवं साधुगण

1. श्री 108 आचार्य वीरसागर जी महाराज, ससंघ
2. श्री 108 आचार्य महावीरकीर्ति जी महाराज, ससंघ
3. श्री 108 आचार्य देशभूषण जी महाराज, ससंघ
4. श्री 108 आचार्य विमलसागर जी महाराज, ससंघ
5. श्री 108 आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज, ससंघ (टोडा राय सिंह)
6. श्री 108 आचार्य सुमतिसागर जी महाराज, ससंघ
7. श्री 108 आचार्य सीमंधरस्वामी, ससंघ
8. श्री 108 आचार्य कुन्थुसागर जी महाराज, ससंघ
9. श्री 108 आचार्य संभवसागर जी महाराज, ससंघ
10. श्री 108 आचार्य विद्यानन्द जी महाराज (क्षुल्लक अवस्था में)
11. श्री 108 आचार्य श्री वरदत्तसागर जी महाराज, ससंघ
12. श्री 108 मुनि जयसागर जी महाराज
13. श्री 108 उपाध्याय ज्ञानसागर जी महाराज
14. श्री 108 मुनि मोक्षसागर जी महाराज
15. श्री 108 मुनि विनयसागर जी महाराज
16. श्री 108 मुनि निर्वाणसागर जी महाराज
17. श्री मुनि अभिनन्दनसागर जी महाराज
18. श्री 108 मुनि श्री नेमिसागर जी महाराज
19. श्री 108 मुनि श्री कान्तिसागर जी
20. श्री ऐलक गोसलसागर जी महाराज
21. श्री 105 ज्ञानमती माता जी, ससंघ
22. श्री 105 इन्दुमती माता जी, ससंघ
23. श्री 105 विजयमती माता जी, ससंघ
24. श्री 105 चन्द्रमती माता जी,
25. श्री 105 दक्षमती माता जी,
26. श्री श्वेताम्बराचार्य श्री तुलसी, ससंघ
27. श्री पूज्य श्री कानजीस्वामी, ससंघ
28. ब्र.शीतलप्रसाद जी
29. श्री पूज्य श्री सहजानन्द वर्णी
30. भट्टारक चारुकीर्त्ति श्री नेमिसागर जी वर्णी
31. चारुकीर्त्ति भट्टारक जी महाराज, मूडबिद्री

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम, धर्मकुंज, आरा
के लब्ध प्रतिष्ठ यात्री और
उनके अनमोल विचार

नगर के बाहर होने के कारण यह स्थान आश्रम के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। श्रीमती पंडिता चन्दाबाई जी इस संस्था की आत्मा हैं ।

– **चंपत राय जैन**, बैरिस्टर

आज इस विश्राम को देखकर अति आनन्दित हुआ .... आदर्श महिला रूपी फूलों को उत्पन्न करने का यह विश्राम एक उत्तम क्षेत्र है !

– **ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी**

मैं इस विश्राम से भारत की भलाई की अत्यन्त संभावना करता हूँ । आंतरिक धर्म वासना बड़ी उच्च है ।

– **(महामहोपाध्याय पं०) सकल नारायण शर्मा**
कलकत्ता यूनिवर्सिटी

मैं अन्तःकरण से आश्रम की उन्नति तथा चिरस्थिति की भावना करता हूँ !

– **दीपचन्द वर्णी**

श्री जैन बाला विश्राम अतीव रमणीय है ।

– **पं० मक्खन लाल जी शास्त्री**
– **पं० लाला राम जी जैन शास्त्री**

विश्राम वाकई विलक्षण है ।

– **उग्रसेन जैन (एम०ए०एल०एम०बी०)**
इटावा , यू० पी०

इस बाला विश्राम ने बिहार प्रान्त में स्त्रियों की तालीम के प्रचार के लिए बहुत कुछ किया है !

– **डा० सच्चिदानन्द सिन्हा**
(भारतीय संविधान सभा के प्रथम अध्यक्ष)

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

आज संयोगवश मैंने जैन बाला विश्राम देखा ....मुझे प्रसन्नता हुई । अधिष्ठात्री जी पं० चंदाबाई जी निःसंदेह महिलारत्न हैं ।

– **(सरसेठ) हुकुमचंद स्वरूपचंद,**
इंदौर

इस आश्रम की कार्यवाही देखने से सराहनीय मालूम होती है !

– **कैप्टन सरसेठ भागचंद सोनी,** अजमेर
– **सेठ गोपीचंद ढोलिया,** जयपुर

वास्तव में आश्रम ने समाज के सांस्कृतिक विकास और प्रसार में पूरा योगदान दिया है ।

– **(साहू) शांति प्रसाद,**
डालमियानगर

आज इस संस्था का निरीक्षण किया ! पू० चंदाबाई जी ने इस संस्था को स्थापित करके महान कार्य किया है !

– **लालचंद हीराचंद, अध्यक्ष**
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी, बम्बई

आश्रम की वहिरंग स्वच्छता से ही आन्तरिक निर्मलता प्रतीत होती है। आश्रम का दिनों-दिन उत्कर्ष हो ।

– **स्वस्ति श्री देवसागर स्वामी महाराज**

जैन समाज के एक टूटे-फूटे इतिहास में व उसके अधिकार को दूर करने वाली नारी जगत की एक यही संस्था है ।

– **बालचंद मलैया सागर सी.पी.**

मेरे जीवन का यह एक पवित्र क्षण है जिसमें मैंने श्री जैन बाला विश्राम के दर्शन किए । इस तपोवन जैसे पवित्र वातावरण में पवित्र जीवन के विकास की परिस्थितियाँ देखकर मन को परम शांति प्राप्त हुई । ....

– **(कवि) रामकुमार वर्मा, प्रोफेसर**
प्रयाग विश्वविद्यालय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रवणबेलगोला की मूर्ति की प्रतिकृति यहाँ देखकर मैं विशेष प्रभावित हुआ।

- **काका कालेलकर,**

(सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता)

इस संस्था ने जैन महिला जगत् का महान कल्याण किया है । इसके समान महत्वपूर्ण जैन संस्था मैंने देखी नहीं ।

- **सुमेरचंद दिवाकर शास्त्री,** सिवनी

जैन बाला आश्रम बहुत सुन्दर बना है जिनका मन्दिर भी बहुत सुन्दर है ।

- **छदामी लाल जैन,** फिरोजाबाद

बिहार में यह संस्था अपने ढंग की अकेली है ।

- **रामवृक्ष बेनीपुरी,** पटना

श्री जैन बाला विश्राम बिहार में और बाहर, नारी शिक्षा प्रचार का स्तुत्य कार्य कर रहा है, बहुत अभिनंदनीय है ।

- **पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी,**

शांति निकेतन

ऐसी संस्थाओं की आज बिहार में बहुत आवश्यकता है । मैं हृदय से आपकी संस्था की उन्नति चाहता हूँ ।

- **देवव्रत शास्त्री**

सम्पादक, नवराष्ट्र

जैन बाला विश्राम ने स्त्री समाज में बहुत बड़ा काम किया है । शिक्षा के साथ-साथ नैतिक चरित्र को अच्छा प्रोत्साहन दिया है !

- **जुगल किशोर 'मुख्तार'**

वीर सेवा मन्दिर, सरसावा

यह संस्था समाज के लिए बहुत उपयोगी कार्य कर रही है !

- **जगजीवन राम**

केन्द्रीय रेल मंत्री

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आप मित्रों ने मेरी यात्रा का जिस हृदयपूर्ण भावना से स्वागत किया, हम आपके आभारी हैं ।

– **शंकरराव देव**
(सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता)

इस आश्रम की ख्याति मैंने पहले भी सुनी थी । आज आश्रमवासियों से मेरी भेंट हो गई ।

– **कृष्ण बल्लभ सहाय**
मुख्य मंत्री, बिहार

मुझे जैन बाला विश्राम का निरीक्षण कर प्रसन्नता हुई, यह उपयोगी रचनात्मक कार्य में संलग्न है !

– **जे० बी० कृपलानी**

यह संस्था अपने आप में एक महान संस्था है ! इस संस्था ने ऐसी महिलाओं का निर्माण किया है जिन्होंने व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन दोनों में आदर्श स्थापित किए हैं !

– **(सेठ) गोविन्द दास, एम०पी०**

श्री जैन बाला विश्राम, आरा इस प्रान्त में अपने ढंग की निराली संस्था है ।

– **बद्रीनाथ वर्मा**
शिक्षा मंत्री, बिहार

श्री जैन बाला विश्राम हमारे प्रान्त का गौरव है !

– **राम चरित्र सिंह**
विद्युत मंत्री, बिहार

जिस अहिंसक समाज ने इस पुण्य कार्य में अपना हाथ बटाना प्रारंभ किया है, लगता है अब मानवता के स्वर्ण प्रभात की बेला करीब है ।

– **जगलाल चौधरी**
आवकारी मंत्री, बिहार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैन संस्कृति के विकास तथा प्रसार के लिए प्रयत्नशील जैन स्त्री संस्थाओं में जैन बाला विश्राम प्रमुख स्थान रखता है ।

- **भुजबली शास्त्री (पं०)**
मूडबिद्री (द० भ०)

आज जैन मातृमंडल अपनी चिर सुसुप्ति को त्यागकर अंगड़ाई लेता अपने जीवन को सर्वांग बनाने के लिए जैसा प्रयत्नशील दिखायी देता है, इसका पर्याप्त श्रेय श्री जैन बाला विश्राम को है ।

- **गोरावाला खुशाल चन्द जैन**
प्रोफेसर, काशी विद्यापीठ

Sri Jain Bala Vishram is working with very high ideals, and the services vendered by it to the society in general and the Jain Community in particular are indead praiseworthy.

- **Dr. A.N.Updhyay,**
Kolhapur

पौर्वात्य और पाश्चात्य पद्धत्यानुसार चलने वाले कई महिलाश्रम हमने देखे हैं परन्तु, आरा स्थित ''जैन बाला विश्राम'' तो अपने ढंग का अनुपम है ।

- **मुनि कान्ति सागर**
(श्वे० विद्वान् लेखक)

इस विद्यालय को पहले भी हमें देखने का अवसर मिला है। निरंतर इसे प्रगति करता हुआ देखता हूँ । वातावरण, प्राकृतिक और मानसिक, सात्विक और स्वच्छ है और उसी के अनुकूल शिक्षा है । संस्था की उत्तरोत्तर उन्नति हो, यही कामना है ।

- **जैनेन्द्र कुमार (साहित्यकार)**

श्री जैन बाला विश्राम में आकर प्रसन्न हुआ । ऐसी संस्थाएँ देश के कोने-कोने में जन्म लें, फूले-फले, यह कामना है । नारी शिक्षा की जो रूप-रेखा यहाँ देखी वह आदर्श है ।

- **(राष्ट्रकवि) रामधारी सिंह 'दिनकर'**

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसी समय से जानता हूँ जब धनुपुरा (आरा) में बाला विश्राम की स्थापना हुई और आरा नगर में जैन सिद्धान्त भवन का उद्‌घाटन हुआ था, त्याग और तप के आदर्श को ही महिला विद्यालय की उन्नति का श्रेय प्राप्त है ।

- आचार्य शिवपूजन सहाय
(सुप्रसिद्ध उपन्यासकर)

आरा का श्री जैन बाला विश्राम एक आदर्श संस्था है ।

- फूलचंद जैन, सिद्धान्तशास्त्री
वाराणसी

श्री जैन बाला विश्राम संस्था देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ । सत्यमेव तप से ही ऐसे कार्य सिद्ध होते हैं ।

- वासुदेव शरण अग्रवाल
काशी विश्वविद्यालय

इस संस्था ने अपनी जीवनी में जो लोक सेवा की है उस पर इसे बधाई मिलनी ही चाहिए ।

- अनुग्रह नारायण सिंह
अर्थ मंत्री, बिहार

इस विद्यालय को देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई ।

- कन्हैया लाल मणिक लाल मुंशी
मंत्री, भारत सरकार

श्री जैन बाला विश्राम देखकर मुझे बहुत आनन्द हुआ । स्त्री शिक्षा के लिए यह बहुत सुन्दर संस्था है ।

- सुचेता कृपलानी
संयुक्त प्रान्त की मुख्य मन्त्री

श्री जैन बाला विश्राम को देखकर मुझे संतोष हुआ, विशेषत: यह संस्था एक स्त्री ने स्थापित की इस बात का बहुत महत्त्व है ।

- रंगनाथ दिवाकर, राज्यपाल (बिहार)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्री जैन बाला विश्राम द्वारा की कई अमूल्य सेवाओं से मैं भली-भाँति परिचित हूँ।

- अम्बिका शरण
राज्य वित्त मंत्री, बिहार

I visited this magnificient institution this morning, and can not sufficiently express my gratification at the beauty of the site and buildings, so nicely maintained, and the more hidden but nontheless perceptible spiritual excellence of which the while institution is a manifestation.

- **I. J. Friend**, Principal
Central Calcutta College

We are very glad after visiting such ideal educational institution.

- Joe Bodcustein
Journalist, Hambarg (Germany)

It has been most refreshing to spend this day in an atmosphare of study and culture.

- Edward Lagar
Friendship March
Newyork city, U.S.A.

श्री जैन बाला विश्राम जैसी आदर्श एवं प्रेरणादायिनी संस्था की संस्थापिका एवं संचालिका सिद्धान्ताचार्या पं० श्रीमती चंदाबाई के प्रति श्रद्धा निवेदित करता हूँ! मैं इस संस्था की उत्तरोत्तर अभ्युदय की कामना करता हूँ।

- रामदयाल पाण्डेय, पटना
(कवि एवं साहित्यकार)

इस परम पुनीत संस्था में आकर बड़ा ही आनन्द लाभ हुआ। खूब फले-फूले ऐसी कामना करता हूँ।

- बलिराम भगत
केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पू० माता जी का जीवनदीप सबको आलोक से भरा रहा है ।

डूबें सब ध्यान में .... और पा लें उन्हें, जिनको पाने को मन तरसता है यही शुभकामना ।

– **आनन्द मधु संन्यासिनी**
भगवान श्री रजनीश आश्रम

विदुषी पंडिता चन्दाबाई के संपर्क में आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा पालित और पोषित संस्था को उन्नत देखकर प्रसन्नता होती है । हार्दिक कामना है कि यह संस्था दिनोंदिन उन्नति पथ पर अग्रसर होती रहे ।

– **डा० जगदीशचन्द्र जैन**

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री जैन बाला विश्राम की छात्राएँ प्रमेयकमल, मार्त्तण्ड और अष्टसहस्री जैसे उच्चकोटि के ग्रंथों का अध्ययन करती हैं। आदरणीया बाई जी (ब्र० पं० चन्दाबाई जी) ने दासत्व की श्रृंखला में जकड़ी घूँघट में छिपी, अज्ञान और कुरीतियों से प्रताड़ित नारी को आत्मबोध ही नहीं कराया, बल्कि उसके लिए उच्च शिक्षा का प्रबन्ध कर उसे उच्चपद पर प्रतिष्ठित किया है। चन्दना, चेलना और सीता जैसी सती नारियाँ ज्ञान के क्षेत्र में आशातीत उन्नति कर रही हैं । मेरा तो यह दृढ़मत है कि नारियाँ ही देश के कलेवर का परिष्कार कर सकती हैं। वह समाज, जो अपनी नारियों को प्रतिष्ठित करने की बात नहीं सोच सकता, कभी भी विकास की ओर नहीं बढ़ सकता । मैं बाई जी के कार्यों की पुन: प्रशंसा करता हूँ ।

– **बाबू छोटेलाल जी जैन**, कलकत्ता
भूतपूर्व अध्यक्ष, जैन बाला विश्राम

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

चित्र परिचय :

६ मई शुक्रवार, २०००

देखा मैंने दोनो हाथों को प्रार्थना के रुप में,
ऊपर उठाये हुये, मुक्त गगन में-नग्न उड़ा जा रहा था।
सीमन्धर स्वामी के दर्शनों की लालसा उठी।
मैंने दाहिनी ओर देखने के लिए सर मोड़ा,
तभी आँखें खुल गई-भोर हो गयी थी।

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust
छायाकार : सुबोध कुमार जैन, (आरा)